मिखाइल इवानोविच कालिनिन ने, सोवियत राज्य के सर्वोच्च संगठन के नेता के पद पर पचीस वर्षों से भी ज्यादा काल तक अनथक रूप से काम किया है। उन्होंने सोवियत युवकों की कम्युनिस्ट शिक्षा की समस्याओं की ओर प्राय बहुत ही ध्यान दिया है। सोवियत युवकों को उन्होंने जो सीख दी, उनके सामने अपनी जो इच्छा प्रकट की, वह बहुत ही भावपूर्ण और सरल है। उनमें मिखाइल इवानोविच कालिनिन के जीवनपूर्ण अनुभवों के समृद्ध खजाने और उनकी बोल्शेविक बुद्धिमानी की स्पष्ट झाकी मिलती है।

इस पुस्तक में कम्युनिस्ट शिक्षा से संबंधित मिखाइल इवानोविच कालिनिन के पिछले बीस बरसों के चुने हुए भाषणों और लेखों को संग्रहीत किया गया है। कुछ भाषणों को थोड़ा संक्षिप्त कर दिया गया है।

कम्युनिस्ट सिद्धान्त अपने प्रारंभिक रूप में, बहुत ही शिक्षित, सच्चे, उन्नत लोगो के सिद्धान्त है। वे अपनी समाजवादी मातृभूमि के प्रति प्यार, मैत्री, न्यायी-भावना, मानवता, ईमानदारी, समाजवादी श्रम के प्रति प्यार और दुनिया में प्रचलित इसी तरह के दूसरे महान उन्नत गुण है। इन विशेषताओ, इन उन्नत गुणो को पालना-पोसना, विकसित करना कम्युनिस्ट शिक्षा का बहुत ही महत्वपूर्ण अग है।

म० इ० कालिनिन

विषय-सूची

अखिल-सघीय लेनिनवादी नौजवान कम्युनिस्ट लीग की सातवीं काग्रेस में दिए गए भाषण का अश, ११ मार्च १९२६

अध्ययन और जीवन। य० म० स्वेर्दलोव नामक कम्युनिस्ट विश्वविद्यालय के दीक्षात-समारोह के अवसर पर दिए गए भाषण का अश, ३० मई १९२६ .

अपना विकास कीजिए। द्नेप्रोपेत्रोव्स्क में नौजवान कम्युनिस्ट लीग के सक्रिय सदस्यो के सम्मेलन में दिए गए भाषण का अश, ३ मार्च १९३४

"उचितेल्स्काया गज़ेता" अखबार के सपादक मडल द्वारा आयोजित शहरो और गावो के सर्वश्रेष्ठ स्कूल-मास्टरो के सम्मेलन में दिया गया भाषण, २८ दिसवर १९३८

देहाती स्कूलो के पारितोषिक प्राप्त शिक्षको के सम्मान में हुए समारोह के अवसर पर दिया गया भाषण, ८ जुलाई १९३९

मास्को के (वौमान हलका) उच्चतर माध्यमिक स्कूलो की आठवी, नवी और दसवी कक्षाओ के विद्यार्थियो के सम्मेलन में दिया गया भाषण, ७ अप्रैल १९४०

अखिल-सघीय लेनिनवादी नौजवान कम्युनिस्ट लीग की केन्द्रीय कमेटी तथा स्कूली वालक और किशोर-पायोनीयरो से सवधित कोम्सोमोल क्षेत्रीय कमेटियो के सेक्रेटरियो के सम्मेलन मे भाषण, ८ मई १९४० ७६

कम्युनिस्ट शिक्षा के वारे में। मास्को नगर के पार्टी-कार्यकर्ताओ की सभा में दिया गया भाषण, २ अक्तूबर १९४० ८६

मास्को के (लेनिन हलका) माध्यमिक स्कूलो के आठवे, नवे और दसवे दर्जे के विद्यार्थियो की सभा में दिया गया भाषण, १७ अप्रैल १९४१ ११८

शत्रु पर विजय पाने के लिए सब कुछ किया जाना चाहिए कुइविशेव नगर के कोम्सोमोल कार्यकर्ताओ की सभा में दिये गए भाषण का अश, १२ नवबर १९४१ १३४

मास्को देहाती क्षेत्र के कोम्सोमोल मत्रियो के सम्मेलन में दिये गये भाषण का अश, २६ फरवरी १९४२ १४४

जनता के बीच पार्टी-काम की कुछ समस्यायें
मास्को के कारखानो के पार्टी-कार्यकर्ताओ के सम्मेलन में भाषण, २१ अप्रैल १९४२ १५२

राज्य श्रम-रिजर्वों और ट्रेड, रेलवे तथा औद्योगिक स्कूलो के कोम्सोमोल सगठनो के कार्यकर्ताओ तथा मिखाइल इवानोविच कालिनिन के बीच एक वार्तालाप, २३ अक्तूबर १९४२ १७२

महान अक्तूबर समाजवादी क्राति की पचीसवी वर्षगाठ के अवसर पर मास्को के ट्रेड, रेलवे और औद्योगिक स्कूलो के समारोह में दिया गया भाषण, २ नवबर १९४२ १९१

मोर्चे पर आंदोलनकारी के शब्द। मोर्चे पर काम करने वाले आंदोलनकारियों के मध्य दिये गये भाषण का अंश, २८ अप्रैल १९४३ . . . . १९८

वोल्शेविक पार्टी का साहसी सहायक
अखिल-संघीय लेनिनवादी नौजवान कम्युनिस्ट लीग की पचीसवीं वर्षगांठ पर, अक्तूबर १९४३ . . . . . . २०८

प्रचार और आंदोलन के वारे में कुछ शब्द। मास्को के कम्युनिस्ट संगठनों के मंत्रियों के सम्मेलन में दिया गया भाषण, १२ जनवरी १९४४ . . . . २२१

कोम्सोमोल सदस्यों की फ़ौजी शिक्षा के वारे में
लाल फ़ौज के कोम्सोमोल सदस्यों के स्वागत-समारोह में दिया गया भाषण, १५ मई १९४४ . . . . २३५

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा" और "पायोनीयरस्काया प्राव्दा"
पत्रों के सम्मान समारोह में भाषण, ११ जुलाई १९४५ २४७

कोम्सोमोल के काम का आधार — संगठन और संस्कृति
मास्को क्षेत्र के सामूहिक गांवों के कोम्सोमोल संगठन के मंत्रियों के सम्मेलन में दिया गया भाषण, १२ जुलाई १९४५ . . . . २५०

गौरवशाली सोवियत ललनाएं। अखिल-संघीय लेनिनवादी नौजवान कम्युनिस्ट लीग की केन्द्रीय कमेटी में लाल फ़ौज और नाविक बेड़े से लौटी हुई तरुणियों की सभा में दिया गया भाषण, २६ जुलाई १९४५ . . . . . . २५४

उच्चतर स्कूलों में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बुनियादी सिद्धांतों की शिक्षा के बारे में। कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के उच्चतर पार्टी-स्कूलों की सभा में दिया गया भाषण, ३१ अगस्त १९४५ २५९

अखिल-संघीय लेनिनवादी नौजवान कम्युनिस्ट लीग की केन्द्रीय कमेटी के चौदहवें अधिवेशन के समारोहिक बैठक में दिया गया भाषण, २८ नवंबर १९४५ २६७

अखिल-सघीय लेनिनवादी नौजवान कम्युनिस्ट लीग की सातवी काग्रेस मे दिए गए भाषण का अश

११ मार्च १९२६

आपने अनुभव किया होगा कि पार्टी की केन्द्रीय कमेटी और हमारी सोवियत सरकार, दोनो ही दूसरी काग्रेसो की तुलना में कोम्सोमोल* की काग्रेस की ओर ज्यादा ध्यान देती है। ऐसा क्यो है? यह बताने की कोई जरूरत नही, क्योकि हमारे देश की मुख्य दौलत कोम्सोमोल ही में विकसित हो रही है। कोम्सोमोल में वही लोग है जो आगे चलकर समाजवाद के लिए लडने वाले बूढे लडाको की जगह लेंगे। कोम्सोमोल मजदूर और किसान युवको का अगला दस्ता है, उनका बेहतरीन अग है।

इसीलिए मेरा विश्वास है कि कोम्सोमोल में युवको के अनुरूप ही उच्चाकांक्षाओ और आदर्शों के विकास की ओर ध्यान देना चाहिये।

---

* कोम्सोमोल अखिल-सघीय लेनिनवादी नौजवान कम्युनिस्ट लीग का संक्षिप्त नाम।

आखिर, युवको के लिए विशिष्ट बात क्या है? कोम्सोमोल के एक मेंबर और एक प्रौढ में, मिसाल के तौर पर, मुझमें और कोम्सो-मोल के सदस्य में क्या अतर है? हा, बाहर से देखने में मेरी सफेद दाढी के कारण, बडा भेद मालूम पडता है। लेकिन यह तो सिर्फ बाहरी भेद हुआ। और अगर भेद सिर्फ बाहरी है, तो फिर कोम्सोमोल के विशेष सगठन की कोई जरूरत न होती। कोम्सोमोल को विशेष-ता देने वाले उसके अपने अनोखे आत्मिक गुण है।

कोम्सोमोल का पहला विशिष्ट गुण, उसकी अपनी अनोखी ग्रहण-शक्ति है। आप लोग जो कोम्सोमोल के सदस्य है, इस बात को अच्छी तरह नही समझते। लेकिन हम लोग जो प्रौढ हो चुके हैं, जब अपने बीते दिनो की याद करते है, तो और दिनो के मुकाबले हमें जवानी की बाते बहुत स्पष्टतया याद आ जाती है। प्राय प्रौढावस्था में होने वाली घटनाए, युवावस्था की घटनाओ की तुलना में जल्दी ही भूल जाती है। इसका मतलब क्या है? इसका मतलब हुआ कि आदमी की ग्रहण-शक्ति युवावस्था में सबसे ज्यादा होती है।

इस मामले में कोम्सोमोल की तरफ हमारा रुख भिन्न होना चाहिए। मिसाल के तौर पर, हम कम्युनिस्ट-प्रचार की समस्या को ही ले ले। जो बात किसी प्रौढ पर लागू होती है, उसे एक कोम्सोमोल के मेंबर पर लागू करना खतरनाक होगा, क्योंकि एक प्रौढ और एक कोम्सोमोल सदस्य को एक ही नियम में बाधने का उन दोनो पर विभिन्न प्रभाव पडेगा और उनकी मानसिक प्रतिक्रि-याए भी भिन्न होगी। इस बुनियादी बात से कई महत्वपूर्ण नतीजे निकाले जा सकते है—जैसे, कम्युनिस्ट युवको के बीच प्रचार कैसे किया जाय?

अपने आदर्शों को अमली स्वरूप देने की तीव्र आकाक्षा युवकों की अपनी विशिष्टता है। युवक हमेशा ही आत्मबलिदान के लिए तैयार

रहते है। वे सदा ही धरती के इस छोर से उस छोर जाने, समुद्र पार करने, खतरा उठाने, नए देशो को खोजने और इसी तरह के अन्य साहसिक कार्यो के लिए उत्सुक रहते है। साथियो, यह है भी बहुत ही स्वाभाविक। मुझे दूसरो के बारे में नही मालूम, लेकिन जहा तक मेरी अपनी बात है, अठारह वर्ष की आयु तक इन्ही सारी बातो से मेरा सिर भरा रहता था। मै नही मानता कि इस मामले में आज के युवक पहले से भिन्न हो गए है। मै जानता हूँ कि अनहोनी कर उठाने, बहादुरी के करतब दिखाने, विज्ञान में महान कामयाबिया हासिल करने, अर्थात् कुछ अनोखा कर दिखाने की इच्छा आज के युवको की भी विशेषता है।

एक बात और। आम तौर पर, युवको में अनोखी ईमानदारी और खरापन होता है। जीवन के अनुभवो और ठोकरो से प्रताडित एक प्रौढ व्यक्ति में सत्य और ईमानदारी के लिए युवावस्था का वह जोश कहा आ सकता है?

प्रौढो और युवको को भिन्न करने वाली कुछ ही बातो को मैने बताया है। मुझे ऐसा लगता है कि यही मुख्य भेद है। मै दूसरी विभिन्नताओ को बताने के लिए रुकूगा नही। लेकिन क्या, अपने आप में भी इन विशेषताओ का मनुष्य के लिए कुछ मूल्य है? निस्सदेह है। मनुष्य के लिए यदि अपने आप में ही इन गुणो का विशिष्ट, अनूठा मूल्य न होता, तो निस्सदेह, युवको के आत्मिक सौंदर्य का समुचित भाग ही लुप्त हो जाता।

इसीलिए हम लोग—विशेषकर कोम्सोमोल सगठनो के नेता और पार्टी जो नेतृत्व करती है और कोम्सोमोल का पथ प्रदर्शन करती है—समझते है कि युवको के इन अनोखे गुणो का ह्रास न होने पाय। उल्टे, हम समझते है कि उन्हे सुरक्षित रखना और विकसित करना चाहिए। नए मानव का निर्माण इसी आधार पर होना चाहिए।

"निर्माण" की बात कह देना तो बहुत आसान है, लेकिन निर्माण का ठोस काम करना सचमुच बहुत ही कठिन है।

बहुत लोगो की यह भ्रान्त धारणा बन गई है कि युवको के विकास का मतलब यही है कि वे केवल कोम्सोमोल के कर्तव्यो का पालन करने में लगे रहे। और कोम्सोमोल-कर्तव्यो के पालन का मतलब तो मुख्यत राजनीति के ककहरे का ज्ञान हासिल करना और मार्क्सवाद का अध्ययन करना है, सक्षेप में, समाजी समस्याओ का ज्ञान प्राप्त करना है।

मुझे लगता है कि मानव-निर्माण से सबधित समस्याओ के बारे में इतना सकुचित विचार गलत है। मुझे उन दिनो की याद आती है जब हमारा विकास मार्क्सवादियो के रूप में हो रहा था। हमने सिर्फ विशिष्ट तौर पर मार्क्सवादी पुस्तको का ही अध्ययन नही किया। चलते-चलते बता दूं कि उन दिनो ये पुस्तके थी भी बहुत कम। बेर्दनिकोव और स्वेतलोव की ही पुस्तक "राजनैतिक ज्ञान का ककहरा" ले ले। यह बहुत बडी पुस्तक है। उस समय हम लोगो के पास सिर्फ "ईर्फर्ट कार्यक्रम" और "कम्युनिस्ट घोषणापत्र" ही थे। हा तो मै अडरग्राउड सर्किलो (भूमिगत गोष्ठियो) में होने वाले अध्ययन की बात कर रहा था, मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धान्तो के अध्ययन के साथ ही हमने साधारण ज्ञान सबधी पुस्तके भी पढी—रूसी प्राचीन पुस्तको से शुरू करके कहानी-लेखको, इतिहासकारो, आलोचको, सभी की, थोडे में यह कि हमने किताबो में पाये जाने वाले सम्पूर्ण ज्ञान को पा लेने की चेष्टा की। इस प्रकार कारखाने में काम करते-करते हमें साहित्य, विज्ञान इत्यादि की चतुर्मुखी शिक्षा मिली।

मै कहना चाहता हू कि यदि हमारे स्कूलो में कोम्सोमोल कर्तव्यो के पालन से गणित-शास्त्र के अध्ययन में रुकावट पडती है—गणित मै जान-बूझ कर कह रहा हूं, क्योकि यह एक ऐसा विषय

है जो प्रारंभिक राजनैतिक ज्ञान से बिल्कुल भिन्न है—यदि गणित या प्राकृतिक विज्ञान का स्थान प्रारंभिक राजनैतिक ज्ञान ले ले, तो यह बहुत ही ग़लत बात होगी। ऐसी अवस्था में कोम्सोमोल के उस सदस्य की शिक्षा बहुत ही ऊपरी रह जायेगी जिसने राजनीति का प्रारंभिक ज्ञान सबंधी कुछ किताबें ही पढ़ी हो। ऊपर से ही वह शिक्षित जान पड़ेगा। बातचीत के दौरान में वह सभी विषयो पर कुछ न कुछ कह सकेगा। ऊपरी चमक-दमक उसमें होगी, लेकिन उसे एक विकसित और शिक्षित व्यक्ति नही कहा जा सकता। आप जब किसी ऐसे साथी से मिलेगे, तो उसका प्रभाव अच्छा पड़ेगा। लेकिन कुछ ही घटो की बातचीत मे यह पता लग जायेगा कि उसके राजनैतिक ज्ञान का आधार कोई नहीं है। उसमें हाई स्कूल पास व्यक्ति के बराबर भी प्राकृतिक विज्ञानो का ज्ञान आपको नही मिलेगा। इसीलिए, मै समझता हूँ कि कोम्सो-मोल सगठन को चाहिए कि वह नई पीढ़ी को न सिर्फ राजनीति का ज्ञान प्राप्त करने में सहायक हो, बल्कि इसका भी प्रयत्न करे कि उसका यह राजनैतिक ज्ञान साधारण ज्ञान की उन शाखाओ पर आधारित हो, जो एक विकसित व्यक्ति के लिए आवश्यक है। विकास के इस पहलू को नज़रअदाज़ नही करना चाहिए।

एक बार मैने कहा था कि मार्क्सवाद के अध्ययन का मतलब मार्क्स, एगेल्स और लेनिन की किताबें पढ जाना ही नही है। आप उनकी किताबें शुरू से आखिर तक पढ सकते है और यह भी हो सकता कि उन्हे शब्दश दोहरा भी दें। लेकिन यह सब यह बताने के लिए काफी नही है कि आपको मार्क्सवाद का ज्ञान हो गया है। मार्क्सवादी तरीक़ो का पाडित्य प्राप्त कर लेने के बाद अपने काम से सबधित तमाम मामलों के प्रति क्या रुख अपनाया जाय—यह जानना ही मार्क्सवाद है। मिसाल के तौर पर, हम मान ले कि भविष्य में खेती-बारी ही आपके काम का दायरा होगा। तो क्या इसमें मार्क्सवादी

तरीका वरतना फायदेमद होगा? हा, जरूर होगा। लेकिन मार्क्सवाद का प्रयोग करने के लिए आपको खेतीवारी का ज्ञान होना चाहिए। आपको कृषि का पडित होना पडेगा। नही तो खेतीवारी पर मार्क्सवाद लागू करने का कोई मतलव ही न होगा। अगर मार्क्सवाद को अमल में लाना है, अगर हमें अमली इन्सान वनना है और निरा मार्क्सवाद के सूत्रो को दोहराने वाला पडित नही वनना है, तो हमें यह वात नही भूलनी चाहिए। आखिर, मार्क्सवादी वनने का अर्थ क्या है? इसका मतलव है सही नीति अपनाने की योग्यता। लेकिन एक सही, मार्क्सवादी नीति अमल करने के लिए उस विशेष कार्य का पूर्ण ज्ञान भी जरूरी है जिस पर हम मार्क्सवादी नीति का उपयोग करना चाहते हैं।

यह आम सिद्धान्त कोम्सोमोल के तमाम मेंवरो पर शब्दश लागू होता है। वे चाहे विद्यार्थी हो या गावो में खेतीवारी करने वाले या कारखानो में काम करने वाले। एक अच्छा फिटर होने के लिए — जो अपने ज्ञान का इस्तेमाल इस तरह करे और हर काम को इस तरह करे जिसका अच्छे से अच्छा फल निकले — फैक्टरी में काम करने वाले कोम्सोमोल के हर मेंवर को यह पहले ही सोच लेना है कि वह काम कैसे करे। जो कोई विना योजना के ही काम शुरू कर देता है, वह रद्दी काम करता है। इसलिए समझ लीजिए कि कोम्सोमोल सगठन को अपने हर सदस्य को यह वताना है कि उसका मुख्य काम उस कौशल की पूरी जानकारी हासिल करना है जिसे वह सीख रहा है। उसे अपने शिक्षक की ही तरह कुशलता से काम करना है। यदि वह अपने कौशल को भली भाति सीख लेगा तो उसे आर्थिक तौर से तो लाभ होगा ही, साथ ही वह अपने विशेष झुकाव को भी विकसित करने का अवसर पायेगा। यदि एक टर्नर या एक फिटर अच्छी तरह काम नही करता है, तो वह उसी काम से वधा रह जायेगा, क्योकि

एक रद्दी मजदूर को नया काम पाने में बड़ी मुश्किल होती है। और कोम्सोमोल के एक मेंबर को एक ही तरह के काम में लम्बे अरसे तक लगाए रखना आसान नहीं है, क्योंकि उसे तो दुनिया देखनी है। अगर आप दुनिया देखना चाहते है तो ऐसे टर्नर या फिटर बनिए जिसे पहले "ट्रायल" के बाद ही कहीं भी काम मिल जायेगा।

अंत में — थोड़ा उपदेश। मैंने देखा है कि हमारे कुछ नवयुवक उन कुशल व्यक्तियों की तरफ जो उन्हें शिक्षा देते है, एक हलकेपन और बेअदबी का रुख अपना लेते है। मैं चाहता हू, कि हमारे युवक प्राचीन मनीषियों के विचारों को पढ़ें। उन्हें पता लगेगा कि उस काल में शिष्यगण अपने गुरुओं का कितना आदर करते थे और उनका कितना ध्यान रखते थे। अच्छा काम सीखने के लिए आपको अपने काम पर ध्यान लगाना है। जब तक आप ऐसा नहीं करते, आप कभी भी काम नहीं सीख पायेंगे। मिसाल के तौर पर, एक फिटर के "एप्रेंटिस" को चाहिए कि वह अपने शिक्षक की खराबियों पर ध्यान न दे और उसके कौशल के बारे में सब कुछ सीख ले। आप खुद जानते है कि साठ बरस का एक बूढ़ा आदमी कई मामलों में नवयुवकों को कितना पुरमजाक मालूम होगा। लेकिन अगर आपका ध्यान सिर्फ इसी पर रहा तो आप मुख्य बात को खो बैठेंगे। आपको उनसे कौशल प्राप्त करना है।

सोवियत यूनियन की तमाम आशायें कोम्सोमोल संगठन पर आधारित है। खासकर, इस बात पर कि वह हमारी कामयाबियों को किस तरह जज्ब करता है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि अगर कोम्सोमोल इन मुख्य मसलों पर ध्यान नहीं देगा तो हम अपने काम को पूरा नहीं कर सकेंगे — हम कई कौशलों को बिना कोम्सोमोल संगठन को सौंपे ही खो बैठेंगे। मैं चाहता हू कि आप उन तमाम समस्याओं पर विचार करें, जिन्हें मैंने थोड़े में यहां रखा है। आप विभिन्न प्रस्तावनाओं की समीक्षा कीजिए।

अगर युवक इन समस्याओ की तरफ सही रवैया अपना लें तो मेरे द्वारा उठाए गए नकारात्मक प्रश्नो का मुख्याश तो अपने आप हल हो जायेगा। जिंदगी बहुत दिलचस्प चीज है और लोगो को सीखने के लिये अनेक विषय है। आपको इतना ही करना है कि युवको की दिलचस्पी उन विषयो में बढा दें जो बहुमूल्य है ताकि उनका चौमुखी विकास हो।

अखिल-सघीय लेनिनवादी नौजवान
कम्युनिस्ट लीग की सातवी काग्रेस में दिये
गए भाषण की स्टेनोग्राफिक रिपोर्ट।
पृष्ठ १५-१८, १६२६ में प्रकाशित

अध्ययन और जीवन

य०म० स्वेर्दलोव नामक कम्युनिस्ट विश्वविद्यालय के दीक्षात-समारोह के अवसर पर दिए गए भाषण का अश

३० मई १६२६

क्रातिकारी कार्य और सैद्धातिक शिक्षण

हम लोग अब एक बहुत ही जटिल युग मे गुजर रहे है। हर साल ही हमारी जिदगी कठिन होती जा रही है। सोवियत राज्य को सुदृढ करने के लिए हमें बडे कुशल व्यक्तियो की आवश्यकता है। आजकल के समाजी विकास को पिछडे तरीके से समझना बहुत ही मुश्किल है। हम में हर मौके पर समाजी विकास को गहराई से, मार्क्सवादी दृष्टि से समझने की काबिलीयत होनी चाहिए। हम में विषय को समूचे तौर से समझने और उसके अन्दरूनी तत्व को खोजने की काबिलीयत होनी चाहिए। किसी विषय को पूर्ण रूप से समझने के लिए, उसके अन्दरूनी तत्वो का विश्लेषण करने के लिए, आधारभूत मार्क्सवादी ट्रेनिंग की बहुत आवश्यकता है। मार्क्सवादी ट्रेनिंग तब तो और भी जरूरी हैं जब किसी व्यक्ति को पहले काफी अमली तजुरबा न हो। इसीलिए मैं कहता हू कि सोवियत राज्य और पार्टी

दोनो ही को मजबूत बनाने के लिए हमें गुणी और कुशल व्यक्तियो की अत्यधिक आवश्यकता है। मै यह कह सकता हू कि जहा तक जनता की राजनैतिक शिक्षा, राजनैतिक गतिविधि और राजनैतिक चेतना का सबध है, हमारा देश तमाम युरोपीय और गैर युरोपीय देशो से आगे है। इसमें सदेह नही किया जा सकता। लेकिन तो भी यह राजनैतिक कार्यवाही इतने बडे पैमाने पर और लगातार होने वाले रचनात्मक कार्यों की ज़रूरतो को पूरा करने के लिए पर्याप्त नही है।

निस्संदेह हमारा कर्तव्य है कि पार्टी के सास्कृतिक कार्यों को आगे बढाने के लिए हम राजनैतिक समस्याओ में जनता की दिलचस्पी का फायदा उठाए। महान उठान के अवसरो पर (जैसा इस समय ब्रिटेन की आम हडताल के अवसर पर) हर मजदूर, जो कल तक तमाशबीन रहा है, योद्धा बन जाता है—वह मजदूरो के हितो के लिए सघर्ष करता है, इस प्रकार जनता के लिए होने वाले सघर्ष में एक के बाद एक योद्धा आगे आते है। लेकिन साथियो, आगे बढना हमेशा तेज़ नही होता। अक्सर हमें पीछे भी हटना पडता है। और थकान-भरे, घटना-विहीन, एक ही तरह के काम में गुज़रने वाले साल पर साल एक व्यक्ति की ९९ फीसदी जिंदगी बन जाते है। साधारण और नीरस परिस्थितियो में लगातार जोश के साथ काम करने की योग्यता, एक-एक दिन एक-एक कठिनाई पर विजय पाना, रोज़-रोज़ हर घटे में आ खडी होने वाली रुकावटो के सामने अपने जोश को कम न होने देना, और उबाने वाली, थकाने वाली रुकावटो के दौरान में जोश को कायम रखना, रोज़मर्रा के कामो में उन अतिम उद्देश्यो को सदा सामने रखना जिनके लिए कम्युनिस्ट आदोलन सघर्षशील है—एक पार्टी कार्यकर्ता में ये आदर्श गुण है।

पार्टी हेड-क्वार्टर के सहायको—यह मै उसके विशद आर्थो में कहता हू—के रूप में आप भी काम करेंगे। आपको रोज़मर्रा के कामो

में इस तरह नही फसना है कि इन अतिम उद्देश्यो को ही भुला दें। हमारे सामने कोई भी रुकावट क्यो न हो, यह विश्वास हम को मजबूत बनाए रहे कि आज नही तो कल इन पर विजय अवश्य होगी। जरूरत इस बात की है कि पार्टी के कार्यकर्ताओ में यह योग्यता हो कि वे गैरपार्टी मजदूरो और किसानो में अपने रोजमर्रा के कामो और मिसालो से कम्युनिज्म की अतिम जीत का विश्वास भर सकें। एक कार्यकर्ता तभी अपने नेता का आदर करता है, और सिर्फ कार्यकर्ता ही नही, आप भी उसी शिक्षक या नेता का आदर करते है, जिसमें जनता के साथ ही अनोखा जोश होता है और जो अपने इन जोश को जनता में भरता है। इसलिए साथियो, पार्टी में काम करने के लिए,—जिसका मतलब ही एक हद तक आत्मबलिदान है और इस आत्मबलिदान से ही सतुष्ट होने के लिए, उन उद्देश्यो के औचित्य और सौंदर्य में गहरा विश्वास होना जरूरी है, जिनके लिए हम लड रहे है। और सचमुच, इन सिद्धान्तो के औचित्य पर, मार्क्सवाद द्वारा सिखाए गए विचारो पर, उनसे ज्यादा कौन विश्वास कर सकता है, जिन्होने उनके अध्ययन में तीन साल बिताए है?

मार्क्सवाद और उसका अभ्यास

मार्क्सवादी होने का मतलब यही नही है कि लेनिन, मार्क्स, एगेल्स और प्लेखानोव को पढें या उनका अध्ययन कर लें। हा, अगर सिर्फ मार्क्सवाद को जान भर लेने की बात है तो कोई भी इन चार लेखको को पढकर मार्क्सवाद को जान सकता है। लेकिन मार्क्सवाद को जान लेना एक बात है और उसे विभिन्न, विशिष्ट और अप्रत्याशित परिस्थितियो में रोज-रोज हर घटे लागू करना दूसरी बात है। मार्क्सवाद के किताबी ज्ञान को, मार्क्सवादी नजरिए से देखने की

काविल्नीयत नही कहा जा मकता। मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और प्लेखानोव की किताबो का अध्ययन कर लेने से ही यदि कोई मार्क्सवादी वन सकता, तो यह वहुत ही आमान वात होती। इन चार महान मार्क्सवादियो का अध्ययन मुश्किल चाहे जितना हो, लेकिन वह तो कुछ समय लगा कर हो सकता है। और सचमुच ही हमारी कम्युनिस्ट पार्टी में ऐसे लोग है जो किताबी तौर पर मार्क्स को जानते है

मार्क्सवाद — उसके तरीके और उमके नज़रिए — के अध्ययन का मतलव सिर्फ इन ऊपर वताए गए लेखको की किताबो को पढ लेना ही नही है, वल्कि साथ-साथ घटनाओ के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन भी आवश्यक है। मार्क्सवादी अध्ययन की सच्ची कसौटी अमली काम है। सभव है, अभी तक आप मार्क्सवादी तरीके के पडित हुए हो (अगर आप हुए हो — मेरा ख्याल है कि अभी आप पूरे पडित भी नही हुए), लेकिन यह पाडित्य उसी फौजी की शिक्षा-दीक्षा के समान है जो जनरल स्टाफ की अकादमी से पास होके निकला हो। हा, यह सही है कि दुनिया के ज्यादातर कमाडर-इन-चीफ अकादमियो से ही दीक्षित होकर निकले है। लेकिन यह समझना भूल होगी कि अकादमी का हर फौजी पहले दर्जे का कमाडर-इन-चीफ हो मकता है। हमारी क्रातिकारी फौज का कोई भी कमाडर अकादमी में शिक्षित नही हुआ। इसका मतलव क्या है? मार्क्सवाद मनगढत सिद्धान्त नही है। मार्क्सवाद सवसे अधिक शक्तिशाली और सप्राण विज्ञान है। जव आप मार्क्स की किताव, "पूजी" के पहले भाग को पढते है, तो आप अपनेको पूरी तरह सिद्धान्तो की दुनिया में पाते है। चूकि आपने भी मार्क्स की "पूजी" के पहले भाग को — कम से कम कर्त्तव्य के रूप में — पढा है, इसलिए आपने भी यही महसूस किया होगा। आप सिद्धान्तो की दुनिया में होते है और आश्चर्य करते है कि इस सव को अमल में, ज़िदगी में कैसे लागू किया जाय। साथ ही सिद्धान्तो का यह ज्ञान सवसे ज्यादा

जीवित और शक्तिशाली है। अमली काम के दौरान में लगातार दूसरे सिद्धान्तो से ज्यादा इन्हे पढा जाता है।

मार्क्सवाद रचनात्मक कार्य है

मार्क्सवादी वनने के लिए आपको सिद्धान्तो को ज़िदगी में पचाना होगा। अपने रोज़मर्रा के कामो को सिद्धान्तो से जोडना होगा। मार्क्सवादी होने का मतलव रचनात्मक कार्य करना है।

रचनात्मक कार्य से हमारा क्या मतलव है? जो रचनात्मक कार्य करता है और जो मामूली कारीगर है, उन दोनो में क्या भेद है? वही जो एक कलाकार और भद्दे पेंटर में है। ब्लादीमिर और सुजदाल के पेंटरो द्वारा वनाए गए चित्र देखिए। वे सव एक जैसे हैं। किसी भी चेहरे में जिदगी नही है। एक व्यक्ति जो रचनात्मक कार्य करता है, उसकी वात ही दूसरी है। वह चाहे आसान से आसान काम क्यो न कर रहा हो, वह साधारण जूता ही क्यो न वना रहा हो, वह उसमें अपना प्राण और मन लगा देगा। एक शिल्पी प्रसिद्ध कलाकार वन सकता है, वशर्ते कि वह अपने काम में अपना मन और प्राण लगा दे। और अगर वह मन न लगाए और वह जो कुछ करता है वह भद्दा हो, तो कलाकार भी शिल्पी ही रह जायेगा। इसी प्रकार जिस मार्क्सवादी ने अपना मन न लगाया हो, जिसका सवध किसी रचनात्मक कार्य से न हो, जो सदा ही अपने आसपास होनेवाली वातो के प्रति सचेत न हो, वह मार्क्सवादी नही कहा जा सकता — वह दिखावटी मार्क्सवादी है। अपने स्थानो में वापिस पहुच कर अगर अपने ज्ञान को आप पडिताऊ और कितावी तौर पर ही लागू करेंगे, रूढिवादिता वरतेगे तो आप सिर्फ लेनिनवाद के शिल्पी ही कहलायेंगे। आप जनता को अपने साथ न ले जा सकेगें। मार्क्सवादी तरीके को लागू करने का आपका अमल

गलत होगा। मार्क्सवादी तरीके को सही तौर पर लागू करने का मतलब है—वस्तुस्थिति का अध्ययन करने के लिए मार्क्स के सिद्धान्तों का प्रयोग करना। और हर बार हमारा फैसला नया ही होगा। अगर किसी समस्या को आज आप एक तरह से हल करते हैं, तो कल आप उसे नई तरह से हल करेंगे, क्योंकि कल हालत भिन्न होगी। हालत लगातार बदलती रहती है। इतिहास आगे बढ़ता रहता है। वह कभी रुकता नहीं। वह निर्बाध गति से आगे बढ़ता है। और एक मार्क्सवादी को सदा ही ऐतिहासिक प्रगति के साथ कदम मिलाकर आगे बढ़ना चाहिए। एक मार्क्सवादी को सदा ही अपनी स्थिति का सही ज्ञान कर लेना चाहिए। वह चाहे जितना भी आसान काम क्यों न कर रहा हो, लेकिन एक मार्क्सवादी का मस्तिष्क चेतन और सक्रिय होना चाहिए। साथियो! अब आपने मार्क्सवाद के सिखाना काम को ग्रहण कर लिया है। यह स्वाभाविक ही है कि आप सोद्देश्य कार्य करने की उच्च भावना से प्रेरित हो रहे हैं। क्योंकि किसी के लिए इस बात से अधिक और बड़ा सतोष क्या हो सकता है कि वह समाज के कुछ काम आया? इससे बड़ा कोई पारितोषिक और क्या होगा? आप अपने मन में चाहे जितनी अच्छी-अच्छी कल्पनाएं कर लें—यह विचार आपको सबसे अधिक सतोष देगा।

युवकों को जिंदगी का असली तजुर्बा प्राय नहीं होता न उन्हें अभी क्रातिकारी सघर्ष का ही अनुभव है। उन्हें वर्ग-सघर्ष, जनता को अपने पक्ष में लाने, उसका समर्थन हासिल करने का अनुभव भी नहीं है।

मैं चाहता हूं कि आप यह बात समझ लें, आप यह अच्छी तरह जान लें कि आप अगर जनता को जीतना चाहते हैं, तो आपमें बेइन्तहा जोश होना चाहिए। आप यह समझ लें कि बोलते वक्त अगर आपमें खुद जोश नहीं है और आप सो रहे हैं, तो आपके सुननेवालों का हाल भी बहुत कुछ आप ही की तरह का होगा। मैं आप से साफ कह दूं कि सुननेवालो से ज्यादा जागरूक और कोई नही है—

बिलकुल छुईमुई की तरह! सुननेवाले सबसे अधिक चेतन बैरोमीटर कहे जा सकते हैं। मंच पर खड़े होकर आप चाहे जितना हकलाए या हड़बड़ाए — लेकिन अगर आप में खुद जान है और जोश है, अगर आप महत्वपूर्ण सवाल उठा रहे हैं, और अगर आप बोलते हुए कोई समस्या हल कर रहे हैं, तो आप जनता को अपने साथ ले जायेंगे। यह सब क्या बताता है? यह बताता है कि अगर आप चाहते हैं कि जनता आपका नेतृत्व माने, तो आपमें भी वही जोश होना चाहिए जो उनमें है।

जनता के बीच काम

और अंत में, साथियो, आपकी शिक्षा के बारे में एक और बात कह दूं। इस में कोई शक नहीं कि आज आप एक सांस्कृतिक शक्ति हैं, और भविष्य में भी रहेंगे।

हमारा सोवियत देश आज एक महान देश है। हमारी पार्टी के दस लाख से ज्यादा मेंबर हैं। लेकिन दस लाख की हमारी इस पार्टी में और हमारे पूरे देश में अभी भी संस्कृति का स्तर नीचा है। इसलिए भविष्य में अपने काम के दौरान में कभी भी जनता के सामने अकड़ मत दिखाइयेगा। कभी नहीं। इस मामले में हमारी जनता बिलकुल छुईमुई है। जनता से बात करने का एक ही तरीक़ा है कि उनसे खुले तौर पर ईमानदारी से बात की जाय। उनसे बातें करते वक्त हमें यह महसूस करते रहना चाहिए कि उनमें भी हमारे ही बराबर सामान्य ज्ञान है और वे भी मसले को हल करने की उतनी ही काबिलीयत रखते हैं, जितनी कि खुद वक्ता या लेखक रखता है।

अब आप स्कूल छोड़ने वाले हैं, अतः आपसे मैंने यह कुछ शब्द कहना आवश्यक समझा

"इज़वेस्तिया", २७ जून १६२६

अपना विकास कीजिए

द्नेप्रोपेत्रोव्स्क मे नौजवान कम्युनिस्ट लीग के सक्रिय सदस्यो के सम्मेलन मे दिए गए भाषण का अश

३ मार्च १६३४

हम कोम्सोमोल के सदस्यो की कद्र इसीलिए नही करते कि वे पायोनीयरो के शब्दो मे वृद्ध बोल्शेवीको के "उत्तराधिकारी" है, बल्कि इसलिए भी कि ये "उत्तराधिकारी" हमारे देश के निर्माण मे सक्रिय हिस्सा लेते है, क्योकि वे भी देश की रचनात्मक शक्तियो के अग है। इसी कारण लेनिनवादी कोम्सोमोल पर महान जिम्मेदारिया आ जाती है। कोम्सोमोल के हर सगठन की पहली जिम्मेदारी है, जैसी आम तौर पर हर सगठन की होती है कि वह यह जाने कि ज्यादा से ज्यादा उपयोगी बनने के लिए वह अपनी शक्तियो को तेजी से किस ओर लगाए और उनका क्या उपयोग करे।

जो कमाडर एक ही समय में अपनी तमाम शक्तियो को मोर्चे पर झोक देता है, वह हमेशा अच्छा अफसर नही होता। मोर्चेबदी में हमेशा ऐसा करना जरूरी नही। एक अच्छा कमाडर वह है जो अपने आदमियो की अधिकाधिक शक्ति फैसलाकुन लडाई के लिए बचा लेता

है। एक बार कामरेड बुद्योन्नी ने गृह्-युद्ध के ज़माने में किसी व्हाइट-गार्ड कमांडर द्वारा की गई गलतो का सही ही ज़िक्र किया था। दोनो ही अज़ोव स्टेपी के पार समानांतर अपनी फौजो का नेतृत्व कर रहे थे। बुद्योन्नी अपनी फौजो को बस्तियो की ओर आगे बढा रहे थे, जहा लाल फौज के सिपाही रात में सो सकते और घोडो के लिए चारा-पानी पा सकते। दूसरी ओर दुश्मन धूप से तमतमाती सुनी हुई स्टेपी की तरफ से बढ रहा था। इस तरह वे २०० किलोमीटर से ज्यादा आगे बढ गए। बुद्योन्नी की फौजें जब अपनी मंज़िल पर पहुची तो वह थकी न थी, बल्कि मोर्चा लेने को तैयार थी। इसके बरखिलाफ, दुश्मन पूरी तरह थक चुका था अत कामरेड बुद्योन्नी ने उसे मार भगाया। मैं कहना यह चाहता हू कि हर संगठनकर्ता को चाहिए कि वह अपने काम का उचित प्रबंध करे, समय रहते हर परिस्थिति को समझ ले और अपनी समूची शक्ति, संगठन की पूरी शक्ति सिर्फ जरूरत के समय ही लगावे।

एक और मिसाल ले लीजिए कोम्सोमोल के सदस्यो में बहुत से टेकनिकल कालेजो, विश्वविद्यालयो और टेकनिकल स्कूलो के विद्यार्थी है। अक्सर इन पर शक्ति से अधिक काम लाद दिया जाता है। और अगर विद्यार्थी अपने अध्ययन, समाजी काम और आराम के टाइमटेबुल को उचित तौर पर संगठित नहीं करते, तो ग्रेजुएट होने तक उनमें से कुछ का स्वास्थ्य गिरा हुआ होगा। किसी को दिल की शिकायत होगी, किसी का गुरदा बेकार हो गया होगा और किसी का हाज़मा गडबड मिलेगा। अब यह कौन देखे कि हमारे विद्यार्थियो का जीवन उचित तौर पर संगठित हो? इस के प्रति पहली और सबसे बडी जिम्मेदारी किसकी है? कोम्सोमोल की। यह उसी का काम है। उसे यह काम देखना चाहिए। प्राइमरी स्कूलो से विश्वविद्यालयो तक उसे इस विषय पर रोज़मर्रा ध्यान देना चाहिए। सरकार की उचित

हिदायतो के पालन करने में मदद देना और विद्यार्थियों के अध्ययन और जीवन को सुसगठित करना — यह कोम्सोमोल का ही कर्तव्य है।

समाजवादी निर्माण-कार्य में लगा हुआ हमारा मजदूर राज्य पूजीवादी देशो से घिरा हुआ है, यानी हम लगातार ही दुश्मन के हमले के लिए खुले है। हमें अपने दैनिक जीवन के शातिपूर्ण कार्यों में लगे होने पर भी, एक क्षण के लिए यह वात नही भुलानी चाहिए। हम सब को चाहिए कि हम हमेशा सचेत रहें और अपने काम की जगह पर डटे रहें।

युद्ध की स्थिति में हमारी फौजो के निर्माण में सबसे ज्यादा किसका हाथ होगा? बहुत बडे पैमाने पर हमारी फौजो में कोम्सोमोल के सदस्य ही होगे। इसीलिए कोम्सोमोल के सदस्यों को विशेष रूप से सचेत रहना चाहिए। उन्हे यह हमेशा याद रखना चाहिए कि कम्युनिस्ट पार्टी की रहनुमाई में दुश्मन के हमले की स्थिति में उन्हे ही कधो से कधा भिडाकर पहले झोंके के भार को सभालना होगा। प्रसिद्ध है कि दुश्मन के पहले हमले सब से ज्यादा हिंसात्मक होते है, इसलिए कोम्सोमोल के सदस्यो और उनको मानने वाले युवको का यह कर्तव्य हो जाता है कि वे फ़ौजी टेकनीक का पूरा पूरा ज्ञान हासिल करे। जहा तक सुरक्षा-कार्यवाही का सबध है, कामरेड वोरोशीलोव ने कोम्सोमोल के लिए बिल्कुल स्पष्ट और ठोस काम बताए है। उनको सभी जानते है। उन्हें पूरा करना है। यहा उनको दोहराने की जरूरत नही है।

यहा पर कोम्सोमोल कार्यक्रम के उस बहुत ही महत्वपूर्ण अग, शारीरिक व्यायाम की ओर आपका ध्यान खीचना जरूरी है। खेल-कूद अच्छी चीज़ है। उससे आपका निर्माण होता है। लेकिन वह जितना भी है, जीवन में उसका स्थान प्रथम नही है। अत खेल-कूद को जीवन का लक्ष्य बना लेने, उसे सिर्फ रिकार्ड तोडने का रूप दे देने

से कुछ नही होगा। हम चाहते है कि लोगो का वहुमुखी विकास हो। हम चाहते है कि वे अच्छी तरह दौड सके, तैर सके, उनकी चाल फुर्तीली हो, और उनके शरीर का हर अग सुगठित और सुघड हो। एक शब्द में कहें, तो हम चाहते हैं कि वे प्रकृत और स्वस्थ हो, और श्रम और सुरक्षा के लिए सदा तत्पर रहे। हम चाहते हैं कि शारीरिक विकास के साथ ही उनका मानसिक विकास भी हो।

कामरेड वोरोशीलोव और मै अनेक फौजी स्कूलों में गए और उन्होंने विशेषत इन वातो की तरफ़ ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने कहा कि हम लोगो को सिर्फ रिकार्ड तोडने, खेल-कूद सिर्फ़ खेल-कूद के लिए, वाले रवैये से वचना चाहिए। खेल-कूद कम्युनिस्ट शिक्षा की आम समस्याओ के मातहत होना चाहिए, क्योकि हम सिर्फ खिलाडियो की ट्रेनिग और उनका विकास नही कर रहे है। हम लोग ऐसे नागरिको का विकास कर रहे है जो सोवियत देश के निर्माण में लगें — ऐसे नागरिक, जिनका पाचन और वाहें ही मजवूत नही, वल्कि जिनमें राजनैतिक चेतना और सगठन की काविलीयत है। इसलिए, जहा हम शारीरिक व्यायाम के आदोलन में लाखो नए मेहनतकश युवको को लायेंगे और अपने देश में खेल-कूद को ऊचे से ऊचे स्तर पर ले जाने की कोशिश करेगे, वहा कोम्सोमोल को यह भी ध्यान रखना है कि हमारे खिलाडियो का राजनैतिक मसलो और सार्वजनिक सवालो पर स्पष्ट और निश्चित मत हो।

मैं चाहूगा कि कोम्सोमोल के सदस्य मुझे सही तौर पर समझ ले। मै नही चाहता कि वे यह कल्पना करे कि मै उनके जोश को ठढा करना चाहता हू। मै चाहता हू कि वे समझ ले कि जीवन के हर क्षेत्र में यह कितना महत्वपूर्ण है कि चीजें सही तौर पर और वोल्शेवीक ढग से सगठित की जायें।

विशेषत मै चाहता हू कि नौजवानो के वीच भाईचारे की

भावना के बारे में कुछ कहूं। तरुणाई में मैत्री भावना प्रबल होती है। इसी अवस्था में वे साथियो को सामूहिक सहायता देने के लिए सबसे ज्यादा तैयार होते है। कभी ही — सौ मे दो या तीन बार — ऐसा होगा कि एक तरुण अपने जरूरतमद साथी को दगा दे। युद्ध के मोर्चे पर भाईचारे की यह भावना असाधारण महत्व की हो जाती है। फौज की वही टुकडी लडने में असाधारण उच्च कोटि की होगी, जिसका हर आदमी अपने बगलवाले साथी की दृढता पर भरोसा करता है। तब उसे दुश्मन की गोलाबारी से कोई घबराहट न होगी। और यदि हुई भी, तो वह बहुत कम हो जायेगी। ये सब बाते सिपाहियो में एकता और अनुशासन की भावना को मजबूत करती है। नौजवानो में भाईचारा और वर्ग-मैत्री की भावनाओ का हर तरह से विकास करना चाहिए। भाईचारे की भावना एक विशिष्ट समाजवादी गुण है और हर जगह, विशेषकर वर्ग-सघर्ष के दौरान में इसकी जरूरत है।

बहुत से लोग भाईचारे की भावना को अर्थहीन, शब्द-मात्र समझने के आदी हो गए है। अगर इस भावना का उचित विकास किया जाय, अगर कोम्सोमोल के सदस्यो और उन तरुणो में भी, जो कोम्सोमोल के सदस्य नही है, इस भावना का विकास किया जाय, और साथियो तथा दोस्तो से मिलकर काम करने मे हासिल होनेवाली खुशी का महत्व सब को समझाया जाय, कठिनाइयो पर विजय प्राप्त करने और कार्य-क्षमता बढाने के उपाय निकाले जायें, फुरसत के समय साथ-साथ रहने, शारीरिक व्यायाम और खेल-कूद में भाग लेने आदि का प्रबध किया जाय, तो यह दोस्ती समाजवादी प्रतियोगिता के लिए एक बहुमूल्य देन होगी और इसके शुभ परिणाम होगे।

हमारे कोम्सोमोल के सदस्य असाधारणतया अच्छे और बहुत ही दिलचस्प दौर से गुजर रहे है। मानव इतिहास में तरुणो की किसी भी पीढी ने इस तरह का अनुभव नही पाया।

सच तो यह है कि एक ऐसे काल में, जब महान ऐतिहासिक उथल-पुथल न हो रहे हो, लोग ज़रा भी पगति किए बिना सत्तर बरस तक जी सकते है। जब ज़िदगी में कोई महान परिवर्तन न हो रहे हो, तब एक आदमी पैदा होकर एक ही घर में बूढा हो सकता है और वहीं मर भी सकता है।

आज हम एक महान ऐतिहासिक उथल-पुथल के युग में रह रहे है। हमारी ही आखो के सामने अब भी ऐसे राज्य है जहा सामतवाद के अवशेष प्रचुर मात्रा में मौजूद है। इसी ज़माने में रूस, जो कभी युरोप का सबसे बर्बर देश और राष्ट्रो का जेलखाना माना जाता था, समाजवाद की ओर पूरी शक्ति से बढ रहा है।

इतिहास में इससे ज़्यादा दिलचस्प युग कब रहा है? इतिहास में हमारे ज़माने के अलावा कब इतना शौर्य और मानवीय नाटक देखने को मिला है?

, यद्यपि फ्रासीसी क्राति बडी घटनापूर्ण भी थी, तो भी वह हमारी क्राति के समान शौर्यपूर्ण एव नाटकीय नही थी। हमारी क्राति और उस क्राति का कोई मुकाबला नही। यद्यपि वह क्राति अपने काल के लिए बहुत ही बडी प्रगति थी, फिर भी वह थी बुर्जुआ क्राति ही। हमारी समाजवादी क्राति ने इतिहास में पहली बार सबसे ज़्यादा प्रगतिशील, अगुआ-वर्ग — मजदूर-वर्ग — के हितो के लिए सघर्ष किया। और इस तरह वह समूची मेहनतकश मानवता के लिए सघर्ष-शील है। कोम्सोमोल के सदस्यो, हमारे तरुण युवको को मै सलाह दूगा कि वे गोर्की के "तूफानी पछी" (स्टार्मी पेट्रल) को पढें जो लाजवाब तरीक़े से पुराने रूस के बढे हुए लोगो की क्रातिकारी मनोदिशाओ को चित्रित करता है।

जो समाजवादी आदोलन में अपना जीवन लगा देता है, वह ज़िदगी बदलता है, लडता है, प्राचीन को नष्ट करता है और नवीन

का निर्माण करता है। सोवियत समाज, जिसमें हम रहते है, सभी को—तरुण मजदूर और किसान—को अपनी तमाम योग्यताओ को हद दरजे तक विकसित करने का अवसर देता है। यह कहने की जरूरत नही है कि मानव इतिहास में वर्तमान युग से अधिक दिलचस्प और कोई युग नही हुआ, क्योकि अक्तूबर क्रांति से पहले आम लोग रोटी के टुकडो के लिए लडते थे और कुछ अमीर लोग करोडो मेहनतकशो पर प्रभुत्व जमाए रहते थे।

इसमें सदेह नही कि जल्दी ही हमारे सघर्ष के, एव हमारे देश में हो रहे पुनर्निर्माण के आधार पर महत्वपूर्ण कला की रचना होने लगेगी। इस में सदेह नही कि हमारे क्रातिकारी युग की महान सफलताओ में ही कलाकारो को अपनी कला के लिए शानदार विषय मिलने लगेंगे। सचमुच ऐसे युग में रहना बहुत ही खुशी की बात है। अपनी ५८ वर्ष की आयु के बावजूद इस युग में रहने के कारण मै अपने को बहुत भाग्यवान समझता हू। हम जानते है कि कम्युनिज्म आयेगा। तब जीवन बहुत ही दिलचस्प और शानदार होगा। लेकिन सबसे अच्छा अवसर अब है जब कि वर्ग-सघर्प चल रहा है, जब आप खुद इस सघर्ष में हिस्सा ले सकते है और यह जानते है कि इस सघर्ष में विजयी मजदूर-वर्ग ही होगा।

यह सब हमारे युवको को समाजवादी प्रयासो में नया कमाल दिखाने के लिए उत्साहित करेगा। हम देखते है कि हर दिन लेनिनवादी कोम्सोमोल के मानस-पुत्र जिनका लालन-पालन पार्टी द्वारा हुआ है, समाजवादी उद्देश्य के प्रति अपनी लगन की महानता प्रदर्शित करते रहते है—पार्टी के आह्वान पर वे किस तरह सस्कृति और टेकनीक के क्षेत्रो में विजय पा रहे है, खानो से खनिज पदार्थ निकाल रहे है, भूगर्भ में रेलवे का निर्माण कर रहे है, बादलो को पार कर, क्षितिज तक धावा मारते है, दुरूह आर्कटिक के खिलाफ साहसपूर्ण

संघर्ष चला रहे हैं। इस तरह वे सोवियत वीरो की पहली पंक्ति में अपना स्थान प्राप्त कर रहे है। कोम्सोमोल के रूप में हमारी पार्टी और सरकार के पास देश की तरुण पीढी के प्यार, लगन और श्रद्धा की अक्षय निधि है। हम प्रौढ बोल्शेविको का सही विश्वास है कि कोम्सोमोल के सदस्य हमारे सोवियत देश के नव-निर्माता है।

अगर आप सच्चे कम्युनिस्ट है, तो आप अपने जीवन के अत तक तरुण बने रहेगे।

मैंने सच्चा कम्युनिस्ट क्यो कहा? कम्युनिज्म लोगो को इस तरह उत्साहित क्यो करता है? एक सच्चे कम्युनिस्ट की व्यक्तिगत परेशानिया उसके दिमाग में पहला स्थान ही नही पाती। अगर परिवार में कोई दुखद घटना हो जाती है, तो यह दुखद अवश्य है, लेकिन मैं जानता हू कि उससे समाजवाद को हानि नही होगी, इसलिए जो काम सामने है उसको भी हानि न होनी चाहिए। यह कहने की कोई जरूरत नही कि अगर आप अपने घरेलू मामलो से ही परेशान रहते है, अगर आप हमेशा अपने ही बारे में और अपनी फेकला के सबध में ही सोचते रहते है, तो आप सच्चे कम्युनिस्ट नही हो सकते। लेकिन अगर आप सचमुच सक्रिय कार्य में लग जायें, रचनात्मक कार्यो में सक्रिय भाग लेने लगें तो अक्सर ऐसा होगा कि आप जीवन की छोटी छोटी बातों को, व्यक्तिगत परेशानियो को भूल जायेंगे।

एक दृढ कम्युनिस्ट बनने के लिए पहली जरुरत है कि हर मसले पर आपका दृढ कम्युनिस्ट दृष्टिकोण हो। कम्युनिस्ट नजरिया हमें हर समस्या को होशियारी से समझने, और हर परिस्थिति पर सही दृष्टि बनाने की समझ देता है। सर्वहारा क्राति के लडाकुओ के लिए कम्युनिस्ट दृष्टिकोण वैसे ही है, जैसे एक खगोल-शास्त्री के लिए तेज दूरबीन, या विज्ञानशाला में खोज करनेवाले के लिए खुर्दबीन। कम्युनिस्ट नजरिया एक राजनैतिक कार्यकर्ता को, सार्वजनिक मामलो

3—51

में सक्रिय रहनेवाले व्यक्ति को, अपने आसपास की स्थिति को सही और विशद रूप में समझने, जनता को सगठित करने और सघर्ष में उनका नेतृत्व करने, तथा भविष्य की स्थिति को सही तौर पर आकने-समझने की योग्यता देता है। यह सब मिलकर व्यक्ति को शक्ति देते है कि वह छोटी-छोटी निजी दुर्भाग्यताओ के असर मे ही न अछूता हो जाय, बल्कि बडी विपदाओ के प्रति भी उसका नजरिया ऐसा ही हो जाय। अगर आप का जीवन समाज और सामूहिकता की भावना से परिचालित होता है, अगर समाज की भलाई ही आपकी सब से बडी चिता है, अगर आपकी आशाओ और हितो में मेल है—तो बूढे कम्युनिस्ट होने पर भी आप वास्तव में तरुण रहेगे।

गृह-युद्ध और समाजवादी पुनर्निर्माण के कालो को ले लीजिए। उन दिनो हमारी तमाम मेहनतकश जनता ने, जिसमें बूढे भी शामिल है, शौर्य और उत्साह की आश्चर्यजनक मिसालें पेश की, लाजवाब कमाल दिखाये और वह अब भी दिखा रही है। हमारी जगह लेनेवाले कोम्सोमोल के सदस्य, तरुण मजदूर और किसान सभी को, यह पूरी तरह समझ लेना है। प्रौढ बोल्शेविको से, सघर्षो में से इस्पात बनकर निकले मजदूरो से उन्हे सामूहिकता की आदते लेनी चाहिए, उनसे सीखें कि अपने काम में प्राण और मन कैसे लगाया जाय और कैसे रोजमर्रा घटनाओ को समझा जाय और उन पर कैसे अन्तर्निहित सदर्भो को समझा जाय।

कोम्सोमोल के सदस्य, विशेषकर वे जो सब से ज्यादा सक्रिय है, अक्सर शिकायत करते है कि उन्हे पढने और बुद्धि विकास करने का समय नही मिलता। मै भी व्यस्त आदमी हूं। लेकिन मै हर दिन पढने के लिये समय लगाता हूं। मै हर रोज कम से कम ८-१० पन्ने मार्क्स-वादी साहित्य पढता हूं, और साथ-साथ नये से नये उपन्यास भी।

कोम्सोमोल के सदस्य और विशेपत वे जो सबसे ज्यादा सक्रिय है,

संख्त काम करते हैं। उनको बहुत काम करना भी है। तो भी यह उनका कर्तव्य है कि वे अपने को हर तरह से विकसित करें।

समाजवाद के निर्माण के लिए शिक्षित लोगों की आवश्यकता है। लेकिन वे, जो सिर्फ़ पढ़ते रहते हैं, शिक्षित नहीं समझे जा सकते। शिक्षित वे हैं, जो भौतिकवादी दर्शन का पूर्ण अध्ययन करते हैं, विज्ञान पर अधिकार प्राप्त करते हैं; जो पढ़ा है उसपर मनन करते हैं और यह समझते हैं कि क्रांतिकारी विचारधारा को क्रांतिकारी अमल में कैसे लाया जाय।

इसमें संदेह नहीं कि यदि कोम्सोमोल के सदस्य अपने समय का उचित प्रयोग करें, तो उन्हें सैद्धांतिक अध्ययन के लिए भी काफ़ी अवसर मिल सकेगा।

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा" २४ मई १९३४

"उचितेल्स्काया गजेता" अखबार के सपादक मडल द्वारा आयोजित शहरो और गावो के सर्वश्रेष्ठ स्कूल-मास्टरो के सम्मेलन मे दिया गया भाषण

२८ दिसबर १९३८

मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धातो का पूरा ज्ञान कैसे प्राप्त किया जाय

साथियो, अपने देश में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के क्रातिकारी सिद्धातो और वोल्शेविक पार्टी के इतिहास के अध्ययन के वारे में वहुत कुछ कहा जा रहा है। मुख्य वात इन सिद्धातो के तत्वो को समझना, उन्हे अमल में लाना सीखना और अपनी पार्टी के क्रातिकारी सघर्ष के अनुभव को ग्रहण करना है।

मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धात, विश्वास अथवा मत मात्र नही है। वह तो कर्म के लिए पथ-प्रदर्शक है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के वारे में वातें करते हुए कुछ लोग कहते है—"कितना गूढ साहित्य है", "वहुत ही गभीर", इत्यादि। लेकिन हमें साफ-साफ यह समझना चाहिए कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद की मुख्य वात उसके शब्द नही, वल्कि उसका तत्व है, उसकी क्रातिकारी आत्मा है।

जब हम कहते हैं कि "मार्क्सवाद-लेनिनवाद का सर्वांगीण ज्ञान प्राप्त करो," तो इसका मतलब क्या है? इस बात को हम किस तरह समझें? क्या इसका मतलब है कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद का ज्ञान बने-बनाए फ़ार्मूलों और नतीजों से हासिल करो? या इसका मतलब है कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के तत्व का ज्ञान हासिल करो और इन सिद्धांतों को जीवन में — सामाजिक, राजनैतिक और व्यक्तिगत जीवन में — पथ-प्रदर्शक के रूप में लागू करो! यह दूसरा मतलब ज्यादा सच और ज्यादा सही है, क्योंकि यह मार्क्सवाद-लेनिनवाद का बुनियादी स्वरूप है। हम जब "मार्क्सवाद-लेनिनवाद के पूर्ण ज्ञान" की बात करते हैं, तो उसका मतलब यही है कि इन सिद्धांतों के सक्रिय रूप को समझा जाय।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद को कोई भी क़रीब-क़रीब सही रट सकता है। लेकिन उसके सार-तत्व को ग्रहण करना और उसे अमल में लागू करना सीखना ज्यादा मुश्किल है...

मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन केवल अध्ययन के लिए नहीं करना चाहिए। मार्क्सवाद-लेनिनवाद का ज्ञान केवल पुस्तकीय ही नहीं करना चाहिए। पुराने जमाने में जैसे प्रश्नोत्तरी का अध्ययन होता था, वैसे मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन नहीं हो सकता। हम मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन एक विधान के रूप में करते हैं, एक ऐसे साधन के रूप में जिसकी सहायता से हम अपने राजनैतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत व्यवहार को सही तौर से निश्चित कर सकते हैं। हमारी दृष्टि में अमली जिंदगी का ही सर्वोपरि महत्व है।

अब हम सब के सामने यह समस्या है कि मार्क्सवाद और लेनिनवाद को अमल में ज्यादा सही तौर से लागू करना कैसे सीखें? सबसे पहले, आम रूपरेखा के रूप में, हमें मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सार-तत्व को जानना चाहिए। हमें कम से कम कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास की मोटी-मोटी रूपरेखा मालूम होनी चाहिए। जब आप पार्टी का इतिहास पढ़ें तो इस

वात पर ध्यान दें कि भिन्न भिन्न परिस्थितियो में कुछ अमली समस्याओं को वोल्शेविको ने किस तरह हल किया। उन्होने उन समस्याओ का वही हल क्यो निकाला, और कुछ क्यो नही। मिसाल के तौर पर हम लोगो ने वुलीगिन दूमा का वायकाट क्यो किया? इस फैसले के पीछे कौन उद्देश्य थे? और फिर वाद में, जव राजनैतिक स्थिति हमारे पक्ष में उतनी न थी, हमने क्यो दूसरी, तीसरी और चौथी दूमा के चुनाव में हिस्सा लिया? क्यो? इन समस्याओ (और पार्टी के इतिहास में ऐसी अनेक समस्याए आईं, क्योकि अनेक सघर्ष हुए थे) के विश्लेषण से यह मालूम हो सकेगा कि मार्क्सवादी-लेनिनवादी विधान कैसे लागू करना चाहिए। और कैसे भिन्न भिन्न राजनैतिक परिस्थितियो में किन्ही समस्याओ का हल ढूढना चाहिए। अथवा आजकी समस्याओ का कैसे हल निकालना चाहिए।

यह कहने की जरूरत नही कि इस वात का सदा ध्यान रक्खा जाय कि क्या क्या परिवर्तन हो चुके है और कौन कौन सी नई हालते पैदा हो गई है। इसी कारण मार्क्सवाद-लेनिनवाद के अध्ययन में यह सब से ज्यादा महत्वपूर्ण है कि अपने को आज की समस्याओ के हल की कसौटी पर परखा जाय। रोजमर्रा की जिदगी से कुछ मिसाले हम ले ले। मान लीजिए, एक मास्टरनी ने अपने पति से सवध तोड लिया है। इस तरह के मामले में मार्क्सवादी दृष्टिकोण से क्या रुख होना चाहिए? क्या करना चाहिए? इस तरह के सवाल के प्रति भी सही रुख होना चाहिए। इस पर मार्क्सवादी ढग से वहस करनी चाहिए और इसका हल भी मार्क्सवादी तरीके पर होना चाहिए। सव से सीधा रुख तो यह है कि यह व्यक्तिगत मामला है और इसका राजनीति से कोई वास्ता नही (जाब्ता तौर पर यह लगभग सही रवैया होगा)। लेकिन जिस हद तक हर आदमी यह वात जान जाता है, स्कूल के वच्चो में वाते होने लगती है, गाव में फुसफुस फैलने लगती है और मास्टरनी का प्रभाव कमजोर होने लगता है, उस हद तक इस मसले

पर एक बुद्धिमत्तापूर्ण स्पष्टीकरण जरूरी है। कभी-कभी बिलकुल घरेलू मामला भी सामाजिक और राजनैतिक समस्या का रूप ले लेता है। हर दिन की जिंदगी अनेक तरीको की असख्य समस्याओ से भरी पडी है। मार्क्सवादी की कसौटी यह है कि वह इन मामलो मे मार्क्सवादी दृष्टिकोण से सही हल निकाल पाता है या नही और सही रुख बना लेता है या नही।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद समस्याओ के सभावित हल की कुजी है। वह समस्याओ के ज्यादा सही हल को सभव कर देता है, उनको हल नही कर देता। हर मौके के लिए यह बना-बनाया नुस्खा नही है। अहम मसलो को हल करने के दौरान में ही यह पता चलेगा कि सच्चा बोल्शेविक-मार्क्सवादी कौन है और कौन किताबी पाडित्य-प्रदर्शक है?

निस्सदेह ऐसे व्यक्ति है जिन्होने मार्क्सवाद-लेनिनवाद का पूर्ण ज्ञान हासिल किया है और जो सिद्धातो को अमल मे भी ला सकते है। साथ ही ऐसे आदमी भी है जिनकी खोपडिया आलू के बोरो की तरह किताबी ज्ञान मे भर गई है, लेकिन वह अपने ज्ञान को अमल मे लागू करने के योग्य नहीं है। ऐसे लोग आपको आदि से अत तक सब कुछ लेक्चर में बता देंगे। लेकिन अगर आप अपने स्कूल के किसी वाक़ए को बताए — मिसाल के तौर पर मान लीजिए कि आपके स्कूल में पढने वाले एक लडके को उसके पिता ने पीट दिया — और आप पूछें कि सामाजिक दृष्टि से इस बारे में क्या रुख अपनाना चाहिए, तो ऐसे लोग पूरी तरह उलझन में पड जाते है। और अगर वह कोई सुझाव देंगे तो वह अवसरवादिता से पूर्ण होगा, जिसका मार्क्सवाद-लेनिनवाद से कोई सबध न होगा — चाहे वह अनेक उद्धरण ही क्यो न दे दें। अवसरवाद हमेशा ही मार्क्सवाद-लेनिनवाद से दो-टूक इनकारी नही करता। कभी-कभी यह किताबी-पन, विचारो की रूढिवादिता में भी प्रदर्शित होता है।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सैद्धान्तिक सार के आधार पर अमली समस्याओ का हल खोजना ही बोल्शेविज्म की शिक्षा है।

किसी किताब का निरा अध्ययन सिर्फ उसका अध्ययन भर ही है। इससे अधिक और कुछ नही। और जिस तरह बच्चो के लिए स्कूल सिर्फ स्कूल है, उनकी पूरी जिंदगी नही, उसी तरह शिक्षा-सस्थाओ में, अध्ययन-मण्डलो मे भी स्वतत्र तौर पर मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन सिर्फ अध्ययन ही है। इस तरह के अध्ययन से एक व्यक्ति को मार्क्सवाद-लेनिनवाद का किताबी ज्ञान हो जाता है, लेकिन जब वह राजनैतिक जीवन में, अमली अखाडे मे उतरता है और ऐसा सचेतन रूप में करता है, तो दूसरी बात है। रोज़-ब-रोज़ ज़िंदगी में आनेवाली समस्याओ के अमली हल ढूढ लेने में ही मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अनुभव प्राप्त होता है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद की मुख्य ट्रेनिग इसी से मिलती है और इसी से सच्चे मार्क्सवादी-लेनिनवादी बनते है।

विचार-विमर्ष द्वारा या भाषण सुनकर किसी को मार्क्सवाद की मुख्य शिक्षा नही मिलती। यह तो सिर्फ सहायक मात्र है।

आपकी मुख्य शिक्षा तब होगी जब आप लोगो से तर्क करेगे, जब उनसे बाते करेगे, उदाहरण के लिए जब आप एक अन्यमनस्क शिष्य के बारे में कोई फैसला करे कि उसको नबर कम दिए जाए, निकाल दिया जाय या उसके साथ मुलायम रुख अपनाया जाय।

इसी तरह की समस्याओ के हल के दौरान में आपको मार्क्सवाद-लेनिनवाद की मुख्य शिक्षा मिलेगी।

जिस तरह एक कारखाने मे एक इजीनियर का काम है कि वह अपनी टेकनिकल शिक्षा को अमल में लाए और अनुभव एकत्र करे, जिस तरह एक शिक्षक का काम है कि अपने ज्ञान को फौरी तरह से अपने स्कूल के काम में लाए, उसी तरह मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धातो और अमल की अटूट एकता है।

अब आप यह समझ गए होंगे कि मैं किस बात पर बल दे रहा था। मैं इस बात को स्पष्ट करना चाहता हूँ कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए विशेष फार्मूले और नतीजे रट लेना ही काफी नही है, और न ही यह काफी है कि उसके सार को ही जज्ब कर लिया जाय। मार्क्सवाद-लेनिनवाद का सच्चा ज्ञान प्राप्त करने के लिए, इसके साथ, असली समस्याओ के हल के लिए इन विचारो को लागू करना सीखना चाहिए, अपने अनुभवो से उस विचार-धारा को विकसित करके और भी आगे बढाया जाय। यह सबसे मुश्किल काम है अगर आप मार्क्सवादी है तो ज़िदगी में आपको हर स्थिति का ठोस अध्ययन करना है। और यह कहने की जरूरत नही कि आपसी विचार-विमर्ष उसको और अच्छी तरह समझने में सहायक होगा। जब एक चीज पढते है तो आप एक तरह से उसे समझेंगे। शायद आप उसे तीन दृष्टियो से देख ले, लेकिन चौथी दृष्टि नही होगी। अतत हो सकता है कि आप चारो तरफ से समस्या को देख रहे हो और आपको पता लगे कि यह वर्गाकार नही, वरन् घनाकार है और इसकी छ भुजाए है। इसलिए आप जब दूसरो से किसी मसले पर बहस करते है, तो आप ज्यादा उत्सुक और ज्यादा ज्ञानी हो जाते है।

आप कहते है कि आपको विचार-विमर्ष की जरूरत है। ठीक है। आपको विचार-विमर्ष से रोक कौन रहा है? ५ या १० आदमी इकट्ठे हो जाइए। क्या किसी सवाल पर पूरी बहस के लिए ५ आदमी काफी नही है? आपको कौन रोकता है? और यदि आप किसी समस्या पर लेख लिखें तो आपसे मैं स्पष्ट कह दू कि आप उसके बारे में सुनकर जितना जान पायेंगे, उससे ५ गुना ज्यादा आपको लिखकर मालूम होगा। क्योकि एक लेख लिखते वक्त आपको हर शब्द और हर विचार पर सोचना पडता है। लेख लिखने के लिए आपको लेखन-सामग्री के स्रोतो तक जाना होता है। जब आप लेख लिखते है, तो

समस्याओं की गहराई में कही अधिक जाना पड़ता है। एक भाषण से आप कितना लाभ उठाते है, यह कई चीज़ो पर निर्भर है — भाषण देने वाला व्यक्ति कैसा है, आपकी मानसिक स्थिति कैसी है। भाषण के समय हो सकता है आप अपने पास वाले से बाते करने लगें। आप खुद जानते है कि भाषणो में एक हिस्सा तो उपयोगी सूचना होती है, और तीन हिस्से पानी होता है। (ज़ोरदार हसी) दुर्भाग्य यह है कि हम नही जानते कि पानी कैसे निकाल फेंका जाय। और उसको निकालने की ज़रूरत तो होती है। कुछ भी हो आप इसको बिलकुल निकाल नही सकते। यह मत समझियेगा कि मै भाषणो के ख़िलाफ़ हू। यह कहने की ज़रूरत नही कि भाषण शिक्षित करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। मै तो सिर्फ यह कह रहा हू कि आपको स्वतत्र काम करने के लिए प्रोत्साहित करू। फिर तो आप खुद भाषणो में उपस्थित होने, उनको ध्यान से सुनने के लिए मजबूर होगे।

अध्ययन-मण्डलो को क्या समझना चाहिए? "मण्डल" सकुचितता का द्योतक भी हो सकता है। तो क्या उनके द्वारा सामूहिक विचार-विमर्श की सभावना नही? सभावना अवश्य है। सामूहिक विचार-विमर्श और व्यक्तिगत अध्ययन में, जो अध्ययन का मुख्य तरीका है, समन्वय करना चाहिए। घर पर तैयारी कीजिए। लेख "सर्किल" या सभा में पढ दीजिए। फिर उस पर आम बहस कर डालिए। बनावटी बहस की ज़रूरत नही है। ज़रूरत है ऐसे विचार-विमर्श की, जिसमें उठाए गए प्रश्नो पर हर आदमी अपनी सच्ची राय व्यक्त करता है, और जो वह नही समझता है उसे कहने में डरता नही। अगर आपके लेख में कही पर ज़रा सी भी आपकी सच्ची राय आ गई होगी, तो मुझे पूरा विश्वास है कि बहुत गरमागरम बहस होगी। ऐसी बहस, यदि वह पुश्किन पर भी हो तो मार्क्सवाद-लेनिनवाद का शानदार पाठ होगी।

जब आप तर्क करे तो आप अपने ही शब्दो, अपनी ही भाषा

में बहस करे। लोगों को तर्क करना चाहिए — बनावटी तौर पर नहीं, बल्कि बुनियादी सिद्धांतों के बारे में, यानी इस तरह से बहस करनी चाहिए कि यदि "झगडा" न हो जाय, तो कम से कम एक गंभीर, गरमागरम तकरार तो हो ही जाय। समस्या को इस तरह पेश करना चाहिए। तब लोग मण्डलों में आयेंगे और अध्ययन करेंगे। मार्क्सवाद-लेनिनवाद की समझ पैदा करने का यह सबसे अच्छा तरीका है।

मुझे पूरा विश्वास है कि आपका किताबी ज्ञान मुझ से कहीं ज्यादा है। मुझे इस बात में भी संदेह नहीं कि जहां तक किताबों का मामला है, अगर मैं आपके साथ इम्तहान में बैठूं तो मैं फेल हो जाऊंगा। लेकिन जहां तक मसलों के प्रति मार्क्सवादी दृष्टिकोण अपनाने का सवाल है, निस्सन्देह मैं आप से कहीं ज्यादा जल्दी और कहीं सही नीति निर्धारित कर सकूंगा, क्योंकि दीर्घकालीन अनुभव और सैद्धांतिक बहसों के कारण वस्तुओं को परख सकने की मेरी दृष्टि बहुत परिपक्व हो गई है। ग़लत दृष्टिकोण मुझे फौरन खटक जायेगा। सैद्धांतिक बहसों और संघर्षों के दौरान में इस तरह एक नयी समझ विकसित हो गई है — ऐसी समझ जिसने मुझे सावधान रहना सिखाया है। इसलिए विचार-विमर्श से डरने की कोई जरूरत नहीं, उल्टे आपको चाहिए कि लोगों को उसकी आदत डालें। अपनी विचारधारा और भाषा को मांजने का यही एक तरीका है। जब आपको यह मालूम होगा कि आपकी हर ग़लत धारणा और असत्य परिणाम पर बहस होगी, तो आप सही हल निकालने के लिए अधिक विस्तार से विषय को जानना शुरू करेंगे।

इसलिए यदि आप मार्क्सवाद-लेनिनवाद को समझना चाहते हैं और सैद्धांतिक पांडित्य हासिल करना चाहते हैं, तो स्वतंत्र अध्ययन के आधार पर भाषण, लेख और बहसें इस काम में अपार सहायक साबित होंगी। मार्क्सवाद-लेनिनवाद का पांडित्य हासिल करने में स्वतंत्र अध्ययन मुख्य साधन है।

अध्यापको का मुख्य काम — सोशलिस्ट समाज के नागरिक — नए मानव का निर्माण करना है

हो सकता है, इस विषय पर कल किसी ने कुछ कहा हो। लेकिन आज किसी ने भी बच्चो के बारे में, उनके तथा आपके सबंध के बारे मे चर्चा नही की। एक साथी ने चलते-चलते कहा था — "मजदूरो के सामूहिक निवास-स्थानो में प्रौढ लोग बारी-बारी से बच्चो को ताकते है कि कही वे ज्यादा शोरगुल तो नही कर रहे।" यही तो है न?

क्या आप चाहते है कि बच्चे कोई पैंतालीस वर्ष के साधारण कूपमण्डूक ही रहे और वे अजीर्ण रोग के शिकार प्रौढो का सा व्यवहार करे? या आप चाहते है कि बच्चे बिलकुल आपकी, प्रौढो की प्रतिमूर्ति हो? जैसा आप जानते है, बच्चो में पहल बहुत होती है। अगर मै अध्यापक होऊ और यह देखू कि मेरे बच्चे किसी ऐसी शैतानी पर आमादा है जो साहसपूर्ण भी है, तो मै जरूर कोई ऐसा रास्ता निकालूगा जिससे उन्हे इस काम में बढावा मिले। शैतानी के लिए थोडी डॉट पिला दूगा, लेकिन बस, इससे ज्यादा कुछ न करूगा। अलबत्ता शैतानी और शैतानी में भेद करना होगा।

मुझसे अगर कोई पूछे कि अध्यापक के लिए इस समय सबसे महत्वपूर्ण बात क्या है, तो मै कहूगा कि नए इन्सान बनाना। (अक्सर हम यह बात कहते है और मै कोई नयी बात नही कह रहा हू।) हमारे देश में नया समाजवादी इन्सान निर्माण के दौर से गुजर रहा है। इस नए इन्सान में अच्छे से अच्छे मानवीय गुणो का समावेश होना चाहिए, नया समाजवादी मनुष्य मानवीय भावनाओ से रहित न होगा। आखिर आदमी आदमी ही है। हमें इसी से शुरू करना चाहिए।

वह कौन से मानवीय गुण है जिन्हे अपनाने की कोशिश करनी

चाहिए? उनमें से पहला है प्यार, अपनी जनता के लिए प्यार, मेहनत-कश जनता के लिए प्यार। मनुष्य को मनुष्य से स्नेह करना चाहिए। अगर वह ऐसा करेगा तो उसका जीवन बेहतर हो जायगा, आनंदमय हो जायगा, क्योंकि मानवमात्र से घृणा करने वाले प्राणी से ज्यादा दुःखी कोई नहीं हो सकता। मनुष्य-द्रोही से अधिक बुरा कोई नहीं हो सकता।

दूसरा — ईमानदारी। बच्चों को ईमानदार होना सिखाओ! मेरी राय में बच्चों को ईमानदारी सिखाने के लिए अध्यापक को लगातार हर संभव तरीक़े अपनाने चाहिएं। उनको सिखाइए कि वह झूठ न बोलें, धोखा न दें, बल्कि ईमानदार बनें।

तीसरा — साहस। समाजवादी मानव, श्रमशील मानव सारे विश्व को जानना चाहता है। वह न सिर्फ़ दुनिया को जानना चाहता है, बल्कि उसे आगे ले जाने के लिए भी अपना मस्तिष्क लगाना चाहता है।

चौथा — भाईचारेपूर्ण सामूहिक प्रवृत्ति। हमें भाईचारे और सामू-हिकता की भावना की आवश्यकता है। इसकी आवश्यकता इसलिए भी है कि हम पूंजीवादी देशों से घिरे हुए हैं, क्योंकि हमारा समाजवादी देश सुनियोजित रूप से बदनाम किया जा रहा है, और हर पूंजीवा-दी उस सुनहरे अवसर की ताक में है कि हमें कब कुचल सके। खैर, उन्हें अवसर कभी नहीं मिलेगा। लेकिन उसका मतलब यह जरूर है कि सोवियत यूनियन की सुरक्षा के लिये फ़ौलादी फ़ौज की जरूरत है। सोवियत समाजवादी देश और भी मजबूत होगा, यदि बचपन से ही, स्कूलों में सोवियत जनों में भाईचारे और सामूहिकता की प्रवृत्ति के विकास की ओर ध्यान दिया जाय। ऐसा व्यक्ति यदि लाल फ़ौज में या मोर्चे पर जायगा तो वह फ़ौजी सामूहिक जीवन में जल्दी खप सकेगा। फ़ौज में आने से पहले ही वह समाजवादी पितृ-भूमि के स्नेह पाश में पूर्णतया बंध चुका होगा।

पांचवां — काम से प्यार। आदमी को सिर्फ काम से स्नेह ही नही होना चाहिए, लेकिन उसको काम के प्रति अपने रुख में भी ईमानदार होना चाहिए। उसके दिमाग में यह सुनिश्चित विचार होना चाहिए कि जो आदमी बिना काम के रहता और खाता है, वह दूसरो के काम पर जीता है। आपके सामने इस बात को और बढाकर रखने की कोई विशेष जरूरत नही है।

नव मानव के गुणो की तालिका बढाई जा सकती है। लेकिन मै अपने को इन्ही तक सीमित रखूगा। ये मार्क्सवादियो-लेनिनवादियो के गुण है। यह सभी ईमानदार, गभीर प्रकृति के व्यक्तियो पर लागू होते है। हमारी विचारधारा का यही मूल्य है कि उसकी भी वही माग है, जो एक ईमानदार, गभीर प्रकृति के मनुष्य की माग है।

अनुशासन के बारे में कहने की आवश्यकता नही — वह तो उन्ही गुणो में आ जाता है जिन्हे अभी मैने गिनाया। बच्चे चीजो को तोड-ना और बिगाडना पसद करते है। हम खुद ऐसे ही थे। किसी के बाग में कूद जाना एक प्रसन्नता की बात थी चुराकर लाया गया सेब, अपने बाग के सेब से या खरीदे हुए सेब से ज्यादा मीठा लगता था। लेकिन साथ ही लोगो को यह भी बताना कि वे चीजें सुरक्षित रखें और मूल्यवान् वस्तुओ की चिन्ता करे काफी नही है। मुख्य बात तो यह है कि हम चीजो को सिर्फ नष्ट ही न करे, उन्हे बनावे भी। हम पुरातन के सहारक ही नही, नवीन के स्रष्टा भी है।

मेरा ख्याल है कि सही मानी में शिक्षक बनने के लिए अध्यापक जन्मजात होता है। उसके काम में कठिनाइया आती है और उसकी जिम्मेदारी महान होती है। हा, एक अध्यापक का मुख्य काम अध्यापन है। लेकिन, अन्य बातो में उसके शिष्य उसकी नकल भी करते है। इसीलिए, अध्यापक का जीवन-दर्शन और उसका व्यवहार कि-सी न किसी रूप में उसके हर शिष्य पर प्रभाव डालते है। अक्सर

यह क्रिया अदृश्य रूप से होती रहती है। माना कि यह सब कुछ नही है। विश्वास के साथ यह कहा जा सकता है कि अगर एक अध्यापक प्रभावशाली है, तो कुछ लोग ज़िदगी भर उसके असर में रहेगे। इसी-लिए एक अध्यापक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने प्रति ध्यान रखे, वह अपने व्यवहार के प्रति सचेत रहे। उसके कार्यों पर दुनिया के किसी भी व्यक्ति से अधिक महत्त नियत्रण है। बच्चो की दर्जनो आखें अध्यापक पर लगी रहती है। और बच्चे की आख से अधिक तेज, पारखी और ग्राह्य किसी की आख नही, जो इतनी जल्दी और तत्परता से इन्सान की मानसिक प्रक्रियाओ की हर बारीकी को पकड सके। हमें यह याद रखना चाहिए।

मुझे भय है कि कही मै आपको अस्वाभाविक व्यवहार करने की तरफ न झुका दू। यह भी सही नही है। यह बिलकुल गलत होगा। तमाम समस्याओ, विशेषत बच्चो सबधी अनेक मामलो में, उनको सज़ा देने आदि का फैसला करने में अध्यापक को स्वाभाविक और ईमानदार होना चाहिए। मान लीजिए, एक लडके ने खिडकी तोड दी, या एक लडकी को छेड दिया, या उल्टा समझ लीजिए। ऐसे मामले में पहली बात यह सोचना है कि समस्या के विभिन्न हलो का बच्चे के दिमाग़ पर क्या असर पडेगा। आखिर, बच्चो के अपने ही "आचरण के नियम" है। मान लो दो बच्चे लड पडे और एक ने दूसरे की नाक तोड दी। इसके बाद जिसके चोट लगी, उसने दूसरे की शिकायत की। इस मामले में ऐसा लडका भी जो इस झगडे से अलग रहा है, यही कहेगा, "चुग़लखोर, पहले तो लडता है और फिर शिकायत करता है!"

मुख्य चीज है बच्चो के प्रति ईमानदार रहना, अपनी तरफ देख-ना। अपने बच्चो को सचमुच समाजवादी, ईमानदार, बहादुर और भला बनाना तथा भाईचारे के भाव से भरना। अनुशासन केवल उतना जितना बाल-मनोविज्ञान की सीमा हो, जितना बच्चो के लिए सभव हो।

और अन्त में, साथियो, हमें इस बात का पूरा यत्न करना चाहिए कि बच्चो के मन में स्कूल के दिनो की अच्छी से अच्छी और आकर्षक यादें जम जायें। अगर पूरे जीवन भर बच्चो के दिमागो में स्कूलो के मनमोहक सस्मरण बने रहे, तो यह अच्छी बात होगी।

मेरी राय में एक अध्यापक से मुख्यत यही आशा की जाती है।

शिक्षक का कर्तव्य है कि वह अपना ज्ञान आम जनता को प्रदान करे और सार्वजनिक जीवन में भाग ले

मै अब सार्वजनिक जीवन की समस्याओ के विषय मे कुछ कहूगा। यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षक जनता के नजदीक रहे, वह यथार्थवादी हो और उसे स्थानीय समस्याओ को समझने का प्रयत्न करते रहना चाहिए।

यह बताने की जरूरत नही कि यह तो आदर्श बात होगी यदि हमारे शिक्षक और दूसरे बौद्धिक कार्यकर्ता मार्क्सवाद-लेनिनवाद का पूर्ण पाडित्य प्राप्त करे। लेकिन यह भी बुरा नही होगा यदि वे कम से कम इस विचारधारा के आम सिद्धातो से ही परिचित हो जायें। यह बात कम्युनिस्टो और गैर-पार्टी के व्यक्तियो — दोनो के लिए अपेक्षित है। मै आप को विश्वास दिलाता हू कि कुछ गैर-पार्टी के लोगो का मार्क्सवाद-लेनिनवाद का ज्ञान पार्टी-सदस्यो के ज्ञान से अधिक है। माना कि ऐसे लोगो की सख्या अधिक नही है। आप को यही करना है कि आप स्थानीय मसलो पर मार्क्सवादी रवैया अपनाना सीखें, उन का सही विश्लेषण करे। लेकिन आपने यहा पर जो कुछ कहा है, उससे मालूम होता है कि आप अपने भाषणो में स्थानीय जीवन का कुछ भी जिक्र नही करते। उन सब लोगो में जो यहा बोले है, एक भी किसी स्थानीय मसले पर नही बोला है। जीवन-चक्र

वरावर चल रहा है, लोग पैदा हो रहे हैं, उनकी शादिया हो रही हैं, और वे मर रहे हैं। प्रति दिन अनेक तरह की सामाजिक स्थितिया उत्पन्न होती रहती है। क्या इनके वारे में किसी को कुछ नही कहना है? क्या इनके वारे में कहा नही जाना चाहिए?

कोलखोजो का सगठन, फार्मिंग की प्रगति, किमानो की विचारधारा को वल पहुचाती है, इस से उनकी दिलचस्पी सामाजिक कार्यो की दिशा में वढती है। भापणो के लिए आवश्यकता से अधिक दिलचस्प और काफी सामग्री मिलती है।

कोलखोजो में असाधारण योग्यता के व्यक्ति आगे आते है। ऐसे लोगो के वारे में भाषण हो, जिनमे आप कुछ नतीजे निकाले या उनकी अच्छाइया और वुराइया सामने रखें, तो निस्सदेह लोगो में उत्साहपूर्ण चर्चा होगी। ऐसे भापणो पर होने वाली स्वस्थ चर्चा किसानो के नागरिक ज्ञान को वढायेगी और कोलखोज-श्रम के प्रति उनकी आस्था को वढायेगी।

मान लीजिए, आपके पडोसी कोलखोज ने प्रति हेक्टर दस, वारह, पन्द्रह सेन्टनर फसल उपजाई, जव कि आपके कोलखोज ने पाच या छ ही सेन्टनर उत्पादन किया। आप का उत्पादन कम क्यो है? यह आपके भापण का विषय हो सकता है।

सक्षेप में, जव आप किसान-जीवन पर कुछ कहना चाहते हो, जव आप जनता के साथ काम करना चाहते हो, तो आप मसलो को इस तरह पेश करें कि वे जीवन से वहुत समीप सपर्क रखें ताकि जनता पर आपकी वातो का प्रभाव पडे। यदि आप यह करेगे तो निस्सदेह लोग आपको सुनने आयेंगे। यह कहने की जरूरत नही कि हमारे देश की और दुनिया की सामाजिक और राजनैतिक घटनाए सदा ही आवश्यकता से अधिक सामग्री प्रदान करती हैं।

स्वतंत्र भाषण और बहस होनी चाहिए, पर सदा बीग्ज बरतना चाहिए। बडी बात यह है कि भाषण का मुख्य विचार सभी की समझ में आना चाहिए। जो लोग बहस में हिस्सा ले, वे बिना इस बात की चिंता किए कि वह अपनी बात किस तरह कह रहे है, जो कहना चाहते हो कहे। बोलने का ढग अभ्यास से आ जायेगा। महत्वपूर्ण बात यह है कि लोग अपने विचारों को व्यक्त करे।

अपनी सामाजिक कार्यवाही के दौरान में एक शिक्षक को जब भी अवसर मिले और जब भी उसकी राय पूछी जाय, उसे ईमानदारी से अपने विचार व्यक्त करने चाहिए। शिक्षक को किसानो का सम्मान एक शिक्षक के नाते ही नही, बल्कि एक इन्सान के नाते भी प्राप्त करना चाहिए। यह याद रखिए कि यह राजनैतिक समस्या है, बहुत ही गहन राजनैतिक समस्या। यदि शिक्षकों को अपने पद की उचित गरिमा पर पहुचना है, तो उन्हे निष्पक्ष होना चाहिए, और अपने विचारो को व्यक्त करने में बिलकुल निडर होना चाहिए। एक शिक्षक किसानो से सबधित समस्याओ को हल करने में उनकी सहायता कर सकता है, क्योकि वह उसी जगह रहता है और वहा के राजनैतिक और आर्थिक जीवन में हिस्सा लेता है।

जिस क्षेत्र मे शिक्षक किसान को सब मे अधिक सहायता दे सकता है, वह है सस्कृति का क्षेत्र।

संस्कृति बहुत ही व्यापक विषय है—मुह धोने से लेकर मानवीय उच्च से उच्च विचार तक, सस्कृति के क्षेत्र में आते है। और यह चाहे विचित्र क्यो न लगे, इसमें कूपमन्डूकता के क्षेत्र में फिसल जाना आसान है। साफ हाथ, साफ-सुथरे कपडे, घर पर आवश्यक सुविधाए, आदि यह सब किसी जाति की सस्कृति के चिन्ह है। सार्वजनिक सभाए, नाटक मडलिया, सायकालीन मनोरजन इत्यादि यह सब सामाजिक सभ्यता के चिन्ह है। कम्युनिस्ट उन्हे उचित रुप में सास्कृ-

तिक उन्नति के अनामर समझकर उन में भाग लेते है। मचमुच, कूप-मण्डूकता और सास्कृतिक प्रगति के बीच सीमा-रेखा खीचने के लिए उच्च सास्कृतिक स्तर और राजनैतिक समझ की आवश्यकता है। कम्युनिस्ट उन सब साधनो को उन्नति का साधन समझकर उनका प्रयोग करते है। मार्क्सवादी इन सफलताओ को आगे की प्रगति का एक साधन ही ममझता है। और एक कूपमण्डूक के लिए वही सब कुछ है। वह अपनी सफलताओ में ही भूल जाता है। वह अपने वातावरण का दाम हो जाता है और अपनी नैतिकता उसी के मुताबिक बना लेता है और अपनी विचार-शक्ति को कुद कर डालता है। इमका विरोध करना चाहिए।

इसलिए सास्कृतिक क्षेत्र में सामाजिक और राजनैतिक सोद्देश्यता लाना बहुत आवश्यक है, नही तो आपकी सस्कृति उद्देश्यहीन हो जायेगी, वह तथाकथित "प्रातीय मस्कृति" का रूप ले लेगी, पूरे राज्य की सस्कृति से उसके सबध टूट जायेंगे, तब वह पूरे राज्य की सास्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति नही कर सकेगी।

जो सास्कृतिक कार्य आप करे, उसे आम समाजवादी निर्माण के काम से जोड देना चाहिए। कूपमण्डूक वह व्यक्ति है जिसके विचार उसको समाज से अलग-थलग कर देते है, असल्य अपने को किसी भी व्यक्ति या किसी भी व्यवस्था से नहीं बाधता।

यह बहुत कठिन काम है। यह बहुत मुश्किल और नाजुक काम है, क्योंकि एक व्यक्ति को खुद सुसस्कृत होना होता है। यह बिल्कुल सगीत की तरह है। एक गवैया सामूहिक गान में एक गलत तान को झट पकड लेगा, जब कि मै अनेको गलत तानो को भी नही पकड सकूगा, क्योंकि मै गान-विद्या नही जानता। जब आपको कोई बात ग़लत लगे, तो उसे आपको सही करना चाहिए।

शिक्षक को जीवित विचार और भावनाए व्यक्त करनी चाहिए

साथियो, मै नही जानता कि कल के अधिवेशन में क्या हुआ। लेकिन जहा तक आज के अधिवेशन का सबध है, मैने कोई विचार-विनिमय होते नही पाया। आप सभी ने रिपोर्टें दी है। क्या आप लोग यहा इसलिए एकत्र हुए है कि एक-दूसरे को लगभग एक जैसी रिपोर्ट दे दें? इनको सुनकर एक व्यक्ति पर प्रभाव यह पडता है कि एक स्कूल से दूसरे में, एक व्यक्ति से दूसरे में भेद कोई नही है। और मै तो सोचता था कि आप यहा "संघर्ष" के लिए एकत्र हुए है।

ऐसा क्यो है कि आप लोग बने-बनाए सूत्र बोलते है? आखिर आप तो शिक्षक है, और आप रूसी भाषा भी जानते है। क्या आप नही जानते कि इस गढे-गढाये सूत्रो का उपयोग क्या बतलाता है? इस से यह स्पष्ट होता है कि आपका मस्तिष्क काम नही कर रहा है, सिर्फ आपकी जबान काम कर रही है। जब आप रटी-रटायी शब्दावलियो का प्रयोग करते है, तो आप किसी पर भी प्रभाव नही डालते, क्योकि उन्हे तो आपके बिना भी सभी लोग जानते है। आप बातो को अपने तरीके से कहने से डरते है, कि शायद वह इतनी प्रभावशाली न जान पडे। आपका यह गलत ख्याल है। उलटे, आपको लोग ज्यादा अच्छी तरह सुनेंगे और समझेंगे।

वैसे आपका किसानो के असली जीवन से काफी सबध है, आपका आम तौर पर जनता से भी सबध है। लेकिन, जब आप इनसे संबधित विषयो पर बोलते है, तो ऐसा लगता है जैसे किसी "टेकनिकल" विषय पर बोल रहे हो।

इन विषयो के राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक और दूसरे पहलू भी है,

जो मानव जीवन के साधारण जीवन में भी व्यक्त होते रहते हैं। तो भी आपकी वातचीत में यह नजदीकी, रिश्ता ग़ायव है। शायद बूढा होने के कारण मै उस पर ध्यान नही दे सकता। लेकिन मैंने आपके मुह से आपकी मुश्किलो के वारे में एक शब्द भी नही सुना। आप जव केवल वनी-वनाई शब्दावली दोहराते है, तो आपका भाषण वनावटी हो जाता है। हर आदमी को चाहिए कि वह अपनी भाषा में वोले, उस भाषा में, जो उसे माँ के दूध के साथ मिली है। मेरी वात पर विश्वास कीजिए। आपकी मातृ-भाषा ही सव से अच्छी भाषा है। हम कहते है शिक्षक, शिक्षक होना वहुत वडी वात है। और यह सत्य है। लेकिन यदि शिक्षक केवल गढे-गढाये सूत्र ही देने लगें, तो फिर क्या लाभ?

अव उनकी वात लीजिए — वह जो साथी अत में वोले, एक गाव में काम करते है और लगता है कि अपने काम से सतुष्ट है। आपने अपने सुन्दर जीवन के विषय में भी वताया। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि यदि कोई आपके भाषण की रिपोर्ट पढें तो जो आप नें कहा है उसपर वह वहुत कम विश्वास करेगा। इसलिए नही कि जो आप नें कहा वह असत्य है। पहले तो वह कहेगा कि यह साथी अपने मुह मिया-मिट्ठू वन रहा है। आपको वार-वार यह शब्द मिलते है "मैंने यह किया, मैंने वह किया"। जैसे ही किसी को यह लगता है कि अमुक व्यक्ति अपने मुह मिया-मिट्ठू वनता है या अपने को आगे वढा रहा है, वह उसका कान पकडता है। मै साफ-साफ आपसे कहूगा कि आपने अनेक अच्छे शब्दो का प्रयोग तो किया, लेकिन उनमें कोई भावना नही थी। उनसे कोई अर्थ नही निकलता था। मेरे कहने का यह मतलव नही कि आपमें कोई भावना नही है। मै सिर्फ इतना कहना चाहता हू आप अपनी सच्ची अदरूनी भावना को वने-वनाए सूत्रो में व्यक्त करते है, लेकिन एक साधारण मनुष्य

अपनी सच्ची अदरूनी भावना को अपनी साधारण भाषा में व्यक्त करता है। वह बनी-बनाई मान्यताओं के पीछे नहीं पड़ता। इसीलिए एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति आपके भाषण की रिपोर्ट पढकर अपने आप मे यह कहेगा यह बनावटी बातें हैं — बिल्कुल बनावटी। भाषणकर्ता के सच्चे, स्वाभाविक, भीतरी भाव नहीं मालूम पढ़ रहे हैं। इनमें अनेक शब्द हैं, प्रभावशाली शब्द हैं। अपने काम से सतुष्ट होने, उस में वह जाने की ओर सकेत करते है, लेकिन ये शब्द किसी के हृदय में नही उतर सकते, क्योंकि वे आपके शब्द नहीं हैं, वे शाब्दिक आडबर मात्र हैं। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं? मुझे बताइए — मैं सही हू या ग़लत? जिस तरह आप बातें करते हैं, वह बनावटी लगता है या नही?

अब मान लीजिए कि आप जनता के सामने उठकर इस तरह की बातें करने लगें, इस तरह का भाषण दें — तो आपकी राय में इसका प्रभाव क्या होगा? वे आपकी बातें सुनेंगे और बिना कोई प्रश्न किए ही घर वापस चले जायेंगे। और यदि वे सवाल भी करेंगे, तो वह बहुत थोडे प्रश्न होंगे।

इसलिए एक शिक्षक से पहली बात यह अपेक्षित है कि उसके भाषण का तरीका अपना हो। सही भाषा बोलने के लिए व्याकरण का अध्ययन कीजिए। लेकिन सादी भाषा का प्रयोग कीजिए और स्वाभाविक तरह से बोलिए।

मैं कहना चाहता हू कि शिक्षक का काम कठिन है। मैं तो यहा तक कहता हू कि शिक्षक जन्मजात होता है। मैं शिक्षक शब्द का सच्चे अर्थों में प्रयोग कर रहा हू। ऐसे लोग मौजूद हैं जोकि बहुत कुछ जानते हैं। मैं ऐसे बहुत से लोगों को जानता हू जिन्हें अपने विषय का अच्छा ज्ञान है, लेकिन यदि आप उन्हें पढाने को कहें तो वे विषय का स्पष्टीकरण अच्छी तरह नही कर पायेंगे। शिक्षक को केवल

अपने विषय का ज्ञान ही होना काफी नही है, लेकिन विद्यार्थियो के सामने उन्हे उसका स्पष्टीकरण इस तरह करना है कि वे अच्छी तरह समझ सकें।

इसलिए मै समझता हू कि मन्त्र मे पहले आपकी भाषा स्वाभाविक होनी चाहिए। बच्चो को पिटे पिटाए शब्दो, बने बनाए सूत्रो का आदी मत बनाइए—वे एक कान से उन्हे सुनेंगे, और दूसरे से निकाल देंगे।

जो कुछ भी आप बोलें, अपनी ही तरह से बोलें। आपके शब्द दूसरे होगे, लेकिन अर्थ वही होगा। आप पायेंगे कि लोग आपकी बातें अधिक ध्यान से सुनेंगे। जो आप कहे, वह मौके और स्थान के लिए उचित होना चाहिए। वह स्वभावत आपके मुह से निकलना चाहिए। ऐसा होता है कि लोग यन्त्र की भांति बातें करते है। शब्द यन्त्र की तरह नही, बल्कि सहज बडी दर धडी निकलने चाहिए।

आपको घिसे पिटे सूत्रो और विचारो से बचना चाहिए, जो आपकी स्मरण शक्ति की देन तो है, परन्तु आपके दिमाग की कदापि नही। अत आप लोगो से सादी भाषा में बातें कीजिए। अपनी भाषा मे बाते कीजिए और आपका ढग स्वाभाविक होना चाहिए। यदि आपका ढग स्वाभाविक नही होगा तो आपको विरोधी भावना का मुकाबला करना होगा। शायद आप में से बहुतो को याद होगा (शायद न भी हो) कि क्राति से पहले माला फेरने वाली अनेक बूढी औरतें थी। यदि आप उन में से किसी को कभी सुनते तो उन्हे बार बार बडबडाते हुए पाते "भगवान की दया से और मा की दया से मैंने प्रकाश पा लिया है"। वह मठ मठ घूमकर यही कहती फिरती थी। हमें उनकी तरह नही होना चाहिए। हमारी भाषा बहुत ही भरी पूरी है, उसे तोडिए मरोडिए नही। उसे भ्रष्ट न कीजिए। और अपने बच्चो को भी यह न सिखाइए। इस बात पर लगातार जोर दीजिए कि वे बोलने से पहले सोचें और बिना सोचे न बोलें। यह मुख्य बात है।

* * *

हमारे शिक्षको के सामने यही काम है। हमारे शिक्षको को सभी तरह से सुसस्कृत होना चाहिए। सुसस्कृत इसी माने में नही कि उन्हे अपने विषयो का अच्छा ज्ञान हो, बल्कि विशद अर्थो में, इन अर्थों में, कि उनकी सास्कृतिक दिलचस्पिया बहुत विशद हो। आप खुद समझ सकते है कि हमारे शहरो और देहातो की जनता, बडे पैमाने पर सास्कृतिक विकास की ओर अग्रसर है, और सस्कृति के क्षेत्र में उनकी बहुत सी मागें है।

हमारा जीवन अधिक से अधिक पेचीदा होता जा रहा है और हर क्षेत्र में ऊची से ऊची "हद" की माग की जा रही है। मिसाल के लिए, एक शिक्षक की "हद" यदि दो मीटर है तो उसे अब कम से कम ढाई मीटर होना चाहिए।

साथियो ने यहा अखबारो की कमी के विषय मे कहा है। अखबारो की निश्चय ही आवश्यकता है। लेकिन मै कहता हू, अखबार आपके सास्कृतिक विकास के लिए काफी नही है। अखबारो की आवश्यकता इसलिए है कि वे आपको सामयिक मामलो में राजनैतिक रवैया बनाने में सहायक हो। लेकिन यदि आप अपने सास्कृतिक स्तर को ऊपर उठाना चाहते है, तो आपको सस्कृति के इतिहास की ओर, मानवता की सास्कृतिक परपराओ की ओर मुडना पडेगा। आपको रूसी साहित्य का ज्ञान होना चाहिए, विशेषकर, उसके कथा साहित्य का ज्ञान होना चाहिए। आप इसके बिना चल नही सकते। शिक्षक को मानवीय सामग्री, और वह भी सब से अधिक तरुण और ग्रहणशील मानव सामग्री के साथ काम करना है। कथा साहित्य में आपको मानवीय पूर्णता के प्रयास के सबध में पर्याप्त सामग्री मिलती है। कम से कम मेरा तो यही विचार है। कथा साहित्य में अनगिनत स्थितियो में मानव स्वरूप के दर्शन होगे। इसी कारण कथा-साहित्य का ज्ञान क़रीब करीब आपका

पेशेवर कर्तव्य हो जाता है। आपको सास्कृतिक स्तर को उठाने का यह पहला साधन है। यह मै अपने अनुभव से कह रहा हू, कथा-साहित्य आपको अधिक पूर्ण बनायेगा, वह आपको विकास में सहायता देगा, और लोगो को ज्यादा अच्छी तरह समझने में भी मदद देगा।

मै आप से यही सब कहना चाहता था। कोई चाहे तो आपसे निरतर बाते करता रह सकता है, क्योकि आपके सामने अनेक बडी समस्याए है। लेकिन जो मै कहना चाहता था, उसकी मुख्य, प्रधान बात आप सुन चुके है। जब आप घर लौटें तो मेरी शुभ कामनाओ को न भूले। (जोरदार तालिया)

"सोवियत बुद्धिजीवियो के सामने काम" राजनैतिक साहित्य का राज्य-प्रकाशन गृह

१९३९, पृष्ठ ३१-४५

देहाती स्कूलों के पारितोषिक प्राप्त शिक्षको के सम्मान मे हुए समारोह के अवसर पर दिया गया भाषण

८ जुलाई १९३९

साथियो, हर एक आदमी जानता है कि जन-शिक्षको को आर्डरो और तमगो आदि पारितोषिक देने का बहुत बडा राजनैतिक महत्व है। इन पारितोषिको के द्वारा सरकार और सोवियत जनता जन शिक्षको का सार्वजनिक रूप मे सम्मान करती है।

यह प्रश्न स्वभावत उठता है कि जन-शिक्षक को सार्वजनिक दृष्टि में ऊचा क्यो उठाना चाहिए?

अब मजदूर वर्ग और किसानो ने, दूसरे शब्दो में, तमाम जनता ने अपने हाथो में सत्ता ले ली है और वह उसे कायम रखना चाहती है। वे नये जीवन का, कम्युनिज्म का निर्माण करना चाहते है। वे चाहते है कि समूची दुनिया के इन्सान सोवियत सघ की मिसाल पर चलें। इस सत्ता को हमेशा के लिए सुदृढ बनाने की खातिर, कम्युनिज्म को मूर्त रूप देने की खातिर, जनता का अपना बुद्धिजीवी वर्ग होना चाहिए।

लोगो को शिक्षित होना है। बौद्धिक और शारीरिक श्रम करने वालो का परस्पर विरोध और भेद भाव खत्म करना है। लेकिन किन हालतो में बौद्धिक श्रम और शारीरिक श्रम का भेद भाव मिट सकेगा? तभी जब हमारे सभी मर्द और औरते, —हमारी सभी जनता शिक्षित हो जायेगी, जब कम्युनिज्म का निर्माण हो चुका होगा।

विभिन्न जातियो वाले इस महान सोवियत सघ की समस्त जनता को शिक्षित करने का काम बहुत बडा है। लेकिन हम अपनी जनता को सिर्फ़ शिक्षित ही नही करना चाहते, साथ ही, हम यह चाहते है कि हमारी जनता सोवियत ढग से, कम्युनिस्ट ढग से ढाली पाली जाय। हम चाहते है कि हमारे स्कूल कम्युनिस्ट शिक्षा प्रदान करें। इसका क्या अर्थ है? मै इसी के विषय में आपसे कुछ शब्द कहना चाहता हू।

आप अच्छी तरह जानते है कि न सिर्फ प्रारभिक बल्कि माध्यमिक स्कूलो में भी मार्क्सवाद का गहरा अध्ययन नही होता। जब हम कम्युनिस्ट शिक्षा की बात करते है, तो हमें केवल मार्क्सवाद की विचारधारा के अध्ययन का ध्यान नही होता है, बल्कि पूरी शिक्षा का। उपदेश और शिक्षा में सचमुच बडा ही भेद है। मै खुद पहली कक्षा के विद्यार्थियो को अक गणित के प्रारभिक तत्व पढा सकता हू। (तालिया, सहमति की ध्वनिया) लेकिन वास्तविक शिक्षा कहीं अधिक पेचीदा चीज है। यह अकारण ही नही कहा गया एक व्यक्ति परिवार और अपने वातावरण द्वारा शिक्षित होता है, और स्कूल उस पर अपना प्रभाव डालता है। शिक्षा बहुत ही कठिन काम है। मैं शिक्षा शब्द का विशद अर्थो में प्रयोग करता हू।

शिक्षा से हमारा क्या तात्पर्य है? इससे हमारा तात्पर्य है विद्यार्थियो में मानसिक और नैतिक विशेषताओ का समावेश करना। उन्हे दस साल के अध्ययन काल के दौरान में एक निश्चित दिशा की ओर प्रेरित करते रहना, यानी उन्हे गढकर इन्सान बनाना। शिक्षित करने का अर्थ

है—विद्यार्थी को इस तरह प्रभावित करना कि वह स्कूल जीवन में अवश्यभावी तौर पर आ जाने वाली अनत गलतफहमियो और सघर्षो को हल करने के लिए शिक्षक द्वारा उठाए गए क़दमो के औचित्य को सही मान ले। वच्चे के मस्तिष्क पर इसका वहुत ही गहरा प्रभाव पडता है। यदि एक शिक्षक किसी पिछडे हुए लडके को नवर देने में पक्षपात करता है, तो मै निश्चय के साथ कह सकता हू कि विद्यार्थियो के दिमाग पर इसका प्रभाव पडे विना नही रहेगा। मुख्य चीज़ यह है कि शिक्षक एक तरह से शीशो की भूल भुलैया में होता है। उस पर सैकडो वच्चो की पैनी, प्रभावित हो जाने वाली आखें देखा करती है—आखें जो आश्चर्यजनक शीघ्रता से एक शिक्षक की हर अच्छाई और वुराई को भाप लेती है। विद्यार्थी की शिक्षा कक्षा में शिक्षक के व्यवहार से, विद्यार्थियो के प्रति रवैये से ही शुरू होती है। इस प्रकार शिक्षा वहुत ही कठिन चीज़ वन सकती है।

यह कहकर मै वच्चो को अच्छे उपदेश देने की आवश्यकता को कम नही कर देना चाहता। जहा तक आप खुद शिक्षक है—यह सव कुछ वहुत स्पष्ट है। अपने विशद अर्थों में शिक्षात्मक कार्य प्राय शिक्ष को की आखो से ओझल हो जाते है। लेकिन वच्चो के चरित्र और उनकी नैतिकता को गढने में यही काम वहुत वडे महत्व के होते है। वहुत से शिक्षक यह भूल जाते है कि उन्हे शिक्षा विशेषज्ञ वनना है और एक शिक्षा विशेषज्ञ मानव आत्माओ का शिल्पी है। अलवत्ता, आवश्यक दिशा में वच्चो को प्रभावित करने के लिए उचित योग्यता भी होनी चाहिए। पर यह सव कुछ तो नही है। चैतन्य रूप से एक निश्चित दिशा में प्रभावित कर सकने के लिए एक शिक्षक को स्वय ही वहुत सुसस्कृत होना चाहिए, मुझे स्पष्ट कहने दीजिए, उसे वहुत ही सुशिक्षित होना चाहिए।

सचमुच जनता और राज्य बच्चो को, यानी उन नन्हे-मुन्नो को, जो सब से अधिक प्रभावित किए जा सकते है शिक्षको के हाथ सौंपते है। उस नयी पीढी को पालने पोसने, विकसित करने, गढने का काम शिक्षको को सौंपा जाता है। दूसरे शब्दो में, जनता और राज्य शिक्षको को अपनी समस्त आशाए और अपना भविष्य सौंप देते है। यह बहुत बडे विश्वास का काम है। इस से शिक्षको पर बहुत बडी जिम्मेदारी आ जाती है। अत स्पष्ट है कि शिक्षको को बहुत ही सुशिक्षित और बहुत ही ईमानदार होना चाहिए। क्योंकि ईमानदारी,—मै कहूगा, शब्द के उच्चातिउच्च अर्थों में किसी भी तरह भ्रष्ट न हो सकने का गुण—न सिर्फ बच्चो को बहुत ही अधिक प्रभावित करती है, बल्कि उन्हे उत्साहित करती हैं, और उनके बाद के जीवन पर गहरा प्रभाव डालती है।

साथियो, हम अपने बच्चो को कम्युनिस्ट सिद्धान्तो में शिक्षित करना चाहते है। हम चाहते है कि वे कम्युनिस्ट भावना से ओत-प्रोत हो। आप पूछ सकते है कम्युनिस्ट सिद्धात क्या है?

अपने प्रारभिक स्वरूप में, कम्युनिस्ट सिद्धात बहुत ही सुशिक्षित, ईमानदार और प्रगतिशील जनता के सिद्धान्त है। अपने समाजवादी देश के प्रति अपार स्नेह, दोस्ती, भाईचारा, मानवता, ईमानदारी, समाजवादी श्रम के प्रति आस्था आदि अनेक ऊचे गुण इनके अन्तर्निहित है। इन उच्च गुणो का विकास एव समावेश कम्युनिस्ट शिक्षा का सब से महत्वपूर्ण अग है।

बच्चो में ये विशेषताए सिर्फ बडे-बडे उपदेशो या ढोल पीटने से ही नहीं आ जायेंगी। वे बच्चो में तभी लाई जा सकती है, जब स्कूल काल मे लगातार भाईचारे के आधार पर उनमे सबध रखा जाय और उनको अदृश्य तरीक़े से प्रभावित किया जाय। अलबत्ता, यह तभी सभव है जब शिक्षको ने कम से कम मार्क्सवाद की रूपरेखा भली भाति समझ ली हो।

हम अक्सर कहते है कि मार्क्सवाद लेनिनवाद पर पाडित्य प्राप्त करना आवश्यक है। मै कहूगा — मै इसे अपने अनुभव से जानता हू — कि मार्क्सवाद लेनिनवाद का ज्ञान फौरी काम मे अनोखी सहायता प्रदान करता है। रोजमर्रा के कामो में जो अनेक ममले उठते है, उन्हे सही तौर पर हल करने में वह सहायता देता है। हमारे शिक्षको के सामने कम्युनिस्ट शिक्षा देने का, सोवियत जनता में कम्युनिस्ट चेतना भरने का बहुत ही कठिन काम है। यह काम सफलता से तभी पूरा किया जा सकता है, जब हमारे शिक्षक अच्छी शिक्षा ही प्राप्त किए न हो, वल्कि मार्क्सवादी शिक्षा प्राप्त किए हो।

इस सबध में आपकी, इस मेज़ पर बैठे हुए सभी साथियो की और मेरी स्थिति एक सी है। मुझे विश्वास है कि इस बात में आप मुझ से सहमत होगे कि हमारी जनता अजब तेज़ी से विकसित हो रही है, उसकी चेतना, उसकी शिक्षा और उसकी संस्कृति अनोखी तेज़ी से प्रगति कर रही है। और यह हमारे देश के सभी भागो में हो रहा है। अब हमारे यहा कोई "पिछडा जगली" नही है, अब हमारे देश का हर भाग अपने को मास्को का भाग समझता है। (समर्थन की ज़ोरदार ध्वनिया, देर तक तालिया)

जब हम यह कहते है कि हमारी जनता विकसित हो रही है तो हमारा क्या तात्पर्य है? प्रथमत इसका यह मतलब है कि हर साल लगभग २० लाख व्यक्ति शिक्षित होकर हमारे बीच मे बढ जाते हैं। यदि हम पुराने लोग, जो आज के स्कूलो से नही गुज़रे है, पुराने ढर्रे पर ही कायम रहते है और उनके साथ कदम-ब-कदम नहीं चलते, तो धीरे-धीरे हम पिछड जायेंगे। इसीलिए उन शिक्षको को भी चाहिए कि वे इस वक्त वेकार न बैठे, जो शुरू के सालो में शिक्षित हुए हैं। ज्ञान एकत्र करना बहुत ही ज़रूरी है। एक शिक्षक सिर्फ शिक्षक ही नही, वरन् विद्यार्थी भी है। (तालिया)

एक शिक्षक अपनी तमाम शक्ति, अपने विद्यार्थियो और अपनी जनता पर लगाता है। लेकिन साथियो, यदि आप आज, कल, परसो अपना सब कुछ देते रहे, पर लगातार अपने ज्ञान-भडार को नही बढाते रहे, तो फिर आपके पास कुछ भी नही रह जायेगा। (समर्थन की ध्वनिया) शिक्षक ज्ञान प्रदान तो करता ही है लेकिन सोस्ते की तरह जनता में जो सब से अच्छा है, उसे वह अपने में जज्ब कर लेता है। वह जीवन, ज्ञान-विज्ञान, सभी से अपना भडार भरता है और फिर अपने भडार मे से बच्चो को प्रदान करता है। (समर्थन की ध्वनिया, तालिया) सोवियत शिक्षक यदि सच्चा और प्रगतिवादी शिक्षक बनना चाहता है और कल भी बना रहना चाहता है, तो उसे जनता के सब से आगे बढे हुए अग के साथ-साथ चलना चाहिए। यदि वह ऐसा करता है, यदि वह जनता की विशिष्टताओ को अपनाता रहता है, तो वह अपने विद्यार्थियो को चाहे कितना भी दे, उसके पास सदैव अपने बच्चो को देने के लिए कुछ न कुछ बचा रहेगा।

आज यहा पर सोवियत सघ के सभी भागो के शिक्षक एकत्र हुए है। मुझे बडी खुशी है कि उक्रइन, जोर्जिया और स्वायत्त जनतत्रो से यहा शिक्षक आए है। मै चाहता हू कि आप मास्को से जितना अधिक ले जा सके ले जाए। और आपको मिली उपाधिया, पदक एव पारितोषिक और मास्को में मिला स्वागत आपके जीवन की मधुर स्मृतिया बन जाए। (जोरदार तालिया)

"सोवियत बुद्धिजीवियो के सामने काम"
राजनैतिक साहित्य का राज्य-प्रकाशन गृह
१९३९, पृष्ठ ४६—४९

मास्को के (बौमान हलक़ा) उच्चतर माध्यमिक स्कूलों की आठवी, नवो और दसवी कक्षाओं के विद्यार्थियो के सम्मेलन में दिया गया भाषण

७ अप्रैल १९४०

साथियो, सबकी तरह मै भी आपके अध्ययन में आपकी सफलता की कामना करता हू। यह हर व्यक्ति की कामना है—आपके माता-पिता की, आपके शिक्षकों की, समाज की, और आपके बुजुर्गो की।

लेकिन निरी शुभ-कामनाए विशेष महत्त्व नही रखती। महत्त्व की बात तो आपका स्वाध्याय है। स्कूल में ही आपको नियमित तरीके से लिखना, पढना और काम करना सिखाया जाता है। बाहर से, स्कूल के बाहर एक आदमी कितना भी ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश क्यों न करे, वह स्वशिक्षित व्यक्ति ही रहता है।

कुछ लोग इस तरह सोचते है स्कूल मे क्या होना है? मान लो मैंने बिना अच्छे नतीजे के स्कूल की परीक्षा पास कर ली तो यह सिर्फ सर्टिफिकेट पर ही लिखा होगा, जीवन पर तो उसका कोई

प्रभाव पडेगा नही। कोई भी जो इस तरह सोचता है, गलत सोचता है। स्कूली शिक्षा आदमी को नियमित ज्ञान प्रदान करती है और उसे कुशल काम के लिए तैयार करती है। और सभव है, आप लोगो में से अधिक कुशल पेशो मे जायेंगे। इसीलिए आपको खूब डट कर अध्ययन करना चाहिए।

कोई भी जो पेशेवर कुशल मजदूर बनना चाहता है, उसे सोवियत स्कूल की परीक्षा पास करनी चाहिए, उसे नियमित तरीके से पढ लिख कर ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। जिन्हे उचित शिक्षा नही मिलेगी, उन्हे बाद में चलकर जीवन में कठिनाई होगी। यह कमी, यानी व्यवस्थित ज्ञान की कमी, और अव्यवस्थित काम करने की आदत, सभी चीजो में सभी जगह अखरेगी और आपका पीछा नही छोडेगी। यह मेरा अनुभव है। इसलिए आपको स्कूल का, जितना अधिक सभव हो सके, उपयोग करना चाहिए — पहले से लेकर सातवें या दसवें दर्जे तक — इसी को ज्ञान का मुख्य स्रोत मानना चाहिए।

सभी विद्यार्थियो को यह याद रखना चाहिए कि सिर्फ वही जो अपना काम व्यवस्थित ढग से कर सकेगें और अपना काम अच्छी तरह जानते होगे, समाज और राज्य के जीवन में, या किसी भी उपयोगी क्षेत्र में कुछ महत्वपूर्ण भाग ले सकेगे। दूसरी ओर, जिनकी सस्कृति ऊपरी ऊपरी है, जो सस्कृति का केवल बाह्य रूप ही पा सके है, ओनेगिन की तरह के लोग, जो हर चीज के बारे मे कुछ न कुछ बता सकते है, लेकिन जिन्हे किसी भी चीज का तात्विक ज्ञान नही है, ऐसे लोग सोवियत समाज और सोवियत राज्य के जीवन में न अब कोई महत्वपूर्ण भाग ले रहे है और न आगे लेगे।

आज यहा, मच से हॉनर के विद्यार्थी बोले है। साथियो, मै आपको बता दू कि यद्यपि आप अच्छा बोलते है आपकी भाषा चमत्कारिक है, तो भी, (मुझे मुहफट होने के लिए माफ कीजिए), आप बिलकुल

मौलिक नही है। अलवत्ता यह स्पष्ट-वादिता आपकी भावनाओ को चोट पहुचायेगी, लेकिन मै ऐसी वाते आपको दु खी करने के लिए नही कहता, वल्कि इसलिए कि आप ममझ मके कि अध्ययन में मुख्य वात क्या है। आप सही वोलते है। इस मामले में आप विलकुल दोपी नही है। आपके भापण स्कूल के दीवाली-अखवार में भी प्रकाशित किये जा सकते है और उन्हे प्रकाशित करने के लिए सम्पादक को कोई जवाव नही देना पडेगा। लेकिन ऐसे भापण किसी को भकझोरेंगे नही। वे दिल और दिमाग को कुछ भी नही देते। आखिर आप तरुण हैं, आपकी रोजमर्रा की जवान मे भी जान होती है। वही भापण दिल पर असर करता है जो किसी के हृदय को छू ले — वह चाहे मान ले या आपत्ति कर दें। एक भापणकर्ता के कुछ जीवित और स्वतत्र विचारो का यही मुख्य चिन्ह है।

लेकिन, साथियो, यह सव अभ्यास से आता है। आप अभी तरुण है — आपके आगे अभी सव कुछ है। इसीलिए मै आपसे कहता हू कि आप जो कहते है, उसमें कुछ भी मौलिक नही है। यदि आप सवकी आयु ५० वर्ष की होती तो मै इस तरह की वात नही कहता। लेकिन आप सव की जिन्दगी अभी आपके आगे है और यह निश्चित है कि आप मौलिक तौर पर वोलेगें। मुझे इस पर कुछ भी सदेह नही है। फिलहाल आप अपने शब्दों का प्रयोग करने की कोशिश नही कर रहे है, वल्कि वने-वनाए शव्दो को, जो दूसरो के है, दोहरा रहे है। आपके भाषणो में आपकी अपनी भावनाए नही दीख पडती, आपकी भापा चादनी की तरह है, जिसमें कुछ गरमी नही।

आप सव में से केवल एक — मेरा ख्याल है कि अतिम साथी, कामरेड कारिव — अपनी भापा में वोले। जव वह वोल रहे थे तो लगता था जैसे वह अपने शव्दो को तौल रहे हो, जैसे उनके पास उनके अपने कुछ विचार हो। यह सव से महत्वपूर्ण वात है।

मान लीजिए, कोम्सोमोल कमेटी का कोई प्रतिनिधि आपसे मिलने आए। वह बोलने में इतना पटु हो गया है कि जब कभी आप चाहे तो वह किसी भी विषय पर बोल सकता है। उसका भाषण बिना प्रयास के सुविधा-पूर्वक, दो शानदार किनारो के बीच में बहती हुई नदी की तरह निकलता आता है। लेकिन यह भाषण सिर्फ बाहरी सौन्दर्य लिए हुए है, क्योकि इसमें मुख्य चीज़ — भावना — नही है। इस तरह का भाषणकर्ता अपने भाषण के तत्व के कारण आकर्षित नही करता। उसके श्रोता सिर्फ यही कह सकते है — क्या बढ़िया बोलनेवाला है! और इससे अधिक कुछ नही।

अब मान लीजिए कि कोई ऐसा आदमी आता है जो इतना "शीरी-ज़बान" नहीं है, लेकिन जो सिर्फ एक गभीर व्यक्ति है। उसके भाषण में सुन्दर शब्दो की भरमार नहीं है और वह थोड़ा लड़खड़ाता भी है। आप देख रहे है कि वह बोलता है और सोचता है, सोचता है और बोलता है। जब वह शब्दावली पर विचार करता हुआ ठहरता है तो वह अपने श्रोताओं को, जो उसी की विचारधारा के साथ बह रहे है, अपने साथ ही सोचने के लिए मजबूर कर देता है। जो ऐसे भाषणकर्ता को सुनते है, वे कहते है उसने एक निश्चित विचार दिया। और वे इस विचार की प्रतिक्रिया में उससे सहमत होते है या उसे ठुकरा देते है, उसके पक्ष में बोलते है या उसका विरोध करते है, उसके प्रति अपना गुस्सा प्रदर्शित करते है या उसका स्वागत करते है।

कामरेड कारिव लगभग इसी तरह के भाषणकर्ता है। आप सब को इस तरह के भाषणकर्ता के सिद्धान्तो और तरीको को अपनाना चाहिये। आपको सोचना, अपनी भाषा बनाना ख़ुद ही सीखना चाहिए, न कि आप पहले से बने हुए बने-बनाए शब्दो का प्रयोग करें। और चीज़ो

के साथ तब यह भी स्पष्ट हो जायेगा कि आप रूसी भाषा जानते है या नही।

यहा पर आठवी, नवी और दसवी कक्षाओं के विद्यार्थी बोले। इनमे भी अधिक हॉनर के विद्यार्थी थे। सिद्धानत , यानी यदि पाठ्यक्रम से आका जाय तो उन्हे रूसी भाषा का अच्छा ज्ञान होना चाहिए, उन्हे रूसी भाषा में सही तौर से अपनी बात व्यक्त कर सकने की शक्ति होनी चाहिए। लेकिन दुर्भाग्य की बात यह है कि मै नही बता सकता कि वे रूसी भाषा जानते है या नही, क्योकि उन्होने अपनी बात कुछ नही कही — वे तो सिर्फ रटे-रटाए, बने-बनाए शब्दो में ही बोले। जब कामरेड कालिब बोले तो वे अपने शब्द खुद ही गढ रहे थे। और जब कोई खुद ही अपने शब्द गढता है, तब आप बता सकते है कि वह रूसी भाषा जानता है या नही, स्कूल की शिक्षा ने उसे अपने विचार व्यक्त करना सिखाया है या नही। सोवियत स्कूलो के बच्चो को कामरेड कालिब के दिखाए हुए रास्ते पर चलना चाहिए — यदि वे गभीरता से काम करना चाहते है और स्कूलो को भगवान का अभिशाप नही समझते है।

मै यह बात व्यर्थ ही नही कर रहा हू। सचमुच ऐसे बच्चे है जो स्कूल को, अध्ययन को जबरिया और बोझा समझते है, वे इन्हे "स्वर्ग" पहुचने के लिए आत्मशुद्धि का स्थान मानते है। यदि आपका विचार भिन्न है, यदि आप अध्ययन को एक भाग्यवान अवसर की तरह पूरा-पूरा प्रयोग करना चाहते है, जिससे आप शिक्षा प्राप्त कर सके और अपने दृष्टिकोण विशद बना सकें, तो आपको अपनी भाषा गढना सीखना पडेगा। आप जो लेख आदि लिखें, उन पर भी यही बात लागू होती है। अकगणित के प्रश्नो को हल करने मे, मर्यादा और ड्राइग बनाने में, और इसी तरह की दूसरी चीजो में भी यही बात लागू होती है।

हम मान लें कि लेख आदि लिखने में आप अधिक अच्छे-अच्छे विद्यार्थियों की "सहायता" लेते हैं या नक़ल उतार लेते हैं। यह विनाशकारी रास्ता है। आप कभी कुछ नहीं सीख पायेंगे। चाहे वह उतना अच्छा न हो, लेकिन लिखना आपको खुद ही चाहिए। आपको अपने ही लिखे हुए को, चाहे हज़ार बार लिखना पड़े, लेकिन आपको इससे डरना नहीं चाहिए और न ही अपना जांगर चुराना चाहिए। इससे आपको स्वतंत्र काम की आदत पड़ेगी। यहीं पर स्वतंत्रता व्यक्त होती है।

मिसाल के तौर पर भाषणों को ले लीजिए। हमारे यहां विभिन्न तरह के भाषणकर्ता हैं। ऐसे भी हैं जो दो, तीन या पांच घंटों तक बोलते रह सकते हैं, जो पुरानी पिटी हुई बातें दोहराते हुए ज़ोर-ज़ोर से नारों पर नारे देंगे, जिससे हर पन्द्रह-बीस मिनट पर तालियां पिटें। इसमें कुछ मुश्किल नहीं है। यह सबसे आसान बात है। ऐसे भाषण के लिए बहुत बुद्धि की ज़रूरत नहीं है। लेकिन ऐसा भाषण देना, जिसमें शब्द कम हों, जिसमें सोच-समझकर खुद भाषणकर्ता ने शब्द चुने हों, चाहे वह कुछ भद्दे भी हों, कहीं मुश्किल बात है।

यहां पर ऑनर के विद्यार्थी एकत्र हैं। जब सब अच्छे ही अच्छे विद्यार्थी एकत्र हों, तो यह समझ लेना कि क्या किया जाय, जो पिछड़े विद्यार्थी हों ही न, आसान बात है। लेकिन पिछड़े विद्यार्थियों को एकत्र करके उनसे यह पूछना कि वे क्यों पिछड़े हैं और उनके फिसड्डीपन को दूर करने के लिए क्या क़दम उठाए जाएं, बुरी बात नहीं होगी।

मैं आज बोलना नहीं चाहता था। सच तो यह है कि मैं कुछ गरमागरम बहस की आशा करता था। मैं आपसे स्कूलों की खामियों, उनकी कमियों आदि के विषय में सुनना चाहता था। लेकिन आपकी

सभा तो एक समारोह में बदल गयी है। और जब समारोह हो, तो उसमें सार की बात होना मुश्किल है।

यहा पर, मच से सबसे अच्छे विद्यार्थी बोले है। वे इस तरह बोले है जैसे रिपोर्ट दे रहे हो। ऐसा लगा मानो उनके समकक्षियो ने उनसे इस तरह बोलने को कहा है। साथियो ने कहा "हम लोग ७वी पोजीशन पर थे, अब हमारी पोजीशन पाचवी है। हमें आशा है कि आगे हमारी पोजीशन तीसरी होगी।" लेकिन किसी एक ने भी यह नही कहा कि आगे उसका क्या करने का इरादा है, उसका उद्देश्य क्या है, माध्यमिक स्कूल की शिक्षा समाप्त करने पर वह क्या करेगा। साथियो, आप अपनी माध्यमिक शिक्षा समाप्त कर रहे है और एक स्वतत्र जीवन शुरू करनेवाले है। यदि मै दसवी कक्षा का विद्यार्थी होता—दुर्भाग्य से अब मै नही हो सकता—तो मै अप्रैल में इस समस्या में फसा होता कि भविष्य में इस साल कौनसा पेशा पकडू। और निस्सदेह मै इस समस्या का सही हल निकाल लेता।

जैसा आप जानते है, यह हमेशा सभव नही है कि आप ज़िदगी में अपना रास्ता चुन ले। बहुत सभव है, आप में से बहुत से पत्रकारिता के इस्टीट्यूट मे भरती होना चाहे—मै पिछले वर्ष की एट्रेंस परीक्षाओ से यह बात जानता हू। लेकिन वहा होड इतनी अधिक है कि सभी उम्मीदवारो का मजूर हो जाना बहुत मुश्किल है। आखिर, आपको जाना कहा है? शायद इस प्रश्न में आपकी अभी कोई दिलचस्पी नही है? यदि बात ऐसी है, तो यह बुरा चिन्ह है। आपकी बहस में इतना महत्वपूर्ण प्रश्न रह गया, यह मेरी दृष्टि में बडी गलत बात हुई। मै बहुत चाहता हू कि यह जान सकू कि हमारे स्कूलो के अधिकाश बच्चे क्या बनना चाहते है? उनका प्रिय पेशा क्या है? यह बहुत ही ज्ञान-वर्द्धक बात होगी और इससे अनेक दिलचस्प नतीजे निकाले जा सकते

हूं। लेकिन आपसे मुझे कुछ मालूम ही नही हो सका, इसलिए मै अभी कुछ नतीजे निकाल नही सका।

तो भी मै यह सोच नही सकता कि आपने इस विषय पर कुछ विचार ही नहीं किया है। निश्चित ही यह प्रश्न आपके हरेक के दिमाग़ मे है। अभी, जब आप तरुण है, हर व्यक्ति को इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए। इसमें किसी को सदेह नही हो सकता कि आपमे से ९० फीसदी "पहाडो को चलायमान्" कर देना चाहते है और दुनिया को अपने ही ढाचे में ढालना चाहते हैं, क्योकि मै खुद अपनी युवावस्था में इसी प्रकार सोचता था। निस्सदेह आपके दिमाग में इस तरह के विचार आते होंगे। इसके अलावा कुछ हो ही नहीं सकता। युवावस्था का अर्थ ही यह है।

लेकिन समय आ गया है जब आपको अपना भावी रास्ता चुन लेना चाहिए जब आपको अतिम तौर से यह तै करना है कि आप क्या करेंगे। आपमे से बहुत इस मसले को बहुत सीधे तरीक़े से हल करते है। आप कहते है मै कोम्सोमोल का सदस्य हू, भविष्य में मै कम्युनिस्ट बनूगा, सोवियत नागरिक बनूगा—और बस मामला खतम हो गया। मैने अपना भविष्य "निश्चित" कर लिया है। लेकिन यह तो बहुत ही आसान "आत्म-निर्णय" हुआ।

अपने भविष्य की परिभाषा के प्रति गभीर होने का अर्थ है अपनी जीवन-यात्रा का पथ निश्चित करना, अपने चरित्र को गढना, अपने विचारो को निश्चित करना—अपना पेशा ढूढना। आपमें से हरेक को इस प्रकार तर्क करना चाहिए—मै सोवियत नागरिक हू—एक ऐसे राज्य का नागरिक जो चारो ओर से शत्रुओ से घिरा हुआ है। इसके लिए पिछली पीढियो से कम नही, अधिक सघर्ष करना है। मिसाल के तौर पर, हमारी पीढी—पुराने बोल्शेविको को ही ले

लीजिए। हम लोगो ने रूसी पूंजीपतियो और जमींदारो से संघर्ष किया। ये लोग मुकाबलतन कमजोर और बुरी तरह संगठित शत्रु थे। उनका सांस्कृतिक स्तर भी ऊंचा न था। लेकिन आप लोगो को ऐसे शत्रु का सामना करना पडेगा, जिसका मुकाबला कोई नही है, जो कही अधिक संगठित है, कही अधिक दगाबाज और राजनैतिक संघर्ष में ज्यादा धोखेबाज और चतुर है। इस संघर्ष के लिए तैयार होने का अर्थ है दृढ प्रतिज्ञता और नियमित प्रयास।

आपको यह याद रखना चाहिए कि यह संघर्ष सिर्फ मार्चे पर ही नही होगा। हमारे विद्यार्थियो ने मोर्चे के अगुआ संघर्षों मे साहसी करिश्मो का प्रदर्शन किया है। और इसमे आश्चर्य की कोई बात नही है। क्या आप गुलस्तुत सोवियत युवक के साहसी न होने की कल्पना भी कर सकते है? नही। यह संघर्ष जीवन के हर क्षेत्र में होगा।

यह संघर्ष उत्ता से सोवियत सत्ता के स्थापनार्थ किये गये प्रारंभिक संघर्ष को भी मात कर देगा।

इस निर्णयात्मक संघर्ष में जीत प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि आप अपना चरित्र लौह बनाए, अपनी इच्छा-शक्ति को दैनिक संघर्ष मे लौह बनाए। इसके लिए आवश्यक है कि आप यह स्पष्टत निश्चित कर ले कि समाजवादी निर्माण के कार्य मे आप क्या करे और अपने चुने हुए जीवन-कार्य मे पूर्ण पाण्डित्य प्राप्त कर ले।

इस प्रकार का आत्म-निर्णय आपमे से हरेक के लिए और आपके दैनिक जीवन के लिए बहुत महत्व का है। जब आप अपना चरित्र निर्मित कर लेगे, जब आप अपना विश्व-दृष्टिकोण स्पष्टत स्थापित कर लेगे, जब आप समाजवादी निर्माण-कार्य मे अपना स्थान प्राप्त कर लेगे, जब आपके जीवन का उद्देश्य अपने विचारो को व्यवहार में लाना बन जायेगा, तभी यह कह सकना संभव होगा कि आपने

जीवन की अनेक निराशाओं और कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर ली है। जैसा कि आप जानते हैं इस तरह की बातें हो जाती हैं एक विद्यार्थी एक लडकी से दोस्ती शुरू करता है, फिर उसे छोड देता है और फिर किसी दूसरी लडकी से दोस्ती शुरू करता है—यह एक पूरा "नाटक" हो गया है। यह न सोचिए कि यह एक बूढे की तानाजनी है—मैं स्वयं तरुण था और अब भी मैं तरुणों की भावनाओं का समादर करता हूं। इसलिए एक ऐसे आदमी के लिए, जिसने जीवन मे अपने लिए कोई स्थान नही बनाया, इस तरह का "नाटक" बहुत ही महत्व का हो सकता है। हा तो आम तौर पर, जीवन के सबध मे सभी मधुर स्वप्न टूट जाते हैं और वह देर तक उन कुप्रभावों का शिकार बना रह सकता है। एक स्पष्ट-दर्शी और निश्चयात्मक व्यक्ति के लिए इस "नाटक" से गुजरना कही आसान होगा।

इसलिए यह आवश्यक है कि जितनी जल्दी हो सके एक व्यक्ति का चरित्र-निर्माण और व्यापक विश्व-दृष्टिकोण बन जाना चाहिए। यदि वह कहता है कि वह पशु-विशेषज्ञ बनना चाहता है, तो बस इतना ही काफी है। फिर वह अपने देश के हित के लिए पशु-विज्ञान के अध्ययन में अपनी समूची शक्ति लगा दे। सोवियत पशु-विशेषज्ञ और एक पूजीवादी देश के पशु-विशेषज्ञ में अतर है। सोवियत पशु-विशेषज्ञ कहेगा कि वह इस क्षेत्र मे अपने देश की अधिक से अधिक सेवा करेगा। और वह अपने उद्देश्य में अवश्य सफल होगा। उसका काम बहुत ही अमूल्य होगा। और इस तरह के व्यक्ति के लिए जीवन के तमाम कटकों, मुश्किलों और जीवन के नाटकों पर विजय पाना सौ-गुना आसान होगा, बनिस्बत उस व्यक्ति के जिसके जीवन में कोई उद्देश्य नही है, कोई निश्चित धधा नहीं है, कोई निश्चित विचार नही है।

व्यक्तिगत तौर से मै उन लोगो की बहुत इज्जत करता हू, जिन्होंने अपने चरित्र और जीवन-दर्शन का निर्माण कर लिया है। शायद आपके लिए ऐसा कर सकना बहुत जल्दी मालूम होता है? नही, साथियो, बात ऐसी नही है।

अत में मै एक बात और कहना चाहता हू। मुझे मालूम हुआ है कि आपमें से कुछ लोग इस तरह तर्क करते है इम्तहानो में अच्छे नबर प्राप्त करने की आवश्यकता क्या है, आगे तो पढना है नही, हमें तो फौज में भरती होना है। यह तर्क-प्रणाली बिल्कुल ही गलत है। पहले तो इस मामले पर प्राप्त नबरों की दृष्टि से विचार नही करना चाहिये। महत्वपूर्ण बात नबर पाना नही है, बल्कि यह कि भविष्य में इन साथियो को नियमित ढग से शिक्षा प्राप्त करने का अवसर न प्राप्त होगा, यानी वे अपनी माध्यमिक शिक्षा की कमजोरियो को पूरा न कर पायेंगे। अधिकाशत वे ही साथी अपनी फौजी-ट्रेनिंग के बाद उच्चतर शिक्षालयों मे जा सकेंगे जब उनके माध्यमिक स्कूलो का नतीजा अच्छा होगा। यह बताने की जरूरत नही कि उनमे से काफी तो फौज के ही उच्चतर स्कूलो में भरती हो जायेगे। लाल फौज की अनेक शिक्षा सस्थाए है, और वहा से पास होकर वे ही निकलेगे जो अपनी माध्यमिक शिक्षा सुन्दर ढग से प्राप्त करेगे। इसलिए माध्यमिक शिक्षा में आपको अपनी समूची शक्ति लगानी चाहिए।

उच्चतर शिक्षालय की बात दूसरी है। वहा आपको उच्चतर शिक्षा मिलेगी, वहा लोग विज्ञान की निश्चित शाखाओ मे विशेषज्ञता प्राप्त करेगे। दूसरी ओर, माध्यमिक स्कूलो में लोग नियमित तरीके से काम करना सीखते है, वहा तो सिर्फ शिक्षा की बुनियादें डाली जाती है। इसलिए मेरा विचार है कि जो साथी यह सोचते है कि माध्यमिक स्कूलो म अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता नही

है, वे बडी गलती कर रहे है, और अपना बहुत ही अनिष्ट कर रहे है।

मै अपने दिल से कामना करता हू कि दसवी कक्षा के विद्यार्थी हमारी लाल फौज के अच्छे सिपाही हो और साथ ही उच्चतर शिक्षालयो में भी अच्छे विद्यार्थी बनें। (ज़ोरदार तालिया)

"कम्युनिस्ट शिक्षा की समस्यायें",
राजनैतिक साहित्य का राज्य-प्रकाशन गृह,
१९४०, पृष्ठ २८-३५

अखिल-सघीय लेनिनवादी नौजवान कम्युनिस्ट लीग की केन्द्रीय कमेटी तथा स्कूली बालक और किशोर-पायोनीयरों से संबधित कोम्सोमोल क्षेत्रीय कमेटियो के सेक्रेटरियों के सम्मेलन में भाषण

८ मई १९४०

साथियो, बोलने का मेरा कोई इरादा नही था, लेकिन साथी मिखाइलोव कहते है कि बिना बोले काम न चलेगा। अच्छा, तो इस सम्मेलन से सबधित किस बात का मै जिक्र करू? पहले, मै आप की रिपोर्टों को ही लेता हू। मुझे ऐसा लगता है कि आपकी रिपोर्टो में अनेक बुनियादी कमिया है।

आप लोग कोम्सोमोल की प्रादेशिक कमेटियो के मन्त्री है, जिनपर स्कूली बालको और किशोर-पायोनीयरो में काम करने की जिम्मेदारी है। मै समझना चाहता हू कि यह जिम्मेदारी क्या है? मै

अपने को बूटा कहने मे हिचकिचाता हू। फिर भी मै बुढापे के निकट हू, और इसलिए मै अपनी युवावस्था के दिनो से आज का मुकाबला करता हू। पुराने युग के शिक्षा-मन्त्रालय से आपका कैसा सबध होता? मैं इतना कह सकता हू कि जो स्थान आज आपको मिला है, वह उस काल में कही भी मुझे ढूढे नही मिला।

मै समझता हू कि आपका मुख्य काम है पार्टी और सोवियत राज्य को बच्चो की कम्युनिस्ट शिक्षा मे सहायता देने के लिए आप स्कूलो और अध्यापको में राजनैतिक उद्देश्यो की भावना भरे। यहा पर अनेक साथी बोले है और उन्होने अपने काम की रिपोर्ट भी दी है। ऐसा लगता है कि इस सम्मेलन में शिक्षित और सुसस्कृत लोग आए हुए है। मै साक्षी हू कि आप बहुत अच्छा भाषण दे सकते है। सबसे अच्छी रिपोर्ट बेलोरूस कोम्सोमोल की केन्द्रीय-कमेटी के मत्री ने दी है। लेकिन मेरा ख्याल है कि अगर उसे स्वच्छन्द कहे जाने का डर नही होता, तो वह भिन्न प्रकार की रिपोर्ट देती। सच तो यह है कि जहा तक तत्त्व का सबध है, आप सबकी रिपोर्टें एक ही तरह की है। ऐसा क्यो? क्योकि यदि कहा जाय तो वे सगठनात्मक, शासकीय और अनुशासन के ढग की है। आप सभी का बोलने का ढग प्रशासकीय था और उसमें अधिकार की बू थी। यह पहली बडी त्रुटि है।

आपमें से एक ने भी अध्यापन के तरीको के सबध में कुछ नही कहा, और यदि आप इस पर विचार करे तो यह बात निर्देशन के रूप में मालूम होती है। आपमें से एक ने भी सोवियत अध्यापको और विशेषत उन अध्यापको के सास्कृतिक स्तर के बारे में नही कहा, जो कोम्सोमोल के सदस्य है, और जिस कारण उन्हे स्कूलो में अगुआ होना चाहिए। मै आपसे पूछता हू कोम्सोमोल के सदस्य स्कूली अध्यापको में क्या आपको ऐसे लोग मिले है जो अध्यापन-कार्य में या स्कूल की किसी दूसरी कार्यवाही में इस तरह आगे बटकर हिस्सा

लेते हो? अगर आप उनसे मिले होते तो रिपोर्ट में उनका ज़िक्र होता। अगर आप को ऐसे लोग नही मिले, तो आपको अपने ऊपर शरम आनी चाहिए। आखिर यह तो वहुत ही निश्चित वात है कि ऐसे लोग हमारे स्कूलो में अवश्य होगे। यह हो नही सकता कि ऐसे लोग हो ही नही। यह वहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है, पर ऐसा लगता है कि जैसे यह आपकी दृष्टि में आया ही नही। इस प्रश्न का नज़रअदाज़ हो जाना ही यह वताता है कि आपको अपने कर्तव्य का स्पष्ट ज्ञान नही है।

स्कूली वालको और किशोर-पायोनीयरो के वीच काम करने के लिए उत्तरदायी कोम्सोमोल के मत्री होने का अर्थ है कि सैकडो और हज़ारो अध्यापको के लिए आदर्श वन कर सेवा करना। क्यो, आपने खुद कहा है कि हमारे अध्यापको में ३० फ़ीसदी कोम्सोमोल की आयु के है। यदि वे आपको आदर्श मानते है तो शायद वे भी ऐसे ही प्रशासकीय, सगठनात्मक और अनुशासनीय मामलो की रिपोर्टें देते होगे। दुर्भाग्य की वात है कि आपमें से एक ने भी स्कूल के अध्यापकों में कोम्सोमोल के सदस्यो के जीवन और काम के वारे में कुछ नही वताया। यह दूसरी वडी त्रुटि है।

यदि आप स्कूलो में अनुशासन लाने के लिए प्रयत्नशील है—और आपको यह प्रयत्न करने चाहिए—तो पहली ज़रूरी वात यह है कि अध्यापक को ऊचे अधिकार दीजिए। मै उन अनेक अध्यापको के वारे में यहा नही वताऊगा, जो या तो अपने विषय-ज्ञान की कमी के कारण या विषय को जानते हुए भी अच्छा अध्यापन न कर पाने के कारण, या आम तौर पर इस कारण कि उनका अध्यापन न तो अच्छा है और न खराव, स्कूल में अधिकार की कमी का अनुभव करते है। मै ऐसी मिसालें लेता हू, जहा आतरिक और वाह्य स्थितिया अध्यापकों के अधिकार के विकास के अनुकूल है। मै पूछता हू आपने इस अधिकार को व्यापक और सुदृढ करने के लिए क्या किया है? दुर्भाग्य से कोई

भी इस विषय पर नही बोला। आपने यह भी नही बताया कि अध्यापको का अधिकार-क्षेत्र बढ रहा है या नही, और यदि बढ रहा है तो यह कैसे हुआ? किन साधनो से इसे प्राप्त किया गया? यह तीसरी बडी त्रुटि है।

मेरे विचार से स्कूली युवको और किशोर-पायोनीयरो में काम के प्रति उत्तरदायी कोम्सोमोल कमेटियो के सेक्रेटरियो को बहुत ही सभ्य और सुसस्कृत होना चाहिए। इससे मेरा तात्पर्य यह नही कि आप पाडित्य के सकुचित अर्थों में विशेषज्ञ बन जायें। नही, बिलकुल नही। यह तो बहस का सवाल ही नही है। शायद यदि आप ऐसे पडित हो गए तो किन्ही मामलो में घुटाला भी कर सकते है। आपको विद्वत्ता के आम अर्थों में ही सुसस्कृत होना चाहिए, यानी आपको स्कूल के काम से सबधित समस्याओ का, विज्ञान, कला और टेकनोलोजी की बुनियादी शाखाओ का सामान्य ज्ञान होना चाहिए। आपको ललित साहित्य का अच्छा ज्ञान होना चाहिए, क्योकि आप अध्यापन-कार्य करनेवाले कोम्सोमोल सदस्यो के लिए आदर्श है। आप इस माने मे सुसस्कृत हो कि आप को यह पता हो कि अध्यापको के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए, आप यह जानें कि आम तरह से लोगो के प्रति कैसा व्यवहार किया जाय। व्यवहार-कुशल होने के ही मानो मे आपको सुसस्कृत होना चाहिए। यदि सस्कृति के ये तत्त्व आपमें है, तो आप आसानी से सोवियत अध्यापको की आत्मिक आवश्यकताओ और हितो को समझ जायेंगे। आप को यह जानने मे कठिनाई नही होगी कि लोग क्या पढ रहे है, उन्हे सबसे अधिक कौन पुस्तके पसद है, और सामान्य रूप से साहित्य के प्रति उनका क्या रुख है। और ततत आपके लिए अध्यापको और बच्चो की भावनाओ को समझ सकना अधिक आसान होगा। तभी आप बच्चो की कम्युनिस्ट शिक्षा में पार्टी और सोवियत राज्य के सच्चे सहायक होगे। दुर्भाग्य से आप लोगो ने इस विषय पर भी कुछ नही कहा। यह चौथी बडी त्रुटि है।

मेरा कहना यह है कि आप अपनी रिपोर्टें बिलकुल भिन्न प्रकार की बनाएं। अनेक बातों, और विशेषकर इस बात से कि आप को भाषण-शक्ति का वरदान प्राप्त है, मैं समझता हूं कि यह काम आपकी शक्ति के भीतर की बात है। मान लिया कि इसके लिए कठिन परिश्रम करना होगा, काफ़ी सोचना होगा, क्योंकि मामला ख़तरे का है। आप फिसल जायं, ग़लती कर जायें, लेकिन यह कोम्सोमोल के सदस्यों को शोभा नहीं देता कि वे मुश्किलों से डरें और ख़तरे के सामने दुविधा में पड़ें। आपके भाषणों में रचनात्मक विचारधारा और पेशक़दमी की सजीवता होनी चाहिए। अलबत्ता, जब जरूरी हो तो आपकी रिपोर्टों में संगठनात्मक, प्रशासकीय और अनुशासनात्मक मामलों पर भी ज़ोर होना चाहिए। इसके अलावा उनमें राजनैतिक तत्व भरना और स्कूल के बच्चों तथा अध्यापकों में विकसित होती हुई और बढ़ती हुई सांस्कृतिक मान्यताओं को उभारना, आपका काम है।

मैं विशेषकर कोम्सोमोल की महिला-सदस्यों से कुछ कहना चाहता हूं। सार्वजनिक शिक्षा के काम में लगे कोम्सोमोल के साथियों में आप सबसे अधिक सुसंस्कृत हैं, क्योंकि हम लोग सुसंस्कृत नवयुवकों को हवाई बेड़े से लेकर खनन उद्योग तक, हर तरह के कामों में घसीटते हैं। सार्वजनिक शिक्षा के कामों में लगे कोम्सोमोल के सदस्यों का बड़ा भाग युवतियों का है। सार्वजनिक शिक्षा का प्राय: सारा काम कोम्सोमोल की युवती-सदस्यों के हाथ पड़ा है। और स्कूलों की मुख्य ज़िम्मेदारी आप पर है। इसीलिए, यह आपका कर्तव्य है कि कोम्सोमोल आयु के अध्यापकों की, जिन की तादाद काफ़ी है, सांस्कृतिक सतह को ऊंचा करें।

यहां पर किसी अध्यापिका के बारे में बताया गया, जो किसी भी समस्या को हल नहीं कर सकी, और इसीलिए उसे एक अच्छी अध्यापिका नहीं माना गया। यह बिलकुल मशीनी, बिलकुल ग़लत

रवैया है। ऐसा ज्ञानवान कौन है जो हर समस्या का हल निकाल ले? मेरा लडका एक माध्यमिक स्कूल में अध्यापक था। मैंने उनसे एक वार पूछा कि, "तुम्हारे विषय में बच्चे तुम से जितने भी सवाल करते है, क्या तुम उन सबका जवाब दे पाते हो?"

उसने कहा

"मै सब सवालो का जवाब कैसे दे सकता हू? जब मुझ से कोई ऐसा सवाल करता है, जिसका जवाब मै नही दे सकता, तो मै साफ कह देता हू कि अभी मै तुम्हारे सवाल का जवाब नही दे सकता, लेकिन मै अगली वार अवश्य इसका जवाब दूगा।"

सचमुच जब तीन खुर्राट लडको की आखें इस विचार से चमकती होती है कि "इस बार तो बच्चू पकडे गए", तो अध्यापक की स्थिति आसान नही होती। तो भी अध्यापक का कर्तव्य है कि वह अपने शिष्यो से खुले तौर पर कह दे कि इस समय मै तुम्हारे सवाल का जवाब नही दे सकता, क्योंकि मुझे जवाब नहीं मालूम है, हा, अगली वार मै इस का पूरा स्पष्टीकरण करूगा। मेरी राय में शिष्यों की तरफ एक अध्यापक का ऐसा ही ईमानदार रवैया होना चाहिए, तभी स्कूल के बच्चो को ईमानदार बनने की शिक्षा मिल सकेगी।

मेरे परिवार के ६ व्यक्तियो ने विश्वविद्यालय की शिक्षा पाई है। उनमें ज्यादातर इजीनियर है, जिन्हे अकगणित का ज्ञान होना चाहिए। जब मेरी सब से छोटी लडकी माध्यमिक स्कूल में पढती थी, तो ऐसा हो जाता था कि मश्क करते वक्त वे लोग उसके सवालो को हल करने में मदद देने की होड में लग जाते थे। वे सब हल में लग जाते थे, लेकिन सोचिए कभी-कभी ऐसा भी होता था कि वे एकदम से हल न निकाल पाते थे। वे भूल गए थे। कोई कह सकता है कि चूकि वे सब के सब इजीनियर थे और उन्हे अकगणित का अच्छा ज्ञान था, इसलिए हल निकालना बहुत आसान होना चाहिए। लेकिन वह

नाकामयाब रहते थे। इससे जाहिर है कि इस तरह के एकाध मामलो से ही यह नही परखा जा सकता कि अमुक व्यक्ति अपने विषय को जानता है या नही, कि वह अच्छा अध्यापक है या खराब।

एक अध्यापक का अधिकार सिर्फ प्रशासकीय ढग से नही बढाया जा सकता। लेकिन जब हम देखे कि एक अध्यापक के अधिकार की खिल्ली उड रही है, तो दखल देना जरूरी है, क्योकि इस तरह के रवैये मे सिर्फ उस अध्यापक की ही नही, वरन्, आम तौर पर सभी अध्यापको के अधिकार में कमी आती है। अगर हम अध्यापक के अधिकार को ऊचा उठाना चाहते है, तो हमें इस समस्या के प्रति रवैया बनाने मे सचेत रहना होगा। अलबत्ता, यह तो कभी अच्छी बात नही है कि एक अध्यापक जो कभी चश्मा नही लगाता, यह कहे कि वह बिना चश्मे के देख ही नही सकता। साथ ही, हमें यह याद रखना चाहिए कि दुनिया के परदे पर कभी कोई ऐसा ज्ञानी न हुआ है और न है जो सभी सवालो का जवाब दे सके। सभी नागरिको में उसके प्रति सम्मान की भावना जगाकर ही अध्यापक के अधिकार की वृद्धि हो सकती है।

मुझे प्रतीत होता है कि कोम्सोमोल द्वारा इसी का प्रचार होना चाहिए—किसी सर्कुलर द्वारा नही, बल्कि ऐसे अलिखित नियम द्वारा जो हमारी तमाम कोम्सोमोल की परपरा का अग हो जाय। और आप कोम्सोमोल की कमेटियो के सेक्रेटरी लोग इस अलिखित नियम के सबसे प्रथम और उत्साही प्रचारक बनिए, क्योकि अध्यापक के अधिकार बढाने के लिए पार्टी और कोम्सोमोल की यही सामान्य नीति है।

यहा पर स्कूली बच्चो की शिक्षा की प्रगति के बारे में बहुत कुछ कहा गया है और अनेक आकडे दिये गये है। जब आप एक आम तस्वीर खीचना चाहे तो आकडो का अलबत्ता बहुत महत्व होता है। लेकिन यह बात पक्की है कि आप लोग शिक्षा-विभागो के अध्यक्ष नही

हैं। अलावा इसके, आपको ये आंकड़े बिना किसी विशेष मुश्किल के अध्यापकों और डायरेक्टरों से मिल जाते हैं, जो आपके कहने से उन्हें आपके लिए तैयार कर देते हैं। फलत: आपको मामूली जोड़-बाकी भी नहीं करनी पड़ती। ईमानदारी से कहता हूं कि मैंने आप से इससे कहीं ज्यादा आशा की है। मुझे आशा थी कि आप बतायेंगे कि इन आंकड़ों के पीछे क्या है? आपको स्थिति का विश्लेषण अवश्य करना चाहिए था, क्यों? लेकिन मुझे आपसे इस तरह का कुछ भी सुनने को नहीं मिला।

हम यह बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि जहां कुछ अध्यापकों से बढ़िया नंबर प्राप्त कर लेना आसान है, वहां कुछ ऐसे भी सख्त अध्यापक हैं जो सिद्धांतत: बहुत अच्छे नंबर नहीं देंगे। वे घोषित करेंगे कि सिर्फ़ उन्हीं का ज्ञान "बहुत बढ़िया" है, लेकिन यहां फिर हमें मामले की गहराई में जाना है। हमारे पास बहुत बढ़िया अध्यापक हैं, विशेषकर पुराने अध्यापकों में ऐसे अनेक हैं, जिन्हें अपने विषय से बहुत प्यार है, जो उस पर लट्टू हैं और बहुत अच्छी तरह पढ़ाते हैं। बच्चों के दिमाग़ में ऐसे अध्यापकों के लिए, और साथ ही जिस विषय को वे पढ़ाते हैं, उस के लिए गहरी श्रद्धा भी उनमें होती है। हो सकता है कि नंबर देने के मामले में ऐसे लोग नरम हों, लेकिन निश्चयपूर्वक यह कहा जा सकता है कि इनके शिष्यों का उस विषय का ज्ञान कहीं ज्यादा होगा, बनिस्बत उनके जिन्होंने ऐसे अध्यापकों से शिक्षा पाई है जो सिर्फ़ अपने को ही बढ़िया नंबर पाने का अधिकारी समझते हैं। आपने सवाल के इस पहलू पर भी ध्यान नहीं दिया।

आम तौर पर मुझे इस बात पर कुछ-कुछ आश्चर्य है कि आपने अपने को काग़ज़ी रिपोर्टों में ही सीमित कर दिया।

अपने आलोचकों की भाषा का प्रयोग किया जाय, तो कहा जा सकता है कि आपकी रिपोर्टें फ़ार्मलिस्ट (औपचारिक) ज्यादा थीं,

और उनमें समाजवादी यथार्थवाद का तत्व कम था। मेरी समझ में वूसोव ने एक बार कहा था "मै युवको को इसलिए प्यार करता हू कि उनकी सहायता से आदमी आगे बढ सकता है।" यह सत्य है। तिस पर भी हमारे मामले में प्रगति नही हुई, यद्यपि इसकी सभावनाए बहुत है। आखिर, आप लोग शिक्षा-विभागो के अध्यक्ष-पदो पर तो आसीन है नही, जिनको मरम्मत आदि के कामो से लेकर स्कूल-अनुशासन तक के प्रशासकीय कार्यों के भार से दबना पडता है। शिक्षा-विभागो के अध्यक्षो के मुकाबले आप को अपने कार्य में अधिक स्वतत्रता मिली हुई है। आप लोग पार्टी और सोवियत सरकार के स्कूलो की इमारतो आदि की मरम्मत के मामले मे उतने सहायक नही—हालाकि आवश्यकता पडने पर इस मोर्चे पर भी आपको मदद देनी चाहिए—जितने कि आनेवाली पीढी को कम्युनिस्ट शिक्षा-दीक्षा मे सुसज्जित करने की है। अतत मै यह मानकर चलता हू कि आप लोग निष्पक्ष पर्यवेक्षक नही, बल्कि उत्साही सोवियत देशभक्त है। आपको तो उत्साह से उतारना चाहिए और यदि ऐसा नहीं है तो आप कैसे नौजवान है? आप कैसे सोवियत देशभक्त है? आपको हमेशा ही आगे बढना चाहिए। आपको हर नए अहम सवाल को फौरन हाथ में लेना चाहिए। मै फिर दोहरा दू कि ऐसा करने के लिए आपको सुसस्कृत होना जरूरी है। अगर यह मेरी शक्ति में होता, तो मै आप सबको कम से कम दिन में ५ घटे साहित्य (उपन्यास, कला, विज्ञान, इजीनियरिग आदि की अनेक समस्याओ पर लेख आदि) पढने को मजबूर करता, जिससे आप योग्य, सुसस्कृत और शिक्षाप्राप्त आदमी बनें और जब कभी भी सिद्धात या अमली मामले की कोई समस्या उठती, तो अध्यापक अपने आपसे कह उठता—आह, इसमें विज्ञान की अकादमी की गंध आती है! ऐसा होने पर फौरन ही अध्यापको की निगाह में आपका भी अधिकार बढ जायेगा।

जहा तक मुझे मालूम है, स्कूलो पर आपका जाब्ते से कोई अधिकार नही, लेकिन आप उनको प्रभावित कर सकते है। इस अर्थ में पार्टी आप से महत्वपूर्ण तथा फलदायक सहयोग की आशा करती है। इसीलिए मुझे बार-बार दोहराना पड़ता है कि स्कूली बच्चो और पायोनीयरो के मध्य काम करने के उत्तरदायी कोम्सोमोल कमेटियो के मंत्रियो को सुसंस्कृत होना चाहिए। और जहा तक अध्यापको का संबंध है, उन्हे तो संस्कृति के मामले में सर्वप्रथम होना चाहिए।

संस्कृति के साथ-साथ ही स्कूलो में आपको बोल्शेविक भावना भरनी चाहिए।

साथियो, जैसा आप देख रहे है, मैने आप सब की भूमिका और महत्व का बहुत ही ऊंचा मूल्यांकन किया है। इससे आप पर एक बड़ा उत्तरदायित्व भी आ जाता है। जैसा मैने शुरू में ही कहा था, यह आपका कर्तव्य हो जाता है कि आपकी रिपोर्टों मे राजनैतिक तत्व हो, जिससे कि वे रिपोर्टें सचमुच पार्टी-भावना को प्रदर्शित कर सकें। मार्क्सवाद, सच्चे मार्क्सवाद का यह आपका पहला पाठ होगा।

"कम्युनिस्ट शिक्षा की समस्यायें"
राजनैतिक साहित्य का राज्य-
प्रकाशन गृह
१९४०, पृष्ठ २०-२७

कम्युनिस्ट शिक्षा के बारे में

मास्को नगर के पार्टी-कार्यकर्ताओ की सभा मे दिया गया भाषण

२ अक्तूबर १६४०

साथियो, आज मे ठीक बीस साल पहले व्लादीमिर इल्यीच लेनिन ने रूसी युवक कम्युनिस्ट लीग की तीसरी अखिल रूसी कांग्रेस में कम्युनिस्ट शिक्षा पर एक भाषण दिया था। कोम्सोमोल को दिये गये उस भाषण में उन्होंने कहा था कि पूंजीवादी समाज में पली हुई हमारी पीढी के लिए कम्युनिस्ट समाज की स्थापना का काम पूरा करना बहुत मुश्किल होगा। यह काम युवको के ज़िम्मे पड़ेगा।

आज जब आप तालिया बजा रहे थे, तो ये शब्द अपने-आप मेरे दिमाग में आ गए और मै सोचने लगा कि मेरे सामने कोम्सोमोल के वही भूतपूर्व सदस्य है, वे ही लोग जिनके सामने लेनिन ने भाषण दिया था, जो विकसित हो गए है और जीवन में अनुभवी हो गए है। आज वे ही समाजवादी निर्माण-कार्य में सक्रिय भाग ले रहे है। समाजवाद के निर्माताओ, मै भी तुम्हारे प्रशसको मे से हू।

हम कम्युनिस्ट शिक्षा के प्रति अधिक ध्यान देते है। हमारे प्रकाशन अकारण ही "शिक्षा" शब्द से भरे नहीं रहते।

तो भी, आम तौर पर शिक्षा का अर्थ क्या है, यह सही तौर पर बताना बहुत मुश्किल है। प्राय शिक्षा और लालन-पालन को एक मान लिया जाता है। दोनों में निकट सबंध है अवश्य, लेकिन दोनो पर्यायवाची नही हैं। शिक्षा शास्त्री शिक्षा को अधिक महत्व देते हैं। इस शिक्षा की अपनी विशिष्टताए हैं।

मेरी राय में शिक्षक द्वारा अपेक्षित गुणो को शिक्षार्थी में भरने के लिए उसके दिमाग पर निश्चित, उद्देश्यपूर्ण और आयोजित ढग से प्रभाव डालना ही शिक्षा है। मुझे लगता है कि ऐसी परिभाषा (जिसका मानना किसी के लिए भी लाजिमी नही है) शिक्षा के सभी पहलुओ को प्रतिबिबित कर देती है। जैसे—विश्व के प्रति एक निश्चित दृष्टिकोण का निर्माण, नैतिकता और मानवीय व्यवहार-व्यापार के नियम, चरित्र और इच्छा शक्ति का निर्माण, आदते और अच्छी रुचि और शारीरिक गुणो का विकास, आदि।

शिक्षा-कार्य बहुत ही कठिन व्यवसायो में से है। अच्छे से अच्छे शिक्षा शास्त्री इसे न सिर्फ विज्ञान की वस्तु समझते हैं, बल्कि कला की भी वस्तु मानते है। उनके दिमाग में स्कूली शिक्षा की बात है, जो अलबत्ता सीमित दायरे की वस्तु है। इसके साथ ही जिदगी का स्कूल भी है, जिसमें जनता की शिक्षा का काम लगातार ही चलता रहता है और जिसमे खुद जिदगी, पार्टी, राज्य, सभी शिक्षक होते है और जिसमें लाखो शिक्षार्थी होते है, यह कही ज्यादा पेचीदा मामला है।

आज मैं इसी जनता की शिक्षा के विषय में बोलना चाहता हू।

१

एगेल्स ने अपनी पुस्तक "एन्टी-डूहरिग" में लिखा है

"   इन्सान, जाने या अनजाने अतत अपने नैतिक विचार अपनी वर्ग-स्थिति पर आधारित व्यावहारिक सबधो से ग्रहण करता

है, उत्पादन और विनिमय द्वारा वनने वाले आर्थिक सवधो के कारण नैतिकता सदैव ही वर्ग-नैतिकता रही है, नैतिकता या तो शासक-वर्ग के प्रभुत्व और हितो के पक्ष में रही है या जैसे ही शोपित वर्ग-शक्तिशाली हो गया, वह शोषितो के भावी हितो का प्रतिनिधित्व करने लगी।"

इसी प्रकार, वर्गीय समाज में शिक्षा भी कभी न वर्गीय हितो के वाहर और न उनसे ऊपर रही है।

पूजीवादी समाज में शिक्षा ऊपर से नीचे तक पाखड से भरी हुई है, वह शासक वर्ग के स्वार्थों को ही परिपोषण करती है। पूजीवादी समाज में होने वाले अन्तर्द्वंद्वो का प्रतिविव उसका चरित्र अतर्विरोध है।

पूजीपतियो का आदर्श है मज़दूरो और किसानो का शोषण, गूगो की भाति भारवहन करने वाले आज्ञाकारी चाकरो के रूप में देखना। इसीलिए पूजीपति कभी न चाहेगे कि मज़दूरो और किसानो में किसी तरह के साहस और वहादुरी को वढावा मिले। वे चाहेगे कि उन्हे किसी भी तरह की शिक्षा न मिले, क्योकि अशिक्षित और दवे-पिसे लोगो को वश में रखना कही आसान है। लेकिन ऐसे लोग विजय-अभियान में नही जा सकते। विना प्रारभिक शिक्षा के वे मशीनें और औज़ार प्रयोग में नही ला सकते। एक तरफ, टेकनिकल प्रगति, हथियारो की दौड आदि में आपसी होड, और दूसरी तरफ, शिक्षा प्राप्त करने के लिए मज़दूरो-किसानो के सघर्ष पूजीवादियो को मजवूर करते है कि वे मेहनतकश जनता को कम से कम ज्ञान का जूठन तो दें। दूसरे देशो की लूट-खसोट करने के लिए पूजीवादियो को मजवूर होना पडता है कि वे अपने ही लिए मेहनतकश जनता में साहस, शौर्य आदि गुणो का विकास होने दें।

पूजीवादी शिक्षा की कोई भी प्रणाली अपने को इन अतर्विरोधो से मुक्त नही कर सकती।

इन अतर्विरोधो के कारण जो पूजीवादी समाज का अभिन्न अग है, शासक वर्ग खुले दमन से लेकर लुकी-छुपी धोखेबाजी आदि सभी तरीको से जनता पर प्रभुत्व हासिल करने के लिए कठिन सघर्ष करता है।

जन्म से मृत्यु तक मेहनतकश प्रजा पूजीवादी समाज की उन विचारधाराओ, भावनाओ और रीति-रिवाजो से प्रभावित होती रहती हैं, जो शासक-वर्ग के फायदे में होते है। इसके अनेक प्रकार है। चर्च, स्कूल, कला, सिनेमा, नाटक, पत्र-पत्रिकाए, विभिन्न प्रकार के सगठन—ये सभी जनता को पूजीवादी दृष्टिकोण, नैतिकता, रीति-रिवाज आदि की भावना से प्रेरित करने के साधन मात्र होते है।

मिसाल के लिए सिनेमा को ले लीजिए। एक पूजीवादी फिल्म-डायरेक्टर ने अमरीकी फिल्मो के विषय मे यह लिखा है

"आजकल की अनेक फिल्में कुछ बेहोश करनेवाली औषधियो की तरह है जो ऐसे थके हुए लोगो के लिए बनाई जाती है जो चाहते हैं कि वे मुलायम आराम कुर्सियो में बैठे रहे और कोई उन्हे बच्चो की तरह खिलाता रहे।"

पूजीवादी शिक्षा का यह सार है। सर्वहारा वर्ग का अगुआ दस्ता कम्युनिस्ट पार्टी, बुर्जुवा-शिक्षा की इस व्यवस्था का विरोध करती है, जिसके विकास में शताब्दिया लगी और जिसका उद्देश्य शासक, पूजीवादी-वर्ग की स्थिति को मजबूत करना और शोषितो से अपनी बेबसी को कबूल करवाना था। कम्युनिस्ट पार्टी के शिक्षा-सिद्धात पूजीवादी प्रभुत्व के विरोध में और प्रोलेतारी-वर्ग के अधिनायकत्व के समर्थन में है।

एक बात जो बिना सबूत पेश किए भी समझ में आ सकती है कि कम्युनिस्ट शिक्षा न सिर्फ उद्देश्यों में बुनियादी तौर पर बूर्जुआ शिक्षा से भिन्न है, बल्कि तरीकों में भी भिन्न है। कम्युनिस्ट शिक्षा आम तौर पर राजनैतिक चेतना और सांस्कृतिक विकास का अभिन्न अंग है। वह जन-साधारण की मानसिक प्रगति से बंधी है। अत इसकी सफलता के लिए सभी कम्युनिस्ट पार्टिया प्रयत्नशील है।

यद्यपि तमाम कम्युनिस्ट पार्टियों का अंतिम उद्देश्य एक और समान ही है, तो भी, क्योंकि सोवियत यूनियन के मजदूर-वर्ग और पूजीवादी देशो के मजदूरो की स्थिति भिन्न है, हमें अपनी विशेष स्थिति के अनुरूप ही शिक्षा देना चाहिए।

हमारे देश में मजदूर-वर्ग न सिर्फ भौतिक रूप से ही प्रभुत्वशील है, बल्कि आत्मिक तौर से भी वह इसी स्थिति में है।

मार्क्स और एंगेल्स ने लिखा है

> "जो वर्ग भौतिक उत्पादन के साधनो का मालिक है, वही आत्मिक उत्पादन के साधनो का भी मालिक है और बातो के अलावा, शासक वर्ग में चेतना होती है और इसी से वे सोचते है। इसलिए जहा तक वे एक वर्ग के रूप में शासन करते है, वे एक युग की स्थिति और सीमाए भी निर्धारित करते हैं। यह स्वयसिद्ध है कि वे सभी क्षेत्रो में इस शक्ति का प्रयोग करते है। इसलिए वे विचारो और आदर्शों को भी प्रभावित करते हैं। इसका मतलब यह है कि उनके विचार पूरे युग पर हावी होते हैं।"

मार्क्स और एंगेल्स का यह विचार था कि "शासक वर्ग के विचार ही शासक विचार होते है"। अत सोवियत यूनियन के मजदूर-

वर्ग पर महान उत्तरदायित्व आ जाता है। हम सिर्फ पूजीवादी व्यवस्था के आलोचक मात्र बनकर सतोष नही कर सकते। मुख्य चीज है राजनैतिक, आर्थिक और सास्कृतिक क्षेत्रो में अमली सफलताओ के लिए सघर्ष करना। यही कम्युनिस्ट शिक्षा का सार है।

३

कम्युनिस्ट शिक्षा के क्षेत्र में आज हमारे सामने मुख्य काम क्या है? क्या ये काम बुनियादी तौर पर उन कामो से भिन्न है जो लेनिन ने कोम्सोमोल की तीसरी काग्रेस के सामने बीस साल पहले पेश किए थे?

अलबत्ता, इस दौरान में सोवियत यूनियन की स्थिति काफ़ी बदल गई है, लेकिन वास्तव में कम्युनिस्ट शिक्षा के वे मूलभूत सिद्धात, जो लेनिन ने २० साल पहले बताए थे आज भी अपना महत्व रखते है।

यह अनुचित न होगा कि उन लोगो को इन कामो की [illegible] याद दिला दी जाया करे जो कोरी हवाई बाते ही करते रहते है। वे लोग जिन्हें "सिद्धात बघारना" ही पसद है, जो केवल नव मानव की कल्पना ही करते रहते है, जो कम्युनिज्म को किसी कल्पित सुनहरे भविष्य से जोडते रहते है। मेरी राय में ऐसी हरकत दूर बैठकर भविष्यवाणी करने के समान ही है।

साथियो, श्रम की उच्च उत्पादन-शक्ति कम्युनिज्म के बहुत ही महत्वपूर्ण तत्वो में से है। सोवियत यूनियन की मेहनतकश जनता के पूजीवाद-विरोधी सघर्ष में यह बहुत ही शक्तिशाली हथियार है। लेनिन ने कहा है

"अतत श्रम की उपज ही नयी समाज-व्यवस्था के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण मुख्य वस्तु है। पूजीवादी व्यवस्था ने ऐसी

उत्पादन-शक्ति को जन्म दिया, जो अर्ध-कम्मी-व्यवस्था के लिए सभव न थी। पूजीवाद को पूर्णतया हराया जा मकता है और हराया जायगा क्योकि समाजवाद श्रम की एक नयी और अधिक ऊची उत्पादन-शक्ति को जन्म देता है। पूजीवाद की श्रम-उत्पादन-शक्ति के मुकाबले में वर्ग-चेतन, सगठित मजदूरो की स्वेच्छा से बढी हुई श्रम की उत्पादन-शक्ति को टेकनीक के आधार पर उच्चतर करना ही कम्युनिज्म है।"

साथियो, हमे इसी के बारे में सोचना और बोलना चाहिए। यही वह दिशा है जिधर कम्युनिस्ट शिक्षा को अगसर होना चाहिए। यह श्रम की ऊची उपज प्राप्त करने का सघर्ष है।

जब मै इस रिपोर्ट की तैयारी कर रहा था और मुख्य बातो पर सोच रहा था, तो मैने बुनियादी सूत्रो की शरण ली, और सर्वप्रथम, अपने सविधान को लिया, जिसकी १२ वी धारा इस प्रकार है

"सोवियत समाजवादी जनतत्र सघ में काम करना हर स्वस्थ नागरिक का कर्तव्य है, और उसके लिए सम्मान की चीज है। यह बात, 'जो काम नही करेगा वह खाना भी नहीं पायेगा', के सिद्धात के अनुसार है।"

सोवियत समाजवादी जनतत्र सघ में समाजवाद का यह सिद्धात लागू होता है कि "हरेक अपनी योग्यता के अनुसार काम करेगा और हरेक को उसके काम के अनुसार पारिश्रमिक मिलेगा"। लेकिन, साथियो, आप स्वय जानते है कि सविधान की धारायें सिर्फ नागरिको के कर्तव्यो और अधिकारो की ही प्रतीक नही है, उनमें जनता की शिक्षा के तत्व भी निहित है।

स्पष्ट है, सविधान की यह धारा सीधे शब्दो में काम की महत्ता बताती है।

लेकिन मुझे बताया जायेगा कि हमारे देश मे काम की महानता एक चीज है और श्रम की उच्चतर उत्पादन-शक्ति के लिए सघर्ष दूसरी चीज है। नही साथियो, ऐसा नही है। काम के प्रति महत्ता के रुख का ही मतलब है श्रम की उत्पादन-शक्ति को बढाने का यथासभव प्रयास करना। यही मुख्य वस्तु है।

श्रम की महत्ता को सर्वविदित करने के लिए ही पार्टी और सोवियत सरकार ने यह अहम क़दम लिये है जैसे "समाजवादी श्रम का वीर" की उपाधि, "श्रम के लाल झण्डे" का पदक और "श्रम-शूर", और "श्रम-वीर" तमगो की व्यवस्था की है।

"समाजवादी श्रम का वीर" की उच्च उपाधि "सोवियत सघ के वीर" की उपाधि के समान समझी जाती है। यह उपाधि, ये आर्डर और तमगे महज़ काम के लिए नही मिलते, सिर्फ़ इस बिना पर नही कि अमुक आदमी काम करता है, बल्कि श्रम-उत्पादन शक्ति के स्तर को ऊचा करने के प्रयास मे विशेष सफलता प्राप्त करने पर मिलते है।

समाजवादी सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष-मडल की २६ जून १९४० की घोषणा से भी इसी उद्देश्य की पूर्ति होती है।

बाहरी तौर पर देखने से यह बिल्कुल परस्पर-विरोधी बात मालूम होगी एक तरफ तो "समाजवादी श्रम का वीर" की उपाधि, और अन्य आर्डर तथा तमग़े—"लेनिन के आर्डर" से लेकर अनेक तरह के तमगों तक—और दूसरी तरफ ऐसी घोषणा जो श्रम-अनुशासन के क्षेत्र में सज़ा को शामिल करती है। वास्तव में वे सब एक ही दिशा की ओर क़दम है।

एक ओर समाजवादी श्रम के सबसे अच्छे प्रतिनिधियो को उपाधियो से विभूषित करके और दूसरी ओर उत्पादन में अव्यवस्था करने-वालो को सज़ा देकर पार्टी और सोवियत सरकार उस दिशा का

निर्देशन करती है जिस तरफ कम्युनिस्ट शिक्षा मेहनतकश जनता को ले जाना चाहती है।

साथियो, सभवत आपमें से कुछ ने ही क्राति से पूर्व कारखानो में काम किया है, ऐसे लोगो की सख्या कम होती जा रही है। इसलिए मै यह मानकर चलता हू कि क्राति से पहले, पुराने जमाने मे काम के प्रति क्या रुख था, इसका आपको बहुत कम ज्ञान है। दुर्भाग्य से हम लोगो पर इस तरह का रवैया अभी तक काफी असर डालता है।

उस समय हम क्रातिकारी लोग उन कुशल कारीगरो के बारे में, जो कारखाने मे ४० साल से ऊपर से लगे हुए थे, विशेष अच्छी राय न रखते थे। तो भी वे अपने काम में माहिर थे। श्रम-अनुशासन में उनका विश्वास था और वे कभी भी अपने काम मे जी न चुराते थे। और जब हडताल होती थी तो कभी-कभी उन्हे जबदस्ती कारखाने से भगाना पडता था। वे अपने-आप काम बद न करते थे कि कही मालिको से बिगाड न हो जाय। पुराने जमाने में हम ऐसे मजदूरो की कदर नही करते थे। क्यो? क्योकि वे पूजीपतियो की तरफदारी करते थे।

समाजवाद में, अब दूसरा मामला है। अब वे लोग जिन्होने कारखाने मे ४० साल काम कर लिया है, जो श्रम-अनुशासन के आदर्श है, जो अपने काम में माहिर है और श्रम की उच्चतम उत्पादन-शक्ति हासिल कर लेते है, उन्हे हम लोग आर्डरो और तमगो से विभूषित करते है और पुरस्कृत करते है। हम सबसे अच्छे सोवियत नागरिको के रूप में उनका सम्मान करते है।

चलते-चलते यह भी बता दू कि यह द्वद्वात्मकता का सुस्पष्ट उदाहरण है। पहले हम काम के प्रति ऐसे रवैये की काट करते थे। अब हम इस "काट" की "काट" करते है। नतीजा "काट की काट" है, काम के प्रति समाजवादी रवैये की दृढ स्थापना।

ऐसे मजदूरो के बारे में हमने अपनी राय में इस तरह का क्रांतिकारी परिवर्तन क्यों किया? अब हम ऐसे लोगो को सोवियत यूनियन के सबसे उत्तम नागरिक क्यो समझते है? क्योंकि वे लोग हमारे वर्ग संघर्ष की पहली पंक्ति में है जिनका विकास उच्चतम मंजिल में पहुच गया है। युद्ध के मोर्चे पर हथियारो की भिडन्त को ही वर्ग संघर्ष नही कहा जा सकता। नही, अब वर्ग संघर्ष दूसरे ढर्रे से आगे बढ रहा है। और इस समय श्रम की उच्चतम उत्पादन-शक्ति के लिए संघर्ष की ही अधिक महत्ता है। पहले, जब सोवियत व्यवस्था कायम नही हुई थी, वह आदमी जो अच्छी तरह काम करता था, अप्रत्यक्ष रूप से पूजीवाद को मजबूत करता था, अपनी गुलामी की जजीरो को और मजबूत करता था और समूचे मजदूर वर्ग की गुलामी को भी मजबूत करता था। लेकिन अब समाजवादी व्यवस्था में, जो अच्छी तरह काम करता है, वह समाजवाद का पक्ष लेता है और अपनी कामयाबियो से न सिर्फ साम्यवाद के लिए रास्ता साफ करता है, बल्कि विश्व के मजदूर वर्ग की गुलामी की जजीरो को भी तोडता है। वह कम्युनिज्म का सक्रिय योद्धा है।

क्या हम ने अपने देश में श्रम उत्पादन-शक्ति बहुत बढा ली है? इस क्षेत्र में अब तक हम ने जो नतीजे हासिल किए है, उनको मैं बहुत बडा नही मानता। सिद्धान्तत पूजीवाद के मुकाबले समाजवाद में श्रम उत्पादन-शक्ति अधिक होना चाहिए। साथी स्वेरवाकोव! आप क्या समझते है? यह सही है या नही? (स्वेरवाकोव "सही, बिल्कुल सही") लेकिन अमल में मामला क्या है? अमल मे अमेरिका को छोडकर युरोप में श्रम की उच्चतम उत्पादन-शक्ति तक भी हम नही पहुच पाये है। इसका मतलब है कि श्रम की उत्पादन-शक्ति और बढाने के लिए हमें ज्यादा प्रयत्न करने है। हम श्रम की उत्पादन-शक्ति

को वढाकर ही भावी कम्युनिस्ट समाज के निर्माण की शक्ति प्राप्त कर सकेगे।

लेकिन साथियो, श्रम की उच्चतम उत्पादन-शक्ति मे हमारा अभिप्राय सिर्फ सख्यात्मक ही नही, वल्कि गुणात्मक भी है। हमारे कुछ साथी कम्युनिज्म को केवल काल्पनिक रूप मे ही देखते है। वे इस धारणा को ठोस रूप नही दे सकते। आखिर, कम्युनिज्म का मतलव क्या है? साम्यवाद का अभिप्राय है अधिकतम एव श्रेष्ठतम उत्पादन। मेरी निगाह मे सिर्फ शारीरिक ही नही, वौद्धिक उत्पादन भी है—इजीनियरो, लेखको, शिल्पियो, शिक्षको, ऐक्टरो, गवैयो, डाक्टरो आदि द्वारा होनेवाला उत्पादन।

यह साफ-साफ वना देना चाहिए कि हम अपने उत्पादन सवधी कई वातो से असतुष्ट है। हालत यह है कि जव कभी हमें खराव चीज मिलती है, तो हम वडे कडे शब्दो में उसकी वुराई करते है। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसको हर चीज अच्छी किस्म की और प्रचुर मात्रा मे मिले। अव मै आपसे पूछता हू "अगर हममे से हरेक अपने काम को अच्छे से अच्छा नही करता तो ये चीजें कहा से आयेंगी?" हमें सदैव यह कहावत याद कर लेनी चाहिए कि "जैसा वोओगे वैसा काटोगे।"

और इस मामले में भी, केवल उत्पादन की किस्म पर ही हम जोर नही देते। जैसा कि आप जानते है, १० जुलाई १९४० को सोवियत समाजवादी सघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष-मडल ने घोपणा की थी कि "खराव किस्म की चीजें वनाना या ऐसी चीजें वनाना जिसके हिस्से ही गायव हो, या ऐसी चीजें वनाना जो निश्चित स्टैंडर्ड की न हो, राज्य के खिलाफ तोडफोड की तरह का ही जुर्म समझा जायेगा।" कारखानो के डायरेक्टर, मुख्य इजीनियर और टेकनिकल निरीक्षण-विभागो के अध्यक्ष, जो खराव किस्म के माल को वाहर आने

देंगे या ऐसा माल आने देंगे जिसके हिस्से ही गायब हो, तो उन पर मुक़दमा चलाया जा सकता है और उन्हें ५ से ८ साल तक की कैद की सजा दी जा सकती है।

यह कहने की कोई आवश्यकता नही कि यह घोषणा एक प्रकार से कुछ लोगो पर सख्त हमला है। यह उद्योग-धधो के मैनेजरो को एक शक्तिशाली हथियार देती है जिसमे वे अस्वस्थ वातावरण के खिलाफ सघर्ष कर सकते है। आम तौर पर वे कैसे तर्क करते थे? —सार्वजनिक सगठनो, साथियो, आदि से सबध बिगाडना, उनकी बदनामी करना यह क्या उचित है? क्या हुआ यदि एकाध चीज़ ख़राब हो गयी हो? उत्पादन के ढेर में एकाध ख़राब चीज़ भी निकल जायेगी। और ऐसा होता था।

तो, इस तरह की मनोवृत्ति को निर्मूल करना आवश्यक है। हम में से हरेक के व्यक्तिगत और समाजवादी समाज के हित में यह आवश्यक है। दो में से एक ही बात हो सकती है या तो हम कम्युनिज्म को सच्चे दिल से स्वीकार करें, या हम सिर्फ इसके बारे में बातें करते रहे। अथवा, हम हिलते-डोलते, अगडाई-जमुहाई लेते कम्युनिज्म की ओर धीरे-धीरे बढे। लेकिन हमारे दिमाग़ में यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि कम्युनिज्म की तरफ इस तरह बढना बहुत ही ख़तरनाक है। इस तरह समाज का परिवर्तन बहुत लबा समय लेगा।

मुझे एक घटना याद आती है, जैसे वह आज ही की हो। लगभग चालीस साल हुए, शायद उनतालीस या अडतीस—जैसा आप देख रहे है मैं मौके पर चालीस साल पीछे तक जा सकता हू—(हमी) हम लोगो में, जो अडरग्राउड कार्यकर्ता थे, एक बहस उठी एक क्रातिकारी मजदूर को अपना काम अच्छी तरह करना चाहिए या नहीं, यानी वह अपने उत्पादन की किस्म का ख़याल करे या नहीं। कुछ ने कहा कि हम ऐसा कर ही नही सकते, हमारी प्रकृति ही ऐसी है कि हम ख़राब

काम नही कर सकते, हमें इससे घृणा होती है और यह हमारे आत्मसम्मान के खिलाफ है। इसके विरुद्ध कुछ लोगो ने कहा कि उत्पादन की श्रेष्ठता से हमें कुछ मतलब नही, यह तो पूजीपतियों का काम है। आखिर हम उन्ही का तो काम करते है। कुछ भी हो, वह तो हमें अच्छा काम बनाने के लिए मजबूर ही करेंगे, और जहा तक हमें पूजीपति मजबूर करेंगे हम अच्छा काम करेंगे। लेकिन हमको कोई पहल नही करनी चाहिये, कोई उत्साह नही दिखाना चाहिए।

साथियो, आप अब समझ गए होगे कि क्राति से पहले भी जब देश में पूजीवादी निज़ाम था, कुछ मज़दूर जो पूजीपतियो से लडते थे, उनका रुख भी यही था कि हमें काम अच्छा करना चाहिए। खराब काम से उन्हें घृणा थी, या यू कहिए कि वे आत्मा की आवाज़ सुनते थे। लेकिन अब समाजवादी समाज में, जहा हम पूजीपतियो के लिए नही बल्कि अपने लिए काम करते है, क्या खराब उत्पादन पर हमारी आत्मा विद्रोह करती है, क्या वह हमको कोचती है? दुर्भाग्य से, ऐसा नही कहा जा सकता। लेकिन यह कही अच्छा होगा अगर लोग आत्मा की पुकारें सुनें, बुरे उत्पादन पर उनकी आत्मा विद्रोह करने लगे।

जब हम कम्युनिस्ट शिक्षा की बात करते है तो इसका मतलब सर्वप्रथम यह है कि हम हर मजदूर में यह भाव भरें कि अपने काम के प्रति उसका रवैया शुद्ध हो। हम उस पर इस बात का प्रभाव डाले कि यदि वह अपने को बोल्शेविक समझता है या सिर्फ ईमानदार सोवियत नागरिक ही समझता है, तो वह अपने अत करण को इतना शुद्ध रक्खे कि उसका उत्पादन श्रेष्ठ हो।

अत कम्युनिज्म का सघर्ष श्रम की उच्चतम उत्पादन-शक्ति के लिए, सख्यात्मक और गुणात्मक दोनो ही के लिए सघर्ष है। कम्युनिस्ट शिक्षा की यह पहली बुनियादी मान्यता है।

साथियो, सोवियत संविधान की धारा १३१ में लिखा है

"सोवियत समाजवादी प्रजातन्त्र संघ के हरेक नागरिक का कर्तव्य है कि वह सार्वजनिक समाजवादी सम्पत्ति को सोवियत व्यवस्था का पवित्र और अनुल्लघनीय आधार मानकर, उसे देश के धन और शक्ति का एवं उसे तमाम मेहनतकश जनता की समृद्धि तथा संस्कृति का स्रोत मानकर, उसकी रक्षा और अभिवृद्धि करे।

सार्वजनिक समाजवादी संपत्ति को हानि पहुंचाने वाले व्यक्ति जनता के शत्रु हैं।"

सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा और उसकी अभिवृद्धि के प्रश्न का स्वाभाविक महत्व उससे कहीं ज्यादा है जो सरसरी निगाह से मालूम होता है। सार्वजनिक संपत्ति की तरफ मितव्ययिता का रुख एक कम्युनिस्ट विशेषता है। मुझे ऐसा लगता है कि मानव इतिहास में कभी भी कम्युनिस्ट समाज से कम-खर्च कोई समाज नहीं हुआ। और यह बिल्कुल स्वाभाविक है, क्योंकि सिर्फ कम्युनिस्ट समाज ही में साधनों का उपयोग और उनकी व्यवस्था उत्पादकों के हाथों में होती है।

इतिहास ने लोगों को सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करने की सीख नहीं दी। और सदैव ही काफी संख्या में ऐसे लोग रहे हैं जो सार्वजनिक संपत्ति लूटने के शौकीन रहे हैं। पुरानी शासन व्यवस्था में राज्य के धन का गबन एक मामूली बात थी और राज्य के अफसरों के लिए सार्वजनिक कोष तो कामधेनु की भांति था। स्वभावतः इस स्थिति के कारण, जब ऊपर से नीचे तक सार्वजनिक संपत्ति के प्रति लापरवाही बरती जाती है, व्यक्तिगत संपत्ति के संबंध में भी लापरवाही और फिजूल-खर्ची आ जाती है।

लेकिन पिछले युग में होनेवाली राष्ट्रीय धन की लूट, मानवीय श्रम की लूट, आज की नवीन पूंजीवादी व्यवस्था में होनेवाले मानवीय श्रम की लूट के आगे बच्चे का खेल सा लगने लगेगी। यह बात निर्विरोध कही जा सकती है कि हर दिन लाखों काम के दिन धूल में मिलते रहते हैं। मानवता के खिलाफ अकेले इसी अपराध के लिए पूंजीवाद का जितना जल्दी हो सके नाश होना चाहिए।

हमारे देश के समूचे उत्पादन को देखते हुए किफायत भी एक प्रकार से संपत्ति ही है। और यह संपत्ति साल बसाल हमारी संस्कृति के विकास के साथ ही विकसित होनी चाहिए।

साथियो, हमारे संविधान की १३१ वीं धारा में कम्युनिस्ट शिक्षा के लिए बहुत बडी सामग्री है। यह उस पूंजीवादी धारणा के विरोध में है जो कहती है, "यह घर मेरा है और यही सब कुछ है, और मैं किसी को भी इस सुरक्षा-क्षेत्र में घुसने नहीं दूंगी।" यह धारा सार्वजनिक हितों को वैयक्तिक हितों से ऊपर रखने को बाध्य करती है, क्योंकि हरेक की व्यक्तिगत स्थिति की गारंटी, समाजवादी समाज-व्यवस्था में ही हो सकती है।

सोवियत सरकार की स्थापना के पहले ही वर्ष में लेनिन ने कहा था

> "बिल्कुल सही और साफ हिसाब-किताब कीजिए। कम-खर्च में काम चलाइए। आलसी मत बनिए। चोरी मत कीजिए। काम के दौरान में कठिन से कठिन अनुशासन बरतिए। ये स्वयंसिद्ध बातें हैं तो भी इन से क्रांतिकारी सर्वहारा वर्ग नफरत करता था जब पूंजीवादी लोग शोषकों के राज्य को इन उपदेशों के परदे में छिपाते थे। अब पूंजीवाद के नाश के बाद यही नारे फौरी, सामयिक और मुख्य बनते जा रहे हैं।"

जहाँ तक "पूंजीवादी परपराओ के रक्षको," सार्वजनिक सपत्ति के चोरो और गबन करने वालो, उचक्को और इसी तरह के लोगो का सबध है, उनके खिलाफ कदम उठाना ही चाहिए। यह उद्देश्य, विशेषत केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति और देश के मत्रिमडल के ७ अगस्त, १६३२ के "राजकीय कारखानो, सामूहिक खेती-बारी और सहकारी समितियो की सपत्ति की रक्षा और सार्वजनिक (समाजवादी) सपत्ति के एकीकरण के सबध में" फ़ैसलो से पूरे हो सकते है। "उद्योग में टुच्ची चोरी और गुलगपाडा की मुजरिमाना जिम्मेदारी के सबध में" १० अगस्त, १६४० को देश की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष-मडल की घोषणा भी इस उद्देश्य पूर्ति में सहायक होगी।

इसलिए साथियो, हमें अपनी योग्यता के अनुसार काम करना, व सार्वजनिक सपत्ति की रक्षा करना सीखना चाहिए और जब हम काफी उत्पादन करने लगेंगे और जब अपने श्रम के उत्पादन की रक्षा करना सीख जायेंगे, तो फिर हम आवश्यकता के अनुसार इनका बटवारा भी कर लेगे।

कम्युनिस्ट शिक्षा का यह दूसरा अभिन्न अग है।

५

कम्युनिस्ट शिक्षा का एक आवश्यक तत्व और है—अपने समाजवादी देश के लिए प्यार जागृत करना, सोवियत देशभक्ति को जागृत करना।

"देशभक्त" शब्द पहले-पहल १७८६-१७६३ की फ्रासीसी क्राति के समय प्रयोग में आया। जो जनता के हितो के लिए, गणतत्र की रक्षा के लिए, अपने देश से गद्दारी करनेवाले राजाशाही ढंगे के गद्दारो के खिलाफ आगे आए, उन्होने अपने को देशभक्त कहा।

बाद में इस शब्द का प्रयोग प्रतिक्रियावादियो और शासक-वर्ग ने अपने स्वार्थी हितो के लिए किया। यही कारण है कि "देशभक्त"

शब्द युरोप और जारशाही रूस, दोनो में वैसे तमाम ईमानदार लोगो के लिए, जो जनता के कारण चिंतित थे, सदा ही सदेह पैदा करता था, क्योकि इसमें उन्हें अधराष्ट्रीयतावाद और शासक-वर्गो की अहमन्यता दिखाई पडती थी। अतत इसी झडे के नीचे जारशाही के लुटेरे रूस से मिले हुए दूसरे देशो की जनता को लूटते थे।

"देशभक्ति" की ठेकेदारी "ब्लैक हड्रेडो" के हाथ में थी। वे अपनी "देशभक्तिपूर्ण भावनाओ" का प्रदर्शन सडको पर मजदूरो, बुद्धिजीवियो और यहूदियो को पीटकर करते थे और उनके खिलाफ दगे करते थे। और उस समय आम तौर पर समाज में निम्न-कोटि के व्यक्तियो में से विवेकहीन और सदेहशील लोग इसी "देशभक्ति" के जामे को ओढे रहते थे।

जनता की निगाहो में "देशभक्ति" शब्द गिर चुका था। कोई ईमानदार आदमी अपने को "देशभक्त" नही कह सकता था।

रूस में मिला लिए गए राष्ट्र हर कदम पर रूसी अफसरो द्वारा लूटे, चूसे, खसोटे जाते थे, अत स्वभावत वे रूसियो से घृणा करते थे।

इसके खिलाफ, सजा देने वालो और कोडो के सरदारो की "देशभक्ति" के खिलाफ, निरकुश तानाशाही के खिलाफ, प्रगतिशील आदोलन लगातार बढ रहा था।

प्रारभ में प्रगतिशील शक्तियो का प्रतिक्रियावाद के विरुद्ध सघर्ष साहित्य, कला तथा गायन-विद्या के क्षेत्रो में सामने आया, जिन में साकेतिक रूप से ही सही विरोध प्रकट किया जा सकता था। समय के साथ-साथ जनता के जनवादी दल भी धीरे-धीरे इस सघर्ष में आने लगे, फलत वह अधिकाधिक उग्र रूप धारण करता गया। यह प्रक्रिया बढती गयी और इसमें निरकुशता के अनेक विरोधी, तथाकथित सरकारी रूस के विरोधी एक होते गए। साथ ही यह आदोलन जनता के अच्छे से अच्छे प्रतिनिधियो के रूप में एक महान राष्ट्रीय सुरक्षा पक्ति भी

वनाता जा रहा था। लेखको, आलोचको और प्रकाशको के रूप में वुद्धि चातुर्य से पूर्ण अनेक मनुष्य सप्तर्षि-मडल जैसे आलोक को लेकर अवतरित हुए, जिन्होने हमारे साहित्य को ऊचा उठाया और उनके लिए विजय तथा विश्व-प्रसिद्धि हासिल की। सिर्फ साहित्य ही नही, रूसी गायन-विद्या, कला और विज्ञान सभी अपने उदीयमान नक्षत्रो को आगे लाए, जो सच्चे अर्थो में राष्ट्रीय सस्कृति के सच्चे देशभक्त योद्धा थे।

इन लोगो ने दृढता के साथ सरकारी "देशभक्ति" को ठुकरा दिया और अपने सम्मान, गौरव और सार्वजनिक प्रतिष्ठा की रक्षा की। उनके लिए अपनी जनता की सेवा और उनमें सच्ची देशभक्ति जगाना ही सबसे प्रमुख वात थी। इस महान ध्येय के लिए उन्होने अपनी सारी शक्ति और योग्यता लगा दी। उनके युग के दूसरे लोगो ने, उनकी पीढी के वाद के लोगो ने, इन्ही से सीख ली। वे उनके आदर्शो पर चले और गहरे राष्ट्र-प्रेम में ओत-प्रोत हो गए। इन लोगो के राष्ट्र-प्रेम की कार्रवाई से, रूस की जनता के रोमाच-कारी इतिहास के पन्ने भरे पडे है। यद्यपि सरकारी रूस ने उनके प्रति हमदर्दी नही दिखाई, तो भी जनता ने उन्हे अत्यधिक सम्मानित किया, उनकी सदैव पूजा की और आगे भी करती रहेगी।

सोवियत देशभक्ति हमारे पिछले इतिहास से अलग नही की जा सकती, क्योकि सोवियत देशभक्ति हमारे पूर्वजो की रचनात्मक सफल-ताओ का ही सीधा परिणाम है, जिस के कारण हमारी जनता का विकास आगे वढा।

सोवियत जीवन इस सत्य की जिंदा मिसाल पेश करता है। एक ही तथ्य वताना काफी होगा—आजकी मुक्त जनता अपने पौराणिक और ऐतिहासिक वीरो को किस आह्लाद से याद करती है। वे अपनी कला द्वारा इनका प्रदर्शन करते है। सोवियत जनतत्रो के प्राण मास्को

में वे अपनी कलात्मक प्रदर्शनिया करते है मानो वे सोवियत समाज-वादी देश की जनता से कहते है—देखो, हम राष्ट्रो की इस महान इकाई के सदस्य किसी की दया के कारण नही बने है। हम सतान या सबधी विहीन नही है—यह देखो हमारा परिवार-वृक्ष है। हमें इस पर गर्व है। और हम चाहते है कि मानवता के सर्वोच्च आदर्शों की सुरक्षा में व्यस्त हमारे भाई भी हमारे इस परिवार-वृक्ष से अपनी आखो को कृतार्थ करें।

जैसे मैने कहा, सोवियत देशभक्ति की जडें हमारे पिछले इतिहास में बहुत गहरी है। सोवियत देशभक्ति पुराने युगो की तमाम सफलताओ की सुरक्षा करना अपना सर्वोच्च कर्तव्य मानती है।

हमारी महान मज़दूर क्राति ने न सिर्फ भयकर विनाश ही किया, बल्कि बेमिसाल रचनात्मक निर्माण की भी नीव डाली। साथ ही वह एक ज़बर्दस्त तूफान की तरह लाखो इन्सानो के दिमाग़ो पर छा गई और उन्हे आत्म विश्वास और नई शक्ति दी। वे अब अपने को इतना प्रबल समझने लगे है कि मेहनतकश जनता के खिलाफ तमाम दुनिया को हराने की सामर्थ्य उन में है।

और एक ऐसे सोवियत महाकाव्य का जन्म हुआ जिसने जनता के पिछले युग की कला से सबध जोटा और साथ ही हमारे अपने युग की कला से भी रिश्ता कायम किया।

हमारे योग्य साहित्यकारो और कलाकारो को जनता से पीछे नही रहना चाहिए, क्योकि कभी भी इतना महान विषय उनको न मिला था। अब ही जनता की सेवा करने और जनता को आज की पीढियो के महान कार्यों के आधार पर देशभक्ति से ओत-प्रोत करने के लिए उनके पास असीमित अवसर है।

मुझे ऐसा लगता है कि सोवियत जनता की सेवा की शानदार मिसाल मायाकोव्स्की में मिल जायेगी, जो अपने को क्राति का सिपाही

समझता था और जिसकी मौलिक रचनायें उसे एक सच्चा सिपाही साबित करती है। उसने न सिर्फ विषय-तत्व को ही, बल्कि उसके स्वरूप को भी क्रांतिकारी जनता से घुलामिला देने का प्रयास किया। भविष्य के इतिहासकार यह जरूर कहेगे कि उनकी रचनाए उस महान युग की हैं, जब मानवीय सबध छिन्न-भिन्न हो चुके थे। इसीलिए मेरा ख्याल है कि भावी पीढियो को ललकारते वक्त मायाकोव्स्की सही था

"मैं आऊगा तुम्हारे पास
उस सुदूर कम्युनिस्ट भविष्य मे
लेकिन
येसेनिन की काल्पनिक दुनिया के
चमत्कार-भरे सरदारो की तरह नही।
मेरी कविता
युगो-युगो की चोटियो के पार पहुचेगी,
कवियो और सरकारो की छाया से परे—
मेरी कविता आयेगी,
लेकिन बनाव-श्रृंगार से लदी हुई नही,
कामदेव के बाण की लयपूर्ण प्रेम-उडान की
तरह नही—
न ही घिसे हुए सिक्के की तरह
जो टकसाल आ जाता है।
और उन सितारो के प्रकाश की तरह भी नही
जो बहुत दिन हुए बुझ चुके है।
मेरी कविता,
श्रम के साथ ही
बूढे युगो की छाती चीरती हुई,

निकलेगी

विचारपूर्ण

चट्टानो की तरह खुरदरी

अनुभव को गभीरता से लदी हुई

उसी तरह जैसे आज

निकल आती है पुरानी नालिया

जिन्हें कभी रोम के चिन्हयुक्त गुलामो ने

दृढता से विछाया था।"

इस गर्वीले वयान में हमें अपने युग, अपनी पीढी की शानदार ध्वनि सुनाई पडती है, जो एक नई पद्धति से दुनिया को वदल रही है।

साथियो, इतिहास ने हमको—कम्युनिज्म को पूर्ण विजय प्राप्त करने का महान दायित्व सौंपा है।

लेकिन इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमें अपने सोवियत देश के तमाम मेहनतकशो को देशभक्ति की शिक्षा देनी चाहिए, ताकि उन में स्वदेश के प्रति असीमित स्नेह की भावना का सचार हो। मै हवाई प्यार की वात नही करता, मै प्लेटो के आदर्शवादी स्नेह की भी वात नही करता। मै तो समर्थ, सक्रिय, वेगवान, अजेय प्यार की वात करता हू, जो दुश्मन के प्रति दया नही करता और जो देश के लिए कोई भी वलिदान कर सकता है।

सोवियत समाजवादी देश की मेहनतकश जनता की कम्युनिस्ट शिक्षा से सवधित यह तीसरा वुनियादी काम है।

६

इसके साथ ही मै सामूहिकता के प्रश्न पर भी कुछ कहना आवश्यक समझता हू। यह सावित करने की कोई विशेष आवश्यकता नही है कि कम्युनिस्ट शिक्षा में सामूहिकता की भावना को महत्वपूर्ण

स्थान दिया जाना चाहिए। मैं सामूहिकता सिद्धांत रूप से नहीं ले रहा हूं। लेकिन मैं चाहता हूं कि उत्पादन के क्षेत्र में, रोजमर्रा के जीवन में, सामाजिक दुनिया में सामूहिकता लाई जाए। मैं चाहता हूं कि सामूहिकता हमारी आदतों, हमारे व्यवहार का अंग बन जाये और वह न सिर्फ सोचने-समझने से अमल में आने लगे, बल्कि सहज स्वभाव के तौर पर हमारी चेतना का अभिन्न तत्त्व बन जाये। मैं कुछ मिसालें दूंगा।

आपमें से जिन्होंने इल्फ और पेत्रोव की "एक-मंजिला अमेरिका" पुस्तक पढ़ी है, वे जरा याद तो करें मोटर में घूमते समय के कुछ दिलचस्प वाकयात जिनका उन्होंने जिक्र किया है।

यदि किसी यात्री को दुर्भाग्य से ठोकर लग जाय तो यह निश्चय है कि पास से गुजरनेवाली मोटर का आदमी सहायता अवश्य करेगा। ऐसे अवसर पर वह अमरीकी समय की चिन्ता नहीं करेगा जिसका लक्ष्य ही है कि "समय पैसा है"। अर्थात् आवश्यक सहायता देने को सामाजिक उत्तरदायित्व के रूप में समझा जाता है।

दूसरी मिसाल है पुराने रूसी गांव की जहां फसल के समय एक परिवार दूसरे से बाजी मार लेने की कोशिश करता था। तो भी कटाई करने वाली भीड़ यदि किसी पिछड़ गई कटाई करने वाली औरत के पास से गुजरती थी, जिसका परिवार बड़ा होता था, और जो खेतों में सदा की तरह अकेला काम करती होती थी, तो उसको सहायता देना एक स्वाभाविक काम समझा जाता था।

साथियो, एक सामान्य आदत के रूप में सामूहिकता की भावना के प्रसार की बात मैं इसी अर्थ में कहता हूं। पुराने युग में ये आदतें अपने आप विकसित हो जाती थीं। मैं तो लोगों में स्वेच्छा से ऐसी आदतों को विकसित करने की बात कहता हूं।

सामूहिकता और भेड़िया-धसान में भी फर्क जानिए। मिसाल के

तौर पर, पुराने जमाने में तमाम किसान मिलकर यदि किसी घुड-चोर को पीटते थे, या वैक के दिवालिया होने पर उस में रुपये रखने वाले तमाम लोग क्रोध में खिडकिया वगैरह तोड डालते थे, तो ऐसे काम सामूहिकता के नही भेडिया-धसान के प्रतीक है। सामूहिकता में काम के औचित्य पर पहले विचार होता है।

सामूहिक भावना हमारे समाज की अमली जिदगी में वहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है, क्योकि वास्तव मे समाज सामूहिकता पर ही आधारित है। पूजीवादी समाज का विरोध हम सामूहिकता-कम्युनिज्म से करते है, क्योकि हमें इसके कही अधिक अच्छे होने में विश्वास है। जिस हद तक हम उत्पादन में, सार्वजनिक और व्यक्तिगत जीवन में सामूहिक भावना का समावेश करने में कामयाव होगे, उसी हद तक कम्युनिज्म के निर्माण की गति भी निर्धारित होगी।

सामूहिक श्रम ही उत्पादन का आधार है। समाजवादी उद्योग-धधो में इसके लिए किसी विशेष सवूत की आवश्यकता नही। यहा यह तथ्य सर्वविदित है। जहा पूजीवादी समाज मे एक मजदूर का श्रम उत्पादन-वस्तु में सम्मिलित होने पर, न सिर्फ मजदूर वल्कि उस कारखानेदार की आख से भी ओझल हो जाता है जिसका एक मात्र उद्देश्य मुनाफा है, वहा इसके विपरीत हमारे समाज में हर मजदूर के उत्पादन में उसका श्रम दिखाई पडता है। वह न सिर्फ उत्पादन के स्थान पर ही, वल्कि खर्च में और इस्तेमाल में भी दिखाई पडता है। दूसरे शब्दो में उत्पादक अपनी आखो से अपने काम का फल देख सकता है। तो भी, हमें शिक्षा द्वारा उसकी समझ और गहरी करनी चाहिए ताकि वह सामूहिक श्रम में अपना हिस्सा साफ-साफ देख सके।

यह विशेष आवश्यक है कि गावो में, सामूहिक खेती वाले गावो में, जहा अभी सामूहिक काम करने की करीव-करीव कोई आदतें नही है, सामूहिक भावना भरने पर जोर दिया जाय। यद्यपि पहले भी

"जनता", "सार्वजनिक हित", जैसे शब्द कभी-कभी गाव की सभाओं आदि में प्रयुक्त होते थे, लेकिन दरअसल सामूहिक भावना वहा बहुत कम थी। "सार्वजनिक हित", "जनता" आदि शब्द मात्र थे, जिनके पीछे कुलक अपने व्यक्तिगत व्यापार को आगे बढाते थे।

सामूहीकरण के प्रयोग के बाद किसानो को बहुत मुश्किल हुई। उन्हे अपने समूचे पिछले सस्कारो को भुलाकर, अपनी मानसिक चेतना को विरोधी दिशा में मोडना पडा, अपने लिए काम करने के बदले अब सब के लिए काम करना पडा। यह आसान काम नही है। यह भावना तभी पूर्णतया विकसित हो सकी, जब राज्य की ओर से काफी दबाव पडा और सहायता मिली।

वैयक्तिक, साधारण श्रम को, सामूहिक, ऊची सतह के और कठिन श्रम के रूप में परिवर्तित करने के लिए जनता में कही अधिक महान सगठनात्मक योग्यता लाने की आवश्यकता है। हा, सामूहिक खेतीवाले किसानो में वैयक्तिक संपत्ति के रुझानो को विजित करके सामूहिकता की आदतो का एकत्रीकरण, सामूहिक काम के तरीको को लागू करने के दौरान में एकत्र किए गए सगठनात्मक अनुभव के एकत्रीकरण की प्रक्रिया के समानान्तर होता है।

गावो में कम्युनिस्ट शिक्षा इन हालतो में प्रगति कर रही है।

यह स्पष्ट है कि अब सिर्फ सामूहिकता की दुहाई देना और उसके लिए मामूली प्रचार करना ही काफी न होगा। प्रचारक को अथवा शिक्षक को सामूहिक खेती के व्यावहारिक लाभ प्रत्यक्ष करके समझाने होगे।

इस तरह सामूहिकता की भावना भरने जैसे उलझनपूर्ण मसले को भी, यदि उसे अधिक प्रभावशाली होना है, अमली काम में बदल देना चाहिये। दूसरे शब्दो में, लोगो में सामूहिकता की भावना भरने के लिए ठोस काम करना होगा। जब शिक्षक किसी अमली प्रक्रिया को

समझाता है, तो वह अपने विचारात्मक विकास के लिए खुद ही अमली ज्ञान से पूर्ण होता है। हमारे प्रचारकों को विचार और अमल की एकता का यह स्पष्ट जीवित उदाहरण बनना होगा।

कम्युनिस्ट शिक्षा की यह चौथी बात है।

७

किसी भी सकारात्मक प्रयत्न की कामयाबी में संस्कृति एक निर्णायक तत्व है। जितना ही अधिक कठिन और कुशल काम होगा, उसे सुलझाने के लिए उतनी ही अधिक संस्कृति की आवश्यकता होगी। हमारे लिए संस्कृति वैसे ही आवश्यक है, जैसे सांस लेने के लिए हवा—संस्कृति अपने व्यापक अर्थ मे, यानी प्रारंभिक संस्कृति (जिसकी आवश्यकता सब को है) से तथाकथित उच्च संस्कृति तक। लोग कहते है एक बहुत सुसंस्कृत व्यक्ति।

संस्कृति एक व्यक्ति के विकास की सतह की निश्चित निर्देशक है। और चूंकि एक विकसित व्यक्ति में आकर्षण अधिक होता है, इसलिए कुछ लोग संस्कृति के बाह्य तत्वों की नक़ल करते हैं। आम तौर पर ऐसे लोगों के बारे में कहा जाता है कौवे ने मोर के पंख से अपने को सजा लिया है। मेरी राय में इस तरह के वक्तव्य ग़लत है। वे हमारी संस्कृति के विकास के लिए हानिकारक है। यह कहने की आवश्यकता नही है कि जन साधारण पहले बाह्य तत्वों को ही ग्रहण करना शुरू करते है। लेकिन इस का असर आंतरिक संस्कृति पर भी पड़ता है।

संस्कृति की आम सतह को ऊंचा उठाने की आवश्यकता अब ही क्यों विशेषकर अनुभव की जा रही है? सोवियत व्यवस्था के पिछले तेईस बरसों में हमारी अर्थ-व्यवस्था बहुत आगे बढ गई है। उत्पादन की टेकनिकल सतह भी बहुत ऊंची हो गई है। मशीनों, मशीनों के पुर्जे

भी पेचीदा होते जा रहे है। उन्हे ज्यादा ध्यान से प्रयोग करने की आवश्यकता है। आज प्रत्येक उद्योग में पहले से अधिक सुसस्कृत व्यक्तियो की माग पाई जाती है। यह भी समझ में आनेवाली बात है कि राजकीय सस्थाओ के लिए भी अधिक सुसस्कृत व्यक्तियो की माग बढ रही है।

अपनी जगह पर, सामूहिक खेतीवाला गाव भी अधिक से अधिक सुसस्कृत लोगो की माग करने लगा है। ट्रैक्टर-ड्राइवर, कम्बाइण्ड हारवेस्टर चलाने वाले, मैकेनिक, कृषि-विशेषज्ञ तथा एनिमल हस्बैडरी के विशेषज्ञ को भी अपने विशेष काम की जानकारी के साथ-साथ न्यूनाधिक सस्कृति की आवश्यकता है। कोई दूसरा पेशा, मिसाल के लिए घुडसाल के रक्षक को ले लीजिए। जब एक-दो घोडे ही रखवाली के लिए हो, तो एक किसान के लिए उनकी देखभाल कही आसान है। लेकिन जब अस्तबल में २० से लेकर ४० तक घोडे हो, तो सगठनात्मक अनुभव और सस्कृति की आवश्यकता है। सामूहिक खेती की सभी शाखाओ के बारे में भी यही बात सही है। आगे बढने के लिए हमें सस्कृति की आवश्यकता है।

यहा पर देश की सुरक्षा की आवश्यकताओ को याद रखना भी उचित है। इस क्षेत्र में सस्कृति की आवश्यकता दिन-दूनी रात चौगुनी बढ रही है।

सस्कृति का एक अर्थ सामूहिक और वैयक्तिक जीवन की पवित्र-ता भी है।

साथियो, जरा एक अच्छे इजीनियर की कल्पना कीजिए, जिसने अपने को योग्य बनाने के लिए कठोर परिश्रम किया है, जो अब एक कारखाने का इचार्ज है और एक कीमती कार्यकर्ता समझा जाता है। लेकिन जब आप कारखाने में घूम रहे हो तो उसकी शैतान गरदन कैसे टूट जाती है (हसी)। क्या यही सस्कृति है? अगर यह इजीनियर

इस तरह की बात पर ध्यान नही देता, तो इसका मतलब है कि वह प्रारभिक सस्कृति मे भी हीन है और सचमुच उसका ध्यान अपने कारखाने, अपने काम में नहीं है।

मै सस्कृति को उसके विशद अर्थों में लेता हू। पप का पानी बहता न रहे, मास्को के घरो में खटमल न हो, आदि ये भी सस्कृति के अग है। खटमल ऐसी चीज़ है जिन्हे बरदाश्त नहीं किया जा सकता। वे हमारे लिए अपमान की बात है। तिस पर भी कई लाग खटमलो से भरे अपने आप से पूछते है कि कम्युनिज़्म में आदमी को कैसा होना चाहिए, कम्युनिज़्म में उसकी विशेषतायें क्या होगी? (हसी) ऐसे लोग है जो बच्चो के लालन-पालन के सबध में लबी व्याख्या करते है, लेकिन अपने घरो में खटमलो को भरा रहने देते है। अब आप इसको क्या कहेंगे? ऐसे लोगो को क्या सुसस्कृत कहना चाहिए? ये पुराने रूसी समाज के बचे-खुचे लोग है। (हसी)

* * *

साथियो, कम्युनिस्ट शिक्षा से सबधित अनेक प्रश्नो पर विचार किया जा सकता है, जैसे पार्टी, ट्रेड-यूनियन, कोम्सोमोल, स्पोर्ट-सगठन, विश्वविद्यालय, स्कूल, साहित्य, कला, सिनेमा, थियेटर, परिवार आदि की भूमिका के विषय में। लेकिन यह सब प्रश्न हमें बहुत दूर ले जायेंगे और डर है कि हम उस सब मे महत्वपूर्ण चीज को नज़र-अदाज़ कर बैठें, जो हमारी मौजूदा मज़िल में अत्यावश्यक है।

साथियो, मै समझता हू कि यही मुख्य बाते है जिन का साम्यवादी शिक्षा के बारे में विचार करते समय हमें विशेष ध्यान रखना चाहिए।

यदि हमारी शिक्षा-प्रणाली बाह्य-रूप से निर्दोष होते हुए भी हवाई रही, यानी यदि वह ठोस रूप से, समाजवादी राज्य के विकास

में सहायक न हो सकी, तो ऐसी शिक्षा अच्छा-खासा मजाक होगी।

आज की उलझी हुई अंतर्राष्ट्रीय स्थिति में हमारी जनता को विशेषत सावधान, आत्म-निर्भर और बहुत ही सचेत रहना चाहिए जिससे कि हमारा समाजवादी राज्य किसी भी खतरे और जरूरत का मुकाबला करने के लिए सदा तैयार रहे। हमारे तमाम जन-सगठनो, हमारे साहित्य, कला, सिनेमा, थियेटर, आदि को इसी बात पर बार-बार ज़ोर देना चाहिए।

"कम्युनिस्ट शिक्षा के बारे में", सोवियत यूनियन की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के राजनैतिक साहित्य का प्रकाशन गृह, १९४०

मास्को के (लेनिन हलका) माध्यमिक स्कूलों के आठवें, नवे और दसवें दर्जे के विद्यार्थियों की सभा में दिया गया भाषण

१७ अप्रैल १६४१

साथियो, यद्यपि मै प्राय तरुणो से मिलता रहता हू, तो भी आपकी भावनाओ की थाह पा लेना आसान नही है। और यह बहुत ही स्वाभाविक है, क्योकि लगभग ५० साल पहले मै आपकी उम्र का था। तब से अब तक मै वह बहुत कुछ भूल चुका हू जो अपनी तरुणाई में अनुभव किया करता था। और जो चीजें मुझे याद है, वह बहुत सभव है आपको पुरातन युग की मालूम हो। अगर आप से कोई पूछे कि उस जमाने में तरुणो का जीवन कैसा था, तो आपके लिए इसका उत्तर देना बहुत मुश्किल मालूम होगा, क्योकि वह सब कुछ हुए बहुत जमाना गुजर गया।

तो भी मेरा विश्वास है कि आज से ४०—५० साल पहले के युवक जीवन में आपकी दिलचस्पी अवश्य होगी। उस युग के तरुणो के जीवन, उनकी तमाम अच्छाइयो और बुराइयो के विषय में गहरा

ज्ञान रखने का दावा किए वगैर भी मै उनके जीवन की एक तस्वीर आपके सामने पेश करूगा—वह कैसे रहते थे, उनके जीवन में क्या-क्या था, उनमें किस-किस तरह के लोग थे, और उनके दिमाग काहे से भरे रहते थे। और मै मुख्यत तरुण मजदूरो के वारे में वताऊगा, जिनसे मै मुख्यत सवधित था।

यह भी सत्य है कि मै काफी निकट से तरुण किसानो से भी सवधित था। लेकिन उम जमाने के तरुण किमान के वारे में वताने को है ही क्या? कोई दिलचस्पी या शिक्षा की वात है ही नही। गाव के अधिकाश लडके-लडकिया काम और घर की चिताओ के वोझ से दवे रहते थे। हा, तरुण मजदूरो का जीवन भी आसान न था। लेकिन उन्हे कुछ सुविधायें अवश्य थी—उनकी कल्पना का क्षितिज कही विस्तृत था, वह अधिक समझते थे, अधिक सीख लेते थे। जहा तक तरुण किसान का सवध है, उसका दिमाग़ गाव तक ही सीमित रहता था। गाव की सीमा के उस पार क्या होता है, इसके वारे में वह वहुत ही कम जानता था। तेरह-पन्द्रह साल की उम्र होते-होते वह काम में जोत दिया जाता था। और १८-१६ साल तक पहुचते-पहुचते उसका जीवन पथ निश्चित हो जाता था, उसकी शादी हो जाती थी। वह पिता का घर छोडकर अपने लिए कठिनाई के साथ अलग घर वसा लेता था।

जहा तक विद्यार्थियो का सवध है, मै उनके वारे में वहुत कम जानता था, यद्यपि मेरा उनसे सवध तो होता ही था। लेकिन लोगो से सवध होने का अर्थ उनके वारे में जानना नही है। कहा जाय तो मै विद्यार्थी-तरुणो को वगल से देखता था। आपको यह भी ध्यान रखना चाहिए कि मेरे लिए वे भिन्न वर्ग के थे। लेकिन विद्यार्थियो का सघर्ष मेहनतकश जनता पर अवश्य अपनी छाप डालता था। इस सघर्ष के कारण हम लोगो में तरुण विद्यार्थियो के लिए हमदर्दी वढती गई।

अब इसलिए जब मैं पिछले युग के तरुणों की बात कहता हूं तो मेरी निगाह में मुख्यत मजदूर-युवक है।

उस जमाने के तरुण मजदूर किस तरह के लोग थे? वे किस के थे? उनकी क्या दिलचस्पिया थी? उनके दिलो और दिमागों को कौन सी चीज झकझोरा करती थी?

उस जमाने के मेहनतकश तरुणों में उतने ही विभिन्न तौर-तरीके के लोग थे, जैसे शायद आज आपके बीच में हो।

पहली तरह के वे लोग थे जो यथासभव, अपने को मजदूर वातावरण से निकालने की कोशिश करते थे। जितना हो सकता था वे कमाते थे। सस्कृति की बाहरी तड़क-भडक पर विशेष जोर देते थे। विशेषकर, कपडो के मामले में, वे जितने अच्छे कपडे पहन सकते थे, पहनते थे। अपने ही कारखानों के बाबुओं मे सबध स्थापित करते थे। उन्ही की लडकियो मे शादी करते थे, जिसमे अवसर आने पर वह प्रबधको की सीढी पर और ऊचे चढ सके। अलबत्ता आम युवको में इस तरह के बहुत थोडे लोग थे और उनका कोई राजनैतिक महत्व नही था।

दूसरी तरह के युवक मेहनती किस्म के थे, जो या तो एप्रेंटिस थे या जिन्होंने एप्रेंटिसी खतम करके स्वतत्र रूप से काम करना शुरू कर दिया था। उनकी तमाम दिलचस्पी अपनी आमदनी पर केन्द्रित थी और वे व्यक्तिगत खुशहाली और पारिवारिक सुख के लिए चिंतित रहते थे। उन्हे अपनी खुशहाली और नौकरी के अलावा किसी चीज से मतलब न था। इस तरह के लोग पहली तरह के लोगो से सख्या में अधिक थे, लेकिन वे भी इतने अल्पमत में थे, कि उनका कोई महत्व न था।

कभी-कभी हमें मेहनतकश युवको में गपबाज और खुशामदी टट्टू भी मिलते थे। लेकिन ये सब मिलाकर सख्या में बहुत थोडे होते थे। वे शब्दश इक्के-दुक्के होते थे, जो दूसरो की चुगली-चबाई करके अपनी स्थिति सुधारने की कोशिश करते थे। उनका फोरमैनो, पुलिस और

कारखानो के उच्च अफसरो से सबध होता था। मजदूर ऐसे लोगो को वरदाश्त न कर पाते थे। आम लोग उनसे घृणा करते थे। उन्हे अपने व्यवहार के लिए वडी कीमत अदा करनी पडती थी, और अक्सर उनकी पिटाई भी हो जाती थी।

लेकिन जहा तक मेहनतकश युवको के वहुत वडे वहुमत का सबध था, वह उस समय की सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था का विरोधी था और इन्ही में से सच्चे क्रातिकारी लडाकू लोग निकलते थे। आम तौर पर मेहनतकश युवक हमारी पार्टी के मजबूत समर्थक होते थे। वे मजदूरो के मानो लडाकू दस्ते थे, जो पार्टी-मेंवरो के नेतृत्व में होनेवाले विरोधी आदोलनो और हडतालो में सवसे ज्यादा सक्रिय रहते थे।

यद्यपि यह नही कहा जा सकता कि मेहनतकश युवको का विरोध सर्वथा जागरुक ही होता था। अक्सर यह विरोध अपने आप ही फूट पडता था और मालिको के पिछलगुए फोरमैनो, पुलिस आदि की पिटाई का रूप ले लेता था।

समय वीतने के साथ-साथ समाजवादी प्रचार के प्रभाव से और मार्क्सवादी वुद्धिजीवियो की रहनुमाई में मेहनतकश युवको के वीच गैरकानूनी गोष्ठियो का उदय हुआ, जिनमें सामाजिक चेतना रखने वाले युवक उत्सुकतापूर्वक आने लगे। जितना ही वे आगे वढे, उतना ही उन्होने मजदूर-वर्ग की हालत पर और सामाजिक जीवन की दूसरी अनेक समस्याओं पर विचार किया। वह ललचाए हुए मार्क्सवादी साहित्य को निगलते थे, वैज्ञानिक समाजवाद की विचारधारा पर विचार करते थे, अपनी शिक्षा के प्रति गभीर थे। इस प्रकार उन्होने न केवल अपनी राजनैतिक वल्कि सास्कृतिक चेतना की सतह को भी ऊचा उठाया। इन गोष्ठियो में राजनैतिक प्रश्नो और पढ़ी गई पुस्तको दोनो ही पर

गरमागरम वहस होती थी। इस तरह मेहनतकश युवको के सबमे आगे वढे हुए सदस्यो मे समाजवादी चेतना ने जन्म लिया।

और यह वता दू कि जो गैरकानूनी मार्क्सवादी गोष्टियो में हिस्सा लेते थे, वे न सिर्फ युवको पर ही वल्कि प्रौढ मजदूरो पर भी अधिक अधिकार रखते थे। यद्यपि वे अपना काम छिपकर करते थे, तो भी काफी मजदूर इनके वारे में जानते थे और अनेक क्रातिकारी योजनाओ को अमल में लाने मे उनकी सहायता करते थे।

वाकी मजदूरो की तरह हम भी चायखानो और शरावखानो में जाते थे और कभी-कभी रात में काम से घर लौटते वक्त दूसरो के वगीचो में सिर्फ शैतानी करने के लिए कूद जाते थे, इसलिए नही कि हमें सेवो की ज्यादा भूख रहती थी वल्कि सिर्फ अपनी वहादुरी दिखाने के लिए हम ऐसा करते थे। जैसे वह आज की ही वात हो, मुझे अभी भी पुतिलोव कारखाने के पास के वगीचे में वन्दूकधारी पहरेदार की याद है। फिर भला इस वगीचे में कूदने का लालच कैसे न हो, जव साथ ही जरा खून की होली खेलने का भी मौका मिले! (हसी)

हम पार्टियो में शामिल होते थे, लडकियो से मुलाकाते करते थे, खुशी से वक्त काटते थे, और कभी-कभी पार्क में घूमने की तवीयत होने पर हम चहारदीवारी फाद जाते थे। (हसी) हम चहारदीवारी इसलिए नही फादते थे कि हमारे पास टिकट खरीदने को दस कोपेक न होते थे। नही, पैसा हमारे पास होता था, क्योकि हम कमाते थे और दस कोपेक दे ही सकते थे। पर चहारदीवारी फादने का मतलव खतरा उठाना होता था—आप पकडे जा सकते थे और "शान के साथ" वाहर निकाले जा सकते थे। भला इस चढाई का मोह कैसे सवरण कर सकते थे! (हसी) हम चहारदीवारिया फादते और लडकियो के साथ घूमते थे, जैसा शायद आप भी करते है। अलवत्ता, मै नहीं जानता कि आजकल ये मामले कैसे है। लेकिन मेरा खयाल है कि सव

कुछ उसी तरह चल रहा है, जैसा आज से चालीस-पचास साल पहले था। इस मामले में बहुत कुछ बदला नहीं मालूम होता है। (हंसी)

और इस तरह वाहर से हम बहुत ही साधारण जीवन बिताते थे। अगर कोई हम पर निगाह रखता, तो हममें कोई विशेपता न पाता।

तो भी हम दूसरे मेहनतकश युवकों से भिन्न थे। यह भेद क्या था? हम में और उनमें भेद यह था कि शनैः मजदूरों के हितों के लिए कार्यरत रहना ही हमारी दैनिक दिलचस्पी हो गया। गैरकानूनी केन्द्रों में अध्ययन और क्रांतिकारी साहित्य के पढ़ने से हमारा दृष्टि-कोण विकसित हो गया, हमारे जीवन में विचारात्मक तत्व आ गया। पहले फ़ैक्टरियों के भीतर होनेवाली अमानुषिकता को हम इक्का-दुक्का घटना समझते थे, लेकिन वाद में हम उन्हें आम मजदूर-वर्ग को त्रस्त करने वाली वर्बर व्यवस्था का अंग समझने लगे, जिसका प्रत्यक्ष संवंध ज़ार-शाही व्यवस्था से भी था।

वाहर से हर चीज़ अपरिवर्तनीय लगती थी। हम लड़कियों के साथ घूमते थे, उनसे मुलाकातें करते थे, पार्टियों में नाचते थे और प्रेमालाप भी करते थे (हंसी) लेकिन हमारे दिमाग़ों में "अमरीकी खुशनसीव अंत" से अधिक भी कुछ था। हमारे मन सार्वजनिक कार्यों की तरफ़ झुके हुए थे और जब हम पार्टियों में भी जाते थे, तो यह सोचते थे कि उनका क्रांतिकारी उद्देश्यों के लिए कैसे इस्तेमाल किया जाय।

इस तरह हमने धीरे-धीरे और अदृश्य रूप से सिद्धांतपूर्ण जीवन शुरू किया। और सिद्धांतपूर्ण जीवन सचमुच वड़ा दिलचस्प होता है। और यहीं पर हम मेहनतकश युवकों से भिन्न थे, पर हम उनसे सदैव निकट संपर्क रखते थे, क्योंकि हमारे क्रांतिकारी कार्य उन्हीं पर तो आधारित होते थे।

अलबत्ता, एक मिद्धातपूर्ण जीवन के लिए आज के ऊची शिक्षा पाने वाले सोवियत युवको की अपेक्षा हमें बहुत ही सीमित अवसर मिले थे। यह समझ में आनेवाली बात है।

प्रथमत , माध्यमिक शिक्षा हमारी शक्ति मे बाहर होने के कारण हम जिम्नेजियम नही जाते थे। हमसे तो कुछ, प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने वाले ही बडे भाग्यवान थे। फलत आप लोग उस युग के तरुणो के मुकाबले इस मामने में कही आगे बढे हुए है। आप लोग आमानी से उद्देश्यपूर्ण जीवन व्यतीत कर मकते है।

दूमरे, उस युग में मिद्धातपूर्ण, वर्ग-चैतन्य मजदूरो का उत्पीडन होता था। वे कारखानो से निकाल भगाए जाते थे, गिरफ्तार होते थे, उन्हे देश निकाला दिया जाता था। अत हम अपने विचारो पर सिर्फ गैरकानूनी तौर से ही अमल कर मकते थे। इमलिए उस जमाने में जो कोई भी मिद्धातपूर्ण जीवन विताना चाहता था, राजनैतिक तौर पर विकसित होना चाहता था, मजदूर-वर्ग और जनता के हितो में काम करना चाहता था, प्रगति की राह पर चलना चाहता था, तो उसके सामने यही कटकाकीर्ण मार्ग था। इम राह पर थोडे ही लोग चल सकते थे। इमके खिलाफ, आपके मामने इस मामले म सीमाहीन अवसर है। आपकी आवश्यकता की सभी हालते आपकी मेवा में है—आपको केवल काम करना है।

यदि आप मुझ से पूछे कि क्या तुम्हे इस बात का दुख है कि तुमने ऐसी राह अपनाई, तो मै आपको जवाब दूगा कि एक आदमी जो ऊची जिन्दगी बसर करना चाहता है, एक सकरी, अर्थहीन जिदगी नही, जो सिर्फ वैयक्तिक मध्यवर्गीय जीवन की खुशहाली के लिए है, जो जीवन को सचमुच सुदर और दिलचस्प बनाना चाहता है, उसके लिए और कोई रास्ता ही नही हो सकता। मै आपसे ऐसे कह रहा हू कि इससे जैसे सिर्फ मेरा ही सबध हो। लेकिन सचमुच ऐसा नहीं

है। मै तो वहुतो में मे एक था। मै तो निर्फ इमनिए भाग्यवान हू कि आज आपके सामने दिल खोलकर वात कर मकने की स्थिति में हू, जव कि मेरी उम्र के वहुत से लोग सभवत मर चुके हैं।

इसलिए सोद्देश्य जीवन, समाजार्थ पूर्ण जीवन, ऐना जीवन जो इस अर्थ में उद्देश्य से पूर्ण है, दुनिया में सवमे अच्छा, सवमे दिलचस्प जीवन है।

वडे और सिद्धातपूर्ण जीवन का अर्थ है कि आप का जीवन ममकालीन जीवन से आगे वढा हुआ हो और पगति की ओर अग्रसर हो। यदि आप नये ममाजवादी नमाज के निर्माण में रत हैं, यदि आपको अपनी जनता को ऊचा उठाने की लगन है, यदि आप स्वदेश को हर प्रकार से सुदृढ करना चाहते हैं, यदि आप अपनी समूची शक्ति कम्युनिज्म की पूर्ण विजय के लिए लगा रहे हैं, और यदि आपके दिमाग में यही विचार नर्वोपरि है, तो मुझे कोई सदेह नही कि आप का जीवन महान वन जायेगा।

साथियो, हर युग और हर पीढी के नौजवान भिन्न-भिन्न प्रकार के सपनो और कल्पनाओ से खेलने के आदी रहे हैं। यह कोई वुरी वात नही, यह एक गुण है। कोई भी मक्रिय और विचारवान मनुष्य विना कल्पना के नही जी सकता। आम तौर पर प्रौढो के मुकाबले तरुणों में कहीं अधिक कल्पना शक्ति होती है। एक समय था जव हम भी अनेक और महान कल्पनाए करते थे। जाहिर है, हमारी और आप की कल्पना की उडानो में भेद है, पर आधारभूत मे इन दोनो में समानता है।

चलते-चलते यह भी वता दू कि मै खुद कल्पनाओ की उडान भरने में कुछ कम न था। मिसाल के तौर पर, जव मै पन्द्रह वरस का था तो जहाजी वनने की कल्पना करता था। मुझे अभी फैक्टरी में काम न मिला था। जहाजी जिदगी की तैयारी के लिए मैं तीन महीने

बिना बिस्तर के फर्श पर सोया था। मैं अपने को कठिन जीवन का अभ्यासी बनाना चाहता था। और अपने आप से कहता था बिस्तरे पर सोनेवाला जहाजी कैसा होगा! (हसी)

मैं सोचता हू कि शायद आपके दिमाग भी इसी तरह की कल्पनाओ से भरे पड़े है। आप लोग नवी और दसवीं कक्षाओ के विद्यार्थी है। यही उम्र है जब लोग कल्पनाओ से झकझोर जाकर कुछ किसी महान लक्ष्य की ओर प्रेरित होते है। आप कैसे सोवियत युवक है, यदि आप महान जीवन के सपने न देखते है, यदि आप पहाड़ो को चलायमान करने की न सोचते, या पृथ्वी को उलट देने के लिए आर्कीमिडीज़ के स्क्रू का प्रयोग करने की नही सोचते? (हसी)

लेकिन जैसा मैं कह चुका हू महान जीवन के लिए आपका सघर्ष हमारे मुकाबले कही आसान है। अगर आप मुझ से पूछें कि इस रास्ते पर कैसे चला जाये, तो मैं जबाब दूगा कि जिस हद तक आप अभी भी स्कूल में पढ रहे है, फिलहाल आपको ज्यादा कुछ नही करना है। शुरूआत के रूप में बुनियादें डालने के लिए, महान जीवन के निर्माता बनने के लिए, अभी यही आवश्यक है कि आप अपने पाठ्यक्रम के तीन विषयो के पडित बनिए, सिर्फ तीन। देखिये मैंने कितनी छोटी सी बात कही है। (हसी)

पहले, और सबसे पहले आपको रूसी भाषा का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। मेरा खयाल है कि एक व्यक्ति के साधारण विकास के लिए रूसी भाषा का ज्ञान बहुत ही आवश्यक है। क्योंकि कोई ऐसा विज्ञान अथवा सस्कृति का विषय नही हैं जिसका विद्यालय मे भविष्य में अध्ययन आपको रूसी भाषा के अच्छे ज्ञान की आवश्यकता न पडे। और मामूली तौर पर, दैनिक क्षेत्र नही है जिस के लिए रूसी भाषा का पूर्ण ज्ञान आवश्यक न हो। जीवन में अपने विचारो, भावो, अनुभवो की समूची गहराइयो के सही और सक्षिप्त व्यक्तिकरण के लिए

भी इस तरह का ज्ञान परमावश्यक है। यदि एक आदमी यह सब दूसरे लोगों को व्यक्त करना चाहता है, तो उसे ऐसे वाक्यों में व्यक्त करना होगा जो वाक्य-रचना और व्याकरण-संबंधी नियमों के ही अनुकूल, सही तौर पर निर्मित किए गए हों।

अक्सर आपने साथियों को यह कहते सुना होगा "मैं इस विषय को अच्छी तरह समझता और जानता हूं। लेकिन मैं इसे समझा नहीं सकता।" (हंसी) वह ऐसा क्यों नहीं कर सकते? क्योंकि उसने अपनी मातृ-भाषा का पांडित्य नहीं प्राप्त किया। जरा एक नौजवान की कल्पना कीजिए जो अपनी दिलरुबा को पत्र लिखना चाहता है। मान लीजिए कि यह पचास वर्ष पहले की बात है। वह लिखता है "मेरी प्रियतमा, तुम्हारे लिए मेरा प्यार असीमित है। (हंसी) मेरी भावुकता इतनी गहरी है कि मैं उसे व्यक्त नहीं कर सकता। ऐसा करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है।" (हंसी) एक सीधी सादी और सरल लड़की कहेगी "क्या कमाल है।" (हंसी) लेकिन मान लो वह न तो सीधी ही है और न सरल ही, बल्कि वह अच्छी खासी शिक्षित लड़की है? मेरा विश्वास है, वह कहेगी "दयनीय छोकरे। तू कैसा बुद्धू है!" (हंसी और तालियां)

अपनी मातृ-भाषा का अध्ययन एक महत्वपूर्ण बात है। मानवीय विचारधारा, गहन ज्ञान और अच्छे से अच्छे भाव यदि स्पष्ट और संक्षिप्त शब्दावली में व्यक्त न हुए, तो वह अंधकार में ही पड़े रह जायेंगे। भाषा विचारों की व्यक्ति का एक साधन है। एक विचार, विचार तभी बनता है जब वह भाषा के रूप में सामने आए, जब वह भाषा के माध्यम के ऊपर आए, जब दार्शनिकों के अनुसार उस पर मनन कर लिया गया हो और दूसरों को व्यक्त कर दिया गया हो। इसीलिए मैं आपसे कहता हूं कि आपके आगे के कामों के लिए मातृभाषा का ज्ञान सबसे अधिक बुनियादी है।

आप लोगो के लिए दूसरा विषय, जो मैं बिलकुल ज़रूरी समझता हू, वह गणित शास्त्र है।

मैं गणित शास्त्र पर इतना अधिक ज़ोर क्यो दे रहा हू? मौजूदा हालतो में, और विशेषत सोवियत यूनियन के तरुण विद्यार्थियो के लिए मैं इसे क्यो इतना महत्वपूर्ण समझता हू?

पहले, गणित मानसिक अनुशासन सिखाता है। वह लोगो को तर्कपूर्ण पद्धति से सोचना सिखाता है। गणित को मानसिक व्यायाम यूही नहीं कहा जाता। मुझे सदेह नही कि आपके दिमागो में विचार हिलोरें ले रहे हैं। लेकिन इन विचारो को सुयोजित, अनुशासित और उद्देश्यपूर्ण बनाना चाहिए। गणित आपको इस काम में मदद देगा। ये विचार वैज्ञानिको को आपसे कही अधिक भले लगेंगे, और मैं समझता हूं कि ये सब गणित पढने के लिए आपको अधिक उत्साहित नही करेंगे।

दूसरे, और सभवत यह आपके अधिक निकट होगा। गणित का प्रयोग जीवन के बडे क्षेत्र में होता है। आप किसी भी विज्ञान का अध्ययन क्यो न करें, आप कोई भी कार्य क्षेत्र क्यो न चुनें, आपको हर क्षेत्र में गणित शास्त्र के ज्ञान की आवश्यकता होगी। और आपमें से कौन है, जो जहाज़ी, हवाबाज़, तोपची, या कुशल कारीगर, फिटर, टर्नर या इसी तरह और कुछ नहीं बनना चाहता? कौन एक अनुभवी कृषि-विशेषज्ञ, पशु पालक, बागबान, वग़ैरह या रेलवेमैन, इजिन ड्राइवर, आदि नही बनना चाहता? ये सब पेशे गणित-शास्त्र के अच्छे ज्ञान की अपेक्षा करते है। इसलिए यदि आप पूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, तो आपको जितना भी अवसर मिले, गणित में योग्यता प्राप्त कर लेनी चाहिए। बाद में यह आपके सभी कामो में सहायक होगा।

एक मिसाल लीजिए। मास्को के एक प्रसिद्ध नेत्र-विशेषज्ञ ने मुझे बताया कि यदि किसी नेत्र विशेषज्ञ का भौतिक विज्ञान का ज्ञान कम

है, तो वह अच्छा नेत्र विशेषज्ञ नही हो सकता। मैने उससे यह नही पूछा कि वह भौतिक विज्ञान की किस शाखा का जिक्र कर रहा है। लेकिन स्पष्ट है कि उसकी निगाह में दृष्टि सबधी ज्ञान था। दृष्टि-सबधी ज्ञान लगभग पूर्णतया ही गणित के फार्मूलो पर आधारित है। क्या मै ठीक कह रहा हू? लगभग सही ही। (हसी) अत आपमें से जो चिकित्सा क्षेत्र में जायेंगे, उनको भी गणित की आवश्यकता होगी।

आपके लिए असाधारण महत्व का तीसरा विषय है मुझे भय है कि मै जो कुछ बताने जा रहा हू, उस पर आपको बडा आश्चर्य होगा, और हो सकता है आप पूर्णतया मुझसे सहमत न हो। तथापि मुझे आपको बता ही देना चाहिए। यदि मै पूर्णतया आपको समझा सकने में सफल न हुआ तो कम से कम मै आपको उस विषय के महत्व पर विचार करने के लिए उकसाने की कोशिश अवश्य करूगा। अच्छा तो फिर वह विषय क्या है? मेरे दिमाग में शारीरिक शिक्षा है। (हसी, तालिया) मै देखता हू कि आपमें से कुछ खुश है और बहुत सभव है कि आप इसलिए खुश है कि मैने कोई दूसरा विषय नही बताया, जिसके लिए अधिक मानसिक श्रम की आवश्यकता हो।

लेकिन मैने रूसी भाषा और गणित-विज्ञान के बराबर ही शारीरिक शिक्षा को क्यो रक्खा?

इसलिए कि मै चाहता हू कि आप सब स्वस्थ सोवियत नागरिक बनें। अगर हमारे स्कूलो से अस्तव्यस्त स्नायुओ और गडबड पेट (हसी) वाले ही निकले, जो हर साल स्वास्थ्यगृहो में इलाज के लिए पडे रहे, तो इसका क्या नतीजा होगा? ऐसे लोगो के लिए जीवन में सुख पा सकना मुश्किल होगा। बिना अच्छे स्वास्थ्य के सुख कहा? हमें अपने को स्वस्थ — स्त्री और पुरुष—उत्तराधिकारियो के रूप में तैयार करना है।

दूसरे, मै शारीरिक शिक्षा इसलिए चाहता हू कि हमारे युवक मजबूत और तेज हो। यह सत्य है कि सभी लोग हृष्टपुष्ट नही पैदा होते। और ऐसे लोग भी है जो बैल की तरह सही जन्म स्वस्थ होते है। ये लोग जीवन की विषम से विषम परिस्थितियो मे स्वस्थ बने रहते है। बैल की तरह स्वस्थ होने की कहावत भी है। मगर ऐसे लोगो की तादाद बहुत कम है। पर औसत आदमी जिदगी के दौरान मे अपने स्वास्थ्य को बनाता है। चपलता और दृढता के सबध मे तो यह और भी सही है। दोनो ही को अभ्यास से प्राप्त किया जा सकता है।

एक आदमी किस तरह ट्रेनिग द्वारा सहनशील हो सकता है, उसकी मिसाल सुवोरोव के जीवन से मिल जायेगी—मै यह मिसाल इसलिए दे रहा हू कि सभवत आप सभी ने सुवोरोव सबधी फिल्म देखी है। जैसा आपको याद होगा वह बचपन मे इतना कमजोर था कि उसके माता पिता ने उसके लिए फौजी जीवन की बात भी न सोची थी। इसके बावजूद उसने अपने को इस सीमा तक लौह बनाया कि अत मे मजबूत से मजबूत लोगो मे हो गया और जहा तक मुझे स्मरण है, वह ७० बरस तक जिया। मै ठीक कह रहा हू या नही? सच तो यह है कि इतिहास का ज्ञान मुझे नही है, पर आपको तो होना चाहिए। (हसी)

हम चाहते है कि सोवियत जन और आप लोग तरुण विद्यार्थी सुवोरोव की भाति तेज और मजबूत हो। इस ओर थोडी भी कामयाबी सोवियत राज्य की महान सफलता समझनी चाहिए। मै आपसे "फिनलैड मे युद्ध" पुस्तक पढने की सिफारिश करता हू। यह बडी पुस्तक दो भागो मे है। जब मैने अपने एक परिचित से पूछा कि आपसे यह किताब पढने की सिफारिश की जाय या नही, तो उन्होने सिफारिश न करने के लिए कहा। उन्होने कहा यह बहुत बडी है और ये उसे पूरी पढेगे नही। और यह एक प्रोफेसर का कहना था जो आप के बारे मे कुछ ज्ञान रखता है। उन्होने सुझाव दिया कि मै आपको फिनलैड के युद्ध से

संबंधित कोई दूसरी किताबें बताऊं जो काफी छोटी है। इनके बावजूद मैंने यही निश्चित किया कि आप से दो भागो वाली इसी पुस्तक को पढ़ने की सिफारिश करूं। मै समझता हू कि एक बार यदि आप इसे उठा लेंगे तो उसे खतम करके ही छोड़ेंगे—वह इतनी दिलचस्प और शिक्षात्मक है।

यह किताब इतनी दिलचस्प क्यो है? इसमें युद्ध के विषय पर कोई साधारण विश्लेषण नही है। पूरी पुस्तक मे मुख्य विचार यह है कि नवीन युद्ध शैली के लिए फौजी मामलो की असाधारण जानकारी, नवीनतम फौजी टेकनीक का पांडित्य, असाधारण शारीरिक शक्ति आवश्यक है। बड़ी मेहनत की ज़रूरत है, इसके लिए दृढ़ता और अधिक दृढ़ता की आवश्यकता है। असाधारण चपलता और मोर्चे की कठिन से कठिन स्थिति के लायक अपने को ढाल सकने की योग्यता और आवश्यक साधनो को जुटा सकने की काबिलीयत ज़रूरी है। इन गुणो के बिना नवीन युद्ध में आपको कोई अवसर नही। इसलिए आपको पूरी शक्ति से सोवियत देशभक्तो के कर्तव्य पूरा करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। और इसके लिए आवश्यक है कि आप अपने को शारीरिक तौर पर लौह, कठिन, स्वस्थ और चपल बनाए।

इसके अलावा दैनिक जीवन में भी आपको शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता है। सड़ी आतो वाले पेट का आदमी अपने जीवन में किस सुख का अनुभव कर सकेगा? (हसी) लेकिन यदि एक व्यक्ति स्वस्थ है और उसका हर अंग साधारण तौर पर काम करता है—यानी उसे भूख न लगने, नीद न आने आदि की शिकायत नही है—तो वह जीवन की कठिनाइयो को कही आसानी से जीत सकेगा। इसलिए स्वस्थ बनने के लिए, जीवन का अधिकाधिक सुख प्राप्त करने के लिए आपको शारीरिक शिक्षा प्राप्त करनी है।

मुझे ऐसा लगता है कि हमारे स्कूलो में, लोग अधिक दिमागी वना दिये जाते है, लेकिन दिमागी मानसिक विकास के अर्थों में नही, बल्कि आराम पसद के अर्थों में। उन्हे शारीरिक काम का मूल्य आकना सिखाया ही नही जाता। मै नही कह सकता कि इसमें दोप किसका है, लेकिन तथ्य तो तथ्य ही है। स्पष्ट है कि शारीरिक श्रम की ओर पुराना रवैया कुछ हद तक यहा देखने में आता है। शायद मुख्य दोप परिवारो का है। लेकिन स्कूल इस प्रभाव का उचित प्रतिरोध नहीं करते और वच्चो को शारीरिक श्रम की तरफ कम्युनिस्ट रवैया अपनाने में काफ़ी सहायता नही देते। इसीलिए वहुत से वच्चे शारीरिक श्रम के प्रति अनिच्छा रखते है और इसे लज्जाजनक तथा नीच समझते है। मेरा ख्याल है कि यह वहुत वडी भूल है। हमारे देश में हर काम को सम्मनपूर्ण समझा जाता है। हमारे लिए कोई काम छोटा या वडा नही है। हमारे देश में श्रम सम्मान, शूरता, प्रतिष्ठा और वीरता की वस्तु समझा जाता है। फिर चाहे वह राज का काम हो या वैज्ञानिक, चौकीदार, इजीनियर, वटई, कलाकार, चरवाहे, एक्ट्रेस, ट्रेक्टर ड्राइवर, कृषि विशेपज्ञ, दूकान कर्मचारी, डाक्टर या किसी और पेशे का काम हो।

हर तरुण सोवियत नागरिक को शारीरिक श्रम का सम्मान करना चाहिए और मामूली से मामूली काम को भी टालना नही चाहिए। आप में से जो लोग शारीरिक श्रम के आदी हो जायेंगे, वे जीवन का अधिक ज्ञान प्राप्त करेंगे। आपमें से जो लोग कम से कम कपडे धोने, सीने, खाना वनाने, कमरा साफ करने जैसे परमावश्यक काम करने लगेंगे—या आपमें से जो कोई एक न एक पेशा सीख जायेंगे, तो निश्चित है कि आप जीवन में कभी घाटे में नही रहेगें।

एक वार मैने प्रसिद्ध अग्रेज दार्शनिक जॉन लॉक के पाडित्यपूर्ण पत्रो को पढ़ा, जो आज से ढाई सौ वर्ष पहले जीवित था। अग्रेजी शासक वर्गों से उसने कहा अपने वच्चो को मुलायम विस्तरो पर

सोने का आदी मत बनाओ। उनका पालन पोषण इस तरह करो जिससे वे हर बिस्तरे को मुलायम समझें, क्योंकि यात्राओ के दौरान में आप अपने मुलायम बिस्तरो को लाद कर नही ले जा सकते, और युद्धो में तो यह और भी असभव है। यदि एक जवान कडे बिस्तरे पर सोने का आदी हो गया है तो उसे मुलायम बिस्तरे पर सोने की शिक्षा आवश्यक नहीं होगी, वह जल्दी ही सीख जायेगा। जॉन लॉक ने माताओ, पिताओ को सलाह दी कि वे अपने बच्चो को अनेक पेशे सिखायें, जिनमें से एक का तो उसे पूर्ण ज्ञान होना ही चाहिए। यह उनके लिए बहुत सहायक होगा और बहुत विद्वान लोग भी जब मानसिक श्रम के बाद आराम चाहें, तो उन्हे फायदा पहुचायेगा। दूर्भाग्य के मारे हुए को तो यह बहुत ही सहायक होगा।

जैसा आप देख रहे है कि ब्रिटेन के उत्थान के समय शोषक वर्गों के विचारको ने उन्हे अपने बच्चो को शारीरिक श्रम का सम्मान करने को सिखाया, न कि साधारण काम से घृणा करना सिखाया। उन्होने बच्चो को जीवन की हर स्थिति के लिए तैयार करने की सलाह दी। और यह सब शोषको की शक्ति को और अधिक दृढ बनाने के लिए किया गया।

यदि अग्रेजी पूजीपतियो और जमींदारो के बेटो ने शारीरिक श्रम का सम्मान करने की सलाह मानी, यदि उन्होने मामूली श्रम के प्रति घृणा नही बरती और जीवन की हर कठिनाई का मुकाबला अधिक आसानी से करने के लिए अपने को दृढ बनाया, तो सोवियत युवको को यह समझना और भी जरूरी है। आप शारीरिक श्रम कहा और कैसे कर सकते है? सबसे पहले घर पर आप इसकी शुरूआत कीजिए। और फिर हर तरह से अपनी दृढता तथा चपलता को विकसित कीजिए।

हमारे लोग अक्सर पूछते है भविष्य के कम्युनिस्ट समाज के लोग किस तरह के होगे? मै चाहता हू कि अपनी जनता के लिए, कम्यु-

निश्चय की जीत के लिए, सोवियत नागरिक स्वस्थ, दृढ और स्वदेश के दुश्मनो के प्रति किसी भी भाति झुकने वाले न हो। मै नही मानता कि हमारे तरुण लडना नही चाहते। यह अस्वाभाविक होगा। मै गलत तो नही कह रहा हू? ("सही", "सही" की आवाजें) अलवत्ता, अनेक तरह के आदमी होते है। लेकिन मै उनके सामूहिक स्वरूप की वात कर रहा हू। इसका अर्थ है कि आप अपने को दृढ और चपल वनने की ट्रेनिग दीजिए। आप ऐसे बन जाइए जो किसी भी कठिनाई या परीक्षा में सफल हो सके।

अब आप खुद ही फैसला कीजिए कि ऐसे लोगो का क्या किया जाय जिनके बारे में "प्राव्दा" के "आलसी तरुण" लेख में बताया गया है। जिस सवाददाता ने यह लेख लिखा था, उसने एक सामूहिक किसान के १८ वर्षीय पुत्र विक्टर न० से भेंट की थी। "एक सामूहिक किसान का पुत्र विक्टर, जिसने दो साल हुए अपनी स्कूल शिक्षा प्राप्त की थी, घर पर वैठा रहता है और कोई काम नही करता। उसके ही शब्दों में वह 'शक्ति वटोर रहा है।' यह पूछने पर कि वह फार्म पर काम क्यो नही करता, उसने मुह टेढा करके जवाब दिया, 'मैने स्कूल में सात साल सामूहिक फार्म पर काम करने के लिए नही विताए। लगडा अद्रुश्का ही वहा काम करेगा। अपने लिए मै ज्यादा साफ काम ढूढ लूगा। मै कही दफ्तर में काम पा सकता हू।' "

यह लेख पढकर मैने यह निश्चित कर लिया कि और चीजो के अलावा यह विक्टर न० बिलकुल ही अशिक्षित है। यदि स्कूल छोडने के वाद दो वरसो में उसने कुछ भी नही किया, तो निश्चय ही है उसने अपनी स्कूल की शिक्षा भी वहुत भोडे रूप से प्राप्त की है और एक एक दर्जा करके यूही घसिटता रहा है, यानी उसे उचित तौर पर अक्षर ज्ञान भी नही है। और यदि यह हालत है, तो वह आफिस के भी काम का नही है। क्या हमारे सामूहिक फार्मों को शिक्षित लोगों की

आवश्यकता नही है? क्या कोई भी बिना ज्ञान के खेती कर सकता है? हम सचमुच ऐसे "दर्शन" से सहमत नही हो सकते। यह हानिप्रद "दर्शन" है, जिसका पूरी शक्ति से विरोध करना चाहिए। हमें यह निश्चय कर लेना चाहिए कि हमारे स्कूलो से इस तरह के विद्यार्थी नही निकलेगे। सोवियत जनता ऐसे आलसियो को बरदाश्त नही कर सकती। सचमुच, हमें मिलता क्या है? आलसियो और मुफ्तखोरो को हटाने के लिए हमने क्राति की और यहा, यदि आप बुरा न मानें तो, नए आलसी और मुफ्तखोर बढ रहे है। नही, यह बरदाश्त नही किया जा सकता और इस दशा के लिए स्कूल भी उत्तर दे।

साथियो, जब मै आपके सामने रूसी भाषा, गणित शास्त्र और शारीरिक शिक्षा के बारे में बोल रहा था, इसका यह मतलब नही था कि पाठ्यक्रम के अन्य विषयो के महत्व को मै कम कर रहा था। फलत इसका अर्थ यह नही है कि आप दूसरे विषयो को नजरअदाज करें। मैने इन तीन विषयो पर इसलिए जोर दिया कि मै उन्हें दूसरे विषयो के समुचित ज्ञान और पूर्ण जीवन के लिए आवश्यक बुनियाद समझता हू। मुझे विश्वास है कि अगर आप इन तीन खास विषयों में बहुत अच्छे नम्बर हासिल कर लेते है, तो दूसरे विषयो में कामयाबी पक्की हो जायेगी, क्योंकि इन सबका बहुत नजदीकी सबंध है।

अत में मुझे कहना है कि विभिन्न ऐतिहासिक युगो में विभिन्न प्रगतिशील आदोलन सामने आते है और जनता की श्रेष्ठतम शक्तियां उनको पूरा करने के लिए सघर्ष करती है। मिसाल के लिए, पिछली शताब्दी के चौथे पाचवे दशको में बुनियादी प्रगतिशील काम अर्ध-दास व्यवस्था से किसानो को मुक्ति दिलाना था। और हम जानते है कि उस युग में सभी इमानदार और प्रगतिशील व्यक्तियो ने इस काम की सफलता मे सीधे या गैर सीधे तरीके मे योग दिया।

पिछली शताब्दी के अत और बीसवी सदी के प्रारभ के ममय में नया प्रगतिशील आदोलन जो सामने आया, उसने ज़ारशाही और पूजीवाद की शक्ति का अन्त करके नयी ममाजवादी व्यवस्था कायम करने की प्रेरणा दी।

वर्तमान युग में ममाजवाद को सुदृढ करना, और कम्युनिज्म की अतिम विजय के लिए सघर्ष करना सबसे ज्यादा प्रगतिशील काम है। यह न सिर्फ सोवियत जनता ही मानती है, वरन् दुनिया के तमाम मेहनतकश भी इसे समझते है। इस काम की सफलता के लिए आवश्यक है कि हमारे देश की आर्थिक और फौजी शक्ति को अधिकाधिक बढाया जाय। और इसलिए मै चाहता हू कि हमारे तरुण इस महान दायित्व के प्रति उत्साही बनें। वे उसे ही अपने जीवन का उद्देश्य बनाए, क्योकि तभी आपके जीवन विचारात्मक गहनता मे पूर्ण हो सकेगे।

मार्क्सवाद लेनिनवाद कम्युनिज्म के सघर्ष में, कम्युनिस्ट आदर्शों की सफलताओ के लिए शक्तिशाली साधन है। असली और वैज्ञानिक कार्य वाही में, इसकी विचारधारा और तरीका दोनो ही बहुत शक्तिशाली साधन है। और जो कोई भी पूर्ण जीवन बिताना चाहता है, उसे मार्क्सवाद लेनिनवाद का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। ऐसी ही जिदगी हमारे तरुणो को आकर्षित करेगी।

साथियो, अभी आपकी उम्र अपने को बनाने की है। मै नही जानता कि आप जरा इस दार्शनिक व्यक्तीकरण को समझ रहे है या नहीं। दूसरे शब्दो में आप विकास की अवस्था में है, आप तरुण है, आपमें कल्पना, जोश और असाधारण निडरता है, लेकिन अभी आप प्रौढ नही हुए है न ही आपने अभी जीवन का अपना रास्ता ही चुन लिया है। आप सिर्फ अपनी राह ढूढ रहे है। पचास वर्ष पहले हम लोगो के लिए यह आसान था, क्योकि हमारे सामने एक ही सकरी पगडडी थी। और

तब यदि कोई डगमगाता था, तो वह निश्चय ही अनम्यता के दलदल में गिर जाता था। आपके सामने अनगिनत अमली रास्ते हैं, आप यह रास्ते चुन रहे हैं। जल्दी ही आप जहाजी, रेलमैन, तोपची, टैंकमैन, हवाबाज़, इजीनियर फिटर, खरादी, वैज्ञानिक, कलाकार, डाक्टर, आदि बन जायेंगे।

मै चाहूगा कि तब आप लोग भी सामाजिक कार्यवाहियो में हिस्सा लेने के लिए उसी उत्कट भावना से प्रेरित हो, जिनसे पचास साल पहले हम लोग प्रेरित हुए थे। आप के जीवन का महान उद्देश्य सोवियत जनता की सेवा हो।

"स्मेना" मैगज़ीन

अक ६, १९४१

शत्रु पर विजय पाने के लिए सब कुछ किया जाना चाहिए

कूइबिशेव नगर के कोम्सोमोल कार्यकर्ताओ की सभा मे दिये गए भाषण का अंश

१२ नवबर १९४१

साथियो, भूतकाल में सोवियत यूनियन ने अनेक मुश्किले उठायी है। और पुरानी पीढियो को अनेक कठिनाइयो का सामना करना पडा है। इसके लिए अनेक कोशिशे करनी पडी और अनेक बलिदान देने पडे। उनकी जिदगिया शौर्यपूर्ण कामो से भरी पडी थी। यह महान त्याग और तपस्या किस उद्देश्य से की गई? ये सब भविष्य के लिए, आपके लिए करना पडा, ताकि प्रिय कोम्सोमोल सदस्यो की वर्तमान पीढी लगभग शातिपूर्ण स्थिति में विकसित हो सके।

लेकिन जैसा स्वय आप जानते है, पहले से कुछ कम नहीं, बल्कि और भी अधिक कठिनाइया आपकी पीढी पर आ रही है। ऐसा प्राय होता है, युद्ध तरुणो पर फौरन प्रौढता ला देता है। थोडे से थोडे ही समय में एक तरुण जिसका जीवन "वक्त" की खुशियो से भरा

है, जो भविष्य और अपनी प्रेयसी के रंगीन सपनो में मस्त है, पौढ वन जाता है। वह महसूस करता है कि युद्ध उमका यह सव कुछ अत किए दे रहा है और जीवन का सवसे अच्छा नमय जैसे कम किया जा रहा है।

मै आपके सामने एक वहुत ही सर्व-साधारण तथ्य पेश करूगा। "क्रासनाया ज्वेज्दा" अखवार ने अपने युद्ध-फोटोग्राफर लोस्कुतोव की टिप्पणिया छापी है, जिनमें वह वताता है कि वह और एक सिनेकैम-रामैन कुछ तरुणो के साथ किस तरह जर्मन युद्ध-पक्तियो के पीछे पर्तिजन दस्तो के वीच पहुचे।

सवाददाता लिखता है, "हम लोगो के साथ एक गाइड (राह दि-खाने वाला) था जो पूरे ग्रूप का लीडर हो गया। हमारा कमाडर सिर्फ २० वर्ष का एक नौजवान था, लेकिन उसने अनेक मुश्किले झेली थी और काफी दुनिया देख ली थी। वह कोम्सोमोल का सदस्य था, वहा-दुर था और धुन का पक्का था। हम लोग वहुत जल्दी ही उस पर मुग्ध हो गए। उनका नाम मेर्योझा जैत्सेव था, लेकिन हम उमे सिर्फ 'जैचिक' कहते थे।"

हा, वहुत सभव है कि पाच महीने पहिले वह "जैचिक" रहा हो। लेकिन अव वह एक ग्रूप का कमाडर है। जरा सोचिए कि एक वीस साल का लडका जर्मनो के पीछे ५० किलोमीटर की दूरी तक एक ग्रूप का नेतृत्व करता है! ५ महीने पहिले वह साधारण नौजवान था और पर्तिजन वनने का उसे कोई ख्याल भी न था। शायद वहुत हद तक उसका सम्पूर्ण घ्यान रागरंग, नाच-गान—यह सव कुछ स्वाभाविक ही था—पर केन्द्रित था। लेकिन ५ महीनो में वह एक योद्धा वन गया, जनता का वीर सेनानी वन गया। अव वह एक अनुभवी योद्धा है, जिसके हाथो में प्रौढ लोग कठिन अवसरो पर अपना जीवन सौंप देते हैं।

आप ने देखा कि कितनी जल्दी हमारे युग में कल के अल्हड तरुण योद्धा बन जाते हैं। शांति-काल में इसमें बरसो लग जाते। आपमें से बहुतो के भाई होगे जो मोर्चे पर रह चुके होगे, वे जब छुट्टी पर या किन्ही दूसरी परिस्थितियो में घर आए है तो क्या आपने उनसे नहीं कहा, "आप कितने बडे हो गए! जब आप गए थे तो बच्चे थे और अब आदमी हो गए!"

ये तो बाहरी परिवर्तन है। जनता में भी गहरी तबदीलिया हो रही है। निस्सदेह, कोम्सोमोल सदस्य युद्ध के बोझ को खूब निभा रहा है। उनमें से अनेक मोर्चे पर हैं, और जो नही है, वे उत्पादन में लगे हुए हैं। वहा पर भी उसी तरह का मोर्चा है। मिसाल के तौर पर, कोम्सोमोल के वे सदस्य, जो मास्को के उद्योग में लगे हैं, अक्सर शत्रु के हवाई हमले के खतरे से घिरे रहते हैं। ऐसे अवसरों पर पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अधिकाधिक उत्पादन में लगे रहने के लिए बहुत ही दृढ-प्रतिज्ञ होने की आवश्यकता होती है।

युद्ध का मोर्चा लेनिनग्राद के लोगो के तो और भी निकट है। लेनिनग्राद कोम्सोमोल का सदस्य चाहे हाथो में हथियार लेकर नगर की सुरक्षा के लिए लड रहा हो, चाहे कारखाने में काम कर रहा हो, वह मोर्चे पर है। इस प्रकार अब मास्को के सर्वहारा और तरुण लेनिनग्राद के सर्वहारा प्रौढ हो गए है और योद्धा बन गए है।

यही बात पिछवाडे में भी चल रही है, सभवतया उसकी चाल कुछ धीमी है।

सरकार का एक भाग इस समय कूइबिशेव में है। इससे कूइबिशेव की मेहनतकश जनता पर, और कूइबिशेव कोम्सोमोल-सगठन पर बहुत बडी जिम्मेदारी आ गई है। एक वर्ष पहले, पाच महीने पहले तक कूइबिशेव अनेक नगरो में से एक था, यद्यपि वह एक बडा नगर था। स्वेर्दलोव्स्क, चकालोव, नोवोसीबिर्स्क और दूसरे नगर कूइबि-

शेव की जनता के प्रति विशेष ध्यान नही देते थे, क्योकि वे स्वय क्षेत्रीय केन्द्र थे। लेकिन अब अखिल-सघीय लेनिनवादी नौजवान कम्यु-निस्ट लीग की केन्द्रीय-कमेटी यहा पर है। दूसरे प्रदेशो से कोम्सोमोल के सदस्य यहा आते है, और स्वाभावत वह आपकी तरफ ध्यान से देखते है। कूइविशेव में चीजें कैसे की जाती है—उसके प्रति उनकी दिलचस्पी है। वे यहा पर चीजें देखने और सीखने की आशा करते है।

इस समय कोम्सोमोल के सामने मुख्य काम क्या है? इस समय सबसे अधिक वुनियादी और निर्णयात्मक वात युद्ध है। आज शत्रु को पछाडने से अधिक कोई काम महत्वपूर्ण नही है और तमाम काम शत्रु को हराने के इस वुनियादी उद्देश्य के सहायक है।

आप युद्ध मे सीधे भाग ले सकते है या उद्योग में काम करके, या दूसरे सगठनो में हिस्सा लेकर भी युद्ध में सहायता कर सकते है। वहुत सभव है कि आप में से वहुतो को आज नही तो कल, कल नही तो परसो युद्ध में सीधा भाग लेना पडेगा। यह एक निर्मम युद्ध है। शत्रु का मुक़ावला सिर्फ अदम्य इच्छा-शक्ति और उत्साह से ही किया जा सकता है।

इसलिए कोम्सोमोल सगठन के सामने अव काम यह है कि वह अपने सदस्यो को युद्ध के लिए तैयार करे। मैं समझता हू कि आप सभी यह वात विल्कुल अच्छी तरह से समझते है कि जो युद्ध हम लड रहे है, वह न्यायपूर्ण है। लेकिन आपमें से हर एक को नैतिक तौर से भी अपने को युद्ध के लिए तैयार करना चाहिए।

आपको यह समझना चाहिए कि युद्ध खेल नही, वरन् यह एक वहुत कठिन परीक्षा है। यह सिर्फ एक मौके की वात नही कि युद्ध के जमाने में एक अछूता तरुण इतनी जल्दी आदमी वन जाता है, योद्धा वन जाता है। युद्ध-काल मे एक आदमी शाति-काल के मुकावले के दस वरसो को एक ही या कुछ महीनो में पार कर लेता है। एक लडाई

मे उसे इतना अनुभव हो सकता है, जितना साधारणतया उसे आधी जिंदगी में भी नहीं हो सकता। आपको इसके लिए तैयार रहने की जरूरत है। कोम्सोमोल के सदस्यो को चाहिये कि अपने आप को और तमाम तरुणो को युद्ध में भाग लेने के लिए तैयार करे। आप को अपने को मानसिक तौर पर भी तैयार करना है, ताकि युद्ध की अमानुषिकताए और दुश्मन के तमाम हथकडे आपको तोड न सके।

युद्ध के लिए अपने आप को तैयार करने का अर्थ क्या है? इसके लिए तैयारी ठोस होनी चाहिए। उस युद्ध में नये और पेचीदा हथियार प्रयुक्त होते है। आपको चाहिए कि आप उन का प्रयोग करना सीखें।

जब कामरेड वोरोशीलोव फौज के एक डिवीजन को मोर्चे पर जाने के लिए विदा कर रहे थे, तब उन्होंने कहा था "जल्दी से मोर्चा सभालना सीखिए।" सोवियत यूनियन के मार्शल ने यह बात लाल फौज के सिपाहियो से कही, उन लोगो से जो यद्यपि मोर्चे पर नहीं गए थे, लेकिन फौजी मामलो के माहिर थे। उन्होंने कहा—"खाइया खोदने में अपनी पूरी शक्ति लगा दीजिए। अपने फावडो का इस्तेमाल कीजिए। युद्ध-काल में फावडा एक सिपाही का शस्त्रास्त्र है। जल्दी से जम जाना सीखिए।"

मै समझता हू कि यदि सोवियत यूनियन का एक मार्शल मोर्चे पर जाने वाले फौजियो के डिवीजन को यह सलाह दे सकता है, तो यह सलाह आप पर, कोम्सोमोल के सदस्यो पर, और भी अधिक लागू होती है। फावडा चलाना सीखिए। भावी फौजी के नाते आपको फावडा चलाना इस सीमा तक सीखना चाहिए कि आप घटे भर में छाती तक गहरी जमीन खोद डाले और ऐसी खाई खोद ले जो दो घटे में आपके सिर को ढक ले। फिर आपके सामने एक ठोस काम है कि आप खोदना सीखें। यदि मै आपके कोम्सोमोल नगर-सगठन का मत्री होता तो मै हर दिन आपसे कुछ घटे बरफ से ढकी जमीन खुदवाता और देखता

कि आप कितनी शीघ्र खुदाई की कला के माहिर बनते है। (हसी) हो सकता है, आप में से कई मेरी इस बात को अन्याय समझकर, समय की व्यर्थ बरबादी समझकर अपने मन ही मन मुझे कोसते होगे। (हसी) जो मोर्चे पर न जाते, वे शायद ऐसा ही सोचते रहते। और जो मोर्चे पर जाते, वे मुझे धन्यवाद देते। "क्या अच्छी बात थी कि यह मुझे पहले से सिखा दिया गया था। और अब अपने लिए खाई खोद लेना तो बच्चो का खेल हो गया है", वे कहते।

मुझे याद नही है, लेकिन मै सोचता हू कि वह नेपोलियन था जिसने कहा था कि उसकी फ़ौज का हर आदमी अपने थैले में एक मार्शल का बेंत रखता है। यह नेपोलियन की फ़ौज के बारे में कहा जाता था। सोवियत यूनियन में विशेष सामाजिक व्यवस्था नही है, जिससे फ़ौज में नौकरी या तरक्की आसानी से मिल सके। हमारे देश में यह सब निजी खूबियो के आधार पर होती है। बहुत सभव है कि आप में से अनेक कमाडर या राजनैतिक कार्यकर्ता हो। मै सोचता हू कि आपमें से अनेक बडी-बडी फौजी यूनिटो के कमाडर बनें, शायद मार्शल भी बनें। आपमें से कम से कम एक मार्शल तो निश्चय ही निकलेगा? (हसी) यह बिल्कुल सभव है। इसलिए साथियो, आपको युद्ध-कला, एव फौजी विज्ञान का अध्ययन बहुत ध्यान से करना चाहिए। कोई बात नही यदि आपको पहले एक साधारण लाल फौज के सिपाही की तरह काम करना पडे। अत यह ज्यादा अच्छा होगा कि सैद्धातिक शिक्षा पहले ही से प्राप्त की जाय। भविष्य में यह बहुत फ़ायदे की साबित होगी। जब मै युवक था तो मेरे भी अपने सपने थे "काशकि मै मजदूरो की लोक-सभा का सदस्य बन सकू"। मै यह भी जानता था कि पहले मुझे जेलखाना काटना पडेगा। (हसी) जब लोग पन्द्रह और अठारह साल के बीच में होते है, तो उनके दिमाग़ में सच्चाई से अधिक स्वप्न की दौड रहती है। और यह बुरी बात नही

है। इसलिए अब आप का यह मुख्य कर्तव्य है कि आप फौजी शिक्षा लगन से हासिल करें।

यहां एक जिला-कमेटी के सेक्रेटरी ने शिकायत की है कि उसके जिले के अनेक कोम्सोमोल सदस्य फौजी ट्रेनिंग नहीं ले रहे हैं। मैं इसे बिलकुल नहीं समझ सका। क्यों? खुद सेक्रेटरी पर इस बात के लिए मुकदमा चल सकता है। (हंसी) फौजी ट्रेनिंग एक नागरिक कर्तव्य है, न कि स्वेच्छित पेशा। कौन इसमें हिस्सा लेने से इनकार कर सकता है? यदि मैं कोम्सोमोल की जिला-कमेटी का मन्त्री होता, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मेरे इलाके का हर सदस्य फौजी ट्रेनिंग लेता।

कभी-कभी गांव की सोवियत या सामूहिक खेती के प्रधान को किसानों से खराब सड़कें ठीक करने के लिए कहना पड़ता है। सड़क बनाते वक्त लोग चाहे प्रधान को भला-बुरा कहें, लेकिन जहां सड़क तैयार होकर प्रयोग में आने लगती है, तब वे ही उसकी तारीफ करने लगते हैं "यह अच्छा हुआ कि हमने यह सड़क बना डाली, यह ठीक था कि उन्होंने हमसे यह सड़क बनवाई"। (हंसी) कोम्सोमोल को भी लोगों से जरूरी काम करवाना पड़ेगा। आपकी क्या राय है? यदि कोम्सोमोल का एक सदस्य आज फौजी ट्रेनिंग लेने न आवे और दूसरा कल न आवे, यदि कोम्सोमोल का एक या दूसरा सदस्य सोचने लगे कि फौजी ट्रेनिंग के लिए जाया जाय या न जाया जाय, तो नतीजा क्या होगा? फौजी ट्रेनिंग एक नागरिक कर्तव्य है और यह सवाल उठ ही नहीं सकता कि वह इसे पूरा करना चाहता है या नहीं।

दूसरी बात यह है, कि कोम्सोमोल को तरुणों की फौजी ट्रेनिंग में आगे बढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। यहां हमारे कर्तव्य ज्यादा हैं। यह आवश्यक है कि कोम्सोमोल के सदस्य खुद युद्ध-कला का अध्ययन

कर दूसरो के लिए आदर्श बनें, जो कोम्सोमोल के सदस्य नहीं है। तरुणों को चाहिए कि उन प्रौढों की अगुआई करें जो फौजी ट्रेनिंग प्राप्त कर रहे हैं। अलबत्ता, यह अधिक मुश्किल काम है। लेकिन इसे मैं बिल्कुल सभव समझता हू, क्योंकि कोम्सोमोल में अनुशासन है। आपको सिर्फ यह सीखना है कि उसका उचित प्रयोग किस प्रकार किया जाय।

यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आप अपने को युद्ध के लिए शारीरिक तौर पर तैयार कीजिए। हमारे तरुण बहुत अच्छे थे और हमने उन्हें थोडा बहुत बिगाड भी दिया था। मुझे इस बात का बिल्कुल दुख नहीं है। लेकिन अब समय आ गया है, जब जनता को उच्च साहस की ही नहीं, वरन् शारीरिक दृढता की भी आवश्यकता है। मै समझता हू कि कोम्सोमोल को चाहिए कि शारीरिक दृढता प्राप्त करने में जनता की सहायता करे। कुइबिशेव का प्राकृतिक वातावरण हमें ऐसे अवसर प्रदान करता है। आज के से मौसम में सचमुच आप अपने को मजबूत बना सकते है। मान लीजिए कि आप शनिवार से इतवार की शाम तक कुछ, या एक ही रोटी लेकर घूमने निकले, यह अपने आप को मजबूत बनाना होगा।

हमें जीतना चाहिए और हम विजयी होगे, परतु विजय आसमान से नहीं टपकेगी। जीत लडाई में हासिल करनी है और वैसी भयकर लडाई में। इससे पहले कि आप मोर्चे पर जायें, अपने आपको मजबूत कीजिए। हो सकता है कि इस समय यह सब आपको खुशगवार न लगे, लेकिन जब आप मोर्चे पर जायेंगे तो आप इसके लिए शुक्रगुजार होंगे। अलबत्ता, अब भी बहुत कुछ है जो फौजी ट्रेनिंग के बारे में कहा जा सकता है। मै तो आपको सिर्फ वह दिशा दिखा रहा था जिधर फ़ौजी ट्रेनिंग को जाना चाहिए। आपको फौजी ट्रेनिंग लेनी चाहिए, कोम्सोमोल के सदस्य होने के नाते यह आपका कर्तव्य है।

नही तो, आप अपने को कोम्सोमोल का सदस्य नहीं कह सकते। मोर्चे पर लडने वालो में से अधिक लोग पार्टी में नही है। ता भी मातृभूमि की रक्षा के लिए वह किस असीम शौर्य का प्रदर्शन कर रहे है।

अब उत्पादन के बारे में कुछ शब्द कहूगा। जैसा आप स्वय जानते है, बिना उत्पादन के युद्ध चलाना असभव है। आपको यह बताने की आवश्यकता नही कि कूइबिशेव प्रदेश में बहुत से उपयोगी कारखाने है। उत्पादन में भी कोम्सोमोल के सदस्यो को अगुआई करनी चाहिए। अब आपको ज्यादा से ज्यादा काम करना चाहिए—सब कुछ जो आप कर सकते हो।

एक औद्योगिक स्कूल से आए साथी का भाषण मैंने बहुत खुशी से सुना। अपने स्कूल के काम के नकारात्मक पहलू पर वह जैसे बोला, वह मुझे अच्छा लगा। उसने बडबोलापन नहीं दिखाया। लेकिन खामियो को इस तरह रखा जिससे उन्हे मिटाया जा सके।

अत उत्पादन में लगे हुए कोम्सोमोल के सदस्य साथियो, आपको अपने काम का पूरा माहिर बनना है और अपने काम में कम से कम समय लगा कर भी अच्छे नतीजे देने है।

यह सदा ध्यान में रखकर कि हर नयी गोली हमारी फौजों को, मोर्चे के हमारे सदस्यो को बल पहुचाती है, हमें उत्पादन-शक्ति अधिक से अधिक बढानी है। तो फिर, आप अपने प्रयत्नो में ढीले मत पडियेगा! अधिक और अच्छे से अच्छा युद्ध का सामान बनाइए!

साथियो, हम सब देशभक्त है। ऐसे समय में निरर्थक भावुकता किसी काम की नही। कुछ लोग है जो सोवियत प्रचार-विभाग की विज्ञप्तियो को सुनकर दु खी हो जाते है, "हाय-हाय हमें पीछे हटना पडा, हम लोगो ने एक नगर छोड दिया!" वे विज्ञप्ति सुनते है,

रोते हैं और कराहते हैं। लेकिन मोर्चे की सहायता के लिए उंगली भी नहीं उठाते। इस तरह की देशभक्ति व्यर्थ है। [illegible] अच्छा है कि मोर्चे की सहायता के लिए, फासिज्म को मिटाने के लिए अपनी सारी ताक़त लगाई जाय।

इस समय कोम्सोमोल के सामने यही काम है। शत्रु का सफ़ाया करने के लिए आपको जी-जान से कोशिश करनी चाहिए।

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा"

[illegible] नवम्बर १९४१

मास्को देहाती क्षेत्र के कोम्सोमोल मंत्रियों के सम्मेलन मे दिये गये भाषण का अंश

२६ फरवरी १९४२

साथियो, आपके सम्मेलन का एक निश्चित उद्देश्य है। आपको निश्चय करना है कि कैसे वसत की खेती को सबसे अच्छी तरह किया जाय, वसत की बुवाई का काम कैसे पूरा किया जाय। इस सिलसिले में कोम्सोमोल सगठन के सामने बहुत ही गभीर मसले है। देहातो में कोम्सोमोल एक बडी शक्ति है। यदि यह शक्ति सगठित कर ली जाय, यदि सामूहिक खेती के गावो में कोम्सोमोल न सिर्फ तरुणो का ही नेतृत्व करे, वल्कि प्रौढ किसानो में भी काम करे, तो यह निश्चित है कि वसत की बुवाई कामयाबी से पूरी की जा सकती है।

यह स्पष्ट है कि सिर्फ कोम्सोमोल ही यह काम नही करेगा। पार्टी और सोवियत सगठन इस काम को करेंगे। चूकि हम लोग बुवाई के काम को बहुत ही महत्व देते है, इसलिए हम चाहते है कि कोम्सो-मोल समेत सभी सार्वजनिक सगठन इस काम में खिच आयें।

इस समय युद्ध चल रहा है। यदी मै यह कहू कि हमारे देहातो का हर आदमी जर्मनो को हराना चाहता है, तो यह बात ग़लत न होगी।

लेकिन सिर्फ़ चाहना ही काफ़ी नहीं है, वह तो कुछ न करने के ही बराबर है। यदि आप जर्मनों को हराना चाहते हैं, तो यह शब्दों से नहीं, कर्म से ही हो सकेगा। और मास्को क्षेत्र के बारे में तो मुझे यह कहना है कि यदि आप जर्मन फ़ासिस्ट आक्रामकों के विरुद्ध युद्ध में भाग लेना चाहते हैं तो आपको अधिक से अधिक आलू बोने चाहिएं।

एक किसान औरत आप से पूछ सकती है: "मैं आक्रामकों को आलुओं से किस प्रकार हरा सकूंगी?" यह आपका, कोम्सोमोल के सदस्यों का काम है कि सामूहिक किसानों को बताएं कि जर्मन आक्रमणकारियों पर विजय प्राप्त करती हुई लाल फ़ौज पश्चिम की ओर बढ़ रही है और उसे हर आवश्यक रसद पहुंचानी चाहिए। आप खुद जानते हैं कि फ़ौजियों को काफ़ी मुश्किलें और परेशानियां सहनी पड़ती हैं। वे दिन-रात भयंकर जाड़े-पाले में खाइयों में रहते हैं। वे मजबूत और तगड़े रहें, उनमें लड़ने की इच्छा हो और उनकी भावनाएं ऊंची बनी रहें, इसके लिए आवश्यक है कि उन्हें बहुत सा बढ़िया खाना मिले। यदि आपको दो-तीन दिन खाना न मिले और कोई आपसे दौड़ लगाने या किसी खेल में हिस्सा लेने के लिए कहे, तो आप कहेंगे न: "मैं दौड़ नहीं सकता", या "मैं अच्छा फुटबाल का खिलाड़ी नहीं हूं"। इसलिए फ़ौजियों को स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन मिलते रहना चाहिए। हमें अपनी फ़ौजों को आवश्यक रसद बहुत बड़ी मात्रा में पहुंचानी है। हमें फ़ौज और जनता को अधिक गोश्त देना है। आलू सुअरों का अच्छा चारा है। और हम सुअरों को जितना अधिक खिलाएंगे, उतना ही अधिक फ़ौज और जनता के लिए गोश्त मिलेगा।

इस युद्ध-काल की परिस्थिति में वसंत की बुवाई बहुत अच्छी और जल्दी से जल्दी होना आवश्यक है। अच्छी बुवाई करके हमें ज़ोरदार फ़सल की नींव डाल देनी चाहिए।

कोम्सोमोल के साथियो, इसलिए, आपको यह देखना है कि योजना पूरी हो और प्राप्य भूमि का हर टुकडा अधिक से अधिक उत्पादन के काम में आ जाय। मै तो कहूगा कि यह काम सोवियत नागरिक का कानूनी कर्तव्य बन जाना चाहिए। यह पहला काम है। दूसरा काम अच्छी से अच्छी फसल उगाना है—भूमि से वह सब कुछ निकाल लेना है जो उग सकता हो। कोम्सोमोल के सदस्य साथियो, बढिया से बढिया फसल उगाने के लिए आपको आदर्श बुवाई करनी चाहिए। मै यहा यह नही बताऊगा कि इसके लिए क्या करना चाहिए। आप सब सामूहिक किसान है और यह सब मुझ से अच्छी तरह जानते है।

इसलिए, आपके दो मुख्य काम है पहला—अच्छी से अच्छी बुवाई करना, दूसरा—अच्छी से अच्छी फसल बटोरना। साथियो, स्वदेश के प्रति प्रेम और सेवा, मोर्चे को सहायता, फासिज्म का प्रतिरोध आप इन्ही कार्यो द्वारा प्रदर्शित कर सकते है।

यहा पर कोम्सोमोल के सदस्यो द्वारा सक्रिय भूमिका के विषय में बताया है। यह बहुत अच्छा है। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि कोम्सोमोल के कुछ सदस्य सामूहिक फार्म के सभापतियो के अधिकार छीन रहे है।

आप कहते है "हमारे पास यह या वह चीज कम थी, हम गए और हमने उसे किसी दूसरी चीज के बदले में ले लिया"। लेकिन फार्म के सभापति महोदय क्या कर रहे थे? अगीठी में हाथ सेंक रहे थे क्या? सभापति को और कठिन परिश्रम करना चाहिए। आपका काम है कि आप उनकी मदद करे, दबाव डाले, उन्हें छेडें, उन्हे शाति से न बैठने दें, बरों की तरह चिपट जायें। और जब बरें चिपट जाते है तो आदमी भागने लगता है।

लेकिन होता क्या है? आप अपने-आप सब काम करेंगे। फार्म का सभापति आराम मे पड़ा रहेगा और दूसरो मे अपना काम करवाता रहेगा।

साथियो, याद रखिए कि संगठन, आदोलन और प्रचार के काम में नेतृत्व करने के दो तरीके है।

एक तो यह कि सब काम खुद ही करो। कोम्सोमोल का एक सदस्य सब कुछ करता है। वह गाव के पुस्तकालय का लायब्रेरियन होता है, सभायें सगठित करता है, भाषण देता है, सामूहिक खेती की व्यवस्था के लिए नए सदस्य भरती करने का प्रचार करता है और सदस्यता का चंदा वसूल करता है। एक शब्द में कहे तो एक ही व्यक्ति सब काम करता है। वह सवेरे से शाम तक व्यस्त रहता है, जब कि साथ के और दूसरे कोम्सोमोल के सदस्यो को काम करने के लिए कुछ नही दिया जाता। हम लोग इस तरह भी काम करते है। लगता है कि कुछ प्रगति हुई है। लेकिन साथियो, एक सगठनकर्ता की बडाई सिर्फ खुद काम करने में ही नहीं, बल्कि दूसरो से काम करवाने, उनको नेतृत्व में चलने के लिए तैयार करने में है। अब जरा मान लिया जाय कि मै कोम्सोमोल के मेंबर की हैसियत से (अलबत्ता, यह बिलकुल असंभव है) (हंसी) कोलखोज में आया हू। मै कोशिश करूगा कि सब काम स्थानीय लोगो की सहायता से हो, जिससे हर आदमी के पास काम हो, जिम्मेदारी हो। यानी, सब के पास कुछ न कुछ काम हो। और, यदि मै यह देख लू कि कोई कोम्सोमोल सदस्य सिर्फ नाम के लिए ही सदस्य है, और कोई काम नही कर रहा ह, तब तो मै उसे अवश्य काम दूगा। मै कहूगा "कृपा करके अमुक काम कर लाइए"। और फिर यह भी देखता रहूगा कि वह क्या और कैसे कर रहा है।

सफलता प्राप्त करने का यही एक रास्ता है। साथियो, हमें यह समझ लेना चाहिए कि जब हर व्यक्ति के पास काम होगा, हर

व्यक्ति व्यस्त होगा, कोम्सोमोल का काम सभी साथियों में बंटा होगा, तो यह निश्चित है कि काम बढ़ेगा। आप कुछ भी कहें, किसी काम को एक आदमी से दस आदमी कहीं अच्छा और कहीं ज्यादा करेंगे।

युवकों को केवल विचारात्मक आधार पर संगठित नहीं किया जा सकता। यह ठीक है कि अधिकांश युवक कोम्सोमोल में विचारों की प्रेरणा से भरती होते हैं—वे समझते हैं कि पार्टी का सबसे नज़दीकी और पहला सहायक कोम्सोमोल है—लेकिन तो भी कुछ ऐसे होते हैं जो भरती होने के बाद भी मानसिक रूप से तैयार नहीं होते और कोम्सोमोल के विचारात्मक पहलू का उन्हें बहुत ही धुंधला ज्ञान होता है। ऐसे तरुणों के साथ बहुत काम करना होता है जिससे वे निश्चित विचारों के व्यक्ति बन सकें—ताकि उनके काम उच्च विचारों से प्रेरित हों। आपको उन्हें कोम्सोमोल का आदी बनाना है, जिससे कोम्सोमोल उनके जीवन का अंग बन जाय। अब इसके लिये ज़रूरी यह है कि वह रोज़ाना कुछ न कुछ काम करें। व्यावहारिक कार्यों द्वारा ही एक व्यक्ति शिक्षित और विकसित होता है, सफल संगठनकर्ता बनता है। इसीलिए हर कोम्सोमोल सदस्य को अमली काम करना चाहिए—वह लगातार कुछ न कुछ काम करे और अपने काम के लिए कोम्सोमोल संगठन के प्रति उत्तरदायी हो। सिर्फ़ संयुक्त सामूहिक काम के दौरान में ही हम अच्छे संगठनकर्ता, अच्छे कार्यकर्ता शिक्षित कर पायेंगे।

फ़ार्म में जब तक अच्छा सभापति रहे, तब तक तो वह प्रगति करता है और ज्यों ही वह हटा और कोई गड़बड़ आदमी सभापति बना कि साल भर में फ़ार्म की दुर्गति हो जाती है, उसको पहचान सकना भी मुश्किल हो जाता है। यह क्यों? इसलिए कि खुद सामूहिक किसानों को व्यावहारिक शिक्षा का अवसर नहीं दिया जाता।

इसीलिए आप कोम्सोमोल के सदस्यो को यदि कोलखोज में अच्छा सगठनकर्ता बनना है तो न केवल आप हर बात में मदद दें; आपको अच्छा सगठनकर्ता भी बनना चाहिए। आपको ब्रिगेड के नेता, फार्म के सभापति और सदस्यो के काम को देखना चाहिए, उनकी सहायता करनी चाहिये, कोलखोज के स्तखानोववादी किसानो की हिम्मत बढानी चाहिए और लापरवाहो को डाटना चाहिए। हा, आप प्रशासनात्मक कार्यों में अलग रहे।

आप प्रशासन और समाज द्वारा पडने वाले प्रभाव के भेद को जानते है। मिसाल के तौर पर आप आलू में चोर बाजारी करने वाले व्यक्ति को कोम्सोमोल की मीटिंग मे बुलाकर लज्जित करें। मेरे विचार में यह उसे प्रभावित करने का प्रशासनात्मक कार्रवाई से भी अच्छा तरीका है।

इस समय गावो का अधिकाश काम औरते ही करती है। कोम्सोमोल के सदस्य साथियो, आपका काम है कि आप औरतो को उत्पादन-क्षेत्र में सक्रिय योग देने के लिये उकसायें, उनमें देशभक्ति के उच्च विचार उभारे और उन्हे अपने नेतृत्व में चलाए। यदि आप इस काम को निभा ले जाए तो कोम्सोमोल सगठन का काम बडा प्रभावशाली हो जायेगा।

हम लोग इस बात मे तो सहमत हो ही चुके है कि इस साल बसत की बुवाई का काम बढिया होगा और ज़ोरदार फसल के लिए बुनियाद डाली जायेगी। यदि आप इस काम को गभीरता से करना चाहते है, तो अधिक से अधिक जितना सभव है औरतो को इस क्षेत्र में लाइए। औरतो को यह समझाना चाहिए कि लाल फ़ौज और जनता को रसद मिलना बसत की बुवाई की सफलता पर ही निर्भर है। मुझे विश्वास है कि हमारी महिलाए लाल फ़ौज और पिछवाडे की जनता को ज्यादा से ज्यादा खाना पहुचाने को उत्सुक

है। आपको मामला इस तरह सगठित करना चाहिए जिससे इस बुवाई में सभी औरते भाग ले सकें। कोम्सोमोल के सदस्यो की सफलता अपने काम ही से नही आकनी चाहिए, वल्कि इस वात से भी कि वे किस हद तक तरुणो को, तमाम किसानो को, विशेषकर औरतो को सक्रिय वनाने में सफल हुए है। यह याद रखना चाहिये कि कोलखोजो की मुख्य शक्ति औरते ही है और हम यदि सभी औरतो को खेतो में काम करने को ला सकें, उनकी देशभक्ति की उच्च भावनाओ को जगा सके, तो वे वहुत वडा काम कर लेंगी।

एक वात और। युद्ध के युग में आलस्य हरगीज़ वरदाश्त नही किया जा सकता — जव भयानक सघर्ष हो रहा है, जव अपने देश के लिए, सोवियत सघ के लिए रोज़ ही सैंकडो व्यक्ति अपने प्राणो का वलिदान कर रहे है, तव यदि हम आलसियो और मुफ्तखोरो को सजा दें, तो मेरा विचार है कि तमाम जनता हमारा समर्थन करेगी।

इन दिनो में जव हमारे देश के भाग्य का फैसला हो रहा है, कोई भी ईमानदार आदमी सघर्ष से अलग नही रह सकता। ज़रा ऐसे व्यक्ति की कल्पना कीजिए जो न कुछ करता है न करना चाहता है और मुसकराता हुआ टहलता रहता है। ऐसा व्यक्ति हमारा शत्रु है। कोम्सोमोल सदस्यो को चाहिए कि वे उसे लज्जित करें तथा तमाम जनता के सामने उसका भडा फोडें। और यदि वह सुधर नही सकता तो उसके साथ सख्ती से पेश आना चाहिए। कोम्सोमोल के सदस्य साथियो, आपको यही नीति अपनानी चाहिए।

साथियो, हमारी वहादुर लाल फौज एक वहुत ही शक्तिशाली शत्रु का सामना कर रही है—दुनिया में कोई भी उस शत्रु की वरावरी का नही है। ऐसे शत्रु को हमारी फौज पश्चिम की ओर ढकेल रही है,

और सोवियत भूमि से फासिस्ट गदगी निकाल बाहर फेंक रही है। मै आशा करता हू कि आप भी हमारी लाल फौज के सिपाहियो, कमाडरो और राजनैतिक कार्यकर्ताओ के स्तर का होना चाहेंगे।

उत्तरदायित्व और कठिनाइयो से घबडाना नहीं चाहिए। आप को अपनी जिम्मेदारी पूरी निभानी चाहिए।

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा"

३ मार्च १९४२

जनता के बीच पार्टी-काम की कुछ समस्याये

मास्को के कारखानो के पार्टी-कार्यकर्ताओ के सम्मेलन मे भाषण

२१ अप्रैल १९४२

साथियो, मेरा कोई इरादा नही है कि मै कोई निर्देशात्मक भाषण दू। मै तो जनता के बीच पार्टी के काम की कुछ समस्याओ का ज़िक्र करूगा।

हम लोग जनता के बीच पार्टी के काम के बारे में बहुत कुछ सुनते रहते है। हर आदमी इसके विषय में बात करता रहता है। लेकिन अगर हम मामले को गहराई से देखें, तो मालूम होगा कि अनेक लोगो को समस्या का स्पष्ट, निश्चित और ठोस ज्ञान नहीं है। मौजूदा युद्ध की बहुत ही उलझी हुई हालतो में, विशेषकर जब कि हज़ारो नए लोग फैक्टरियो और सस्थाओ में पार्टी के नेतृत्व के लिए लाए गए है और प्रचारक तथा आदोलनकारी बन रहे है, हमें यह सोचना है कि अपने राजनीतिक अनुभव का प्रयोग प्रभावशाली ढग से कैसे किया जाय।

जनता के बीच पार्टी के काम का अर्थ क्या है? जनता से संबंध स्थापित करने का उद्देश्य क्या है? यह बता दूं कि राजनीतिक कार्यों में इस की विशेष कद्र होती है, और स्थापित किया जा सकता है।

मान लिया कि आपकी जान-पहचान का क्षेत्र बहुत बड़ा है। हम बारी-बारी से एक के बाद दूसरे से मिलते हैं। और इस मिलन के दौरान में कारखाने, दफ्तर और मजदूरों के बीच जो हो रहा है, उसे भी जान लेते हैं। जनता से संबंध बनाए रखने का यह भी एक तरीका है।

दूसरा तरीका है मजदूरों के साथ अपनेपन का रिश्ता कायम करना। मान लीजिए कि एक पार्टी संगठनकर्ता या ट्रेड-यूनियन संगठनकर्ता डिपार्टमेंटों में घूमते हुए मजदूरों की पीठ थपथपाता है और उनको घर के नामों से पुकारता है। तो भी वह काम में हाथ नहीं बंटाता है और न खामियों के प्रति मजदूर का ध्यान ही दिलाता है। ऐसे व्यक्ति के विषय में कभी-कभी सुना जाता है "इस आदमी का जनता से बहुत निकट संबंध है। वह लोगों की पीठ थपथपाता है और उनको घर के नामों से पुकारता है। वह जनता का ही आदमी है।"

जनता का पिछलग्गू बन जाना भी जनता से "संबंध" स्थापित करना है। लोग आप के पास कोई न कोई शिकायत लेकर आते हैं और आप सहमति में सिर हिलाते हैं, फिर एक दूसरे का कंधा पकड़ कर रोते हैं। कोई गुर्रा कर कुछ कहता है और आप हां में हां मिलाते हैं "हां, वाकई रोशनी नहीं है, बड़ी ठंड है, सचमुच काफी खाना नहीं है।' फैक्टरी या दफ्तर में कोई रुकावट आ पड़ती है और सब के स्वर में स्वर मिलाकर आप भी कहने लगते हैं "ये निष्ठुर नौकरशाह! इन्होंने क्या गड़बड़ी मचा रखी है।" ऐसे लोगों की पूछ हो जाती है। कुछ लोग तो पहले-पहल उसे पसन्द भी करेंगे।

लेकिन क्या हम वोल्शेविक जनता से इस तरह के सबध कायम करने की सोच रहे है? नही, जनता के पीछे चलना, जो कभी-कभी बहकावे में भी आ जाती है, मेन्शेविक नीति है। हमारी वोल्शेविक नीति जनता का नेतृत्व करना है, उनका सरक्षण नही, वल्कि उन्हे अपने साथ आगे ले चलना है।

तो, जनता का नेतृत्व कैसे किया जाता है?

इस का उत्तर देने के पहले मै आप से पूछना चाहता हू कि जनता का नेतृत्व कौन कर सकता है? यह कम्युनिस्टो की जिम्मेदारी है। कम्युनिस्ट पार्टी जनता का नेतृत्व कर सकती है और बहुत अच्छी तरह करती है। इसके सबूत में असख्य मिसाले दी जा सकती है। पहली मिसाल यही युद्ध है। युद्ध के प्रथम धक्को के वावजूद, जो हमें इसलिए सहने पडे कि हमारे ऊपर अचानक और अप्रत्याशित हमला हुआ, यह निर्विरोध रूप में कहा जा सकता है कि जनता का विश्वास अपनी सरकार में एक क्षण के लिए भी नही हिला। यह पार्टी के नेतृत्व का सबूत है।

यहा पार्टी के कार्यकर्ता एकत्र है। चाहे या न चाहे, आप लोग अपनी जगह पर जनता के फौरी नेता है। इसके अलावा हो भी क्या सकता है? वह पार्टी-सेक्रेटरी कैसा होगा जिसे लोग अपना राजनैतिक नेता न मानते हो? फैक्टरी, अथवा सगठन में या जिले में पार्टी-सेक्रेटरी सबसे जिम्मेदार आदमी होता है।

यदि जनता पर उसका सच्चा प्रभाव पडे, जनता उसकी बात सुने और उस पर विश्वास करे तो एक पार्टी-सगठन के मत्री से क्या आशा की जा सकती है?

यह निर्विवाद है कि एक पार्टी-नेता, या प्रचारक अथवा आदोलनकारी को महान विचारो से प्रेरित होना चाहिए। उसे कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति अगाध श्रद्धा होनी चातिए। उसे पार्टी के इतिहास का

ज्ञान होना चाहिए। जनता और मजदूर-वर्ग के लिए पार्टी ने जो काम निश्चित किए है, उन्हे उनको समझना चाहिए। एक पार्टी-नेता या प्रचारक को कम से कम राजनैतिक तौर पर दूसरो से अधिक विकसित होना चाहिए। इसके अलावा उसके सुसस्कृत होने से अब प्रश्न है। एक पार्टी-कार्यकर्ता को जनता के निकट कैसे पहुचना चाहिए?

प्रथमत अपने लबे अनुभव के आधार पर मै कह सकता हू कि एक पार्टी-कार्यकर्ता का गरूर से सर फिरा नही होना चाहिए। अगर मजदूरो से या साधारण पार्टी-सदस्यो से बातचीत करते समय आप अपनी किसी बात या क्रिया से, वह चाहे कितनी ही महत्वहीन या देखने में चलती बात हो, यह जताते है कि आप अपने को उनसे कही अधिक होशियार समझते है, या उनसे अधिक जानते है, तो आप अपनेको उतम समझ लीजिए। एक कार्यकर्ता या औसत आदमी उसकी परवाह नही करता, जो अपने को बहुत कुछ समझता है। वह उसकी बात नही सुनेगा। और उचित मौके पर अच्छी तरह से और सच्चाई से उसे यह जता भी दिया जायेगा।

इसलिए हम लोग इस नतीजे पर पहुचे है कि एक आदोलनकारी को नम्र होना चाहिए। यह गुण विशेषकर उस पार्टी-कार्यकर्ता मे अवश्य होना चाहिए, जिसके पास पार्टी की शासकीय शक्ति है, अर्थात जो पार्टी-सगठन का मत्री है। यदि वह कार्यकर्ताओ का स्नेह चाहता है, तो उसे अपने में नम्रता के गुण को विकसित करना चाहिए, न कि गुमान से वह सिर फिरा हो जाय। क्या मैं सही कह रहा हू? (आवाजें — "हा-हा बहुत ठीक!") जो नेता बनना चाहता है, उसे एक आख अपने पर रखनी चाहिए।

दूसरे, एक प्रचारक या पार्टी-नेता को जनता के साथ व्यवहार में बहुत अधिक उपदेशात्मक भी नही होना चाहिए। सभवतया आपने खुद देखा होगा कि जब एक वक्ता इसके अलावा और कुछ नही

कहता—आपको यह या वह करना है, तब उसको सुनते रहना बहुत नागवार हो जाता है। मै जब कोई लेख लिखता हू और तर्क मुझे यहा पहुचा देता है कि मै कहू कि "यह होना ही चाहिए", तो यह कुछ मेरी रुचि के खिलाफ बैठता है तो मै वाक्य को दूसरी तरह कहता हू। यह दूसरी बात है कि आप अपने विचार, अपील या सदेश पेश करते है और तर्क तथा विश्लेषण से यह साबित करते है कि कुछ न कुछ करना चाहिए। तब आप अपने श्रोताओ से मशविरा ले सकते है,—कह सकते है—"अगर आप इस तरह से यह काम करें, तो कैसा हो", "मुझे लगता है कि समस्या का यदि यह हल निकाला जाय तो ज्यादा अच्छा हो", "इन हालतो में मै यह करूगा"। यदि आप ऐसा करेंगे तो श्रोताओ की प्रतिक्रिया भिन्न होगी।

यह मै छोटी मीटिगो के सिलसिले में कह रहा हूं। अलबत्ता, हजारो आदमियो की सभा में दिए गए भाषण का रूप और ही होगा। इसमें हर एक स्पष्टीकरण छोटा और स्पष्ट होना चाहिए। वहा बातचीत का तरीका अपनाना मुश्किल होगा। लेकिन अपने रोजमर्रा के काम में अक्सर यह जरूरी होता है कि कार्यकर्ताओ को खुद ही बहस और बातचीत में घसीटा जाय। "तुम क्या सोचते हो, तुम्हे यह कैसा लगता है," इस रूप में लोग आप की बात को अधिक स्वीकार करेंगे। हा, कार्यकर्ताओ को विचारो के आदान-प्रदान और अपने व्यक्तिकरण के लिए शुरूआत हमी को करनी पड़ेगी। तब मीटिग जानदार होगी और कार्यकर्ता स्वेच्छा से बोलेगे और इस मीटिग का नतीजा भी शानदार होगा। तो भी मीटिगें कभी-कभी ऐसी होती है, जैसे प्रार्थना-वक्ता और श्रोता अलग-अलग रहते है और निश्चित समय तक बैठने के बाद उठकर चल देते है।

अपने भाषण या वक्तृता की रूप-रेखा से हटने में डरिए नही। आप चाहे काम के विषय में या युद्ध के विषय में बात कर रहे हो,

लेकिन यदि बीच में कोई ऐसी बात आ जाए जो श्रोताओ की दिलचस्पी की है, तो बिना चिंता उसे कह डालिए, उससे बचिए नही। एक बार श्रोताओ में सुनने की दिलचस्पी आ गई तो फिर वे सुनते रहेगे और आपके लिए सभव होगा कि आप वह सब कह सकें जिसे आप कहना चाहते थे।

मुख्य बात है कि कभी भी अहम मसलो को टालिए नही, जैसा कि कुछ वक्ता करते है। ऐसा किसी भी दशा में न कीजिए। जो सवाल उठाए गए है, उनका उत्तर टालिए नही और न उनपर परदा डालिए। यदि आप किसी प्रश्न का उत्तर नही दे सकते, तो स्पष्ट कह दीजिए "आपने जो सवाल उठाया वह महत्त्वपूर्ण और दिलचस्प है, मै बखुशी इसका जवाब दूगा, लेकिन इस वक्त जवाब देने के लिए तैयार नही हू। मैने इस पर सोचा नही और मेरी समझ में नही आता कि इसका जवाब क्या दू। मै मामले पर सोचूगा, साथियो से बात करूगा और तब मै आपको जवाब दूगा। यहा पर शायद कोई ऐसा हो जो मामले को साफ कर सके?" यदि आप ऐसा करेगे तो बात ठीक होगी। कभी-कभी हमारे लोग बात को इस तरह रखते है कि मुख्य सवाल छुट जाते है या उनका स्पष्टीकरण इस भाति करते है कि कोई समझता नही है कि मामला क्या है। यह ठीक नही।

एक पार्टी-नेता को दूसरो के प्रति अपने रवैये में बिलकुल ईमानदार होना चाहिए। पार्टी सगठन का मत्री पार्टी की आख है। इसीलिए उसे तमाम व्यक्तिगत पसदो या नापसदो को अलग कर देना चाहिए। यदि ऐसे लोग है जिन्हे आप कुछ कारणो से नापसद करते है, तो यह बात आपको इस हद तक छिपानी चाहिए कि किसी को इसका थोडा सा भी ख्याल न हो। यदि यह जान लिया गया कि आप विभिन्न लोगो के प्रति अपने रवैये में निष्पक्ष नही है, तो यह बात बुरी होगी।

कभी-कभी ऐसा होता है कि एक आदमी कम बोलता है और खुलता नहीं है, लेकिन वह अपना काम अच्छी तरह करता है। दूसरी तरफ़ ऐसा आदमी है, जो अपने काम में इतना अच्छा नहीं है लेकिन पार्टी-कमेटी, ट्रेड-यूनियन, युवक कम्युनिस्ट लीग के दफ़्तरों में आता रहता है, हमेशा सामने रहता है और उसे बढ़ावा मिलता है। यह बात न बनेगी। यदि पार्टी-कमेटी का मंत्री प्रतिष्ठा चाहता है तो जनता में निष्पक्ष व्यक्ति की हैसियत से उसकी स्पष्ट प्रसिद्धि होनी चाहिए। इसका यह अर्थ नहीं कि वह कुछ लोगों से नज़दीकी व्यक्तिगत संबंध नहीं रख सकता। वह ऐसे संबंध रख सकता है, लेकिन अपने सार्वजनिक संबंधों में उसे निष्पक्ष रहना है। उसका रवैया यह होना चाहिए: "तुम मेरे दोस्त हो, यह सब तो ठीक है, लेकिन अगर तुम अपने काम के प्रति लापरवाह हो, इधर-उधर घूमते रहते हो, अपने दिए हुए काम के प्रति टालमटोल करते हो, तो मैं तुम से सख्ती से पेश आऊंगा।" पार्टी-संगठन के मंत्री का लोगों के प्रति यह रवैया होना चाहिए।

हर मामले में आपका व्यवहार इस तरह का होना चाहिए कि आपके आसपास के तमाम लोग आपकी ईमानदारी और लगन को महसूस करें। जनता के बीच पाखंड क़तई नहीं चल सकता और इसलिए आपको इससे हर तरह से बचना चाहिए। आप जन-साधारण को धोखा नहीं दे सकते। यदि लोगों को यह मालूम हो गया कि अमुक व्यक्ति पाखंडी है, तो दुबारा कभी वे उसपर विश्वास नहीं करेंगे।

यदि हम लोग अपने में यह गुण विकसित करने की कोशिश करें, तो काम करना आसान होगा।

अब हम यह सवाल ले लें कि जनता के बीच पार्टी को कैसे कार्य करना चाहिए, जनता के प्रति क्या रवैया हो और जनता के समक्ष भिन्न-भिन्न समस्याओं को कैसे उठाया जाय? हर प्रश्न को पार्टी

की दृष्टि से देखना चाहिए। हर चीज़ की तरफ पार्टी का रवैया होना चाहिए। मान लीजिए कि राजकीय-कर्ज़े के लिए चदा किया जा रहा है। यह स्पष्ट है कि हर आदमी एक महीने की तनखाह देने को तैयार हो जायेगा। एक प्रचारक के नाते मैं मजदूरो के सामने इस प्रश्न को सीधे इस तरह रखूगा "इस समय जिनकी तनखाहें ऊची नही हैं, वे भी एक महीने की तनखाह दे रहे है। अपना देश जिस स्थिति से गुज़र रहा है, आप जानते है। हमारे पास वहुत वडी फौज है, हमारे खर्चे वहुत वढ गए है। राज्य को कही न कही से धन चाहिए। या तो हम मुद्रा स्फीति कर दें या आप धन उधार देकर सहायता करें। युद्ध को चलाने का यही एक रास्ता है। इसके अलावा और कोई नही।" इस पर कई कह सकते हैं—"लेकिन हम भी कितनी कठिनाई से समय गुज़ार रहे है।" तो मै उत्तर दूगा "निश्चय ही युद्ध के कारण आपके दिन कठिनाई से कट रहे हैं। इसीलिए रोटियो का राशन है। हमारे पास यदि रोटिया, कपडे, टेक्सटाइल, जूते और दूसरी आवश्यक चीजें होती, तो हमें कर्ज़ा उठाने की क्या ज़रूरत थी? हम सिर्फ दूकानें खोल देते, उनमें माल देते और धन आ जाता। कर्ज़ा तो इसीलिए शुरू किया गया कि हमारे पास धन और आवश्यकता की चीज़ो की कमी थी। इन चीज़ो की कमी इसीलिए है कि हम युद्ध के लिए आवश्यक सामगी वना रहे हैं।"

चीज़ो की कमी सिर्फ हमारे ही देश में नही है, वल्कि दूसरे देशो में भी है। यह कमी विशेपकर जर्मन फासिस्टो और उनसे त्रस्त देशो में अधिक है। इस सिलसिले में हमें यह स्पष्ट करना चाहिए कि इसमें हमारा दोष सवसे कम है। हमारे ऊपर हमला किया गया था। हमें हिटलरी जर्मनी द्वारा चलाए जाने वाले युद्ध के साम्राज्यवादी स्वरूप का स्पष्टीकरण करना चाहिए। हमें मज़दूरो से दो-टूक पूछना चाहिए— "क्या आप चाहते है कि हम हार जायें?" मै जानता हू कि आप इस

शब्द के उच्चारण मात्र से डरते है। जहा तक मेरा सबध है, जो लोग कर्जे में बहुत कम चदा देंगे, मैं उनसे बार-बार पूछूगा "क्या आप चाहते है कि हम हार जायें?" हमारे सामने दो ही रास्ते हैं—या तो हम खर्च में कमी करें या पिट जायें। लेनिनग्राद की जनता की एक मिसाल लीजिए। सोचिए कि वे कितनी कठिनाइया झेल रहे हैं और उनका व्यवहार कितना वीरतापूर्ण है। मेहनतकश जनता के सामने मसले इसी तरह पेश करने चाहिए। समस्याओं को उठाने का यह पार्टी का तरीका होगा।

एक बडे कारखाने के मजदूरो के सामने बोलते हुए मैंने उनसे स्पष्ट कहा कि राज्य हम से क्या अपेक्षा करता है—यानी हम खर्च कम करें, और उत्पादन अधिक करें। मैंने स्थिति को बहुत स्पष्टता से रखा और समझाया कि ऐसा इसलिए नही कि हम मजदूरो और दूसरे कर्मचारियो से कम में गुजारा चाहते है, बल्कि इसलिए कि हमारे पास चीजो की कमी है। मोर्चे की आवश्यकता अधिक है और शत्रु हमको दबा रहा है। अत आप मसलो को सही ढग से और पार्टी के तरीके से उठाने में डरिए नही।

यदि आपके कारखाने के लोग जानते है कि आपको पाखड पसन्द नही, आप मसलो को टालते नहीं और आपका सिर घमड से फिरा हुआ नही है, तो आपके शब्दो का प्रभाव सभी पर पडेगा। नहीं तो कोई आप पर विश्वास नही करेगा और लोग कहेंगे· "हम आपको जानते है। आप हमें एक बात की सलाह देते है और खुद दूसरी तरह सोचते है। आप अपने उपदेशो पर खुद ही अमल नही करते।" वे आपके मुह पर शायद ऐसा न कह सके, लेकिन पीठ के पीछे वे निश्चय ही यह बात कहेंगे।

वर्तमान समय में पार्टी-प्रचार और आदोलन का क्या उद्देश्य है? इस प्रकार प्रचार करना कि हर क़दम पर जनता यह महसूस करे

कि कम्युनिस्ट पार्टी के अपने कोई विशेष हित नहीं है, और वह सर्वहारा, समूची जनता के हितों के लिए लड़ती है। और यही समय है जब कि अनोखी स्पष्टता और पूर्णता से यह बात स्पष्ट होकर उभरती है कि व्यक्तिगत हितों से सामूहिक हित अधिक ऊंचा है। यह इस तरह स्पष्ट होता है कि हर आदमी, अध-शिक्षित या एक बच्चा भी, यह समझ लेता है। हर व्यक्ति जानता है कि व्यक्ति या गुट के हितों से जनता के हित अधिक ऊंचे हैं।

एक निर्मम युद्ध चल रहा है। फासिस्ट लोग अकथनीय अत्याचार ढा रहे हैं। हमें यह बातें बतानी चाहिए और हर आदमी से पूछना चाहिए कि वह क्या सोचता है, वह सामान्य हित के लिए क्या करने को तैयार है? "पूरा समाज और पार्टी आपसे यह मांग करती है। यदि हम शत्रु को हरा देंगे तो आपको सब कुछ प्राप्त होगा। लेकिन यदि हम हार जाते हैं तो आपका भी सर्वनाश हो जायगा। लेकिन हम लोग शत्रु को तभी हरा सकते हैं जब हम अपनी तमाम भौतिक और मानवीय शक्तियों को इस उद्देश्य में लगा दें।" यदि आप किसी सभा में इस तरह भाषण दें और पूरे मसले को ईमानदारी से रखें, तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके श्रोताओं में सौ फीसदी नहीं तो निनानवे फीसदी अवश्य ही शत्रु की हार होने तक कोई भी बलिदान देने के लिए तैयार हो जाएंगे। कुछ अभागे शायद इसका विरोध करें, क्योंकि अभी भी पुरानी दुनिया के बचे हुए कुछ गद्दार बाकी हैं। हां, अब यह इने-गिने ही रह गए हैं। हमें लोगों को सामान्य भलाई के लिए अधिक से अधिक लगन से काम करना सिखाना चाहिए। कम्युनिस्टों के सामने यही मुख्य काम है।

वर्तमान समय में एक बहुत महत्वपूर्ण बात देखने में आ रही है। शांति-काल से कहीं अधिक लोग अब पार्टी में भरती हो रहे हैं। मोर्चे के निकट के क्षेत्रों में दूर के क्षेत्रों से अधिक प्रार्थना-पत्र दिए जा रहे हैं। ऐसा

क्यो है? क्योकि हर आदमी पार्टी को मज़बूत करने की आवश्यकता को समझता है। हर आदमी जानता है कि हमारी पार्टी ही नेता है और सिर्फ एक शक्तिशाली मज़बूत पार्टी ही जनता की जीत की गारन्टी है। लाल फौज का सिपाही समझता है कि वह भयकर युद्ध में जा रहा है तो वह पार्टी सदस्यता की अर्ज़ी दे देता है। उसकी इच्छा होती है कि वह सघर्ष में एक कम्युनिस्ट के नाते जाए। सोवियत राज्य की महान शक्ति इसी में है। जनता अच्छी तरह जानती है कि उनकी वही राह है जो पार्टी की राह है।

फासिस्ट-जर्मनी में भी जन-सगठन है। हिटलर ने जनता को धोखे में रखा है, उनको दवा दिया है और उनकी भावनाओ को कुत्सित वना दिया है। इसके विरुद्ध हम जनता को विकसित करते है, और उनकी चेतना को ऊचा उठाते है।

यहा यह वताया गया है कि हमारे प्रचारक और आदोलनकर्ता मज़दूरो की वैयक्तिक आवश्यकताओ के प्रति सचेत है और उनकी सहायता करते रहते है। यह अच्छी वात है। जनता को सहायता देना, एक अच्छा मानवीय गुण है। इस मामले में औरतें मर्दों से अधिक अच्छी होती है। लेकिन इस मामले में भी हमें चाहिए कि हम वैयक्तिक आवश्यकताओ और सामान्य भलाई में सबध कायम करें। यदि कोई आदमी सहायता चाहता है तो उसको सहायता मिलनी चाहिए, लेकिन साथ ही हमें उसे वताना चाहिए कि "देखो पार्टी या ट्रेड-यूनियन तुम्हारी सहायता कर रही है, लेकिन हम चाहते है कि समय आने पर तुम सामान्य भलाई की खातिर सवका साथ दोगे।" इस दृष्टिकोण को हमें अपनाना चाहिए और जनता में अपने काम के दौरान में इसका प्रयोग करना चाहिए।

यहा पर यह भी कहा गया है कि अखवारो का ज़ोर-ज़ोर से पढकर सुनाना थका देता है। यह मानना पडेगा कि कभी-कभी अखवारो का

जोर-जोर से पढ़ा जाना एक तरह की चौकीदारी सा मालूम होता है। किसी आदमी का बार-बार अखबार पढ़ना न तो आसान है और न फ़ायदेमंद। यदि मैं किसी फैक्टरी के पार्टी-संगठन का मंत्री होता, तो मैं यह करता खाने के समय में मजदूरों के पास जाता और पूछता कि क्या उनमें से कोई अखबार सुनना चाहेगा? कुछ लोग अवश्य चाहते तब मैं पूछता "कौन पढ़ेगा?" हमारे कई आदमी बहुत अच्छा पढ़ लेते हैं और निस्सन्देह अनेक स्वयंसेवक सामने आते। तो मजदूरों के ग्रुप के पास बातचीत शुरू करने और पढ़ी गई सामग्री के स्पष्टीकरण के लिए फिर मैं किसी अनुभवी और सुसंस्कृत मजदूर को भेजता। मजदूरों की किन सवालों में दिलचस्पी है, यह जानना भी इस प्रकार अधिक आसान होता। यदि यह तरीका अपनाया जाय, तो अखबार पढ़ना भी एक सर्वप्रिय मनोरंजन बन जायेगा।

लगभग चालीस साल पहले मैं खुद इसी तरह का पढ़ने वाला था। मेरी अध्ययन गोष्ठी में पन्द्रह आदमी थे, पर यह गैरकानूनी थी। यदि मैं सिर्फ पढ़ने तक ही सीमित रहता तो उसका कुछ भी नतीजा न निकलता। पढ़ने में पन्द्रह-बीस मिनट लग जाते थे और फिर बहस शुरू होती थी। मैं पूछता था "आप अमुक बात समझे या नहीं?" "नहीं, हम नहीं समझे।" "अच्छा तो आइये, विचार करें।" फिर हम बहस शुरू करते, जो घंटा या डेढ़ घंटा या इससे भी अधिक देर तक चलती रहती। पढ़ते समय कोई भी सोता नहीं था, क्योंकि वे जानते थे कि पढ़ाई के बाद बहस होगी। इसलिए साथियो, आंदोलनकारी होना इतना सरल नहीं है। अखबार जोर-जोर से पढ़ना असली तौर पर एक प्रचारक का काम है। इसे बहुत सावधानी और समझदारी से करना होता है। यदि पढ़नेवाला और बहस का नेता श्रोताओं की दिलचस्पी उभारने की योग्यता नहीं रखता, तो फिर वाद-विवाद की आशा व्यर्थ

है। जो इस तरह अखबारो को सुनते है, वे उन्हे एक प्रकार से कक्षा के सबको की तरह समझेंगे—कुछ वैसे ही जैसे पुराने ज़माने में हम लोग धर्मोपदेशो को समझते थे।

अखबार के हर लेख में कुछ न कुछ ऐसी बात होती है जिसका प्रयोग आम तौर के राजनैतिक मसलो पर बहस के लिए किया जा सकता है। मै समझता हू कि कही अच्छा होगा कि मज़दूरो में से ही कोई अखबार पढे, यह और भी अच्छा होगा कि यदि वे बारी-बारी से पढे। हमें बातचीत और बहस जारी रखने में उनकी मदद करनी चाहिए।

यहा पर साथियो के भाषणो को सुनते समय मुझे यह लगा कि आपने उत्पादन सबधी मामलो को उठाने में पहल नही की है। हो सकता है कि आप शरमा रहे हो।

आम समस्याओ से अलग, जिन्हे आप सभी जानते है, उत्पादन की कौन समस्या आपके सामने है? मिसाल के तौर पर मै आपके सामने रद्दी लोहा-लगड इकट्ठा करने की समस्या पेश करता हू। मै फैक्टरियो या घर की बात नही सोच रहा हू। मै गोली-गोलो के टुकडो के बारे में सोच रहा हू जो प्राय मास्को क्षेत्र में बिखरे पडे है। आप मास्को कम्युनिस्ट युवक लीग सगठन को यह काम क्यो नही सौंपते? मास्को क्षेत्र के मैदानो और जगलो में तमाम टूटे-फूटे हवाई जहाज और दूसरी तरह का लोहा-लगड भरा पडा है। मेरा अनुमान है कि कम से कम दस हज़ार टन लोहा-लगड इकट्ठा करना आसान होगा। कहने की ज़रूरत नही, यह बहुत कारामद होगा। हा, इसके लिए उचित प्रचार करना आवश्यक होगा, जिससे तरुणो को यह स्पष्ट हो जाये कि देश को खनिज पदार्थों की कितनी आवश्यकता है। उनको यह भी बताना चाहिए कि यह कैसे इकट्ठा किया जाय और कैसे दिया जाय। सच तो यह है कि मामला इतना स्पष्ट है कि बहुत

अधिक प्रचार की भी आवश्यकता नही होगी। आपको सिर्फ इस काम का सगठन करना है।

मैं अलग से वागवानी की समस्या पर भी कुछ कहना चाहता हू। जो सायी यहा वोले, उनमें से किमी ने भी इन समस्या का जिक्र नही किया, यद्यपि यह समस्या महत्वपूर्ण है। हमें यह ध्यान में रखना है कि जहा सामूहिक वागवानी हो रही है, वहा व्यर्थ में ही लोगो को खेतो पर नही ले जाया जाय। यदि एक वार वे वहा पहुचे तो उनके समय का अच्छे से अच्छा इस्तेमाल होना चाहिए। इस मामले में प्रवधको के साथ-साथ पार्टी और ट्रेड-यूनियनो को काफी सगठनात्मक काम करना पडेगा।

एक वात है जिस के वारे में इस सम्मेलन ने मुझे वहुत आश्चर्य में डाला है। हमारे अखवार दिन-रात स्तखानोव-आदोलन के वारे में कहते रहते हैं। यद्यपि यह पार्टी सगठनो के मत्रियो का सम्मेलन है, और कुछ ने अपने काम के वारे में भी रिपोर्ट दी है, लेकिन किसी ने भी स्तखानोव-आदोलन के वारे में कुछ भी नही कहा। इसे भुला दिया गया। मुझे ऐसा लगता है कि यह वात अचानक ही नही भुला दी गई। स्तखानोव-आदोलन के विपय में प्रचार करते हुए हमारे अखवार अक्सर ग़लत वात पर ज़ोर देते हैं। सिर्फ वे ही लोग जो एक हज़ार फीसदी या दो हज़ार फ़ीसदी कामयाव होते हैं, सर्वप्रिय वनाए जाते हैं, लेकिन क्या इस तरह के मज़दूर अधिक हैं? शायद इसीलिए आप लोग स्तखानोव-आदोलन के वारे में नही वोले। वहुत सभव है कि आपके दीवारी अखवारात भी इन्ही हज़ार-सैकडो वालो से भरे होते हैं।

इस समस्या पर दो दृष्टिकोणो से विचार हो सकता है। कोई यह पूछ सकता है क्या आपकी फैक्टरी या मिल के डायरेक्टर, प्रधान इजीनियर और समूचे प्रवधको ने इससे अधिक अच्छी वात और कुछ नही सोची कि अपने मज़दूरो से इतनी देर तक उत्पादन-कोटा का काम

करवायें, जिससे कोई भी समझदार, ईमानदार आदमी हज़ार फीसदी पूरा कर सके? ज़ाहिर है कि लोगो ने अभी तक उत्पादन बहुत कम किया है, या बिल्कुल काम ही नही किया है। क्यो? यदि एक आदमी बिना किसी नवीन आविष्कार या तरकीब के हज़ार फीसदी उत्पादन-कोटा पूरा कर सकता है, तो उस फैक्टरी या मिल के डायरेक्टर या प्रधान इजीनियर पर राज्य-धन का गबन होने देने के जुर्म में मुकदमा चलाना चाहिए। मैने खुद २५-२७ साल तक एक लेथ-आपरेटर की हैसियत से काम किया है और आप सभी, जिन्होने कारखानो में काम किया है, समझ सकते है कि "एक हज़ार फीसदी वाला" होने का क्या मतलब है।

सिर्फ वही जिसने अपने काम में कोई आविष्कार, टेकनिकल सुधार कर लिया है, सच्चा "हज़ार फीसदी वाला" हो सकता है। मिसाल के तौर पर यदि बटन हाथ से सीने के बजाय मशीन से लगने लगे तो अलबत्ता उत्पादन कई गुना बढ जायेगा। या ऐसी ही कोई दूसरी नवीन कार्यपद्धति चालू करने से उत्पादन तेज़ी से बढ जायेगा। नवीनीकरण के बिना स्तखानोव-आदोलन सोचा ही नही जा सकता। और यही विषय है जिस पर कुछ भी नही कहा गया।

जब हम "हज़ार फीसदी वालो" की बात करें, तो हमें बताना चाहिए कि अमुक आदमी ने अमुक कारखाने में यह समझदारी का प्रस्ताव रखा है और उत्पादन में इसका अमुक प्रभाव पडेगा। निरंतर "हज़ार फीसदी वाले" शब्द की माला जपने से कही महत्वपूर्ण है कि यह बताया जाये कि इस तरह का फल कैसे प्राप्त किया गया। फैक्टरी में हर आदमी को सुधार-आविष्कार के प्रति ध्यान देना चाहिए और सोचना चाहिए, कि वह दूसरे भागो तक कैसे पहुच सकता है। और यदि अभिनवीकरण करने वाला फिटर, लेथ-आपरेटर या किसी और

पेशे का मजदूर है, तो यह पता लगाना चाहिए कि इजीनियरों और डिजाइनरो ने क्या सहायता पहुचाई है। इससे यह पता चलता है कि हम लोग अभिनवी करण, सुधार-आविष्कार, प्रतियोगिता आदि मामलो को सर्वप्रिय बनाने के महत्व-पूर्ण मामले में कितने पिछडे हुए है। यदि हजार फीसदी वालो के बारे में हम लोग इन्ही आधार पर लेख लिखें तो अभिनवीकरण में बहुत सहायता मिलेगी।

सोचिए, हमारी प्रमुख कठिनाई क्या है? सबसे बडी मुश्किल यह है कि हम अपने औसत मजदूर को भूल जाते है। जरा मुझे बताइए यदि वे सभी लोग जो अभी तक अपना उत्पादन-कोटा पूरा नही कर पाते, पूरा करने लगें तो उत्पादन कितना बढ जायेगा? आप अनुभवी लोग है—आप बता सकते है। (ध्वनिया—"दस फीसदी, पन्द्रह फीसदी, बीस फीसदी") यह सही है। इसलिए यदि हम सभी मजदूरो, मै दोहराता हू कि सभी मजदूरो की उत्पादन शक्ति सिर्फ १० फीसदी बढा सकें, तो यह कितना फायदेमद होगा, औद्योगिक उत्पादन कितना अधिक बढ जायेगा। लेकिन इस तरह की सफलता वैयक्तिक कामयाबियो से कही अधिक कठिन है। छोटा आविष्कार करना या कोई अभिनवीकरण प्रस्ताव रखना बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन यही सब कुछ नही है। हाथ से चलने वाले लेथ पर आप दिन भर में २० स्क्रू बना सकते है, जब कि स्वयचालित लेथ पर उसी समय में आप ५००० स्क्रू बना सकते है। लेकिन इससे मामले का फैसला नही होता।

स्तखानोव-आदोलन का मतलब ही है काम के तरीको में सुधार, अनेक प्रकार की तरकीबो से उत्पादन में आसानी। इस तरह का सुधार-आविष्कार बहुत अधिक लोगो तक नही पहुच सकता, क्योकि यह बहुत प्रत्येक व्यक्ति पर, उसकी व्यक्तिगत योग्यता और आविष्कार-बुद्धि पर निर्भर करता है। तो भी इसे बढावा देना चाहिए और विकसित करना चाहिए।

विशेषकर डिपार्टमेंटों के इंजीनियरों और डिजाइनरों को इसमें सहायता देनी चाहिए, जिनकी जिम्मेदारी यही है।

स्तखानोव-आंदोलन को किसी भी तरह समाजवादी होड़ की भूमिका को कम न करने दिया जाय। आम मजदूरों के बीच इस समाजवादी होड़ के बहुत अच्छे नतीजे निकल सकते हैं। सफल उत्पादन के काम में यही आम लोग औसत निर्णयात्मक भूमिका अदा करते हैं। तो भी साथियो, मैं आपसे स्पष्टतया कहना चाहता हूं कि इन्हीं आम लोगों के प्रति आपका रवैया नजरअंदाज करने का है। आपको हमेशा याद रखना चाहिए कि एक औसत मजदूर की श्रम-उत्पादन-शक्ति सिर्फ़ दस फ़ीसदी बढ़ाना ही बहुत महत्वपूर्ण है। इसके लिए दैनिक प्रचार की आवश्यकता है। इस ओर इंजीनियरों का, विशेषकर जो पार्टी-मेंबर हैं ध्यान आकर्षित करना चाहिए। अखबारों में स्तखानोव-आंदोलन पर लिखते हुए हमें उस ओर उचित और आवश्यक ध्यान देना चाहिए, अभिनवीकरण को सर्वप्रिय बनाना चाहिए, उसका प्रदर्शन करना चाहिए, और सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि उसे उत्पादन में नये प्रयोग करने चाहिए। और तो भी, औसत मजदूर को उसकी कामयाबी के प्रति अंधा नहीं बना देना चाहिए। औसत मजदूर अपनी उत्पादन-शक्ति को प्रक्रिया में टेकनिकल परिवर्तन के बिना ही बढ़ाते हैं, अपने काम की तेजी, घनापन बढ़ाने के लिए वे क्या करते हैं। यह बहुत अच्छी बात होगी कि यदि औसत मजदूरों को, विशेषकर पुरानी सर्विस वाले प्रौढ़ मजदूरों को इकट्ठा किया जाय और उनसे उत्पादन बढ़ाने के मसले पर स्पष्ट बातें की जाय। कारखाने के आम उत्पादन पर इसका काफी प्रभाव पड़ेगा और इसका फल भी अच्छा निकलेगा।

आपको औसत मजदूरों की तरफ विशेष ध्यान देने की सलाह दूंगा। उसे सबके सामने लाइए, फैक्टरी के दीवारी अखबारों में उसके काम को प्रकाशित कीजिए। मान लीजिए कि एक मजदूर ने दो साल

तक अपने उत्पादन-कोटे का ८०-९० फीसदी ही पूरा किया और युद्ध के जमाने में वह १००-१०५ फीसदी उत्पादन देने लगा, तो उसे आगे लाना चाहिए। उसके काम को प्रकाश में लाना चाहिए। क्यो? क्योकि इस तरह के मजदूर हजारो है, इस तरह आप विकसित होने वाले साधारण मजदूर को प्रतिष्ठित करेंगे, जो लगातार अपने उत्पादन-कोटे को ३-५ फ़ीसदी बढा रहे है। अपने दीवारी अखबार में उस पर लेख लिखिए, उनके फोटो छापिए। यदि आप ऐसा करेंगे तो उनके पडोस का मजदूर सोचेगा "और मेरे बारे में क्या? क्या मै अधिक खराब हू? मै भी ३-५ फीसदी उत्पादन बढा सकता हू। मै भी अपनी तस्वीर इस तरह छपवा सकता हू।"

इस तरह से आम जनता होड-आदोलन में खीची जा सकती है। उत्पादन मे यह बात बहुत सहायक होगी। अक्सर इसे स्तखानोव-आदोलन कहते है। तत्व रूप में यह असली समाजवादी होड है—कुछ ऐसी चीज़ जिसे आप किसी भी हालत में छोड नही सकते। आपको सिर्फ यह मालूम होना चाहिए कि आप इसका इस्तेमाल कैसे करें। इस मामले में असली रवैया अपनाना चाहिए। हमे शोर-शराबा नही, वरन् ठोस नतीजे चाहिए और इसका मतलब है उत्पादन का औसत बढाना।

यहा पर नए मज़दूरो में काम करने का प्रश्न उठाया गया है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण और कठिन काम है। पर मुश्किल कहा आती है?

सर्वप्रथम, जब नया मजदूर पहलेपहल काम पर आता है—और उद्योग-धधो मे इस समय मुख्यत औरतें आ रही है—तो वह हक्का-बक्का रह जाता है। असाधारण वातारण से वह घबडा सा जाता है, पर कारखाने में ६ महीने काम कर लेने के बाद ही उसे मज़ा आता है। इस मामले में मुझे अपना अनुभव याद आता है। कारखाने का अपना

अनुशासन होता है, जबकि कुछ लोगो की, विशेषकर युवको की आदत अपने ही तरीके से काम करने की होती है। हमें नए आनेवालों को काम मे लगने में सहायता देनी चाहिए। कारखाने की ज़िदगी और अनुशासन से उन्हे परिचित कराना चाहिए। समझाना चाहिए कि यद्यपि शुरू में यह बात कठिन मालूम होती है, लेकिन समय के साथ यह उन्हे पसद आयेगी और कारखाने से वे अपने को अलग नही कर पायेंगे। नए आदमियो को काम में दिलचस्पी पैदा करने के लिए सब कुछ करना चाहिए। जितनी जल्दी हो सके, उन्हे अपने पेशे में माहिर बनने में सहायता देनी चाहिए। इसीलिए नौसिखियो को उनके काम में मदद देने, उन्हे टेकनिकल ज्ञान प्राप्त कराने की समस्याओ को सर्वोपरि महत्व दिया जाना चाहिए। लोगो को समझना बहुत बडी बात है। नए लोगो की टुकडी जो काम करने आई है, वह कैसी है—यह जानना और उसके मुताबिक काम की योजना बनाना बहुत महत्वपूर्ण है।

इस समय लोगो को समझाने का सबसे बडा तर्क युद्ध है। उद्योग में आए हुए नए तरुणो को समझाना चाहिए कि वे यहा खेलने नही आए है, वे गपबाजी के लिए भी नही आए है, बल्कि वे भी लडाई के मोर्चे पर आए है। हमारे पास यह सबसे अधिक कारगर तर्क है। फैक्टरियो और मिलो में काम करने के लिए आए हुए तरुणो के साथ न सिर्फ युवक कम्युनिस्ट लीग, बल्कि कम्युनिस्ट पार्टी के सगठनों को भी काम करना होगा।

मौजूदा कठिन स्थिति में बहुत कुछ इन्ही नए मजदूरो, युवको और औरतो पर निर्भर करेगा। नए मजदूरो में एक अनुशासन की भावना भरनी होगी। उन्हे समूचे सर्वहारा के हितो की भावना से अभिभूत करना होगा। रोज होशियारी के साथ उनमे पार्टी का प्रचार-कार्य करना होगा। आपको चाहिए कि उन्हे सिर्फ आदेशो से प्रभावित न

करें, बल्कि उनके अंदर सामाजिक भावना जागृत करें और सामाजिक क्षेत्र में उनकी दिलचस्पी पैदा करें। इतना ही मुझे आपसे कहना था। मुझे ऐसी आशा करने का साहस हो रहा है कि हमारी बातचीत आपके काम के लिए कम से कम कुछ तो सहायक होगी ही। (देर तक तालियां)

"पार्तीनोये स्त्रोईतेलस्त्वो"
मैगज़ीन, अंक ८, १९४२

राज्य श्रम-रिजर्वो और ट्रेड, रेलवे तथा औद्योगिक स्कूलों के कोम्सोमोल संगठनों के कार्यकर्ताओ तथा मिखाइल इवानोविच कालिनिन के बीच एक वार्तालाप

२३ अक्तूबर १९४२

सोवियत समाजवादी प्रजातन्त्र सघ की सर्वोच्च सोवियत के प्रधान-मडल के अध्यक्ष मिखाइल इवानोविच कालिनिन ने गज्य श्रम रिजर्वो और कोम्सोमोल सगठनो के कार्यकर्ताओ से २३ अक्तूबर, १९४२ को क्रेमलिन में भेंट की। वे ट्रेड, रेलवे और औद्योगिक ट्रेनिग-स्कूलो में राजनैतिक जन-कार्य से सवधित प्रश्नो पर हुए एक सम्मेलन में भाग लेने आए थे।

यह वार्तालाप तीन घटे तक चलता रहा। क्षेत्रीय, प्रादेशिक तथा प्रजातन्त्रिक श्रम-रिजर्वों के प्रशासनो में राजनैतिक जन-काय के सहायक-अध्यक्षो और कोम्सोमोल की क्षेत्रीय तथा प्रादेशिक समितियो के कार्यकर्ताओ ने ऊपर लिखे हुए स्कूलो में तरुणो मे किए जानेवाले

शिक्षात्मक कार्य के विषय में कामरेड कालिनिन को वताया। उन्होने यह भी वताया कि इन स्कूलो मे दी जानेवाली ऊची मतह की ट्रेनिग के लिए वे और क्या कर रहे है।

अपने भाषण में मिखाइल इवानोविच कालिनिन ने वताया कि ट्रेड, रेलवे और औद्योगिक ट्रेनिग-स्कूलो मे ट्रेनिग पाने वाले तरुणो में काम करने का कितना असाधारण महत्व है। उन्होने व्यावसायिक शिक्षा और तरुणो की शिक्षा से सवधित अनेक प्रश्नो पर भी अपनी वात कही।

नीचे हम वार्तालाप की सक्षिप्त रिपोर्ट प्रकाशित कर रहे है

कामरेड गोगीना — (राजनैतिक जन-कार्य के सहायक-अध्यक्ष, तूला क्षेत्रीय श्रम-रिजर्व प्रशासन) — जर्मन आक्रामको ने, तूला के ट्रेड और रेलवे स्कूलो को छोडकर, तूला क्षेत्र की सभी ट्रेड, रेलवे और औद्योगिक ट्रेनिग स्कूलो को क्षत-विक्षत कर दिया था।

हमारे शिक्षार्थियो ने इन सभी स्कूलो को फिर से चलाने के लिए वहुत काम किया है और आवश्यक मरम्मत कर ली है। १२ न० ट्रेड स्कूल द्वारा किया गया काम विशेष उल्लेखनीय है। अखिल सोवियत समाजवादी होड में उसे दूसरा स्थान पाने पर पारितोषिक मिला था।"

कामरेड कालिनिन — "क्या विना आज्ञा तरुणो के स्कूल से चले जाने की घटनाए हुई है?"

कामरेड गोगीना — "हा ऐसी घटनाए हुई है। यह सही है कि जहा शिक्षको का रुख पैतृक प्यार से भरा होता है जहा शिक्षक शिक्षार्थियो की विशिष्टताओ का अध्ययन करके प्रत्येक के प्रति व्यक्तिगत रवैया वनाते है, वहा वच्चे स्कूल छोडकर नहीं जाते। दूसरी ओर, जिन स्कूलो में शिक्षक शिक्षार्थियो के प्रति निष्ठुर होते है, जहा शिक्षा का आधार डाट-डपट है, वहा वच्चे विना आज्ञा के भी चले जाते है।"

कामरेड कालिनिन — "इसका अर्थ यह हुआ कि शिक्षा अव भी वुरी तरह से सगठित है।"

कामरेड गोगीना—"हमारे अनेक व्यावसायिक स्कूलो की यह बहुत ही गभीर त्रुटि है।

अनेक स्कूलो में जहा कुशल शिक्षक अच्छी तरह काम करते है, और पाडित्यपूर्ण कुशलता भी प्रदर्शित करते है, वहा औद्योगिक ट्रेनिग के काम में सफलताए प्राप्त हुई है।

जैसा होड से स्पष्ट हुआ है, न० २ रेलवे स्कूल ने काफ़ी सफलताए प्राप्त की है। वहा रस्सोखिन नाम का एक मैन्युअल इन्स्ट्रक्टर है। वह अच्छा शिक्षक है और बच्चो को बहुत चाहता है।

मिखाइल इवानोविच, एक बार आपने एक सम्मेलन में कहा था कि शिक्षक पैदायशी ही होना चाहिए। यह फोरमैन जन्म से ही शिक्षक है। वह तरुणो की राजनैतिक और व्यवहारिक शिक्षा दोनो पर ध्यान देता है। तूला में उसके शिक्षार्थियो ने ४ किलोमीटर लबी रेलवे-शाखा बनाई है। उन्हें इस पर एक पारितोषिक प्राप्त हुआ और तूला नगर-सोवियत और नगर-पार्टी कमेटी ने धन्यवाद भी दिया था।"

कामरेड कालिनिन—"शिक्षार्थियो के प्रति आपका क्या रवैया है? आप उनके साथ बडे बच्चो का सा या प्रौढो-सा व्यवहार करते है? आपने शिक्षा-दीक्षा के बारे में कहा है। इसका क्या मतलब है?"

कामरेड गोगीना—"मै साधारण स्कूलो और श्रम-रिज़र्वो की शिक्षा-व्यवस्था में भेद करती हू, क्योकि यहा शिक्षार्थियो को सीधे श्रमिक बनने की ट्रेनिग दी जाती है।"

कामरेड कालिनिन—"मुझे डर है कि आप समय से पहले ही उन्हें प्रौढ बनाए दे रहे है। तरुणो में जो कुछ उनका अपना होता है, आप उन्हें उसीसे वचित किए दे रहे हैं। एक शिक्षक के नाते यह आपको समझ लेना चाहिए। मुझे बताइए कि उनमें तरुणाई रह जाती है या नही?"

कामरेड गोगीना — "मेरा विचार है कि वे तरुण रहते हैं। मिसाल के लिए हमारे न० ३ ट्रेड स्कूल को लीजिए। यहा साठ युवक-युवतियो की एक गायन गोष्टी है, नाटक-मण्डली है और सुरक्षात्मक व्यायाम मण्डल भी।"

कामरेड कालिनिन — "इस समय युद्ध जारी है। हमें ऐसे लोग चाहिए जो साहसी और हिम्मतवर हो। और वे गायन या नाटक मडलिया सगठित कर देने से नही मिल जायेंगे। विभिन्न प्रकार की मडलिया अलवत्ता एक वहुत अच्छी चीज है। लेकिन हम नहीं चाहते कि हमारे वच्चे यह महसूस करें कि वे मठो में है। वच्चों को साहसी और जोरदार होना चाहिए।

तरुणो की शिक्षा एक पेचीदा मसला है। इस सिलसिले में मुख्य वात यह है कि एक तरफ तो वच्चे की रहनुमाई एक निश्चित राह पर होनी चाहिए, दूसरी ओर आप उनके स्वाभाविक उत्साह को न मार दें, इसका ध्यान रखना चाहिये। आपको यह देखना है कि वे घोचू किस्म के आदमी न वन जाए, जो समय से पहले ही प्रौढ वनने की कोशिश करने लगते हैं।"

कामरेड इवानोवा — (कोम्सोमोल की गोर्की क्षेत्रीय कमेटी के ट्रेड और औद्योगिक स्कूलो के डिपार्टमेंट की इस्ट्रक्टर) — "एक जर्मन हवाई हमले के दौरान में हमारे क्षेत्र का एक वडा ट्रेड स्कूल नष्ट-भ्रष्ट हो गया था।

कामरेड कालिनिन — "और क्या किसी वच्चे को चोट लगी?"

कामरेड इवानोवा — "नही, किसी को चोट नहीं लगी। लेकिन वमवारी के वाद उनमें से कुछ स्कूल छोडकर चले गए।"

कामरेड कालिनिन — "मुझे जरा इस घटना के वारे में वताओ। वच्चे स्कूल छोड कर चले गए, और आपने उसके वारे में क्या किया?"

कामरेड वुशुयेव — (राजनैतिक जन-कार्य के इचार्ज, सहायक-अध्यक्ष, गोर्की क्षेत्रीय श्रम-रिजर्व प्रशासन) — "स्कूल के डायरेक्टर,

उसके राजनैतिक सहायक और दूसरे शिक्षको की सहायता से अधिकतर बच्चे वापस आ गए। बच्चो ने खुद ही फिर से मकान और सामान को ठीक कर लिया। अब यह ट्रेड स्कूल क्षेत्र के सबसे अच्छे स्कूलो में से है।"

कामरेड कालिनिन—"और बच्चो के तितर-बितर हो जाने के बारे में आपकी क्या राय है? आपने उनको किस तरह समझाया? आपका रुख क्या था?"

कामरेड बुशुयेव—"सबसे पहले हमने उन्हे यह बताया कि बमबारी के लिए हिटलर उसी प्रकार उत्तरदायी है, जिस तरह वह समूचे युद्ध के लिए उत्तरदायी है। शिक्षार्थियो को हमने तफ्सील में अपनी ही शक्ति से स्कूल की मरम्मत कर लेने की आवश्यकता समझाई। हमने उन्हे उद्योग के लिए आवश्यक कार्यकर्ताओ की ट्रेनिग की आवश्यकता के विषय में भी बताया।"

कामरेड कालिनिन—"उतना ही काफी नही था। आपने बच्चो को इकट्ठा करके उनसे कहा होता 'इस तरह के कायर होने पर आपको शर्म आनी चाहिए। आप भाग खडे होते है, अपने देश के किस तरह के रक्षक आप बनेंगे? आपके पिता फासिस्टो से लड रहे है और आप गावो में भाग जाते है। हम सोचते थे कि आप स्कूल की रक्षा करेंगे और आप भाग खडे हुए। आप किस तरह के वीर है?' हा, आपको उनसे कहना चाहिए था 'आप कायर है, सारे रूस के सामने आपने अपना मुह काला कर लिया है। एक हवाई जहाज आया और आप सिर पर पैर रखकर भागे।"

आखिर आपको बच्चो को बच्चो की ही तरह समझना चाहिए। यदि मै स्कूल का डायरेक्टर होता तो उनसे कहता 'यह अच्छी रही! मै यहा अकेले पडा रहा और आप भाग खडे हुए। मैने सोचा था कि आप बहादुर है। हम आपको रायफले और मशीनगनें देना चाहते थे और आप भाग गए। मै सोच रहा हू कि आपके लिए स्कूल खोलना

भी फायदे का था है नही। मै यहा कायरो को शिक्षा क्यो दू, जो खतरे की पहली घटी पर ही खिसक जाते है?' इस तरह आपको उन्हे लज्जित करना चाहिए था। और तव उनसे कहना चाहिए था 'आओ, अपनी सुरक्षा के लिए कुछ खाइया खोदें और यदि हवाई हमला हो तो उसके लिए हर चीज़ तैयार रखें।"

वच्चे डर गये और वे भाग खडे हुए थे। लेकिन निश्चय ही उनमें से हर एक वहादुर वनना चाहता है। मै शर्त लगा सकता हू कि सौ में निनानवे वहादुर वनना चाहेगे।

इन वच्चो को ट्रेनिग देना आपका काम है। और उनको लज्जित करना आसान है। आप यदि क़रीव-क़रीव उसी तरह कहते जैसे मैने कहा है, तो आप कामयाव हो सकते थे 'आप भाग खडे हुए और मेरे जैसे वूढे को विना सहायता के यूही छोड दिया?' इस पर वह अपने पर लज्जित होते। वे अपने व्यवहार पर सोचने को मजवूर हो जाते। आदोलन इस तरह करना चाहिए।

और जो तीन लडकिया पीछे रह गयी थी, उन्हे दूसरो के सामने मिसाल की तरह पेश करना चाहिए था। आपको कहना चाहिए था 'ये तीन वहादुर लडकिया रुक गई थी, लेकिन वाकी भाग खडे हुए थे।' इसकी जगह आपने सार्वजनिक भाषण शुरु कर दिया, आप फ़िकरे वोलने लग गए, और मुख्य वात, जो उसकी राजनीति थी, छोड गए। और यही वात सभी मामलो में है।

मै आपसे फिर कहना चाहता हू कि आपको व्यावसयिक शिक्षा ही नही देनी है, वल्कि योद्धा और सोवियत नागरिक भी तैयार करने है।"

कामरेड इवानोवा—"जहा तक कोम्सोमोल सगठनो की प्रगति का सवध है, हम लोग वडी खराव स्थिति में हैं। सोर्मोवो कारखाने से सवधित ट्रेड स्कूल न० ३ पिछडे हुए स्कूलो में से है।"

कामरेड कालिनिन — "वह पिछड़ा हुआ क्यो है?"

कामरेड इवानोवा — "नेतृत्व पर वहुत कुछ निर्भर करता है। स्कूल का डायरेक्टर तीन वार वदला गया। कोम्सोमोल सगठन कुछ भी नही कर सका और काफी समय तक डायरेक्टर की सहायता के लिए कोई राजनैतिक सहायक भी नही था। उस समय विद्यार्थी तूला और ओरेल क्षेत्रो के थे। १५०० में से सिर्फ ८७ कोम्सोमोल के सदस्य थे और वे वहुत कुछ नही कर सकते थे।"

कामरेड कालिनिन — "मुझे वताइए कि आप पार्टिया, नाच वगैरह का क्या प्रवध करते है?"

कामरेड इवानोवा — "अपनी गतिविधियो के मासिक पर्यवेक्षण के वाद नाच का आयोजन होता है।"

कामरेड कालिनिन — "क्या आप के पास वाजे है?"

कामरेड इवानोवा — "हा, है।"

कामरेड कालिनिन — "आपको पार्टियो का प्रवध करना चाहिए, जिससे वच्चे कुछ खेल-कूद सके, उन्हे नाचने का अवसर मिल सके।"

कामरेड इवानोवा — "हमने एक सम्मेलन किया था। हमने उसमे वूढे मजदूरो को भी वुलाया था। ट्रेड स्कूल की शिक्षा समाप्त कर चुके नए मजदूर भी उसमे शामिल थे। कुल चार सौ लोग उपस्थित थे। वूढे मजदूरो ने क्राति से पहले की काम करने की हालते वताई और वताया कि अव हालत कैसी है और शिक्षार्थियो को अव कितनी सुविधाए प्राप्त है।

सवसे अच्छे विद्यार्थियो ने यह वताया कि उन्होने सफलताए कैसे प्राप्त की। पन्द्रह वरस के एप्रेंटिस वेलोव ने ५ दिनो ही में ढाई सौ फीसदी काम पूरा किया था। सम्मेलन के वाद गाने और नाच, आदि हुए।"

कामरेड कालिनिन — "मैने आपसे नाच के वारे में क्यो पूछा? मै आपको वताना चाहता हू कि आप तरुणो को समय से पहले वूढा मत

बना दीजिए। मैं कहता हू कि नाच का प्रबध करने में आप चूके नही, क्योकि नाचना लोगो को शान से चलना सिखाता है। एक आदमी जो नाच सकता है, वह ठीक से चलेगा और पैरो पर बोझ नही पडेगा। हमारे तरुणो को नाच पसद है। मै युवको से मिलकर ही यह बात जानता हू और इस पर बनावटी रोक लगाने की आवश्यकता नही है। सिर्फ आपको यह देखना है कि वह अपना तमाम समय इसमें बरबाद न करे — वह सिर्फ आराम और तफरीह के लिए होना चाहिए।"

कामरेड गलिऊलिना — (तातार स्वायत्त सोवियत समाजवादी प्रजातत्र श्रम-रिज़र्व प्रशासन के सहायक-अध्यक्ष) — "हमारे यहा ग्यारह ट्रेड स्कूल, दो रेलवे, और तेईस औद्योगिक ट्रेनिग स्कूल है, जिनमें सोलह हज़ार तरुण पढते है।

अपने विद्यार्थियो में हम कला के विकास को बहुत महत्व देते है। हमारे शिक्षको ने सगीत और नृत्य केन्द्रो को सगठित करने में बहुत काम किया है। उन्होने ट्रेड और औद्योगिक ट्रेनिग स्कूलो के अच्छे से अच्छे कला-प्रेमियो के दलो का समारोह सगठित किया और यह बहुत अच्छा रहा।

बच्चो को गाने, कविता पढने आदि कलाओ से बहुत प्रेम है।

कामरेड मक्सिमोव (राजनैतिक जन-कार्य के सहायक-अध्यक्ष, लेनिनग्राद श्रम-रिज़र्व प्रशासन) ने बताया कि किस तरह ट्रेड, रेलवे और औद्योगिक ट्रेनिग स्कूलो के शिक्षार्थी और शिक्षक काम और अध्ययन करते है और किस तरह वे जर्मन फासिस्ट आक्रामको के विरुद्ध नगर की रक्षा में फौजी अधिकारियो की सहायता करते है। शिक्षार्थियो ने लेनिनग्राद के ट्रामो को फिर से चालू करने में सहायता दी। उन्होने पायोनीयरो के महल और नगर के दूसरे मकानो की मरम्मत करने में भी सहायता दी।

इस के बाद मिखाइल इवानोविच कालिनिन ने बश्कीर स्वायत्त सोवियत समाजवादी प्रजातन्त्र, मोलोतोव क्षेत्र, आजेरबैजान सोवियत समाजवादी प्रजातन्त्र, चेल्याबिस्क और यारोस्लव्ल क्षेत्रो, कोमी स्वायत्त सोवियत समाजवादी प्रजातन्त्र, अर्खान्गेल्स्क क्षेत्र, कालिनिन क्षेत्र, मास्को नगर और मास्को क्षेत्र के अनेक श्रम-रिज़र्व प्रशासनो तथा कोम्सोमोल सगठनो के कार्यकर्ताओ की बाते सुनी।

मिखाइल इवानोविच कालिनिन का भाषण

साथियो, श्रम-रिज़र्व ट्रेनिग स्कूलो के शिक्षार्थियो की शिक्षा बहुत ही नाजुक और मुश्किल काम है। इससे भी अधिक, राज्य-श्रम-रिज़र्वों की ट्रेनिग का काम ही बहुत पेचीदा है।

प्रथमत , हमको लगभग कुशल मज़दूरो को शिक्षित करना है। दूसरे, सोवियत राज्य के मज़दूर-वर्ग की तरुण पीढियो को हम सोवियत सस्कारो में पालना चाहते है। तीसरे, मसला मौजूदा स्थिति—युद्ध के कारण पेचीदा हो गया है।

श्रम-रिज़र्व ट्रेनिग-स्कूलो के शिक्षार्थियो को मोर्चे की आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए बहुत से राज्य के आर्डर पूरे करने होते हैं —साधारण ज़माने में उन्हें ऐसा कुछ नही करना पडता था। अन्न, कपडे, जूतो की समस्याये पेचीदा हो गई है। खुद युद्ध के कारण श्रम--रिज़र्व सगठनो की स्थिति मुश्किल हो गई है। इन परिस्थितियो में मज़दूरो को सभी नियमो के अनुसार शिक्षित करना काफी मुश्किल हो गया है।

युद्ध अपनी तेज़ी पर है। और यद्यपि श्रम-रिज़र्व व्यवस्था के विद्यार्थी अभी मोर्चे पर नही भेजे जा रहे है, तो भी यह बहुत सभव है कि उनमें से कुछ को लडना पडे और इसलिए यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि उन्हे अपने मौजूदा काम से फौजी ट्रेनिग में लगा दिया जाय।

साधारण दिनो मे, शांति-काल में, हम अपना पूरा ध्यान शिक्षा पर लगा दें। लेकिन मौजूदा परिस्थितियो में हमारा यह कर्तव्य है कि हम सभी स्कूलो में फौजी ट्रेनिग का काम करे। हम कुशल मजदूरो को शिक्षित कर रहे है। लेकिन यदि आवश्यकता हो तो उन्हे लडना भी आना चाहिए। यह हमारा अक्षम्य अपराध होगा यदि हम उनको फौजी ज्ञान से सुसज्जित न कर सके। इसीलिए मै समझता हू कि मौजूदा परिस्थितियो में लेनिनग्राद के लोग, शिक्षार्थियो को फौजी आधार पर सगठित करके सही काम कर रहे है, यद्यपि इसमे हमारे तरुणो को कुछ मुश्किले उठानी पड रही है।

यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपने तरुणो को उनके पेशे में सुशिक्षित करें और साथ ही उन्हे सोवियत नागरिक, योद्धा बनने की भी शिक्षा दें, जिससे वे देश के प्रति अपना कर्तव्य समझ सके, अपने पेशे ज्यादा जमकर सीख सके, और कम समय लगे, साथ ही, शिक्षा के साथ-साथ वे लाल फौज को फौजी सामान बडी सख्या में दे सकें। उन्हे फौजी ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और शारीरिक तौर पर विकसित होना चाहिए।

देशभक्तिपूर्ण युद्ध के मोर्चे पर नाजी-आक्रन्ताओ से हमारे बेटे जो वीरतापूर्ण युद्ध कर रहे है, हमारा देश उन्हे भूलेगा नही।

हमारा देश ट्रेड, रेलवे, औद्योगिक ट्रेनिग स्कूलो में पढने वाले लडकियो-लडको के वीरता के कामो को भी अहसान के साथ याद रखेगा, जो मोर्चे की सहायता कर रहे है और मोर्चे के पीछे जितना सभव है उतनी अच्छी तरह अध्ययन और काम करने की कोशिश कर रहे है।

शिक्षा के बारे मे यह समझ लेना चाहिए कि उसके प्रति व्यवहारिक रुख बहुत ही कठिन है। शिक्षको में बहुत ही कुशलता की आवश्यकता है।

श्रम-रिज़र्व स्कूलो में पढने वाले विभिन्न प्रदेशो और जनता के विभिन्न हिस्सो से आते है — वे हमारे शहरो और देहातो के तरुण और तरुणिया है। यह स्पष्ट है कि वे एक ही तरह के नही है और आपको उनके समान विकास का प्रयत्न करना चाहिए। यह आसान काम नही है। इससे भी अधिक हमें यह याद रखना चाहिए कि हमारे यहा जो शिक्षा पाने आए है, वे बच्चो से कुछ ही बडे तरुण है। उनकी आदते सब वही बचकानी है। यह सही है कि युद्ध और समूचा वातावरण उन्हे शान्ति-काल के मुकाबले अधिक प्रौढ बनाए दे रहा है। लेकिन तो भी, जब तक हो सके तब तक हम उनकी तरुण प्रवृतियों को बनाए रखना चाहते है। निस्सदेह, व्यवहार में इन प्रश्नो को हल करना बहुत ही मुश्किल है।

शिक्षा सबधी विश्व-साहित्य का अध्ययन कीजिए। इसमें जनता के शिक्षा-सबधी विभिन्न अनुभवो का खज़ाना है। कुछ लोगो ने यह साबित करने की कोशिश की है कि उनके बच्चो को सबसे अच्छी शिक्षा नगरो में मिल सकती है। कुछ लोगो ने इसका विरोध किया है और यह दावा किया है कि बच्चो की शिक्षा देहातो में होनी चाहिए। इस मसले पर दूसरे प्रस्ताव और दावे किए गए है। तो भी, यह नही कहा जा सकता कि शिक्षा की कोई विशद और निश्चित व्यवस्था स्थापित हो चुकी है। आज शिक्षा की व्यवस्था पहले से, तीन साल पहले से, भिन्न होनी चाहिए। यदि कहा जाय तो यह अधिक सही होगा कि पहले हम बुद्धिजीवी निर्मित करते थे, न कि शारीरिक श्रम में सुशिक्षित लोग। व्यक्तिगत तौर पर मै ऐसी शिक्षा ग़लत समझता हू क्योकि, आखिर हमारे देश की अधिकाश जनता शारीरिक श्रम में लगी हुई है। इस तरह हमारे सामने यह एक समस्या पेश है कि अपने तरुणो को शारीरिक श्रम का आदी किस तरह बनाया जाय और साथ ही उनका बौद्धिक विकास किस तरह हो भी।

अब हम लोग शारीरिक शक्ति को विकसित करने पर ज्यादा जोर दे सकते है। काम करने की आदतो को डालने, हर तरह की कठिनाइयो का मुकाबले करने की शिक्षा पर अधिक ज़ोर देना चाहिए। इस तरह वे अपने को लौह बना सकेगे। जिस तरह हम शारीरिक कसरते करते है, हर तरह के खेल-कूद में हिस्सा लेते है, जिससे हम अपने को शारीरिक तौर पर लौह बन सके, उसी तरह कडा अनुशासन लागू करके और काम की आदते डालकर हमें तरुणो को लौह बनाना चाहिए, तभी वे जीवन में आनेवाली सभी मुश्किलो को आसानी से झेलने के योग्य बन सकेगे।

इसलिए आवश्यक है कि हमारे तरुणो में श्रम-निष्ठा पैदा की जाय।

हमारी फैक्टरियो के मजदूरो की काफी बडी सख्या अपने काम को जीवन भर का पेशा समझती है। यदि उनका काम छूट जाये, तो उन्हे लगता है कि जीवन का सब अर्थ ही शून्य हो गया। इस तरह के लोग जब बूढे हो जाते है या बीमारी के कारण काम छोडने को मजबूर होते है, तो उन्हे लगता है कि जैसे उनका आधा जीवन ही समाप्त हो गया, क्योकि वे काम के आदी होते है, उन्हे अपने धधे से स्नेह होता है। जब उनका धधा नही रहता है तो ऐसा लगता है जैसे उनके जीवन का सहारा ही खतम हो गया हो। हम चाहते है कि हमारे तरुण मजदूरो में श्रम के प्रति इसी प्रकार का स्नेह विकसित हो।

यह कहने की कोई आवश्यकता नही कि जब साथी यह साबित करने की कोशिश कर रहे थे कि बच्चो की शिक्षा को मैन्युल इन्स्ट्रक्टरो की ही जिम्मेदारी बना दी जाये, तो वे गलत थे। यदि आप मुझसे पूछें कि कौन सा मैन्युल इन्स्ट्रक्टर ज्यादा अच्छा होगा—जिसका रुख पटिताऊ है, लेकिन उसे अपने धधे का ज्ञान कम है,

या वह जो ज़रा कम पंडित है लेकिन जिसे अपने धंधे का पूर्ण ज्ञान है, तब यदि मैं ट्रेड स्कूल या औद्योगिक ट्रेनिंग स्कूल का डायरेक्टर होता, तो अपने धंधे के व्यावहारिक ज्ञानी को अधिक अच्छा समझता, जो पंडित कम है, लेकिन जिसे अपने क्षेत्र का पूर्ण ज्ञान है।

मैं ऐसा क्यों करूंगा? क्योंकि शिक्षक का प्रभाव तभी अपने विद्यार्थियों पर असरदार होगा जब वे समझेंगे कि उन्हें अपने धंधे का सच्चा ज्ञान प्राप्त हो रहा है। विद्यार्थियों को ऐसे शिक्षक से सदैव फ़ायदा होगा। एक मिसाल ले लीजिए। पहले विश्वविद्यालयों में बहुत ही प्रतिक्रियावादी विचारों के प्रोफ़ेसर थे, लेकिन प्राय: उन्हें अपने विषयों का बहुत ही अच्छा ज्ञान होता था, और वे अपने विषयों को बहुत ही योग्यता से समझा सकते थे। उनके लेक्चरों में विद्यार्थी सदा ही अच्छी तादाद में उपस्थित रहते थे—यद्यपि विद्यार्थी यह जानते थे कि ये प्रोफ़ेसर प्रतिक्रियावादी विचारों के हैं। दूसरी तरह के प्रोफ़ेसर भी थे—गैस भरे हुए गुब्बारे, जो केवल यह जानते थे कि बात किस तरह करनी चाहिए। वे हर समय उदारतावादी जुमले बोलते रहते थे। पहले तो उनके लेक्चरों में सभी स्थान भरे होते थे, लेकिन बाद में गंभीर विद्यार्थी उनमें जाना छोड़ देते थे, क्योंकि वे वहां कुछ भी सीख नहीं पाते थे।

हमारे मैन्युल इन्स्ट्रक्टरों के विषय में भी यही सच है। यदि उन्हें अपने विषय का अच्छा ज्ञान है और वे अपनी कार्य की कुशलता अपने विद्यार्थियों को प्रदान कर सकते हैं, तो वे अपनी भूमिका अदा कर सकेंगे।

जहां तक कारीगर और झाड़ू-झारू करने वाली द्वारा बच्चों को शिक्षित करने में अपनी भूमिका अदा करने का सवाल है, इसे शब्दश: नहीं समझना चाहिए, लेकिन इन अर्थों में कि उन्हें अपने व्यवहार, कर्तव्य-पालन में मिसाल बनकर विद्यार्थियों में काम, सफ़ाई और

नियमितता की आदतें डालनी है। यदि इन स्कूलों की झाड़ू-झाड़ करने वाली मकान की उचित देखभाल करती है, और बच्चों को कुछ भी गड़बड़ नहीं करने देती, यदि वे गड़बड़ करते हैं तो उन्हें डांटती है, उन्हें निश्चित आदतें सिखानी है, तो तब ही विद्यार्थियों पर उसका अच्छा प्रभाव पड़ता है। लेकिन वे यह सब स्कूल के डायरेक्टर की आज्ञा पाने पर करती है कि वह अपनी जिम्मेदारियों को पूरी तरह निभाए।

एक ही आदमी अच्छा टर्नर या फिटर हो और साथ ही अच्छा शिक्षक भी हो—ऐसा आदमी मिलना मुश्किल होता है। यहां पर यह बताया गया है कि अपने धंधे में कुशल ऐसे शिक्षक हैं जो बच्चों के प्रति पैतृक रवैया रखते हैं। लेकिन मेरी राय में उनका कारण यह है एक ऐसे अच्छे कारीगर की कल्पना करना मुश्किल है जो अपने काम में स्नेह न करता हो और उसकी ओर लापरवाही का रुख रखता हो। ऐसा उदाहरण अपवाद के ही रूप में मिल सकता है, साधारणतया नहीं। एक कुशल शिक्षक, जो अपने पेशे में घुल-मिल गया हो, अपने ज्ञान को विद्यार्थियों को प्रदान करने की कोशिश करता है, और वह हर तरह से उनका खयाल किए बिना नहीं रह सकता। तरुणों की व्यवसायिक ट्रेनिंग का यही सार है।

सिर्फ वही कुशल कारीगर, जो अपने विषय-क्षेत्र का माहिर है, जिसे अपने काम का पूर्ण ज्ञान है, अपने विद्यार्थियों को काम में माहिर बनने में सहायक हो सकता है। हमें अपने विद्यार्थियों में पेशे के प्रति गर्व विकसित करना चाहिए। और यह एक कुशल कारीगर द्वारा ही किया जा सकता है जो अपने कौशल का पंडित है और उससे स्नेह करता है। शेष सहायकों को अपने कर्तव्यों का पालन अच्छी तरह करना चाहिए। यदि वे अपने कर्तव्यों का पालन भली भांति करेंगे, तो अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों की शिक्षा में सहायक होंगे,

क्योंकि वे बच्चों के आगे मिसालें क़ायम करेंगे। वे वह वातावरण है जो अपने से संबंधित सभी चीज़ों को प्रभावित करता है।

जैसा मैं कह चुका हूं कि हम बच्चों को कुशल मज़दूर, और अच्छे सोवियत नागरिक, दोनों ही बनाना चाहते हैं। श्रम-रिज़र्व व्यवस्था के राजनैतिक नेताओं की यही ज़िम्मेदारी है। तरुण मज़दूरों में उनको यह विचार दृढ़ करना चाहिए कि वे सोवियत देश के मज़दूर-वर्ग के सदस्य हैं, और यह कि यह वर्ग सोवियत समाज का नेतृत्व करने वाला वर्ग है और वह समूचे सोवियत जीवन के लिए मुख्य मिसाल पेश करता है। राजनैतिक नेताओं द्वारा हमारे तरुणों में इस बुनियादी विचार को सबसे पहले भरना चाहिए।

सोवियत राज्य मज़दूरों और किसानों का राज्य है। दुनिया में इस तरह का और कोई राज्य नहीं है और हम उसके रक्षक तथा प्रतिनिधि हैं। हमारे राजनैतिक नेताओं को दिन-रात इसी तरह का प्रचार करना चाहिए। उनकी योग्यता पर ही इसकी सफलता निर्भर है।

मुझसे यहां पूछा गया है कि श्रम-रिज़र्वों की व्यवस्था में कोम्सोमोल की भूमिका को किस तरह समझना चाहिए।

श्रम-रिज़र्व व्यवस्था एक राज्य संगठन है।

जिस सीमा तक श्रम-रिज़र्व के विद्यार्थी कोम्सोमोल आयु के हैं कोम्सोमोल अपनी भूमिका अदा करता है और उसे करना भी चाहिए। यदि उनमें कोम्सोमोल के सदस्यों की संख्या बहुत कम है, तो यह हमारी लापरवाही है। आम तौर पर दो साल में लगभग ६० फ़ीसदी विद्यार्थियों को कोम्सोमोल का सदस्य बनना चाहिए। लेकिन क्या इसका अर्थ यह है कि ट्रेड और औद्योगिक ट्रेनिंग स्कूलों में कोम्सोमोल को प्रशासनात्मक नेतृत्व करना चाहिए?

नहीं, कदापि नहीं।

कोम्सोमोल राजनैतिक संगठन है, जो तरुणों के राजनैतिक रवैये को निर्मित करता है। वह उन्हें निश्चित पार्टी-राह पर मोड़ता है और लोगों को पार्टी-सदस्यता के लिए तैयार करता है।

क्या शिक्षात्मक पहलू कोम्सोमोल के हाथों में होना चाहिए? नहीं, मैं ऐसा नहीं मानता। हो सकता है कि मेरे क्रान्तिकारी विचार कोम्सोमोल को न जचें। आप खुद सवाल पर गौर कीजिए। हमारे स्कूल और विश्वविद्यालय कोम्सोमोल आयु के विद्यार्थियों से ही भरे हुए हैं, तो क्या इसका मतलब यह हुआ कि कोम्सोमोल उनका इन्चार्ज है? कोम्सोमोल उनके राजनैतिक विकास में सहायता देता है, उनको ज्यादा जागरूक बनाता है, उन्हें स्वतन्त्र कोम्सोमोल संगठनों में—जो एक हद तक राज्य-संगठनों से स्वतन्त्र होते हैं—बांटता है। परन्तु, स्कूल और विश्वविद्यालय राज्य संगठनों की मातहती में हैं।

श्रम-रिजर्वों की शिक्षा का उत्तरदायी कौन है? कामरेड मोस्का-तोव, आप श्रम-रिजर्वों की शिक्षा के जिम्मेदार हैं और कोम्सोमोल आपकी सहायता करता है। इन मामलों में जवाबदेही आपकी ही होगी, न कि कोम्सोमोल की। सम्भवतः कोम्सोमोल के अधिकारियों से भी कहा जायेगा "प्रिय साथियो, आपका भी काम ठीक नहीं है।" लेकिन इस कारण कोम्सोमोल के नेताओं को अपने पदों पर से हटाया नहीं जायेगा, जब कि श्रम-रिजर्वों के अध्यक्ष को हटाया जायेगा।

इसका अर्थ यह हुआ कि राज्य श्रम-रिजर्व संगठन इस काम के इन्चार्ज हैं।

जब हम यह सोचें कि श्रम-रिजर्वों के तरुणों की शिक्षा के काम में सीधे-सीधे तौर पर कौन लगेगा। मैंने अभी अभी आपको बताया है कि राजनैतिक नेता और शिक्षक का काम कितना कठिन है। यह काम सैद्धान्तिक शिक्षा प्राप्त अनुभवी व्यक्तियों को ही करना चाहिए। आम तौर पर, परिपक्व आयु के अनुभवी व्यक्ति ही इस काम के लिए

ज्यादा अच्छे होगे। यह काम कोम्सोमोल के उन सदस्यों को करना चाहिए जिनका दृष्टिकोण कोम्सोमोल के दृष्टिकोण मे आगे वढ चुका है। मै समझता हू कि प्रौढ आयु के लोग इस काम के लिए अधिक उपयुक्त होगें। यदि वच्चो के पास करीव-करीव उन्ही की आयु का कोई आदमी जायेगा, तो उसमें उनको विशेष विश्वास नहीं होगा। वे कहेंगे "तुम्हे हमसे ज्यादा कुछ नही आता।" वच्चे अधिकार-युक्त व्यक्ति को मानते है और हमें उनमें अधिकारियो के प्रति सम्मान की भावना भरनी चाहिए।

मेरा विचार है कि कोम्सोमोल को उन नेताओ की सहायता करनी चाहिए और उनमें जोश लाना चाहिए, जो यद्यपि ज्ञानवान् है, परन्तु जो जीवन के प्रति कुछ उत्साह-हीन से हो गए है। मैं तो समझता हू कि एक अनुभवी शिक्षक ही तरुणों के अधिक निकट हो सकता है। अलवत्ता, वह वच्चो के साथ गेंद नही खेलेगा और न ही उनके पीछे दौडा-दौडा फिरेगा। मुख्य चीज़ राजनैतिक प्रभाव, अधिकार, तरुणो की उससे ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा है। और ये सभी वहुमूल्य चीजें है जो विद्यार्थियो की ही समान आयुवाले शिक्षको में नही होती। क्योंकि एक व्यक्ति अपनी वरावरी की आयुवाले से हमेशा ही कह सकता है "मुझे आज्ञा देने वाले तुम कौन होते हो? मै तुम से ज्यादा वेवकूफ नही हू, और न तुम से कम जानता हू।" यहा आयु खुद ध्यान दिलाती है। मै यह नही कहना चाहता कि कोम्सोमोल के सदस्यो को इस काम में न लिया जाय। मै सिर्फ यह कह रहा हू कि प्रौढ आयु का व्यक्ति ज्यादा अच्छा रहेगा।

मेरा विश्वास है कि श्रम-रिज़र्व स्कूलो में कोम्सोमोल को वही भूमिका अदा करनी चाहिए जो वह फैक्टरियो और दफ्तरो में करता है। चूकि कोम्सोमोल तरुणो की शिक्षा के मामले में पार्टी का सहायक है, इसलिए उसकी वहुत वडी भूमिका है।

शिक्षा के काम को उचित ढग से सगठित करने के लिए कोम्सो-मोल को चाहिए कि वह दोषो की आलोचना करे और इसी उद्देश्य से मागें रक्खे। यदि कोम्सोमोल को प्रशासन में कुछ हिस्सा मिला, तो उसे उत्तरदायित्व भी निभाना पडेगा, जब कि उसे अपने को स्वतन्त्र रखना चाहिए। कोम्सोमोल सगठन का इतना सम्मान कही नही है, जितना हमारे देश में। व्यक्तिगत तौर से उनके बारे में मेरी बहुत अच्छी राय है, लेकिन जो काम वह कर नही सकता, वह काम उसे देने की कोई वजह नही है।

बिना आज्ञा के विद्यार्थियो का स्कूल से चला जाना जाहिर करता है कि वहा उचित व्यवस्था नही है। अलबत्ता, देहात से आए बच्चो को पहले-पहल मुश्किल मालूम होती है। नगर की हर चीज से वे उचटे-उचटे रहते है। यह मै अपने अनुभव से कह रहा हू। उन्हे ऐसा लगता है कि जैसे वे किसी नई दुनिया में आ गए हो। जिस आजादी के वे आदी होते है, उनकी जगह यहा अनुशासन होता है। और खुद कारखाने का अभ्यस्त होने में समय लगता है, काफ़ी समय लगता है। दो महीने इसके लिए काफी नही होते और पहले तो आप हर चीज से मानो डरते है। और जब इन सबके ऊपर सगठन खराब हो, उनमें विभिन्न तरह की त्रुटियाँ हो, व्यवस्था न हो, तब तो बच्चो के लिए और भी मुश्किल होता है।

मै समझता हू कि नागरिक श्रम-रिज़र्व स्कूलो में शहरो के और अधिक विद्यार्थी होने चाहिए। उनसे आपका काम आसान होगा। माना कि शहरो के तरुणो का एक भाग दूसरे कामो की सोचता है, जैसे दफ्तर का काम, मुशी मुनीम भी आदि, लेकिन उनमें से भी कुशल कारीगर भी बनाए जा सकते है। यह बहुत महत्वपूर्ण है।

श्रम-रिज़र्व व्यवस्था से सबधित काम की तमाम मुश्किलो को मैं समझता हू। लेकिन जो काम आप कर रहे है, उनका राज्य के

लिए वहुत ही महत्व है। ज़रा एक क्षण के लिए सोचिए—हम तरुण मज़दूरो की उन टोलियो को शिक्षित कर रहे हैं, जिन पर सोवियत-व्यवस्था को मज़बूत करने का काम निर्भर करता है। हम अपनी जनता के सबसे अच्छे अंग को इस श्रेणी में लाना चाहते हैं। हम चाहते है कि सोवियत समाज के मज़दूर-वर्ग का राजनैतिक और बौद्धिक विकास ऊंची सतह का हो।

आपके सामने एक वडा काम है। आपको एक वडा काम सौंपा गया है। यदि आप इस काम को सफलता से निभा सके, तो आप अपने देश के हित में एक महान करिश्मा कर दिखायेंगे।

मै आपकी सफलता की कामना करता हू।

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा"

१५ नववर १९४२

महान अक्तूबर समाजवादी क्राति की पचीसवी वर्षगाठ के अवसर पर मास्को के ट्रेड, रेलवे और औद्योगिक स्कूलों के समारोह मे दिया गया भाषण

२ नवबर १९४२

साथियो, हमारे देश में सोवियत सत्ता स्थापित हुए पचीस वर्ष वीत चुके हैं। मानव-इतिहास में इस घटना का अनोखा महत्व है। इतिहास में इस तरह की कोई घटना पहले नही हुई।

अक्तूबर क्राति की पचीसवी वर्षगाठ पर हम प्रतिक्रियावाद और शोषण से अपने देश की मेहनतकश जनता की मुक्ति का समारोह मना रहे है। आप पुरानी व्यवस्था के विषय में सिर्फ सुनी-सुनाई बाते जानते है या कितावो से पढकर जानते है। और इसके विषय में लोग विभिन्न बाते कह सकते है। यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति से मिले, जो पहले अमीर आदमी था, तो जाहिर है, वह पुरानी व्यवस्था की प्रशसा करेगा। लेकिन यदि आप पहले के गरीब किसान

से मिले, मजदूर से मिले, या दफ्तर के कर्मचारी से मिले, तो वह आपको क्राति से पहले के ज़ारशाही रूस के समय में मज़दूरो, किसानो और शहरी गरीबो की दुरवस्था के विषय में बतायेगा।

हमारे यहा आज सोवियत व्यवस्था है। महान अक्तूबर क्राति ने हमारे समाज में आमूल परिवर्तन कर दिए है।

सोवियत व्यवस्था के लिए सघर्ष करते हुए अनेको युवक मिट गए। आज भी हमारे युवक अपना योग दे रहे है। सिर्फ लडाई के मोर्चे पर ही नही, बल्कि पिछवाडे में भी, फैक्टरियो और कारखानो में।

इस वर्ष हम अपनी छुट्टी उस समय मना रहे है, जब हम जर्मन फासिस्टो के विरुद्ध कठिन सघर्ष में लगे है। शाति-काल में हम जब यह छुट्टी मनाते थे तो दो दिन तक जशन होता रहता था। आज हम यह छुट्टी ऐसे समय में मना रहे है जब हमारे अनेक साथी शत्रु के अधिकृत प्रदेश में है और बडी कठिनाइया झेल रहे है। अनेक तरुण फासिस्ट दानवो के हाथो मर रहे है। सोवियत सत्ता की पचीसवी वर्षगाठ हम इस सकटकालीन अवसर पर मना रहे है।

हमारे श्रम-रिजर्व युद्ध से पहले स्थापित हुए थे। उनका विशेष महत्व इस बात में है कि वे हमारे उद्योगो को कुशल कारीगर और कामगार तैयार करके देते है।

एक कुशल कारीगर तैयार करना आसान काम नहीं है। इसमें दो-तीन साल लगते है। और अति-कुशल कारीगर बनाने में तो ३-४ साल लगते है। यह सारा समय ट्रेनिग स्कूल में लगाना अत्यावश्यक नही है। अपना काम अच्छी तरह से सीखने के लिए एक व्यक्ति को अपनी बुनियादी कुशलता तो स्कूल में प्राप्त करनी चाहिए, और काम करते-करते उसीसे अपनी ट्रेनिग पूर्ण करनी चाहिये।

आपको हमारी फैक्टरियो और कारखानो में कुशल मज़दूरो की तरह काम करना होगा। आपमें से अनेक को यह आश्चर्य होगा कि

आपका पेशा निश्चित हो गया है। आज आप ट्रेड और औद्योगिक ट्रेनिंग स्कूलों में हैं और कल आप फैक्टरी के मजदूर बन जायेंगे। आपमें से कुछ प्रश्न कर सकते हैं कि क्या यही सब से अच्छा है? क्या किसी दफ्तर में काम करना ज्यादा अच्छा नहीं होगा, जहां शायद कुछ अधिक साफ और अधिक आसान काम है?

लेकिन क्या यह सचमुच ज्यादा अच्छा है?

मैं आपको निश्चित उत्तर देना चाहता हूं क्योंकि मैंने अपने तीस साल फैक्टरियों में और अब बीस साल दफ्तरों में गुजारे हैं। (हाल में खलबली) मैं इन दोनों ही तरह के कामों के विषय में कुछ कह सकता हूं। कौन अधिक अच्छा है? निस्सदेह एक फैक्टरी में, कारखाने की वर्कशाप में। एक ट्रेनिंग स्कूल की वर्कशाप से बहुत बड़े डिपार्टमेंट में आना पहले-पहल कुछ भयावह मालूम होता है। पहला दौर, शुरू के एक या दो महीने का समय आपको मुश्किल मालूम होगा। लेकिन फिर, फैक्टरी का वातावरण, खुद आप पर छा जायेगा। एक या दो साल के काम के बाद आपका कारखाने के प्रति लगाव हो जायेगा। दफ्तर के काम का फैक्टरी के काम से कोई मुक़ाबला नहीं हो सकता — यहां आपको एक आत्मसंतोष प्राप्त होता है, क्योंकि यहां आप प्रत्यक्ष अपने श्रम के फल को देख सकते हैं।

कारखाने में विश्वास के साथ आने के लिए एक व्यक्ति को अपने धंधे का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। जब मैं एप्रेंटिस था तो हर किसी से अच्छा काम करना चाहता था। हर आदमी अपने धंधे का माहिर होना चाहता था। यदि वह टर्नर होता, तो वह एक अच्छा टर्नर बनना चाहता था। यदि वह फिटर होता तो वह एक अच्छा फ़िटर बनना चाहता था। फ़ैक्टरी में काम करना एक दिलचस्प बात है। अब वह पहले से भी अधिक दिलचस्प हो गया है।

पहले हर काम हाथ से किया जाता था। वह बहुत महत्वपूर्ण था।

लेकिन आप अपने हाथो और लेथ पर कितने ही कुशल क्यो न हो, मशीने ज्यादा अच्छी होती है। पहले मशीने बहुत थोडी होती थी, लेकिन अब हमारी फैक्टरिया और कारखाने बहुत बडी सख्या में मशीनो से सज्जित है। इससे हमारे कारखानो में काम और दिलचस्प हो गया है। लेकिन दूसरी ओर अधिक ज्ञान और कुशलता आवश्यक हो गई है।

अपने धधे का अच्छा ज्ञान प्राप्त किए बिना ही स्कूल छोडने का अर्थ है कि आप अपने साथियो का सम्मान नही प्राप्त कर सकेगे। यदि आप अपने धधे को अच्छी तरह नही जानते, तो आपको किसी विशेष महत्वपूर्ण काम करने का अवसर नही मिलेगा। महत्वपूर्ण काम उन्ही को सौंपा जाता है जो अच्छा काम करते है। इसका अर्थ यह है कि आपको अपने धधे का ज्ञान होना चाहिए। आप में मसविदो को पढ सकने की योग्यता होनी चाहिए। भविष्य में आप में से अनेक ब्रिगेड-लीडर बनेगे। आप मशीने जोडेंगे या एक फिटर या औजार बनाने वाले होगे। हर आत्मसम्मान वाले मजदूर में मसविदो को पढने की योग्यता होनी चाहिए। आपको यह स्कूल में ही सीखना चाहिए।

मशीनो का ज्ञान प्राप्त करना आपका कर्तव्य है। एक कारखाने में उत्पादन का काम, बडे पैमाने पर एक बडा काम है। ऊपर से देखने में उसमें एकरसता होती है। लेकिन उसमें बहुत ध्यान लगाने की आवश्यकता है और मशीनो का ज्ञान भी आवश्यक है। बडे पैमाने पर उत्पादन के काम की अपनी विशिष्टताए होती है। वे क्या है? इस तरह के काम में चुस्ती और तेजी की आवश्यकता होती है। आप एक के बाद एक हिस्सा बनाते है। कभी-कभी एक हिस्से को बनाने में एक मिनट से अधिक नहीं लगता। इसका अर्थ है कि आपको जल्दी-जल्दी, लय के साथ काम करना सीखना है। ट्रेड स्कूल में कुछ विद्यार्थी काम

का एक हिस्सा पूरा करते हैं और दूसरे — दूसरा। आपको हर तरह के काम को करना सीखना चाहिए।

मैं चाहूंगा कि आपमें अपने पेशे के प्रति आदर और अभिमान जागृत हो। यदि आपके पिता अच्छे कारीगर थे, तो आपको कम से कम उनसे खराब कारीगर नहीं होना चाहिए।

मान लीजिए, आप एक फैक्टरी में जाने की तैयारी कर रहे हैं। एक फैक्टरी का धधा सीखने का मतलब यह नहीं है कि भविष्य में आप किसी दूसरे क्षेत्र में काम नहीं कर सकते। एक कारखाना आगे की प्रगति में बाधा नहीं बनता, उल्टे वह सार्वजनिक, राजनैतिक, प्रशासन-सबधी, और यदि मैं कहूं तो, वैज्ञानिक काम के लिए भी रास्ता खोल देता है।

आपको अपने काम का माहिर होना चाहिए। सोवियत मजदूरो को अमरीकी या युरोपीय मजदूरो से कम नहीं, अपितु अधिक कुशल बनने की कोशिश करनी चाहिए। यह बात सदा ध्यान में रखें।

पहले कम्युनिस्ट मुख्यत मजदूरो में होते थे। तब तक कोम्सोमोल नहीं था। पर, उस समय भी ऐसे तरुण लोग थे, जो कम्युनिस्टों के निकट होते थे।

आपकी आयु के लोगो के लिए हमारे यहा कोम्सोमोल है। यह सगठन तरुणो को राजनैतिक शिक्षा देता है। और मैं चाहूंगा कि मेरे सामने बैठे हुए तमाम तरुण कोम्सोमोल के सदस्य बनें। आपके बीच कुछ चुप्पे लोग हो सकते हैं, तो भी मैं चाहता हू कि ट्रेड और औद्योगिक ट्रेनिग स्कूलो के अधिकाश लोग कोम्सोमोल के सदस्य बनें।

हम राजनैतिक चेतना को बहुत महत्व देते हैं। यह हमारा उद्देश्य है कि हमारे देश का प्रत्येक व्यक्ति राजनैतिक तौर पर जागरूक हो।

कोम्सोमोल, पार्टी की देहलीज है। कोम्सोमोल तरुणो को पार्टी की सदस्यता के लिए तैयार करता है, उनकी राजनैतिक चेतना जागृत करता है। यह उन्हे सार्वजनिक कार्यवाही का आदी बनाता है, क्योकि आप समाज का अग बनकर काम करेगे। अपने काम के दौरान मे भी आपका जनता से अलगाव नही होना चाहिए, लेकिन समान काम मे लगेगे। मशीनो को व्यक्ति नही बनाते, उनके निर्माण सैकडो आदमी लगते है।

काम खुद ही एक व्यक्ति को सार्वजनिक जीवन में हिस्सा लेने के लिए उकसाता है। मै चाहूगा कि आप अपना समय सिर्फ उत्पादन के काम में सीधे काम की मशीन पर उन चीजो का उत्पादन करने में ही न लगाए जिनकी हमें आवश्यकता है, बल्कि आत्मिक विकास सगठित तरीके से कोम्सोमोल के वातावरण में करे। कोम्सोमोल सगठन भी इसीलिए है। वह आपके पूर्णरूपेण आत्मिक विकास में सहायक होगा।

इस समय एक निर्मम और भयकर युद्ध चल रहा है। जर्मन फासिस्ट हमारे देश के टुकडे-टुकडे कर देना चाहते हैं, हमारी जनता को धूल में मिला देना चाहते है। आप लोग केवल अध्ययन ही नही कर रहे हैं, बल्कि अपने तरीके से मोर्चे के साथियो की भी सहायता कर रहे है। स्कूलो और फैक्टरियो में आप युद्ध की आवश्यकताओ को पूरा करने मे लगे है। यह आवश्यक है कि आप इन आर्डरो को अच्छी तरह पूरा करे।

आप मोर्चे पर नही है। लेकिन साथियो, मै समझता हूं कि फासिस्टो के विरुद्ध हमारी जनता द्वारा चलाए जाने वाले सघर्ष में आप किसी के पीछे नही रहेगे। मै समझता हूं कि तेजी के मामले में आप अपने बडो के आगे सिर नही झुकायेगे, बल्कि आप तरुणो को

इन मामले में आगे होना चाहिए। आपको उत्पादन में और मोर्चे पर, दोनो में पथम होना चाहिए। आपको अपने से कहना चाहिए — "हम अपने पिता की ही तरह अच्छे बनेंगे। हम दिखा देंगे कि यद्यपि हम तरुण है, और उद्योग में नए-नए आए है, फिर भी हम काम करना जानते है।"

मैं काम में आपकी इस योग्यता की कामना करता हू। मेरी कामना है कि भविष्य में आप यह योग्यता पूर्णतया प्रदर्शित कर सके। (देर तक तालिया)

"कोम्सोमोल्काया प्राव्दा"

१२ नवबर १९८२

मोर्चे पर आंदोलनकारी के शब्द

मोर्चे पर काम करने वाले आंदोलनकारियों के मध्य दिये गये भाषण का अंश

२८ अप्रैल १९४३

हर आंदोलनकारी कोशिश करता है कि उसकी बातचीत दिली और मैत्रीपूर्ण हो। मैं जानता हूं कि आंदोलनकारी स्पष्टतः लोगों के पास अक्सर दिली बातचीत करने के लिए जाते हैं। और कोई आंदोलनकारी पहले से ही अपने सामने यह उद्देश्य रख ले — यही बात बातचीत की प्रत्याशित घनिष्ठता मार देती है। यदि कोई आंदोलनकारी लोगों के पास यूं ही एक कप चाय पीने के लिए पहुंच जाय और इधर-उधर की बातें शुरू कर दे, और फिर ऐसी बात करने लगे जिसमें उनकी दिलचस्पी हो, तो फिर सचमुच बातचीत में घनिष्ठता आ जायेगी।

दूसरी मिसाल। यदि किसी आदमी ने कोई अपराध किया हो और आप उसे पिदराना डांट पिलाने लगें, और कहें "अच्छा, इसके बारे में मैं और किसी को न बताऊंगा। लेकिन याद रखो, यदि यह तुमने फिर किया तो फिर मैं बात छिपा न पाऊंगा" — यह भी एक दोस्ताना आपसी रवैया होगा।

जब मैं आपसी बातचीत कहता हूं, तो मेरे दिमाग़ में यह रहता है कि लोग किसी तरह का उलझन न महसूस करें, वे अपनी दिलचस्पी की हर चीज़ पर अपने आप बहस करें और यह न महसूस करें कि आंदोलनकारी कोई निश्चित उद्देश्य लेकर आया है। यह सभी जानते हैं कि आंदोलनकारियों पर विशिष्ट विषयों की ज़िम्मेदारी होती है। उन्हें यह भी निभानी होती है। लेकिन जिस आपसी बातचीत के विषय में हम बात कर रहे हैं, वह तो अपने आप आ जाती है।

आप की चतुराई इस में है कि लोग स्वतः आप से विचार-विमर्श करने लग जाएं।

आपसी बातचीत का यह कतई मतलब नहीं है कि वह किसी एक निश्चित दिशा की ओर मुड़ी हुई न हो। वह तो उसे होना ही चाहिए। लेकिन बातचीत इस तरह हो कि लोगों को यह महसूस न हो कि आप इसी उद्देश्य से उनके पास आए हैं।

बातचीत का स्वरूप स्वयं स्थिति पर निर्भर करता है। अगर आपके श्रोताओं की संख्या अधिक है, तो वह भाषण या सभा का रूप ले सकती है। यदि आप किसी साईं के पास पहुंच जाएं, तो उसका रूप प्रश्नों के उत्तर का हो सकता है। लेकिन यदि आप चाहते हैं कि लोगों का किसी विषय का विशेष ज्ञान हो जाए, तो आप अपने को उसी तक सीमित कर दीजिए और उनसे कह दीजिए कि आज आप सिर्फ इसी विषय पर बातें करेंगे और दूसरे प्रश्नों के संबंध में फिर कभी बातें होंगी।

मैं आपका ध्यान इस बात की तरफ अवश्य खींचना चाहता हूं कि आंदोलनकारी इस बात के प्रति सचेत रहें कि वे अपने आसपास के लोगों से अधिक जानकार या होशियार होने का प्रभाव तो नहीं डाल रहे हैं। आंदोलनकारी और प्रचारक का मेरा अनुभव कई वर्षों

का है। मैं जानता हूँ कि यदि लोग यह समझ लें कि आंदोलनकारी बड़ी-बड़ी बातें करता है, अपने को उनसे अधिक होशियार समझता है, तो वह आंदोलनकारी फिर कहीं का नहीं रहता, वह लोगों का विश्वास-भाजन नहीं बन पाता। आपको लाल फ़ौज के सिपाहियों से इस तरह बातें करनी चाहिए, जैसे वे सब कुछ समझते हों। और उनमें से यदि कोई कहता है कि वह अमुक बात नहीं समझा, तो आप जवाब दे सकते हैं: "क्यों बनते हो? क्या तुम्हारी खोपड़ी में भूसा भरा है? मैं जानता हूँ कि तुम इस बात को वैसे ही समझते हो जैसे कि मैं। तुम ज़रा चालाक बनने की कोशिश कर रहे हो"। लोगों की तरफ़ आपको बड़प्पन का रुख नहीं अपनाना चाहिए। यदि कोई सिपाही किसी के बारे में कहता है—"वह नया बछेड़ा है, कुछ नहीं जानता", तो आपको उत्तर देना चाहिए—"हम इन नए बछेड़ों को खूब जानते हैं। जरा ठहर जाओ, देखना कैसा बढ़िया योद्धा निकलेगा। तुम लोग तो मोर्चे पर रह चुके हो और सब कुछ जानते हो। वह भी तुम लोगों की ही तरह हो जायेगा"। यदि लोगों के प्रति आपका यह रवैया होगा, तो वे आपका आदर करेंगे।

एक आंदोलनकारी को सच्चा होना चाहिए। लोगों के सामने रंगीन तस्वीरें मत खींचिए। जैसा जो कुछ है, वैसा ही बताइए। मुश्किलों को दिखाने से डरिए नहीं, क्योंकि आप परिपक्व, समझदार लोगों के बीच में काम कर रहे हैं।

आंदोलन-संबंधी काम में सबसे मुश्किल बात उचित तरीक़े से बोलना सीखना है। सरसरी तौर से देखने में ऐसा लगता है कि बोलना कोई बड़ी बात नहीं है, क्योंकि लोग दो वर्ष की आयु से ही बातें करने लगते हैं। लेकिन गंभीरता से देखें तो यह सचमुच मुश्किल मामला है। मुश्किल क्यों है?

आदोलनकारी को अपने विचार इतनी स्पष्टता से रखने पडते हैं कि लोगो पर वही प्रभाव पडे —जैसा वह चाहता है। साथ ही आपको अपने विचार सक्षेप में व्यक्त करने है, क्योकि समय अधिक नही होता है। आपके विचार आपके श्रोताओ की ममझ में आने चाहिए। यह सब बहुत मुश्किल है।

जहा तक भाषा का सबध है, यह आपको बडे लेखको की शैली से सीखनी चाहिए। तुर्गनेव को ही ले लीजिए। आपको और कहा वैसा विशद विवरण मिलेगा जैसा उसकी कृतियो में मिलता है? मान लीजिए, आप में से किमी से कहा जाय कि अपनी पत्नी के विषय में बताए। क्या यह बताने के लिए आपको सही शब्द मिलेगे? हर आदमी यह नही कर मकता —चाहे वह अपने निकट के लोगो को कितनी ही अच्छी तरह क्यो न जानता हो। वह आम शब्दो का प्रयोग करेगा। लेकिन एक आदोलनकारी से इमसे कही अधिक आशा की जाती है। उसे रगीन विवरण प्रस्तुत करने में भी पटु होना चाहिए।

एक आदोलनकारी के लिए मवमे अधिक महत्वपूर्ण वस्तु भाषा है। आप लोगो से उन्ही विषयो पर बाते करते है, जिन्हे वे जानते है। फलत वे इन बातो में दिलचस्पी तभी लेगे जब आप उनसे स्पष्ट और अच्छी तरह बाते कर सके। मै "लच्छेदार" भाषा नही कहता, क्योकि कुछ लोग शब्दो में वह जाते है। वे सोचते है कि यह बहुत अच्छा लगता होगा, जबकि गढी हुई शब्दावली बहुत बुरी लगती है। मै ऐसे आदोलनकारियो को जानता हूं जो एक-बारगी तीन घटे तक बोलते रह सकते है। लेकिन वे जब बोलना बद कर देते है, तो श्रोताओ के पास कुछ नही रह जाता, सिवा कुछ उद्गारों के, क्योकि उनके भाषणो में कोई विचार ही न थे। याद रखिए कि आप सिपा-हियो में भाषण दे रहे है —सीधे सादे आदमी, जो लडते हुए हवा-

रा मील बढ आए है, जिन्होंने दर्दनाक दृश्य देखे हैं। उनको रंगीन भाषा सुनाने का अर्थ है उनके गले पर छुरी चलाना। वे चाहते हैं कि आदोलनकारी स्पष्ट रूप से और सक्षेप में निश्चित विचार प्रकट करे। और हा, अच्छे विचारो को दोहराने से कुछ हानि नहीं होती। मिसाल के तौर पर, यदि कोई कहता है कि "आप बार-बार खोदने ही वाली बात क्यो दोहराते रहते हैं?", तो आप चिंता मत कीजिए। उत्तर यह दीजिए "मै इस विषय पर तब तक बाते करता रहूगा, जब तक सब खोदना जान न जाए। मै चाहता हूं कि आप व्यर्थ में ही अपने प्राण न खोयें"।

एक आदोलनकारी को परिपक्व व्यक्ति होना चाहिए। उसको बहुत अधिक स्वाध्याय करना चाहिए। मै तो यहा तक कहूगा कि आदोलनकारी को अपना तमाम बचा हुआ समय पढने में लगाना चाहिए।

एक आदोलनकारी को हमेशा अपना भाषण तैयार करना चाहिए—चाहे वह कितना ही पढा-लिखा और फौजी मामलो का माहिर क्यो न हो। आखिर, हमारा ज्ञान तो सीमित है, और इसी कारण यह आवश्यक है कि हर बार अच्छी तैयारी की जाए। अपने ज्ञान का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। इसीलिए मै विशिष्ट विषयो पर भाषणो के पक्ष में हूं, क्योकि उनसे लोगो का ज्ञान-वर्द्धन होता है। लेकिन जब आप यह महसूस करे कि लोगो को विभिन्न विषयों पर काफी भाषण दिए जा चुके हैं और वे सीधी-सादी बाते सुननी ज्यादा पसद करेगें, तो जाइए, उनके साथ एक कप चाय पीजिए और आपसी तौर पर दिल खोलकर बात कीजिए।

आपको आपसी बातचीत के लिए भी तैयारी करके जाना चाहिए, क्योकि हो सकता है कि आप से बहुत से सवाल किये जाए।

जवाब देने में टालमटोल मत कीजिए। लेकिन यदि किसी प्रश्न का आप उत्तर नहीं दे सकते, तो डरिए भी नहीं। स्पष्ट कह दीजिए "मैं नहीं जानता। मुझे इस विषय पर पढ़ना पड़ेगा। यदि मुझे उत्तर मिल जायेगा, तो मैं आपको अवश्य बताऊंगा"।

कभी-कभी यह समस्या सामने आती है "हमारे सिपाहियों में, विशेषकर बूढ़ों में धार्मिक विचारों के लोग हैं, जो क्रॉस पहनते हैं और प्रार्थना करते हैं, मगर तरुण उनका मजाक उड़ाते हैं"। हमें यह भूलना न चाहिए कि किसी को हम उसके धर्म के कारण नहीं सताते। धर्म को हम एक धोखे की टट्टी मानते हैं और उसके खिलाफ केवल शिक्षात्मक तरीकों से संघर्ष करते हैं। चूंकि जनता का काफी बड़ा हिस्सा अब भी धर्म के प्रभाव में है, इसलिए उसका मजाक उड़ा कर आप उसे दूर नहीं कर सकते। अलबत्ता, यदि कुछ युवक उन पर हंस देते हैं, तो यह कोई बड़ी भयंकर बात नहीं है। मुख्य बात यह है कि कहीं इस मजाक में आघात न पहुंचे। इस की इजाजत नहीं देनी चाहिए।

आंदोलनकर्त्ताओं को इस समय किस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए?

उन्हें संगठन की आवश्यकता को अधिक महत्व देना चाहिए। यह किस तरह करना चाहिए? एक मिसाल ले लीजिए दोपहर का समय है, फील्ड-किचन कहीं नहीं दिखाई पड़ रहा है और उसकी ढूंढ जारी है। अगर आप ऐसी स्थिति में पड़ जाएं तो आपको संगठन पर बातचीत करने के लिए बना-बनाया विषय मिल जाता है। इस पर बात कीजिए कि समय पर फील्ड-किचन पा सकने के लिए क्या क़दम उठाए जाएं, और यह कैसे किया जाए। इस तरह की बातचीत के समय रूसी ढीले-ढालेपन के खिलाफ कुछ कड़ी भाषा का प्रयोग करने

से हानि नही होगी। यदि मैं आदोलनकारी होता तो मै अपने भाषण का ९० फीसदी समय इसी पर लगाता।

आत्मतुष्टि हमारी मुख्य त्रुटि है। हम अक्सर अब भी लापरवाही करते है और अपने आप को समझा लेते है "कोई चिंता नहीं समय आने पर हम किसी न किसी तरह निभा ही लेगे"। यह सभी जानते है कि जब कोई यूनिट किसी स्थान पर अधिकार कर लेती है, तो उसे अपनी स्थिति सुदृढ करने के लिए अधिक से अधिक प्रयत्न करने पडते है। और हमलावर कार्यवाही को प्रभावशाली बनाने के लिए सब कुछ करना चाहिए और ऐसी व्यवस्था करनी चाहिये जिससे हानि तथा बलिदान कम से कम मात्रा तक सीमित हो। अक्सर हम ये चीजें हडबडाहट में करते है और फलत नतीजे अच्छे नहीं होते। आत्मतुष्टि को जड से खतम कर देना चाहिए।

युद्ध के पहले दौर में हमें अनेक मुश्किलो का सामना करना पडा, क्योकि हमने उचित सगठन नहीं किया था। हर फौजी आदमी को अव्वल दर्जे का सगठन-कर्ता होना चाहिए। पहले बहुत से कमाडर समझते थे कि उनके कमाड का स्थान वही है, जहा लडाई का सगठन करना है। तो भी वह ऐसी जगह है जहा सगठन की अतिम मजिल होती है। एक लडाई के दौरान में जब कमाडर अपनी कमाड की जगह पर पहुचता है, तब तो वह अपनी तैयारी के किए गए कामो की फसल काटता है।

मै समझता हूं कि सिपाहियो को होशियार रहने की शिक्षा देना बहुत ही आवश्यक है। मोर्चे पर, खुले में खाना खाने बैठ जाने से काम नही चलेगा। वहा एक गोला गिर सकता है, जिसके भयकर नतीजे हो सकते है। आदमी मारे जायेंगे और उनकी जगह दूसरे भेजने पडेंगे। आप लोगो को चाहिए कि खतरे के प्रति लापरवाह दृष्टिकोण रखनेवालो के खिलाफ बहुत ही जोरदार आवाज उठाए।

आपको लोगो मे फौजी चुस्ती और चतुरता विकसित करने के लिए भी आदोलन करना चाहिए। मै "चतुरता" शब्द पर जोर देता हूं, क्योंकि आपको साधारण लाल फौजियो के बीच काम करना है, जिनकी कार्यवाही का क्षेत्र सीमित होता है। आपको चाहिए कि आप लोगो पर यह प्रभाव डाले कि वे अपनी कार्यवाहियो पर विचार करे, हर चीज को जितना संभव हो उतनी अच्छी तरह करे, और जब भी हो सके, शत्रु को दाव दे जाए। चलते-चलते यह बता दू कि चादमारी अच्छी चीज है क्योंकि, वह लोगो को अपने कामो पर विचार करने का आदी बनाती है उनमें एक शिकारी के गुण विकसित करती है। निशानेबाज अपने शत्रु को मारने की कोशिश करता है और शत्रु निशानेबाज को। इसीलिए निशानेबाज में अधिक से अधिक चुस्ती होनी चाहिए। उसकी आखें तेज और हाथ दृढ होने चाहिए। ये गुण न सिर्फ़ हमारे निशानेबाजो में, बल्कि सभी लड़नेवालो में भी विकसित होने चाहिए।

लोगो को खाई खोदना सिखाने की तरफ ध्यान दीजिए। कभी-कभी हमारे लोग इस काम के प्रति टालमटोल दिखाते है, विशेषकर हमले के समय। वे कहते है "यह देखते हुए कि आध घटे में हमें इनकी जरूरत नही रह जायेगी, खाइया क्यो खोदी जाए?" आप उन पर यह प्रभाव डालिए कि यह काम हमेशा ही आवश्यक है। और यदि खाई की आवश्यकता नहीं भी है, तो उनके लिये यह आवश्यक शिक्षा है।

मै चाहता हूं कि घायलो के प्रति भी और अधिक ध्यान दिया जाय। घायल संवेदना के दो प्रिय शब्द चाहते है। आप अपनी भल-मनसी इस प्रकार प्रदर्शित कर सकते है। एक घायल सिपाही सदा ही मीठे शब्द याद रखेगा और उनके विषय में हजार विभिन्न

स्थानो पर बात करेगा। इस तरह एक सहानुभूति का शब्द दूर-दूर तक प्रतिध्वनित होगा।

लाल फौज के मृत व्यक्तियो का हमें सम्मान करना चाहिए। मृत व्यक्तियो के प्रति प्राय लोगो का क्या रवैया होता है? जब कोई मर जाता है, तो उसके आसपास लोग फुसफुसा कर बोलते है। मृत व्यक्ति के प्रति उचित सम्मान का प्रदर्शन होना चाहिए और आप लोगो को यह शुरू करना चाहिए। मैने सोवियतो की कार्यकारिणी कमेटियो के अध्यक्षो को लिख भेजा है कि वे सार्वजनिक कब्रस्तानो को ठीक करा दे और यह काम तरुण पायोनीयरो को सौंपा जाना चाहिए। अपनी यूनिटो में आपको इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि अत्येष्टि-क्रिया उचित रूप से हो और कब्रो पर चबूतरे बनाए जाए। अलबत्ता, जब फौज आगे बढ रही हो, तो यह हमेशा सभव नही है। लेकिन निश्चय ही, पिछडी टुकडी में भी आदोलनकारी होगे। आदो-लनकारियो के नाते आपको यह देखना है कि लाल फौजियो में अत्येष्टि-क्रिया गभीर समारोह का रूप ले। इससे लोगो में स्वदेश के रक्षको के प्रति स्नेह भरेगा।

आदोलनकारी को सदा ही जनता से आगे रहना चाहिए, जिससे वह उसके नेतृत्व को मानें। कार्यवाही के दौरान में आदोलनकारी की भूमिका विशेषत महान होती है। कभी-कभी ऐसा होता है कि एक अच्छी यूनिट भी करारी हार के बाद अपनी शक्ति में विश्वास खो देती है। ऐसे अवसरो पर आदोलनकारी ही उन्हे उत्साहित कर सकता है और लडाई की प्रगति में मोड ला सकता है।

आदोलनकर्ता को सदा वस्तु-स्थिति से परिचित होना चाहिए। उसे मालूम होना चाहिए कि वह किस तरह के लोगो में काम कर

रहा है। आप लोग योद्धाओं के बीच, अनुशासित लोगों के बीच काम करते हैं। लेकिन उन पर बहुत बोझ है, यह याद रखना चाहिए। साथ ही यह भी याद रखना चाहिए कि वे भिन्न-भिन्न जाति, भिन्न-भिन्न आयु और भिन्न-भिन्न चरित्र के व्यक्ति हैं। एक आंदोलनकर्ता को यह सब बातें ध्यान में रखनी चाहिए।

"मोर्चे पर आंदोलनकारी के शब्द",
पृष्ठ १५—२४ सुरक्षा-जन-कमिनरियट का
प्रकाशन गृह १९४३

बोल्शेविक पार्टी का साहसी सहायक अखिल-सघीय लेनिनवादी नौजवान कम्युनिस्ट लीग की पचीसवी वर्षगाठ पर

अक्तूबर १९४३

कोम्सोमोल और उसके साथ ही सोवियत सघ के तमाम तरुण कोम्सोमोल के जन्म की पचीसवी वर्षगाठ मना रहे है। नौजवान-लीग ने एक शानदार रास्ता तै किया है। हमारे कोम्सोमोल ने देश की महान सेवायें की है। सोवियत व्यवस्था के लिए सघर्ष के दौरान में जन्म लेकर पार्टी के आह्वान पर कोम्सोमोल पुरानी पीढी से कधे से कधा मिलाकर नवजात सोवियत प्रजातत्रो की रक्षा के लिए व्हाइट-गार्डो और दखलदाज़ करनेवालो के विरुद्ध लड चुका है।

इन २५ वर्षों में नौजवान-लीग को अच्छी ट्रेनिंग मिली है। कोम्सोमोल ने राज्य के सभी क्षेत्रो—आर्थिक, सास्कृतिक और शैक्षिक—में स्थायी अधिकार प्राप्त कर लिए है। जहा कही भी युवा-शक्ति, तरुण-उत्साह, एव आत्मवलिदान की आवश्यकता पडी, कोम्सो-मोल के सदस्य सदैव ही आगे रहे। गृह-युद्ध के वाद आर्थिक पुनर्स्था-पना में, विशेषकर उराल क्षेत्र के औद्योगीकरण में कोम्सोमोल और तरुणो ने जो ज़ोरदार भाग लिया, उसकी याद दिलाना काफी है।

मागनितोगोर्स्क लोहा और इस्पात के कारखानो, कोयला की खानो, विद्युत-शक्ति-केन्द्रो के कार्यो में, कोम्सोमोल के लाखो मेंबरो और अन्य तरुणो ने निस्वार्थ भाव से हाथ बटाया। यह उन्ही के हाथ थे, जिन्हो ने स्तालिनग्राद और खारकोव के ट्रैक्टर के कारखानो और द्नीपर नदी के पन-बिजली घर का निर्माण किया। और अपने महान कामो की गाथा के रुप में उन्होंने ही आमूर नदी के तट पर अजेय जगलो के बीच एक सूने स्थान पर अपने ही नाम पर एक नगर बसाया—कोम्सोमोल्स्क। यह सुदूर-पूर्व का काफी महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र बन गया है जिनका महत्व दिन पर दिन बढता जा रहा है।

खेती के सामूहीकरण में भी कोम्सोमोल की सेवायें उतनी ही महान हैं। देहानो में कोम्सोमोल सगठन ने पार्टी-नीति का सच्चाई से प्रचार किया है। सामूहिक खेती व्यवस्था को दृढ बनाने में कोम्सोमोल पार्टी का साहसी सहायक था।

हमारे देश की सुरक्षा को सुदृढ बनाने में भी कोम्सोमोल ने काफी हाथ बटाया है। जहाजी और हवाई बेडो पर कोम्सोमोल की टुकडियो का तैनात कोम्सोमोल के इतिहास में गौरवपूर्ण बात है। कोम्सोमोल के हजारो सदस्य जहाजी बेडे में भरती हुए, जहाजी स्कूलो में भरती हुए। इस प्रकार युद्ध शुरु होते-होते हमारा जहाजी बेडा एक शक्तिशाली ताकत बन चुका था। ओदेसा, सेवस्तोपोल, लेनिनग्राद के वीर नाविको की सारी दुनिया तारीफ कर रही है। हमारी जनता इन वीर नाविको के करिश्मो को हमेशा याद रखेगी।

हमारा हवाई बेडा बिल्कुल नीचे से निर्मित हुआ। और इसके निर्माण में कोम्सोमोल ने कम हिस्सा नहीं लिया है। मैं तो कहूगा कि इसके निर्माण में कोम्सोमोल का हिस्सा जहाजी बेडे के निर्माण मे अधिक है। वर्तमान युद्ध में हमारी जनता और विशेषत: कोम्सो-मोल के प्रयत्नो का बहुत अच्छा नतीजा निकला है। कोम्सोमोल के

सदस्य जो दो-दो वार "सोवियत संघ के वीर" की उपाधि से विभूषित हो चुके हैं—जैसे अलेक्सान्द्र मोलोद्‌ची, वोरिस सफोनोव, दिमित्री गिलन्का, वसीली ज़ैत्सेव, मिखाइल वोग्दारेन्को और वसीली एफ़ेमोव, सोवियत सघ के वीर—जैसे निकोलाई गस्तेलो, विक्तोर तलालिखिन, प्योत्र खारीतोनोव, स्तेपन ज्दोरोव्त्सेव, मिखाइल ज़ूकोव—और वहुत से ऐसे दूसरे नाम हवावाज़ो की आनेवाली पीढियो के लिए आदर्श वने रहेंगे।

इस तरह इन पचीस वरसो में कोम्सोमोल ने, जिसका जन्म व्हाइट-गार्डों और दखलदाज़ो के विरुद्ध सघर्ष में हुआ था, आत्म-वलिदान करके भी उद्योगो को पुनर्स्थापित तथा विकसित करने के लिए काम किया, देहातो में सामूहिक खेती व्यवस्था की स्थापना में सहायता की। विश्वविद्यालयो, इस्टीट्यूटो, और फैक्टरी प्रयोगशालाओ तथा प्रायोगिक फार्मों पर सफलता से विज्ञानो का पाडित्य हासिल किया और इस तरह राज्य की सुरक्षा-शक्ति को सुदृढ वनाया। निर्माण कार्य पूरी तेज़ी से चला। शातिपूर्ण श्रम और रचनात्मक वैज्ञानिक कामो के लिए कोम्सोमोल और दूसरे तरुणो के सामने असीम अवसर आ गए।

* * *

हिटलरी जर्मनी द्वारा हमारे ऊपर लादे गए युद्ध ने सोवियत जनता के शातिपूर्ण रचनात्मक कार्यों का अत कर दिया। कोम्सोमोल और हमारे तरुणो के लिए वहुत ही कठिन दिन सामने आ गए। सोवियत समाजवादी प्रजातन्त्र सघ की सव जनता की रक्षा परमावश्यक हो गई।

एक राष्ट्र के लिए—उसकी राज्य व्यवस्था, उसकी नीति और नेतृत्व के लिए—युद्ध एक वहुत ही कठिन परीक्षा है। यही वात

किसी भी सार्वजनिक संस्था के लिए विशेषत कोम्सोमाल के लिए भी कही जा सकती है। युद्ध के पहले, हमारे विकसित होते हुए निर्माण-कार्यों के प्रभाव से, हमारी आर्थिक और सांस्कृतिक सफलताओ के कारण कोम्सोमोल के सदस्यो और अनेक सोवियत-वासियो में आम तौर पर शांति-काल के रुझानात घर कर गए थे। युद्ध-काल में कोम्सो-मोल के सामने नए काम आए। यह कहने की आवश्यकता नही है कि शान्ति-काल की आदतो से छुटकारा पाना आसान नही होता है। विशेषकर जब यह सोचें कि कोम्सोमोल के सदस्यो की संख्या लाखों-लाख है। तो भी, यह कोम्सोमोल की प्रतिष्ठा के लिए कहा जा सकता है कि वह इस काम में सतोषजनक सफलता प्राप्त कर रहा है।

"सब कुछ युद्ध के लिए"—कितना सीधा और विशद नारा यह है। कोम्सोमोल के सदस्यो और दूसरे तरुणों ने इसे बड़े उत्साह से अपनाया। लेकिन जिसकी अभी भी आवश्यकता है, वह है निश्चित अमली कामों में तरुण-शक्ति का संगठनात्मक उपयोग। इस राह की बहुत बड़ी मुश्किलें थी। वे अब भी मौजूद है।

तरुण तो अब जीवन पा रहे है। लेकिन युद्ध जनता से सभी कुछ की माग करता है—उनके प्राण तक की। लाखों-लाख लोगो को यह बात उचित रूप से समझानी है कि युद्ध जबरन तौर पर हमारे ऊपर थोपा गया है और अब इससे बचा नही जा सकता, और यह कि इस में भाग लेना पवित्र काम है। कोम्सोमाल सगठन ने इस दिशा म बहुत कुछ किया है और कर रहा है।

यह स्वाभाविक था कि कोम्सोमोल के सामने अन्य सोवियत सगठनो की भाति ही सर्वोपरि महत्व का प्रश्न यह था कि वह कहा और कैसे अपनी शक्तियों का इस्तेमाल स्वदेश रक्षा के लिए करे। कोम्सोमोल की परम्पराओं के प्रति वफादार हजारों-हजार कोम्सोमोल के सदस्य—युवक और युवतिया स्वेच्छा से फौज में भरती हुए तथा

जर्मन-अधिकृत क्षेत्रो में पर्तिजन दस्तो में शामिल हुए। मोर्चे के प्रति विशेप आकर्षण—कोम्सोमोल सदस्यो की यह विशेपता आज भी वनी हुई है।

मुश्किलो और खतरो मे हमारे तरुण घवडाते नही, उल्टे इन तरुणो को आकर्पित और उत्साहित करते है कि वे अपना जौहर दिखायें। हमारे सोवियत तरुण, जो युद्ध के मोर्चों पर वहादुरी से लड रहे है, न सिर्फ कोम्सोमोल के गौरवपूर्ण इतिहास का निर्माण कर रहे है, वल्कि सोवियत जनता की देशभक्ति और आत्मवलिदान का सुदर उदाहरण प्रस्तुत कर रहे है।

युद्ध निर्मम और जनता के लिए भार स्वरूप होते है। घृणित जर्मन फासिस्टो ने विशेपत इस युद्ध को दानवी स्वरूप दे दिया है। अधिकृत प्रदेशो की जनता पर होने वाले अमानुपिक अत्याचार की कल्पना कीजिए, वूढो और वच्चो का कत्लेआम, घायल और वीमारो को पीडा पहुचाने की कार्यवाहिया, माताओ का उनके दुधमुहों से विलग किया जाना, उन्हे वाध्य श्रम के लिए फासिस्ट जर्मनी भेज देना, कोडे लगाना, लोगो को गोलियो से उडाना, फासियो पर लटकाना—जर्मन फौजी हेड-क्वार्टर ने यह सव पहले ही निश्चय कर लिया था। ऐसे आतक से जर्मन फासिस्टो ने सोचा था कि वे हमारी जनता की रीढ तोड देंगे और उन्हें गुलाम वना सकेंगे।

सोवियत जनता, सोवियत फौज और विशेपत सोवियत तरुण, जिनका लालन-पालन ऊचे आदर्शों पर हुआ है, पहले तो जर्मन फासि-स्टो की इस कूटनीति को समझ ही नही पाये।

आज का युद्ध लडनेवालो पर वडा मानसिक प्रभाव डालता है। पर मुख्य वात यह है कि वर्तमान युद्ध शस्त्रास्त्रो के प्रयोग में विशेप प्रवीणता की माग करता है। अतत शारीरिक दृढता और फुर्ती तो चाहिए ही। जर्मन लुटेरो के खिलाफ इस सघर्प में हम देख रहे हैं

कि किस तरह हमारे वीर सैनिक जीजान से लड रहे है—पैदल सिपाही, हवाबाज, टैकची, तोपची, घुडसवार, नाविक, हवाई फौज के सिपाही आदि। कोम्सोमोल को इस बात पर गर्व होना चाहिए कि ५०० से अधिक योद्धा जिन्हे "सोवियत सघ के वीर" की उपाधि मिली है, और हजारो अन्य सैनिक जिन्हे पदक और तमगे मिले है, वे भी कोम्सोमोल के उच्च आदर्शो मे पले है।

यह बात निर्विरोध कही जा सकती है कि मोर्चे पर तरुणो द्वारा प्रदर्शित शौर्य का जन-स्वरूप है। यदि एक आदमी शौर्य का कोई करिश्मा करता है, तो बीसियो और सैकडो उसके पदचिह्नो पर चलते है। इवान स्मोल्याकोव, लुदमिला पावलिचेको, नताल्या कोवशोवा, दिमित्री ओस्तापेंको, मरिया पोलीवनोवा, कुर्बन दुर्दी, इवान सिवकोव, मशीनगनर नीना ओनिलोवा, जो ओदेसा के बुनाई के कारखाने में काम करती थी, और अन्य नागरिक सोवियत वीरता के प्रतीक बन गए है। हमारे लाखो लडाकू योद्धा उन्ही की तरह बनने की कोशिश कर रहे है। कितने ही वीरो ने कोम्सोमोल के सदस्य हवाबाज गस्तेलो, पैदल सिपाही मत्रोसोव, पनफ़िलोव डिवीजन के रक्षक मुनावेक सेंगिरबईव और दूसरो ने लाजवाब बहादुरी को दोहराया है।

अब वीरो को उस नये दल की बात सुने, जिसने नीपर को पार किया इन मे भी काफी कोम्सोमोल के सदस्य है। इस महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के इतिहास मे नीपर के पार करने से एक गौरवपूर्ण पृष्ठ बढ गया है।

कोम्सोमोल के सदस्य बहुत बडे पैमाने पर पर्तिजन आदोलन में शामिल हो रहे है। जर्मन फौजी कमाड ने इसे आतक की सहायता से दबा देने की दुराशा की थी। लेकिन शत्रु की क्रूरता जितनी ही बढती गई, पर्तिजन आदोलन उतना ही मजबूत होता गया। और अब

समय-समय पर जर्मन आक्रमणकारी गुर्राते है कि "रूसी लोग युद्ध के नियमो के अनुसार नही लड रहे है"। हा, पर्तिज़न आदोलन हमारे नगरो और गावो के विनाश का जनता द्वारा वदला है। पर्तिज़न आदोलन सोवियत जनता पर किये गये अत्याचारो, मार-काट, लूट-पाट का वदला है। जर्मन लुटेरे चाहे जितना गुर्रायें—अव उन्हें ईंट का जवाव पत्थर से मिल रहा है।

वर्तमान युद्ध में पर्तिज़नो के महत्व को अधिक करके आकना मुश्किल है। लेकिन एक वात निश्चित है कि वह सभी की आशाओं से अधिक फैल गया है। सोवियत पर्तिज़नो की कार्यवाहियो के कारण हज़ारो-लाखो जर्मन अफसरो और सिपाहियो का नाश हो चुका है। हज़ारो इजन, फौजें और लडाई का सामान ले जानेवाले हज़ारो रेल के डिव्वे उलट दिए गए है। टेलीफोन और टेलीग्राफ के साधनो, कमाड की चौकियो आदि का पर्तिज़नो द्वारा विनाश—इस सवने जर्मनो के पिछवाडे को अविश्वसनीय वना दिया है और जर्मन फौज के आवागमन के साधनो को असगठित कर दिया है। मुख्य वात यह है कि पर्तिज़न अपनी कार्यवाहियो से जनता को दुश्मन का प्रतिरोध करने के लिए उत्साहित कर रहे है और फासिस्ट हमलावरो पर निश्चित विजय का विश्वास जनता में भर रहे है।

पर्तिज़नो ने महान सफलताए प्राप्त की है। उनका सघर्ष भी कठोर है। हर समय खतरा उनके सर पर झूलता रहता है। पर्तिज़नो से पर्तिज़न सघर्ष उनके दैनिक जीवन और लडाई दोनो ही में कठिन माग करता है। युद्ध की इन कठिन परिस्थितियो में से गुज़र कर कोम्सोमोल पर्तिज़न अपनी कठिनाइयो पर न सिर्फ विजय करके वाहर निकले है, वल्कि जर्मन लुटेरो, हत्यारो और औरतो की इज्ज़त लूटने-वालो से मातृभूमि की मुक्ति के लिए निडर और अथक योद्धाओ के रूप में सामने आए है।

जर्मन युद्ध-पक्तियो के पीछे हजारो कोम्सोमोल के सदस्य बहुत ही कठिन परिस्थितियो में गुप्त सघर्ष चला रहे है। वे स्थानीय जनता को अधिकार करनेवाली जर्मन शक्तियो के खिलाफ सघर्ष करने के लिए सगठित कर रहे है। अपने जीवन की बाजी लगाकर वे युवको का सगठन कर रहे है। बातचीत द्वारा सुनी और देखी चीजो का बयान करके, "अफवाहे" फैला कर, अखबार और पर्चे बाटकर, और अन्य दूसरे तरीको मे कोम्सोमोल के सदस्य जनता तक सत्य पहुचाते है, उनमें लाल फौज की आनेवाली जीत के प्रति विश्वास भरते है और झूठे फासिस्ट प्रचार का भडा फोड करते हैं।

हमारी जनता को अपने इन सबसे अच्छे बेटो पर गर्व है। उन पर्तिजनो में, जिन्हे "सोवियत सघ का वीर" की उपाधि से विभूपित किया गया है, बाईस कोम्सोमोल के सदस्य है। इसके अलावा हजारो नौजवान पर्तिजनो को आर्डर या तमगे मिले है। लीजा चैकिना, साशा चेकालीन, जोया कोस्मोदेम्यान्स्काया, अन्तोनीना पेत्रोवा, फिलिप स्त्रेलेत्स, व्लादीमिर कूरीलेको, मिखाईल सिलनित्स्की, व्लादीमिर रिया-बोक, इग्नातोव-बधु और अन्य सोवियत सघ के कोम्सोमोल वीरो के नाम समूची जनता जानती है और प्यार से उनको याद करती है। इन अमर वीरो को पर्तिजन सघर्ष के इतिहास में, और इस तरह महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के इतिहास में विशेष स्थान प्राप्त होगा। स्वदेश के लिए सर्वोच्च लगन और महान सेवा के आदर्शों के लिए नयी पीढियो के लिए ये नाम मिसाल बन जायेंगे।

हिटलरवादियो ने उस पर हमला किया, जिसे सोवियत तरुण सबसे ज्यादा प्यार करते है—अपनी आजादी, अपने उच्च सिद्धात, सोवियत सस्कृति की तमाम आत्मिक और भौतिक शक्ति का खजाना, जो तरुणो का जन्मसिद्ध अधिकार है। इसीलिए, अपने भविष्य के लिए हमारे तरुण मौत से खेल रहे है। हर व्यक्ति उस उल्लेखनीय बात

को जानना है कि वोरोशीलोवग्राद क्षेत्र के क्रास्नोदोन नगर में "यंग-गार्ड" (तरुण रक्षक) कोम्सोमोल संगठन की स्थापना हुई है। "यंग-गार्ड" संगठन के ओलेग कोशेवोई, इवान जेम्नुखोव, सेर्गेई त्युलेनिन, उल्याना ग्रोमोवा, ल्युबोव शेव्त्सोवा और दूसरे सदस्यों ने आतंक के बावजूद बर्बर जर्मनों के आगे झुकने से इनकार कर दिया। और आजादीपसन्द सोवियत जनता के तमाम उत्साह के साथ, अपनी शक्ति से परे लगनेवाले कठिन संघर्ष को हाथ में लिया।

फ़ासिस्ट लुटेरे सोवियत जनता को बेइज्जत और पददलित करना चाहते थे, वे उनके दिलों में आतंक और भय भर देना चाहते थे। लेकिन वे असफल हुए। हमने अपने बीच जनता की, सोवियत देश की उच्च और ईमानदारी से सेवा करने वालों की अमर मिसालें देखी है।

कोम्सोमोल द्वारा हमारे पिछवाड़े-उद्योग, कृषि और मोर्चे की जरूरत पूरी करने वाले दूसरे क्षेत्रों में किये जाने वाले काम का बड़ा महत्व है। अनेक कारखानों में बहुमत तरुण और तरुणियां ही अधिकतर हैं। और हमारे उद्योग, औद्योगिक ट्रेनिंग स्कूलों से लगातार आनेवाले मजदूरों की टुकड़ियों द्वारा जीवित रखे जा रहे हैं, ये ही स्कूल ट्रेनिंग देने के साथ ही काफी युद्ध के आर्डरों को भी पूरा कर रहे हैं।

यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि कोम्सोमोल के तमाम सदस्य और आम तौर पर सभी तरुण, अपनी तमाम शक्ति और योग्यता मोर्चे के लिए लगा रहे हैं और अपनी पहल तथा रचनात्मक उत्साह का प्रदर्शन कर रहे है।

अपने उद्योग की प्रभावात्मकता का अनुमान जर्मन उद्योग से मुक़ाबला करके लगाया जा सकता है। हिटलरी जर्मनी ने समूचे यूरोप को लूटा और लाखों मजदूरों को अपने देश में बाध्य श्रम के लिए

भेजा। तो भी, जर्मन कारखानेदार सदा ही श्रमिको की — विशेपत कुशल श्रमिको की — कमी का रोना रोते रहते है। श्रमिको का क्या हो रहा है? जर्मन कारखानो में अमानुपिक श्रम-शोपण, पिटाई, भुखमरी और रोगो के कारण मजदूर, विशेपकर विदेशी मजदूर वहुत मर रहे है। मानव-शक्ति का जिस तरह विनाश किया जा रहा है, उससे फासिस्ट जर्मनी दानव मिनोतार की तरह हो गया है, एक यूनानी दतकथा के अनुसार, जिसके पास युवक और युवतिया फेक दी जाती थी और वह उन्हे खा डालता था। मिनोतार की तरह ही हिटलर भी अपने सहयोगियो और दासो से लगातार वढती जाने वाली भेंटो की माग कर रहा है।

हमारे इजीनियरो और टेकनीशियनो को जिनमें तरुण इजीनियर भी शामिल है, टेकनिकल प्रक्रियाओ को सुधारने, मजदूरो के श्रम को हलका करने की निरतर चिता है। फलत हमारे उद्योगो का उत्पादन परिमाण और गुण — दोनो के लिहाज मे ऊची सतह पर है। इसका मतलव यह हुआ कि वाध्य श्रम वाले जर्मन देश के मुकावले हमारी स्वतत्र, और देशभक्त जनता की उत्पादन-शक्ति कई गुना अधिक है। जर्मन एकाधिपतियो के मुनाफे वहुत वढ गए है, और जहा तक उनका सवध है, यही मुख्य वात है।

हमारी खेती का मुख्य आधार भी युवक-युवतिया है। हजारो सामूहिक खेती वाले गावो में वे ही अगुआ है। इस क्षेत्र में भी, खेतिहर उत्पादन को गिरने से रोकने के लिए कोम्सोमोल ने वहुत कुछ किया है। अनेक प्रदेशो में, विशेपकर केन्द्रीय प्रदेशो में, जव से युद्ध शुरू हुआ है तव से फसले काफी वढ गई है। हमारी नारियो ने भी इस क्षेत्र में स्वदेश की महान सेवा की है। पुरुषो के मोर्चे पर चले जाने के वाद ट्रैक्टर ड्राइवरो, कम्वाइन आपरेटरो और दूसरी श्रेणी के मजदूरो की ट्रेनिग के लिए काफी काम करना था। ट्रैक्टर और कम्वाइन

आपरेटरो जैसे टेढ़े पेशो को हमारी युवतिया सफलता के साथ सीखती जा रही हैं। अनेक युवतियो ने, ट्रैक्टर चलाने में निश्चित सीमा से कही अधिक नतीजे दिखाए है।

मोर्चे और उद्योग की आवश्यकता के लिए देहाती क्षेत्रो में कोम्सो-मोल और तरुणो द्वारा कृषि उत्पादन की सफलताओ की मैं अनेक मिसाले दे सकता था। मैं उन्हे इसलिए नही दे रहा हूं, कि वे रोज ही रेडियो और अखबारो द्वारा प्रचारित होती रहती है। एक बात कही जा सकती है — यह कि जब अपने प्रचार में हिटलरी कूढमग्ज लोग, हो सकता है कि वे बेईमान भी हो (बहुत सभव है कि वे दोनो ही हो), प्राय सोवियत देश में अकाल पडने की भविष्य-वानी करते रहते है, वे भूल जाते है कि इस स्वतत्र भूमि पर जहा स्वतत्र श्रम का राज्य है, जहा के किसान हिटलरी गुडो के विनाश की भावना से ओत-प्रोत है, जहा की जमीन भी, जनता की भावना की तरह ही उर्वरा है, वहा अकाल का क्या काम? इस क्षेत्र में हमारे देहाती क्षेत्रो के कोम्सोमोल सदस्यो और दूसरे तरुणो द्वारा बहुत काम किया गया है।

मोर्चे, उद्योग और खेती-बारी के क्षेत्र में कोम्सोमोल सदस्यो द्वारा किए गए महान कार्यों के बारे में कहते हुए मैं एक और काम की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं, मुझे विश्वास है कि वे इसको पूरा करने के लिए भी आगे आएगे। मैं ध्वस्त नगरो और गा-वो के पुनर्निर्माण एवं पुनसस्थापन तथा जर्मन अधिकृत प्रदेश के नाग-रिको की सहायता के बारे में कहना चाहता हूं।

सोवियत जनता तरुणो को गर्व और स्नेह से देखती है। सोवियत तरुणो के जीवन में युद्ध एक तूफान की तरह आया। युद्ध ने उनके सामने दृढता से स्वदेश-रक्षा, भविष्य की रक्षा और कठिन मुश्किले झेलने की भयावह आवश्यकता पेश की। दो साल से अधिक अरसा

गुजरा, जव से हमारे तरुण शत्रु के विरुद्ध उग्र सघर्प में लगे हुए हैं। वे वहादुरी से अपने पिताओ और भाइयो के साथ-साथ अपनी जनता की स्वतत्रता और खुशियो के फरहरे को आत्मवलिदान की भावना से ऊचा किए हुए है। सोवियत तरुणो, उसके अगुआ दस्ते—कोम्सोमोल की शारीरिक और आत्मिक गुणो के लिए युद्ध वहुत ही कठिन परीक्षा था। हमारे कोम्सोमोल के सदस्य, हमारे तरुण, प्रतिष्ठा के साथ यह परीक्षा पास कर रहे है। मोर्चे की ही तरह, पिछवाडे में भी हमारे तरुण अथक परिश्रम कर रहे है। वे स्वदेश के प्रति अपने कर्तव्यो के वारे में पूरी तरह जागरूक है। वे अपनी तमाम शक्ति और योग्यता अपने सवसे कट्टर शत्रु पर विजय पाने के लिए लगा रहे है।

विदेशो में अनेक लोग थे, विशेपकर युद्ध के शुरू-शुरू में, जो सोवियत जनता की उच्च देशभक्ति और लाल फौज की दृढ प्रतिज्ञता के कारणो को जानना चाहते थे। सोवियत सघ की जनता की देशभक्ति का श्रोत हमारे लिए स्पष्ट है। यह स्रोत उनके स्वदेश-प्रेम, अपनी जनता, अपनी सस्कृति और जीवन के अपने तरीके के प्रति स्नेह है। सोवियत जातियो के महान परिवार में चूकि सभी वरावर है, और वे एक-दूसरे के प्रति सम्मान, आपसी विश्वास और दोस्ती की भावना से ओत-प्रोत है, इसीलिए सोवियत सघ दृढ और अजेय है।

हमारे युवको की देशभक्ति की उच्च भावना और लाजवाव वीर-ता का एक निर्णयात्मक स्रोत कोम्सोमोल और कम्युनिस्ट पार्टी का अटूट सवध है। पार्टी, समान उद्देश्य के लिए शौर्यपूर्ण करिश्मे दिखाने के लिए कोम्सोमोल को उत्साहित करती है। हमारी पार्टी का इतिहास, जनता के आदर्शों के लिए उसका सघर्प, देशभक्तिपूर्ण युद्ध के दौरान में हमारे तरुणो के लिए उत्साह के अक्षुण्ण स्रोत पहले भी रहे है

और अब भी है, और वीरतापूर्ण कार्य-कलापो के लिए उनको उत्साहित करते रहे है। हमारी पार्टी के उद्देश्य महान है जनता की स्थिति को सुधारना, उनकी भाईचारे की एकता की स्थिति को बढाना। हमारी पार्टी इन उद्देश्यो के लिए लडी है और लड रही है। और इन्ही उद्देश्या के लिए हमारा कोम्सोमोल भी पार्टी के साथ-साथ, और उसकी रहनुमाई में निस्वार्थ सघर्ष कर रहा है। इस उद्देश्य में समूचा सोवियत युवक-समाज कोम्सोमोल के साथ है।

"प्राव्दा"

२६ अक्तूबर १६४३

प्रचार और आदोलन के बारे मे कुछ शब्द

मास्को के कम्युनिस्ट सगठनो के मत्रियो के सम्मेलन मे दिया गया भाषण

१२ जनवरी १९४४

साथियो, मैने ६ भाषण सुने, मै समझता हूं कि वे क़रीब-करीब वैसे ही है, जैसे यहा पर मौजूद पार्टी-सगठनो के मत्रियो द्वारा दिए जायेंगे।

हमारे प्रारभिक पार्टी-सगठनो के मत्रियो की विशेषता क्या है? उनकी व्यावहारिकता। आपने ध्यान दिया होगा कि तमाम साथी जो यहा बोले, उन्होने मसलो पर व्यावहारिक तरीके से प्रकाश डाला। यह कोई बुरी बात नही है। बोल्शेविज्म कभी भी किसी चीज के व्यावहारिक पहलू को नजरअदाज नही करता। किसी पार्टी-कार्यकर्ता का व्यावहारिक होना—उसका अच्छा गुण है। साथ ही मै महसूस करता हूं कि समस्याओ के व्यावहारिक पहलू के सबध में ही मत्रियो का बोलना काफी नही है। उन्हे अनुभव को आम स्थापना का रूप देना भी सीखना चाहिए। यद्यपि चीजो का एकत्रीकरण करना आवश्यक है, तो भी यह काम का सिर्फ एक भाग ही है। कम्युनिस्टो की विशेषता यह है कि

वे व्यावहारिक समस्याओ के, व्यावहारिक कामो के समूचेपन के आधार पर आम स्थापनाए करते है, उन्हें वे समूची सवद्ध जजीर की कडी की तरह जोड देते है। अच्छा, तो फिर आपके व्यावहारिक काम की परीक्षा से और उस पर आधारित आम स्थापना से लगभग यह नतीजा निकलता दिखाई देता है कि आप पार्टी के सामाजिक काम को उत्पादन के काम से अलग देते है। लगता है कि आप इस तरह सोचते है कि एक व्यक्ति चाहे वह पहली श्रणी का श्रमिक हो, चाहे वहुत ही लगनवाला कम्युनिस्ट हो, वह तव तक सामाजिक काम करनेवाला नही समझा जायेगा, जव तक वह शिक्षा-केन्द्रो में सक्रिय न हो, सभाओ में वोलता न हो, आदोलनात्मक काम न करता हो।

व्यक्तिगत (मै व्यक्तिगत शब्द पर जोर देता हूँ) तौर से मुझे लगता है कि सामाजिक कार्यों और आर्थिक कार्यों में यह भेद करना ठीक नही, उत्पादन से सवधित और हमारे राज्य के चरित्र से कुछ वहुत ज्यादा फिट नही वैठता। इस तरह का रवैया शायद पुराने जमाने के कम्युनिस्टो की विशेषता समझी जाती हो। क्यो? क्योकि क्रान्ति से पहले कारखाने पूजीपतियो के फायदे के लिए चलते थे और जो आदोलन हम लोग करते थे वह समूचे तौर पर पूजीपतियो के खिलाफ़ था। लेकिन अव उत्पादन का काम राज्य और समाज के प्रमुख कामों में से एक है। हमारे युग का एक सव से महत्वपूर्ण काम है।

पुराने जमाने में जव मैं पुतीलोव प्लान्ट में काम करता था, तो मै पूजीपतियो की शक्ति वढाता था। उस समय हमें इस वात का पूरा हक था कि उद्योग और पार्टी के काम में भेद करे। यदि मै अपने उत्पादन कोटा से अधिक काम करता, तो मेरे साथियो को यह कहने का समुचित अधिकार होता कि "क्यो पैसा वटोर रहे हो? क्यो ओवरटाइम काम करके पूजीपतियो का समर्थन कर रहे हो? और जव मीटिंगो में आने की वात होती है तो कहते हो छुट्टी नही मिलती। तुम

अपने पार्टी के काम की अवहेलना कर रहे हो।" लेकिन अब? आजकल ऐसे आदमी की कल्पना कीजिए जो अपने उत्पादन कोटा को विना पुरा किए छोड देता है। हर चीज कल के लिए मुलतवी कर देता है। दूसरे लोगों को काम से छुडा कर शिक्षा-केन्द्र के लिए एकत्र कर लेता है—उनको पढ़ाता है और इसे पार्टी का काम समझता है। आज कोई भी ऐसे व्यक्ति को अच्छा कम्युनिस्ट नही समझेगा। इस में किसी को आश्चर्य भी न होना चाहिए, क्योंकि अव हम मालिक के लिए काम नहीं करते। अब तो हम खुद ही समाजवादी राज्य के मालिक है। और उत्पादन स्वय सामाजिक राज्य का उत्पादन बन गया है।

इसलिए, यदि मै पार्टी-सगठन का मत्री होता तो मै उत्पादन को मुख्य पार्टी और सामाजिक कार्यवाही समझता। मै कहूगा कि आदमी चाहे दूसरे मामलो में अच्छा भी हो, यदि उत्पादन के काम में सतोपजनक नही है, तो वह अच्छा कम्युनिस्ट नही।

आपके भाषणो से मै यह महसूस कर रहा हू कि अपने व्यवहार में आप मेरे ही विचार पर चलते है। लेकिन यह कहने में आप जरा घवडाते है, कि आपको यदि कही व्यापारिक-कार्यकारिणी कह दिया गया तो आप मुश्किल में पड जायेंगे। आपके भाषणो को सुनकर कोई भी कह सकता है कि आप सुसस्कृत हैं। लेकिन आप में से एक ने भी यह नही कहा कि समाजवादी परिस्थिति में, और विशेषकर युद्ध की स्थिति में, आप उत्पादन के काम को समाज और पार्टी का काम समझते है, पहले दर्जे के महत्व का काम, जो समाजवादी व्यवस्था को मजबूत करता है।

आप इस प्रश्न को पार्टी के तरीके से क्यो नही उठाते? इसे एक गभीर सिद्धात के रूप में क्यो नहीं रखते, क्या ऐसा काम, जो सोवियत व्यवस्था को मजबूत करता है, हमारे शत्रुओ पर चोट करता है, जो सोवियत देश की प्रसिद्धि सारी दुनिया में फैलाता है, दूसरे

शब्दो में जो काम समाजवादी व्यवस्था की प्रतिष्ठा बढाता है, कम्यु-निस्ट पार्टी का काम नही है? उत्पादन के क्षेत्र में हमारी सफलताए, सास्कृतिक क्षेत्र में हमारी सफलताए, क्या कम्युनिस्ट काम नहीं है, पार्टी का काम नही है? प्रचार शब्दों से होता है और व्यवहार मे भी होता है। प्रचार और आदोलन व्यवहार में ज्यादा असरदार होते है। हमारे देश में लगभग सभी जगह यह कहा जाता है कि प्रचार और आदोलन व्यवहार में सबसे अधिक प्रभावोत्पादक होता है। फिर, उत्पादन में हमारी सफलताए व्यावहारिक प्रचार है।

मै आपसे प्रश्न करता हूं आज मोर्चे पर लडनेवाले व्यक्ति का कौन गुण उसको पार्टी मेंबर बनाने के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण समझा जाता है? (हाल के भीतर से ध्वनिया "वीरता")

बिल्कुल सही — वीरता। अर्थात् जिम्मेदारियो को अच्छी तरह से निभाना। तो भी ऊपर से देखने पर यह पार्टी का काम नही मालूम होता। तो आप ने समझा — अपने काम में अत्यत लगन — पार्टी में शामिल होने के लिए एक विशेष गुण समझा जाता है।

अब हम एक रूपक बाधते है। यदि मोर्चे पर बहुत ही शानदार तरीके से निभाई गई जिम्मेदारी को आप पार्टी का महत्वपूर्ण काम मान लेते है, तो फिर आप इससे भी सहमत होगे कि गोली गोलों तोपो, मशीनगनो का उत्पादन भी हमारे लिए बहुत महत्व का है — यानी इसका अर्थ है हमारे उद्देश्यो के लिए सघर्ष में सीधा हिस्सा लेना। आज उत्पादन का काम पार्टी का मुख्य बुनियादी काम है। मैं तो कहूगा कि यह पार्टी के पवित्र से पवित्र कामो में भी सर्वोपरि है। इसलिये, जब आप जनता को आदोलित करने, उसमें प्रचार करने और उसे शिक्षित करने का काम करें, तो आपको सदैव यह याद रखना चाहिये।

समूची सोवियत जनता के सामने आज कौनसा मुख्य निर्णया-

त्मक काम है? जर्मनों के खिलाफ संघर्ष। इसीलिए, आप चाहे जहां आंदोलन कर रहे हों, आप चाहे कोई काम कर रहे हों, आप चाहे किसी भी व्यक्ति से बात कर रहे हों, वर्तमान समय में आपको सदा ही मुख्य बात पर आ जाना चाहिए — यह कि हर आदमी को हर तरह से जर्मन आक्रामकों को विनष्ट करने के मुख्य राष्ट्र व्यापी काम में सहायता देनी है।

यदि आप अपने को आंदोलन संबंधी प्रचार के लिए स्थानीय शिक्षा केन्द्र में तैयार करें, तो आपको इस तरह की चीजें चुननी चाहिए, इस तरह के ऐतिहासिक रूपक ढूंढने चाहिए जो आपका ज्ञान बढ़ाए, जो आपको इस योग्य बनाए कि आप अपने देश की स्थिति को जनता के सामने ज्यादा अच्छी तरह से बता सके, ज्यादा अच्छी तरह उसका स्पष्टीकरण कर सके और फासिज्म के विरुद्ध संघर्ष में हम सब का क्या कर्तव्य है, यह बात अच्छी तरह समझा सके। सचमुच, हमारे जीवन में आज इतने उल्लेखनीय तथ्य हैं कि आंदोलन संबंधी हमारा हर प्रचारक—साधारण से लेकर प्रमुख से प्रमुख तक—उसमें अनंत चीजें पा सकता है, ऐसी चीजें जो बहुत ही स्पष्ट, जीवनपूर्ण हैं और सामयिक घटनाओं से सीधे सीधे संबंधित हैं।

यह तरीका अपनाने से लोग अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं को मार्क्सवादी ढंग से समझने लगेंगे और धीरे धीरे अपने दैनिक पार्टी के कामों के लिए अनुभव बटोरते जायेंगे।

पार्टी के काम से हमारा क्या मतलब है? अलबत्ता, संगठनात्मक तरीके से हम विभिन्न क्षेत्रों के काम को अलग करते हैं और उन्हें पार्टी, ट्रेड-यूनियन, आर्थिक कामों आदि का नाम देते हैं। काम की इन तमाम शाखाओं की अपनी विशिष्टतायें हैं।

पार्टी के काम को काम के दूसरे स्वरूपों से अलग करनेवाली कौन सी विशिष्टतायें हैं? यह जोर देकर कहना कि पार्टी काम की

विशेषता उसका आंदोलन संबंधी प्रचार, प्रचार और संकरे अर्था में कम्युनिस्ट शिक्षा है, मुझे मसले पर तंगनज़री मालूम होती है। यदि कहा जाए तो पार्टी काम है — हर काम में, बहुत ही टेकनिकल और मेकेनिकल काम में भी, पार्टी-दृष्टिकोण की भावना, पार्टी-रवैये को रखने की कोशिश।

एक लेथ-आपरेटर एक सीधा-सादा मशीनी काम करता है। लेकिन क्या वह अपने काम को केवल धनोपार्जन के लिए कर रहा है? वह अपने काम को सामाजिक महत्व देता है या नहीं? हमारे लिए यह प्रश्न महत्व का है। क्या किसी हिस्से को बनाते वक़्त उसे यह पूरी तरह से मालूम है कि वह राज्य के लिए महत्वपूर्ण काम कर रहा है, वह देश की सुरक्षा के लिए काम कर रहा है, कि उसके श्रम से बनी चीज़ें मोर्चे पर शत्रु के खिलाफ़ इस्तेमाल करने के लिए जा रही हैं, और यह कि वह जितनी ही अच्छी चीज़ें बनायेगा, जर्मनों के खिलाफ़ संघर्ष में उसका भाग उतना ही अधिक समझा जायेगा — यह जानना आपके लिए महत्व का है। इसका अर्थ यह है कि वह अपने को आम रजनैतिक काम से अलग नहीं, बल्कि सामान्य संघर्ष में उस की एक कड़ी समझता है। वह अपने को राज्य द्वारा उठाये जानेवाले सामान्य क़दमों का अंग मानता है।

इसी सिलसिले में मैं आपके समक्ष एक और विचार रखना चाहता हूं। हम लोगों में आपस में अक्सर बातचीत के दौरान में किसी कम्युनिस्ट को पार्टी का "पूर्ण" सदस्य कहा जाता है। लेकिन आपको याद रखना चाहिए कि क्या यह विशेषण सिर्फ़ प्रचारकों और आंदोलनकारियों के लिए ही प्रयुक्त होता है? पूरी तरह से पार्टी का आदमी बनने के लिए लाज़िमी तौर से आपको सिर्फ़ आंदोलनकर्ता या प्रचारक ही नहीं बनना होता। कोई और बात भी आवश्यक होती है— अर्थात, राजनैतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन में भी कम्युनिस्ट

व्यवहार करना। फिर उसी लेथ-आपरेटर का उदाहरण ले लीजिए। यदि वह अपने काम में सारी शक्ति, और योग्यता लगाकर सोवियत देश की सुरक्षा कर रहा है और इस कारण अपने उत्पादन के काम से सबधित मुश्किलो और खामियो आदि का ख्याल नही करता, तो उसका रवैया पार्टी का रवैया कहा जायेगा। और मैं कहूंगा कि ऐसा साथी पूरी तरह से पार्टी का आदमी है।

मैं पिछले युग की एक मिसाल दूगा। उस ज़माने मे पार्टी में भरती होनेवाले कुछ लोगो को जब कोई मामूली काम, जैसे परचे पहुचाना, या छिपे काम के लिये इस्तेमाल होनेवाले घरो की देखभाल करना बताया जाता था, तो वे असतुष्ट रहते थे। ये लोग आदोलन-कारी, प्रचारक आदि बनना चाहते थे, वे राजनैसिक नामवरी के इच्छुक थे। तो भी, प्रकाश में न आने वाला थकान भरा काम तो होना ही था। उस ज़माने में इस तरह के काम पार्टी के लिए सबसे महत्व के थे।

अब आप ही मुझे बताइए कि हमारे समाजवादी देश में किस तरह के उत्पादन का काम सोवियत व्यवस्था को मज़बूत नही करता? आप समझ गए होगे कि राजनैतिक काम का पार्टी चरित्र काम के सगठनात्मक बटवारे से निश्चित नही होता (जिसका करना, जहा तक सगठन का सबध है सही है), बल्कि सभी कामो में, चाहे वह सामाजिक हो या उत्पादन का या दफ्तर का, पार्टी की भावना भरने से उसका पार्टी चरित्र निर्धारित होता है।

जब मैं यह कहता हू तो स्वाभावत मैं मार्क्सवाद लेनिनवाद के अध्ययन के काम को कम करके नही आकता, जो दरअसल, व्यावहारिक जीवन में हर मसले को पार्टी दृष्टिकोण से देखने की योग्यता देता है।

यहा पर एक साथी ने बताया कि उसके कारखाने के अनेक पार्टी मेंबरो को पार्टी और सामाजिक काम ढूढने में मुश्किल पडती है। मैं इसे गलतफहमी समझता हू।

यहां पर हमें एक इंजीनियर-आविष्कारक के वारे में वताया गया है। जव पार्टी-मेंवर वनने के वाद वह पार्टी-कमेटी के पास सामाजिक काम मांगने गया, तो उसे एक राजनैतिक शिक्षा-केन्द्र का इंचार्ज वना दिया गया। फिर एक दूसरा मेंवर आया, वह भी एक कुशल इंजीनियर था। लेकिन उसके लिए कोई काम वचा ही न था। और पार्टी संगठन को यह नहीं मालूम था कि उसके लिए किस तरह का सामाजिक काम ढूंढ़ निकाला जाय। मेरा व्यवहार दूसरे प्रकार का होता। मैं उससे आविष्कारकों की एक गोष्टी संगठित करने के लिए कहता और उसे उसका इंचार्ज वना कर कहता: "हो सकता है कि तुम कोई आविष्कार न कर सको, लेकिन हो सकता है कि कोई आविष्कार कर ही डालो।" आप में से कुछ इसे पार्टी का काम नहीं समझेंगे। लेकिन मैं इसे पार्टी का असली काम समझूंगा। क्योंकि यदि एक आदमी सच्चा आविष्कारक है तो उसे एक ही धुन सवार रहती है। उसके तमाम विचार एक ही दिशा में मुड़ जाते हैं। फिर उसके दिमाग़ को वहकाया क्यों जाय? उसको वही काम दीजिए जिसके वह सव से अधिक योग्य है। मैं इसे उसकी पार्टी-ज़िम्मेदारी मानूंगा। यदि दूसरा इंजीनियर अच्छा आंदोलनकर्ता है, तो वह आंदोलन-संवंधी काम करे। लेकिन यदि उसका रुझान उस ओर नहीं है तो उसके लिए आपको ऐसा क्षेत्र ढूंढ़ना होगा जहां वह सवसे ज्यादा फ़ायदेमंद होगा।

इसलिए आपको इस वात पर परेशान नहीं होना चाहिए कि काफ़ी काम नहीं है। मामले पर कुछ विचार कीजिए और आपको पता लगेगा कि जितना काम करना है, उस को करने के लिए काफ़ी आदमी नहीं हैं।

यहां पर कम्युनिस्टों की शिक्षा का जिक्र किया गया है। नए-नए भरती हुए पार्टी-मेंवरों में कम्युनिस्ट भावना किस तरह भरनी है? वह आप पर निर्भर है कि उसकी ट्रेनिंग को आप किस दिशा में मोड़ देते हैं।

यहा पर एक साथी ने हमें वताया कि नियमित रूप से पार्टी-चदा न देने के कारण एक मीटिंग में किस तरह कुछ तरुण कम्युनिस्टो को लताडा गया। मुमकिन है यह एक विशुद्ध व्यावहारिक मसला मालूम हो। कडी भाषा का प्रयोग किया जा सकता है। उनसे कहा जा सकता है कि "तुम वहुत ही अनुशासनहीन और वुरे कम्युनिस्ट हो," आदि। लेकिन यही सवाल एक सिद्धात के रूप मे भी उठाया जा सकता है। उनसे आप कह सकते है "आप खुद समझते है कि यदि आप महीने दो महीने चदा देने में पिछड जायें, तो पार्टी का वहुत कुछ विगडेगा नही। उसके कोष पर असर नही पडेगा। अव हमारी पार्टी ग़रीव पार्टी नहीं है। और यदि हम इस मामले में आपसे वहस कर रहे हैं तो इसलिए नही कि आपकी लापरवाही के कारण हम समय पर रिपोर्ट नहीं भेज पाये। नही, यह वात नही है। वात यह है कि यदि आप समय पर अपना पार्टी चदा नही देते, तो इसका मतलव है कि आप पार्टी के विषय में नही सोचते, आप अपने पार्टी-कर्तव्यो का सही ढग से पालन नहीं कर रहे है। इसका मतलव है कि आप पार्टी के प्रति गभीर नही है। कोई भी जो पार्टी के विषय में सोचता है, उसके लिए पार्टी चदे की अदायगी सतोष का विषय है, क्योकि इस तरह वह पार्टी से भौतिक सवध स्थापित करता है, वह उसके निकट आता है।"

साथियो, जैसा आप समझ रहे है, आपका और मेरा समस्या के प्रति रुख एक सा ही है। मै आपको सिर्फ यह वता रहा था कि साधारण मसले को भी किस तरह राजनैतिक तौर से हल किया जाय। अगर आप मसले के प्रति यह रवैया वनाए तो पार्टी चदे का साधारण सा मामला भी राजनैतिक मसला वन जायेगा।

जव मीटिंग में आप मामला इस तरह उठायेंगे तो वोलनेवाले अनेक मिसालें देने लगेंगे। वे शायद आपत्ति भी करें कि मसला इतना

महत्वपूर्ण नही है, और कहे कि कोई आदमी पार्टी के लिए मर भी सकता है लेकिन चदा देना भूल सकता है, आदि। वहस तव सिद्धात को लेकर होगी।

आप समझ रहे हैं कि जव एक ओर उसी प्रश्न को विलकुल व्यावहारिक दृष्टिकोण से, तथ्यो की भाषा में पेश किया जाता है तो उसका प्रभाव कम पडता है। लेकिन यदि उसी को आम स्थापना करके, उसका राजनैतिक रूप सामने लाया जाय तो उससे लोगो की शिक्षा होती है।

मुझे लगता है कि आप नए मेंवरो में पार्टी के काम को सिर्फ शिक्षा तक सीमित रखना चाहते हैं। मैं इसके खिलाफ नही हू। आपको उन्हे शिक्षित करना है। लेकिन शब्द के सकुचित अर्थों में शिक्षा और पालन एक ही वस्तु नही हैं।

आप एक व्यक्ति को पार्टी कार्यक्रम, पार्टी-विधान रटा सकते है और तमाम खानापूरी कर सकते हैं। लेकिन तव भी इससे वह कम्युनिस्ट नही वन जाता। वह कम्युनिस्ट नही, निरा काठ है। आपने ऐसा कहे जाते सुना भी होगा। (एक ध्वनि "कूढमग्ज") नही, यह और बात है। किसी को कूढमग्ज कहना गाली है, जब कि "काठ" से हमारा मतलव है कि वह अपने सोचने के ढग में वहुत कडा और विल्कुल लचकीला नही है। जो भावनाहीन है और जिसमें हसी मजाक और तीखी बात समझने का माद्दा नही है। ऐसे आदमी को "निरा काठ" कहा जाता है।

स्कूल में पढाने से कही अधिक मुश्किल एक आदमी को शिक्षित करना है, क्योकि शिक्षक शिक्षार्थियो को निश्चित ज्ञान देकर ही नही, वल्कि मुख्यत दैनिक परिस्थिति के प्रति अपने रुख से उन्हे प्रभावित करता है।

कामरेड वोदरोवा ने हमे यहा एक मेहनतकश औरत की कठिन जिंदगी के बारे में बताया जो सहायता पाते ही फौरन लहलहा उठी। मैं कहूगा कि यह अपने आप में ही पार्टी स्वंयं की अच्छी मिसाल नही है। महत्व की बात यह नही है कि किसी को सकटपूर्ण परिस्थितियो में सहायता दी गई। वल्कि कम्युनिस्टो की शिक्षा से हमारा मतलब यह है — ठोस और व्यावहारिक शिक्षा। ऐसी ही मिसालो पर आपको कम्युनिस्टो की शिक्षा के अपने काम को आधारित करना चाहिए।

अयोग्य कार्यवाहियो को भी शिक्षात्मक प्रयोग के लिए सिद्धात के दृष्टिकोण से वहस में लाना चाहिए। मान लीजिए कि एक आदमी खराब काम करता है। आपको दिखाना चाहिए कि उसका खराब काम किस तरह दूसरो पर असर डालता है। इसी तरह के ठोस तथ्यो, महत्वपूर्ण मसलो, और आम राजनैतिक समस्याओ को लोगो की शिक्षा का आधार बनाने के लिए प्रयोग करना चाहिए।

एक मिसाल लीजिए। मान लीजिए कि मैं एक पार्टी सगठन का मत्री हू। मुझ से मिलने के लिए तमाम लोग आते है। उनमें से वे भी है जो फुसफुसाते रहते है कि अमुक व्यक्ति ठीक से काम नही करता, अमुक ठीक से व्यवहार नही करता, पर खुद इन्ही बुराइयो के अपराधी है। इस तरह के आदमी तो है न? ऐसे आदमी को पकडना और उसका भडा फोडना शिक्षात्मक मूल्य का होगा।

शिक्षा का काम बहुत मुश्किल है, क्योकि वह बहुत कुछ आपके व्यवहार पर निर्भर करता है। मिसाल के तौर पर यदि आप नशाबदी के बारे में उपदेश देते हो और खुद पीते हो, तो यह बात नही चलेगी। यदि आप अनुशासन की अपील करें और स्वय ही उसे लगातार तोडे, तो उस अपील का बहुत कम प्रभाव पडेगा।

विशद अर्थो में शिक्षा सबसे कठिन और पाडित्यपूर्ण काम है। लोगो को राजनैतिक ज्ञान का ककहरा पढाना, पार्टी कार्यक्रम और

विधान पढाना दूसरी वात है, क्योकि आप एक निश्चित ज्ञान दूसरो को देते है। अलवत्ता, हिदायत और शिक्षा मे सीमा रेखा खीचना मुश्किल है, क्योकि लोग अध्ययन के द्वारा भी शिक्षित होते है। लेकिन मुख्य चीज यह है, जिसे नजरअदाज नही करना चाहिए कि पार्टी मेंवरो की शिक्षा लगातार अनदेखे ही होती रहनी चाहिए। अक्सर यह छोटी छोटी वातो पर आधारित होती है, लेकिन कभी कभी वह गभीर, मुख्य मसलो को लेकर भी होती है।

यहा पर अखवारो के उद्धरण पढकर सुनाने की प्रथा का जिक्र किया गया था। यदि अखवार सिर्फ जोर जोर मे पढ दिए जाते है और वहस नही होती, तो यह काफी नही है। आपके सामने ऐसी स्थिति आ सकती है कि एक व्यक्ति को अखवार पढने का समय मिल गया हो और वह आपकी ओर ध्यान न दे रहा हो, और दूसरे ने यद्यपि अखवार पढा न हो, तो भी सिर्फ आपके पढकर सुनाने से सतुष्ट न हो। लेकिन आपने जो पढा है, यदि उसका विश्लेपण करें या उसकी चर्चा करें, तो स्वाभवत सव की दिलचस्पी वढ जायेगी। वहस छेड दीजिए। क्यो नही? आप लोग वहुत अधिक व्यवहारवादी है। आपको गलती कर देने का डर रहता है। यदि आपने गलती कर ही दी तो क्या? हम लोगो को गलती करने पर सजाऐं नही देते। यदि आप ग़लती करते है तो आपकी आलोचना की जाती है। वस। सजा उनको दी जाती है जो अपनी गलतियो का वचाव करते है, जो उन पर अडे रहते है और जो पार्टी नीति से अलग हो जाते है। यदि एक व्यक्ति हम ही में से है, सोवियत राज्य और पार्टी के प्रति वफादार है और यदि वह अपने विचारो की स्थापना में पूर्ण रूप से सही नही है, तो उसकी ओर उसका ध्यान अवश्य खीचा जायेगा। इससे अधिक और कुछ नहीं।

क्या आप कल्पना करते है कि सिर्फ पार्टी कार्यक्रम और विधान मे एक व्यक्ति में पार्टी दृष्टिकोण लाया जा सकता है? अलवत्ता, नए

पार्टी मेंबर को आपको विधान बताना होगा। उसमें कम्युनिस्टो के व्यवहार के नियम दिए गए है — वे व्यवहार के आदर्श नियम है। लेकिन कम्युनिस्टो से यदि आपका वार्तालाप वही तक सीमित रहता है तो वह थकान-भरा होगा। ऐसे मामलो में आपका रवैया सिर्फ लकीर पीटना नही हो सकता।

अध्ययन के संबंध में भी आपको मालूम होना चाहिए कि अलग अलग लोगो के साथ अलग अलग रुख अपनाया जाय। मान लीजिए कि एक व्यक्ति ६० वर्ष का बूढा है और आप उससे मांग करते है कि वह पार्टी कार्यक्रम और विधान को पूरी तरह से जाने। वह अच्छा मजदूर है, सोवियत राज्य के प्रति वफादार है, ईमानदार है और पुरा कम्युनिस्ट नही है। यह स्पष्ट है कि इस तरह के पार्टी-मेंबर के प्रति इस मामले में आपका रवैया नरम होना चाहिए।

हम लोग मार्क्सवाद का अध्ययन करते है। लेकिन हम रूस के इतिहास का अध्ययन करने के मामले में बहुत अधिक दिलचस्पी नही दिखाते। कहा जाय तो हम इसे पार्टी का मामला नही समझते। यह ठीक नही, बिलकुल ठीक नही। रूसी इतिहास का अध्ययन बहुत ही दिलचस्प और दिलकश है। और यदि इसे कोई मार्क्सवादी पढाए, पुराने युग की हर ऐतिहासिक स्थिति पर मार्क्सवादी दृष्टि से बहस की जाय, तो लोग इसमें बडी दिलचस्पी लेगे और यह भी पार्टी का काम होगा।

इसी प्रकार, दर्शन शास्त्र के इतिहास का अध्ययन करने के लिए अधिक सुयोग्य व्यक्तियो को लगना चाहिए। आम तौर पर लोगो को मिलकर अपने प्रिय विषय के अध्ययन के लिए अध्ययन गोष्टिया स्थापित कर लेनी चाहिए। और इन चक्रो का पार्टी चरित्र अध्ययन की जानेवाली समस्याओ मे लगाए गए मार्क्सवादी लेनिनवादी तरीक़े से निर्धारित होगा। वहा पर लोग दार्शनिकता भी कर सकते है।

कोई सच्चा कम्युनिस्ट कैसे हो सकता है, यदि उसमें थोडी वहुत भी दार्शनिकता नही है? हम लोग वहुत दूर तक, भविष्य में वहुत आगे तक देखते है। मुझे लगता है कि आप सव वहुत भयानक व्यवहारवादी हो गए है — इस डर से कि कही लडखडा न जायें आप अपने कदमो को ही देखते रहते है।

सिर्फ सामाजिक ही नही, प्राकृतिक स्थिति को भी समझने का सच्चा तरीका मार्क्सवाद है। इसीलिए कोई भी काम, जो विश्व की स्थिति का ज्ञान उपलब्ध करने के लिए मार्क्सवादी लेनिनवादी दृष्टिकोण से किया जाय, तो वह वोल्शेविक पार्टी के दृष्टिकोण को मजवूत करेगा। ऐसे काम का अत नही है। विश्व के वारे में अधिक विशद दृष्टिकोण वनाने की आवश्यकता है। लोग जो व्यावहारिक काम करें, उसे उन्हे समझना चाहिए और उस के वारे में आम स्थापनाए करनी चाहिए।

"प्रोपेगेंडिस्ट" मैगज़ीन

न० २, १९४४

कोम्सोमोल सदस्यों की फौजी शिक्षा के बारे में

लाल फौज के कोम्सोमोल सदस्यो के स्वागत-समारोह मे दिया गया भाषण

१५ मई १६४४

साथियो, फौजी हालत में युवको की शिक्षा के विषय में मै कुछ शब्द कहना चाहता हू।

यह तो हर व्यक्ति को स्पष्ट है कि कोम्सोमोल का हर जगह, फौज में भी, मुख्य काम युवको को शिक्षित करना है। और लोगो को शिक्षित करना, विशेषकर फौजियो को शिक्षित करना एक पेचीदा और नफीस मामला है। इस मामले में आप बिलकुल किन्ही एक ही तरह के गढे गढाये सिद्धातो से काम नही चला सकते। आप जीवन के हर अवसर की आवश्यकता के लिए नवीन रूपो का आविष्कार भी नही कर सकते। शिक्षा से संबंधित तमाम समस्याओ को आप सिर्फ बने-बनाए स्वरूप को अपना कर नही हल कर सकते, फिर वे चाहे कितने ही अच्छे क्यो न हो।

मिसाल के तौर पर, एक उस अफ़सर लीजिए, जो कोम्सोमोल का सदस्य है और जिसका लाल फ़ौजियों पर असर पड़ता रहता है। इस मामले में क्या कोई ऐसी चीज़ का आविष्कार कर सकता है जो अवश्य ही की जानी चाहिए या कोम्सोमोल की केन्द्रीय कमेटी द्वारा कुछ विधान के रूप में ढूंढ़ा जा सकता है? मैं समझता हूं कि इसका कुछ भी नतीजा नहीं होगा। खुद जीवन का ढंग, फ़ौजी इकाई में विकसित हो गए आपसी संबंध एक निश्चित स्वरूप ले लेते हैं और जीवन में स्थापित होकर शिक्षा के साधन के रूप में सहायक होते हैं।

हमारे कोम्सोमोल के साधारण फ़ौजी पढ़े-लिखे लोग हैं—उनमें अधिकतर ने स्कूल की सातवीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त कर ली है। लेकिन वे तरुण और भावनामय हैं। अफ़सरों को उन्हें अनुशासन का आदि बनाना है। साथ ही ड्यूटी के समय और ड्यूटी के बाद के संबंधों में भेद करना चाहिए। जब एक फ़ौजी मोर्चे की पंक्तियों पर अपनी ड्यूटी की जगह पर है, तो उसे बिना तर्क के सभी हुक्मों को मानना होता है। लड़ाई के दौरान में तर्क करने का मतलब है, सर्वनाश —क्योंकि जिस समय आप तर्क कर रहे हों, उस समय शत्रु राह नहीं देखता। लेकिन जब लड़ाई खतम हो जाय तो कोम्सोमोल सदस्यों की एक सभा में सभी लोग अपनी और दूसरे सदस्यों की त्रुटियों की आलोचना कर सकते हैं।

एक कोम्सोमोल अफ़सर का अधिकार उसके पद से निर्धारित नहीं होता। उसका अधिकार भिन्न प्रकार का होता है। उसका सम्मान सिर्फ़ एक लेफ़्टिनेंट या कैप्टन के नाते नहीं होना चाहिए, बल्कि एक विशेषज्ञ, समझदार व्यक्ति, एक राजनैतिक नेता के रूप में भी उसका सम्मान होना चाहिए। दूसरे शब्दों में उसको अपने ज्ञान और अनुभव के आधार पर अधिकार प्राप्त करना है।

कोम्सोमोल अफ़सर का व्यवहार स्वयं ही निर्देशात्मक कार्य करता

है क्योकि तरुण फौजी पहले सबसे विशेषत अफसरो के उस रवैये से प्रभावित होते हैं जो वे लाल फौज के सिपाहियों के प्रति अख्तयार करते है।

हमारी फौज में सिर्फ हुक्म देनेवाले अफसर और सिर्फ हुक्म बजा लाने वाले सिपाहियो की तरह की कोई बात नही है। जब एक टोली या प्लैटून का कमांडर लडाई में बेकार हो जाता है, तो साधारण सिपाही नेतृत्व का स्थान ले लेते है और अपनी पेशकदमी का प्रदर्शन करते है। जर्मनो में ऐसी चीज़ कही-कही ही हो सकती है। लेकिन हमारी फौज में इस तरह की अनेक घटनाए हो चुकी है। हमारे यहा जहा तक भावना, लालन-पालन और कार्य का सबध है, अफसर और आम सिपाही बराबर है। कोम्सोमोल के सदस्य—चाहे वे सिपाही हो, चाहे अफसर, भावना, विचार और उद्देश्यो में समान है। वे एक ही तरह से सोचते है और अपने मानसिक विकास में भी करीब-क़रीब एक-दूसरे की तरह ही होते है।

हम कडा अनुशासन लागू करने की माग करते है। यह समझ में आनेवाली बात है, क्योकि एक फौज तभी तक फौज है जब तक वह अनुशासित है, जब तक उस में पूर्ण एकता है। इसीलिए अनुशासित व्यवहार की माग पर सख्त ज़ोर देना चाहिए। साथ ही राजनैतिक काम के उत्तरदायी अफसरो को, विशेषकर मोर्चे पर शिक्षा के प्रति अधिक ध्यान देना चाहिए, क्योकि इसके बिना हमें स्वेच्छा पर आधारित अनुशासन नही मिल सकेगा, जो हमारी फ़ौज की विशिष्टता है। ये अफसर लाल फौज के सिपाहियो को वीर और ईमानदार बनने की शिक्षा देते है, न कि बनावटी बनने की। एक व्यक्ति शत्रु के प्रति बनावटी हो सकता है और उसे होना चाहिए, लेकिन अपने हमराही साथियो के प्रति बनावटी व्यवहार की इजाज़त नही दी जा सकती।

ऐसे ही अवसर पर अफसर का व्यक्तिगत अधिकार बडे महत्व

का होता है। उसे सदा ही ऊची सतह का होना चाहिए। एक अफसर, जो अपनी वीरता और सुयोग्यता के लिए प्रसिद्ध है और जो फौजी मामलो से सुपरिचित है, यदि किमी मीटिंग में या वातचीत के दौरान में अपने विचारो की स्थापना में गलती करता है, तो साधारण सिपाही वुरा नही मानेंगे। वे कहेगे कि वह गलती कर गया, नही तो मोर्चे पर वह वहुत वढिया आदमी है। एक अफसर इस प्रकार का अधिकार लडाई के मैदान में, अपनी यूनिट को निर्देशन देते समय, राजनैतिक काम के दौरान में प्राप्त करता है और इसका प्रभाव कोम्सोमोल सगठन के सामने आई हुई समस्याओ को हल करते समय मालूम होता है।

यह तो, अलवत्ता, वाजिव वात है कि एक उस अफसर के मुकावले, जो कोम्सोमोल का सदस्य नही है, कोम्सोमोल का सदस्य अफसर राजनैतिक रूप से अधिक विकसित और अधिक सुसम्कृत हो। उनका फौजी ज्ञान चाहे वरावर हो, लेकिन कोम्सोमोल के सदस्य अफसर की सास्कृतिक सतह तो ऊची होनी ही चाहिए। यही, और सिर्फ तभी उसका प्रभाव अधिक पडेगा। ज्ञान एकत्र करने के लिए आपको लगातार अध्ययन करते रहना चाहिए। आप कह सकते है कि आप लगातार तीन वरस तक लडते रहे है और इन परिस्थितियो में अध्ययन करना, किसी तरह का ज्ञान अर्जन करना वहुत मुश्किल है। यह सचमुच सही है। मै समझता हू कि यह कितना कठिन है। लेकिन मै वताना चाहता हू कि जो कठिन समय में वृद्धि नही कर सकता, वह कम काम के समय कहेगा कि अव उसे आराम की आवश्यकता है। और फिर ज्ञान इतना आवश्यक भी तो नही है! (हसी)

मै वर्तमान कठिन परिस्थिति को समझता हू। लेकिन यही मुश्किल हमारा उत्साह वढाए हमें प्रेरित करे कि हम अपने ज्ञान को वढाए और अपनी सास्कृतिक सतह को और अधिक ऊचा उठाए। कोई वाहरी दवाव नही होता, तो ज्ञान अर्जन में ढिलाई आ जाती है। मै

अपने अनुभव से यह बात जानता हू। मैने कभी भी लेख नही लिखा, जब तक कि लिखने के लिए मुझ पर दबाव नही डाला गया। लेकिन जब मुझ से बार बार कहा जाता है, मुझ पर दबाव डाला जाता है और मै कोई दूसरा रास्ता नही देखता, तब लिखने बैठ जाता हू (हसी)। बाहरी दबाव एक व्यक्ति को थम जाने मे रोकता है।

मै लगभग ७० बरस का हू। लेकिन तो भी मुझे रोज-ब-रोज के साहित्य से परिचित रहना पडता है और मुझे अध्ययन करना पडता है। और इसके अलावा कुछ हो भी नही सकता। तो भी चूकि मै आपसे अधिक अनुभवी और राजनैतिक रूप से अधिक सचेत हू, इसलिए मुश्किल स्थिति में भी अधिक आसानी से रास्ता निकाल लेता हू। आप अभी कम-उम्र है, इसलिए यह आपके लिए अधिक मुश्किल है। केवल ज्ञान ही आपकी सहायता कर सकता है। आपको हर समय अध्ययन करना चाहिए। खुद जीवन की यह अटल माग है।

यह स्पष्ट है कि हर अफसर और सिपाही प्रथमत और मुख्यत अपनी यूनिट की प्रतिष्ठा के प्रति चिंतित रहता है।

हमारे पास कई बढिया फौजी यूनिटें है। आप पूछते है कि किस तरह उनका अनुभव दूसरी और यूनिटों तक पहुचाया जाय जिससे वे भी उन्ही की तरह हो जायें। मै एक उपमा से समझाऊगा। मान लीजिए कि एक बहुत बढिया चित्र है और उसकी बहुत अच्छी अनुकृतिया बनाई गई। लेकिन नक़ल—नकल ही होती है। और वह बहुत सस्ती बेची जाती है। इसी तरह शिक्षा के विषय में भी निरी नकल से काम न चलेगा। यह कहने की आवश्यकता नही कि आपको दूसरो के अनुभव का उपयोग करना चाहिए, लेकिन आपको किसी भी परिस्थिति की विशेषता समझनी चाहिए।

मान लीजिए कि एक यूनिट ने शत्रु की भूमि पर उतरने की कार्यवाही में हिस्सा लिया और उसने आमने-सामने की लडाई का

वहुत सा अनुभव प्राप्त किया। स्पष्ट है कि उस यूनिट के नाविक, पैदल सिपाही, तोपची—सभी एक-दूसरे से अच्छी तरह सबद्ध होंगे और संघर्ष के दौरान मे उनमें भाईचारे की भावना वहुत अधिक विकसित हो गई होगी। यह सब कैसे हुआ? जब नाविक संघर्ष में उतरे तो वे जानते थे कि समूची फौज की निगाहे उनपर थी औ यह कि उनपर वहुत कुछ निर्भर करता था। उनके हर क़दम पर खतरा था। हर आदमी हुक्म का पालन करने, अपना काम करने, अपनी और अपने साथियो की रक्षा करने की कोशिश कर रहा था। कामयाबी वहुत अधिक प्रयास के बाद प्राप्त हुई। यह स्पष्ट है कि ऐसी परिस्थितियो मे लोगो की अधिक शीघ्रता से विकास होता है, बनिस्वत उन लोगो के जो अधिक शात मोर्चों पर है, जहा पर तनाव कुछ कम है, और जहा एकरस स्थिति का मनुष्यो पर बुरा प्रभाव पड़ता है। वैसे लगता कि इन यूनिटो के पास फुरसत अधिक है और उनमें शिक्षा का काम चलाना अधिक आसान है। लेकिन, दरअसल यह ज्यादा मुश्किल है। जहा जीवन स्वय सहायता कर रहा हो, वहा शिक्षा देना कही अधिक आसान है। इस तरह यह नतीजा निकलता है कि जहा लोग एक ही स्थान पर अधिक समय गुजारते है, एक ही साथ खाइयो में है, वहा शिक्षा और प्रचार का कार्य मुश्किल होता है। मैं समझता हूँ कि इन स्थितियो में कोम्सोमोल के काम की तरफ अधिक ध्यान देना चाहिए।

अत यह स्पष्ट है कि कोम्सोमोल को शिक्षा सवधी कार्य के लिए वने-वनाए मत्र वता देना वहुत मुश्किल है।

मिसाल के लिए, यह कैसे हो जाता है कि एक यूनिट कुछ अधिक अच्छी और दूसरी कुछ अधिक खराब हो जाती है। अच्छी यूनिट में एक नेता है जो मामले को चालू करा देता है। मै आपको वता दू कि एक व्यक्ति चाहे जितना शिक्षित और सुसस्कृत क्यो न

हो, यदि वह नौजवानो का नेतृत्व विना उत्साह के करता है, उनकी शिक्षा और ट्रेनिग में अपना मन और प्राण नही लगाता, तो तरुण इसे फौरन भाप जायेंगे। ऐसे नेता के लिए उनके मन में कोई स्नेह नही होगा। दूसरी तरफ यदि आप अपने काम में अपना मन-प्राण लगा दें, अपने सगठन को अच्छे से अच्छा वनाने के लिए सब कुछ करें, और यदि उसकी कामयावी के लिए अपनी तमाम शक्ति और तमाम उत्साह लगा दें, तो आप अवश्य तरुणो का स्नेह प्राप्त करने में सफल हो जायेंगे। आप उनकी प्रतिष्ठा ही न प्राप्त करेंगे, वल्कि उनके स्नेह-भाजन भी वन जायेंगे।

इसीलिए मैं समझता हू कि यदि कोई सगठन अच्छा है, तो इसका यह अर्थ है कि उसकी अगुआई एक अच्छे नेता के हाथो में है। यदि एक मनुष्य सचमुच मामले को चालू करने की कोशिश करता है, और यदि वह थोडा भी सस्कृत है, विलकुल गवार नही, तो वह अवश्य कामयाव होगा। इस सफलता की ओर वढने के लिए जीवन खुद उसका पथ प्रदर्शन करेगा। जव हम इन दैनिक सवधो की वात करते हैं तो हमें यह याद रखना चाहिये कि वे इस जीवन की प्रक्रिया के दौरान में ही रचे जाते है, वे अलिखित होते है और स्वय रोज़मर्रा के जीवन मे निकलते हैं। ये सवध सगठनात्मक रूपो से भिन्न होते है जो ऐतिहासिक तौर पर विकसित हुए है और जो नियमो के रूप में लिख लिए गए हैं। यह आप पर निर्भर करता है कि कोम्सोमोल के सदस्य अफ़सरो और साधारण फौजियो के ये सवध सदा ही पूर्णरूपेण तरुणो को शिक्षित और हमारी फौज की शक्ति-वर्द्धन करेंगे।

आप प्रश्न करते है कि एक ही यूनिट मे अच्छे और वुरे दोनो ही तरह के कोम्सोमोल सदस्य है, इसका क्या किया जाय? अच्छा, आप कर ही क्या सकते है? कोम्सोमोल के सदस्य आसमान से तो आते नही। वे जनता के वीच से आते है। जनता में भी कुछ लोग

अच्छे है—बहुत-अच्छे और कुछ खराब हैं—कायर, आलसी और पाखंडी। हमारी जनता को पूंजीवादी व्यवस्था से निकले अभी सिर्फ़ छब्बीस वर्ष हुए हैं और पुराने समाज के असंगत अभी शेष हैं। यह तो बहुत ही आश्चर्य की बात होगी कि एक फौज जो जनता से बनी है—पूरी की पूरी सतों से भरी-पुरी हो। (हंसी) यह संभव नहीं है। इसी तरह कोम्सोमोल में भी कुछ लोग अच्छे है और कुछ बुरे। यदि सभी लोग ईमानदार, वीर, अनुशासित और सुसंस्कृत होते, अपना काम समझते होते, तो फिर आपके करने के लिए कुछ न रह जाता। (हंसी)

तो भी, यदि मैं यह कहूं कि कोम्सोमोल के आम सदस्य मुख्यत हमारे तरुणो की अगली पंक्ति के प्रतिनिधि हैं, तो ग़लत न होगा। अलबत्ता, इनमें कुछ पिछड़े लोगो का भी हिस्सा है। उनको अपने प्रभाव क्षेत्र से भागने मत दीजिए, यही काम है।

एक साथी ने यहा कहा कि फौज के कोम्सोमोल संगठनों में बहुत से अच्छे साथी है। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि वे सब के सब नेताओ की तरह नहीं हैं। मै इसपर क्या कह सकता हू? अच्छी बात है, पर नेता हमेशा सीमित संख्या में पाये जाते है, नहीं तो वे नेता नहीं होगे, उनके नेतृत्व के लिए कोई होगा ही नहीं। अगर आपकी यूनिट में एक-दो नेतृत्व करनेवाले है, तो यह बड़ी अच्छी बात है। यदि उनमें से एक बेकार हो जायेगा, तो दूसरा उसकी जगह ले लेगा। मुझे भय है कि यदि किसी यूनिट में नेता ही नेता हो, तो वह लड़ ही नही सकती, क्योंकि लड़ेगा कौन? (हंसी) महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसे लोग हों जो नेता के पीछे चलना चाहते हो। ये लोग सक्रिय होते है और दिये गए तमाम काम को पूरा करते हैं। आपको सदा इन सक्रिय लोगो का इस्तेमाल करना चाहिए।

आपके बीच यह सवाल उठा है कि उन कोम्सोमोल सदस्यो की तरफ क्या रवैया अखत्यार किया जाय जिनके पास कोम्सोमोल का कोई उत्तरदायित्व नही है।

इस प्रश्न को खानापुरी की निगाह से नही देखना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति पर कोम्सोमोल का विशेष उत्तरदायित्व नही है और वह कोई दूसरा, बहुत महत्वपूर्ण और आवश्यक उत्तरदायित्व अच्छी तरह निभा रहा है, विजय को नजदीक ला रहा है तो समझना चाहिए कि वह सम्मान के साथ अपने कोम्सोमोल उत्तरदायित्व को निभा रहा है। और यह बहुत अच्छी बात होगी यदि कोम्सोमोल सगठन उसके द्वारा किए जाने वाले महत्वपूर्ण फौजी काम को मान्यता दे दे, जिसमें उसका सारा समय लगता है और उसको कोई दूसरी ज़िम्मेदारी न सौंपे। मान लीजिए कि कोम्सोमोल का एक सदस्य अफ़सर हेड-क्वार्टर में एक महत्वपूर्ण काम में लगा है। अच्छा, तो क्या वह अपनी कोम्सोमोल की ज़िम्मेदारिया पूरी कर रहा है या नही? यदि स्टाफ पर वह कोई ज़िम्मेदार काम कर रहा है और पूरी तरह से फौजी काम से लदा है, तो क्या उसे कोम्सोमोल की ज़िम्मेदारिया पूरी न कर पाने के लिए बुरा-भला कहा जा सकता है? अक्सर हमारे कुछ कोम्सोमोल सगठन अपने सदस्य के लिए और कुछ काम निकाल लेते हैं, यद्यपि वे जानते है कि वह काम में सर तक डूबा हुआ है। यह ग़लत है। आप लोग कोम्सोमोल की राजनैतिक कार्यवाहियो के सगठनकर्ता और नेता है। आपको मालूम होना चाहिए कि हर सदस्य किस तरह काम कर रहा है। और यदि कुछ लोग अपने बुनियादी फौजी उत्तरदायित्व के कारण पूरी तरह व्यस्त है, चाहे वह वास्तव में कोम्सोमोल का काम न भी हो, तो आपको यह नही समझना चाहिए कि वे कोम्सोमोल के उत्तरदायित्व को निभाने में टालमटोल कर रहे हैं। एक आदमी, जो काम के बोझ से दबा हुआ है और दूसरा, जो टालमटोल करता है—उसमें बुनियादी भेद है।

हमारे लिए कोम्सोमोल का काम अपने आपमें कभी एक उद्देश्य न था। पार्टी की मेहनतकश जनता की हालत सुधारने में सहायता देने के लिए ही हमारे तरुण कोम्सोमोल में भरती होते है। कोम्सोमोल के सदस्य का महत्व मीटिंगो में भाषण देने, या साथी कोम्सोमोल सदस्यो में सक्रिय बने रहने या कोम्सोमोल में कोई सामाजिक जलसा सगठित कर देने में ही नही है। उसका मूल्य प्रथमत इस बात से निर्धारित होता है कि वह सौंपे गए राजकीय, फौजी या आर्थिक कामो को कैसे निभाता है।

बिलकुल इसी तरह समूचे कोम्सोमोल द्वारा प्राप्त कामयाबिया—कोम्सोमोल के युवक-युवती द्वारा किए गए समाज के लिए फायदेमद श्रम का फल है। आप सबको खुद इस बात पर उचित गर्व है कि सरकार द्वारा विभूषित इतने वीर कोम्सोमोल की क़तारो से आए हैं। लेकिन उन्हे कोम्सोमोल के काम के लिए उतना विभूषित नही किया गया, जितना उनके फौजी काम के लिए।

हमारे देश की विभिन्न परिस्थितियो के अनुसार हमारी पार्टी ने अपने लिए विभिन्न लक्ष्य निर्धारित किए। पार्टी ने पहले ज़ारशाही को खतम करने, समाजवादी समाज सगठित करने और सोवियत व्यवस्था को सुदृढ करने के लिए जनता का आह्वान किया। इस समय पार्टी की तमाम शक्ति सोवियत देश की सुरक्षा के प्रयत्नो में केन्द्रित है। इस समय पार्टी अपने सभी सदस्यो को अच्छा, साफ-सुथरा जीव बनाने में बिलकुल दिलचस्पी नही ले रही है। इस समय पार्टी को सोवियत राज्य की सुरक्षा, उसकी स्वतन्त्रता और उसके भविष्य की चिता है। वह इसलिए लड रही है कि सारी दुनिया सोवियत सघ को एक महान शक्ति स्वीकार कर ले। आज का यही काम है। इस महान सघर्ष में जनता का पुनर्निर्माण भी हो रहा है, उसका दार्शनिक दृष्टिकोण, उसका चरित्र परिष्कृत हो रहा है। इस तरह हम नवीन जनता की एक नयी

पीढ़ी का पालन कर रहे हैं जो सर्वाधिक, नए समाज और समूची मानवता के आदर्शों के संघर्ष को सार्वजनिक बल पहुंचाती है। पार्टी अपने आप में कोई उद्देश्य नहीं, वरन् इन्हीं उद्देश्यों के लिए उसने अपने को समर्पित किया है। बिलकुल इसी तरह कोम्सोमोल भी अपने ही लिए नहीं रह सकता।

कोम्सोमोल के हर सदस्य का मूल्यांकन सिर्फ़ इस बात से नहीं होना चाहिए कि वह कोम्सोमोल के लिए क्या करता है, बल्कि इस दृष्टि से कि वह सार्वजनिक उद्देश्य को कितना बल पहुंचाता है। और यदि वह जमकर हर तरह से लड़ता है, यदि वह सोवियत राज्य की हिफ़ाज़त करता है और शत्रु के खिलाफ़ उस झंडे को उंचा रखता है, तो क्या सोवियत राज्य की सुरक्षा के उद्देश्य से किए गए उसके फ़ौजी काम को कोम्सोमोल का काम नहीं समझा जायेगा? यह स्पष्ट है कि उसका फ़ौजी काम ही कोम्सोमोल का काम है, यही उसके लिए मुख्य और बुनियादी काम है। इसके द्वारा ही वह अपनी देशभक्ति, वीरता और योग्यता का प्रदर्शन करता है।

हमारी कुछ यूनिटें इस समय सोवियत राज्य की सीमाओं के पार, विदेश में, रूमानिया की भूमि पर लड़ रही हैं। वहां हम नयी दुनिया देख रहे हैं। लाल फ़ौज ने स्थानीय जनता से सही संबंध स्थापित कर लिया है। हमें रूमानियन जनता की जिंदगी के तरीक़े में कोई दखलंदाज़ी नहीं करना चाहिए। यह बता देना सही होगा कि रूमानिया की जनता के बीच सोवियत संघ के विषय में अनेक असत्य बातें फैलाई गई हैं। कुछ रूमानिया-वासी इस डर से कि "भयानक बोल्शेविक हमारी खालें खिंचवा लेंगे," हमसे भाग रहे हैं। हमें यह दिखा देना चाहिए कि उन्हें धोखा दिया गया है। हमारी लाल फ़ौज के अफ़सरों और फ़ौजियों को परख लिया गया है। रूमानिया-वासी समझ

रहे है कि उनके देश में सुसस्कृत जनता की सुसस्कृत फौज आई हुई है। हमें सिर्फ खुफियागीरी और तोडफोड के खिलाफ सुरक्षा के कदम उठाने चाहिए—वे सिर्फ फौजी किस्म के ही होने चाहिए।

अत में दिल से आपके काम में मै आपकी सफलता की कामना करता हूं। मालूम होता है कि इन गरमियो में बडी-बडी लडाइया लडी जायेंगी। आपका काम है कि लोगो को टेकनिकल, राजनैतिक और मनोवैज्ञानिक तौर पर इनके लिए तैयार करे। आपको अपने तमाम काम इस काम की कामयाबी के लिए होनेवाले कामो के मातहत कर देने चाहिए। मै आपकी पूर्ण सफलता की कामना करता हूं। (जोरदार तालिया और "मिखाइल इवानोविच कालिनिन की जय!", "हुर्रा!" की आवाजें)

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा"
३१ मई १९४४

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा" और "पायोनीयरस्काया प्राव्दा" पत्रों के सम्मान समारोह में भाषण

११ जुलाई १९४५

साथियो, मैं "कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा" और उनके साथ ही कोम्सोमोल तथा "पायोनीयरस्काया प्राव्दा" के सम्मानित होने पर इन पत्रों के संपादक मंडलों, कोम्सोमोल के सदस्यों, पायोनीयरों और "पायोनीयरस्काया प्राव्दा" के पढ़नेवाले बच्चों को इन ऊंचे पारितोषिकों को प्राप्त करने के लिए बधाई देता हूं। पहले अखबार को एक फौजी आर्डर प्राप्त हुआ है और दूसरे को श्रम के क्षेत्र में की गयी सेवाओं के लिए आर्डर मिला है। वास्तव में ये दोनों ही अखबार इस तरह विभूषित किए जाने के योग्य हैं।

पूरे युद्ध के दौरान में "कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा" ने सोवियत युवकों में देशभक्ति, उत्साह और उत्सर्ग भावना भरने में योगदान दिया है। और उसकी कोशिश व्यर्थ नहीं हुई है।

इन चार वर्षों में हमारे तरुण और कोम्सोमोल के सदस्य जीवन के कठोर स्कूल से गुजरे हैं और बहुतों ने अपने प्राण भी होम दिए हैं। और इसमें संदेह नहीं कि इस दौर में जब लोगों ने इतना सब कुछ

किया, "कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा" ने इस सघर्ष मे उनका पथ प्रदर्शन किया —युवकों को सही दिशा प्रदान की। इस समय अपने काम के फल पर उसे गर्व होना ही चाहिए। उस प्रचार और आदोलन में महान सफलताए प्राप्त हुई है। सभवतया, सोवियत यूनियन के समूचे तरुण-समुदाय ने युग में ससार के तमाम तरुणो से अधिक बलिदान किया है।

"पायोनीयरस्काया प्राव्दा" ने भी बहुत बडा काम किया है। उसके द्वारा किए गए काम का पहला महत्व तो इस बात में है कि उसने बहुत कुछ अदृश्य तौर पर हमारे तरुण पायोनीयरो में बचपन से ही, अखबार पढने और सार्वजनिक जीवन में दिलचस्पी लेने की आदत डाल दी है। इस प्रकार "पायोनीयरस्काया प्राव्दा" ने तरुन पायोनीयरो के मानसिक विकास में सहायता दी है—पहले की तरह नही कि एक आदमी ४० साल की उम्र तक अज्ञानी बना रहता था और फिर पार्टी-कार्यकर्ताओं की सहायता से या यूही अचानक विकास की ओर उन्मुख होता था। उसके द्वारा किए गए काम का दूसरा महत्व इस बात में है कि उसने बच्चो के मानसिक क्षितिजो को विकसित करने के साथ ही उनमें सक्रिय जीवन बिताने की इच्छा इस तरह बलवती बनाई कि उनमे कार्यशीलता, जीने की ख्वाहिश और कुछ कर जाने की तमन्ना धीरे-धीरे बढती जाय। दरअसल "पायोनीयरस्काया प्राव्दा" का यही ध्येय रहा है।

तरुणो की शिक्षा एक बहुत मुश्किल काम है। जो लोग इस क्षेत्र में लगे है, वे सचमुच बहुत सम्मान का काम कर रहे है। लेकिन साथ ही यह बडे उत्तरदायित्व का भी काम है। इस काम में सफलता तभी मिल सकती है जब इस काम के प्रति आपमें स्नेह और लगन हो। तरुण पायोनीयर कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे अपनी यूनिट के काम में अपना मन-प्राण लगा दें, वे पायोनीयरो के काम, उनके हितो, उनकी शिक्षा में बिलकुल ही दत्तचित हो जायें।

मैं फिर दोहरा दूं कि इस मुश्किल पर आवश्यक काम में मैं आपकी सफलता की कामना करता हूं।

हम नव मानव की बात करते हैं। सचमुच, हम विशेष स्पष्टता के साथ देख रहे हैं कि मनुष्य पर बाहर का प्रभाव पड़ता है। मौजूदा समय में आप खुद जनता पर पड़नेवाले मानवता-विरोधी विचारों के जहरीले असर को देख सकते हैं। दूसरी ओर, जनता में अच्छे, मानवीय भावनाओं को भरने एवं देशप्रेम की शानदार मिसाल समस्त मानवता के सामने आज मौजूद है।

मैं चाहता हूं कि हमारे तरुण पायोनीयर कार्यकर्ता बच्चों को उसी तरह प्यार करें जैसे समझदार माताएं उन्हें प्यार करती हैं जो उन्हें सच्ची खुशी प्रदान करना चाहती हैं। मैं उनमें बहुत ही भले, सचमुच मानवीय संस्कारों को भरने की बात करता हूं, जो बाद में उनके जीवन का अंग बन जायेंगे। आपके सामने यह एक महत्वपूर्ण काम है। और इसलिए मैं इस काम में आपकी सफलता की कामना करता हूं।

(तरुण-अखबारों के कार्यकर्ताओं ने म० इ० कालिनिन की दिली और पैतृक शुभ कामनाओं का हार्दिक स्वागत किया और आश्वासन दिया कि "कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा" और "पायोनीयरस्काया प्राव्दा" दोनों ही पत्र सोवियत तरुणों में उच्चतम भावनाएं और स्वदेशप्रेम जागृत करने का भरसक प्रयत्न आगे भी करते रहेंगे)

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा"

१३ जुलाई १९४५

कोम्सोमोल के काम का आधार — संगठन और संस्कृति

मास्को क्षेत्र के सामूहिक गावो के कोम्सोमोल सगठन के मंत्रियो के सम्मेलन मे दिया गया भाषण

१२ जुलाई १९४५

साथियो, मै सिर्फ एक समस्या पर बोलूगा। आप लोग मास्को क्षेत्र के कोम्सोमोल सगठन के प्रतिनिधि है, उस मास्को क्षेत्र के—जिस क्षेत्र में हमारी राजधानी है, जहा शिक्षा और साक्षरता बहुत ऊची सतह पर है। यह स्वाभाविक ही है कि मास्को क्षेत्र के हमारे कोम्सोमोल सदस्य हमारे समाजवादी समाज के सबसे अधिक सुसस्कृत अग हो। वैसे तो दैनिक व्यवहार में आप जिन गुणो को प्रदर्शित करते है—निस्वार्थता, असीम शक्ति, होड में उत्साह, देशभक्ति—एक शब्द में, हमारे कोम्सोमोल की सभी अच्छाइया, वे कोम्सोमोल के दूसरे अगो में भी विद्यमान है।

तो भी, राजधानी के कोम्सोमोल सगठन को कुछ भिन्न होना ही चाहिए, उसमें राजधानी का कोई विशेष गुण होना चाहिए। कहा जाता है कि राजधानी के नागरिक में विशेष चमक होनी है। वह

प्रदेशो के नागरिक से भिन्न होता है। वह दृष्टि के तीखेपन, घटनाओ के प्रति विशेष रुख, आदि से पहचाना जाता है। माना कि आप खास मास्को के नही, वरन् मास्को क्षेत्र के निवासी है और खेती-बारी का काम करते हैं। तो भी, राजधानी के क्षेत्र के कोम्सोमोल सगठन होने के नाते आप में कुछ न कुछ विशेषता होनी ही चाहिए।

हमारे देश के सबसे अधिक सुसंस्कृत कोम्सोमोल सगठनो में होने के नाते आपके क्षेत्रीय सगठन से इस समय क्या आशा की जाती है? मुझे ऐसा लगता है कि आपको सगठन की आवश्यकता है। आपको चाहिए कि आज के मुकाबले कम श्रम लगाकर भी आप ज्यादा अच्छे फल पा सके। कोम्सोमोल के सामने इस समय यही काम है।

आखिर हमारे किसानो में आप ही सबसे अधिक सुसस्कृत है—आपने सातवी से लेकर दसवी कक्षाओ तक शिक्षा पाई है। पुराने मास्को गुबेर्निया मे बहुत थोडे तरुणो ने माध्यमिक शिक्षा पाई थी। पुराने जमाने में कभी भी तरुणो की शिक्षा पर इतना खर्च नही हुआ, जितना कि सोवियत शासन में।

शिक्षा का तात्पर्य क्या है? शिक्षा लोगों को अनुशासित करती है और हर मसले को सुनियोजित तरीके से समझने की काबिलीयत देती है। एक अशिक्षित आदमी अपने काम को यन्त्रवत्, आदतन करता है। उसके पास कोई सुयोजित योजना नही होती। वह उसी तरह काम करता है, जैसे उसका बाबा करता था। लेकिन अब आपको उस तरह काम नही करना है, जैसे आपका बाबा करता था। अब आपको उसमें नवीनता और सुयोजना लानी है।

सुयोजना का क्या मतलब है? इसका मतलब यह है कि बुवाई इस तेजी से न की जाय कि हर आदमी मुर्गे की आवाज के साथ जाग जाये और रात गए सोये और जीभ निकाले भागा-भागा फिरे। मैं मानता हू कि इस तरह भी नतीजे प्राप्त किए जा सकते है। लेकिन

आप, जो किसानों में बुद्धिजीवी-वर्ग के हैं, सुसंस्कृत हैं, आपका कर्तव्य है कि आप अपने कार्य में योजना लाएं, यह देखें कि वे बिना शोरगुल के अपने आप होते रहें, और उनके अच्छे फल निकलें। यही आपके सामने बड़ा काम है। कोम्सोमोल संगठन को चाहिए कि इस क्षेत्र में वह आगे रहे।

लेकिन दैनिक जीवन को सुसंस्कृत करने का क्या अर्थ है? इसका अभिप्राय यह है कि ऐसा कुछ न किया जाय, जो व्यर्थ हो। इसका मतलब यह है कि हर क्रिया का फल निकले। क्या आपको मालूम है कि कारखाने में कैसे काम होता है? एक मजदूर अपनी लेथ पर जितनी दौड़-धूप करता है, उतना ही कम काम कर पाता है। और एक मजदूर जो शायद ही कभी हिलता हो, कमाल कर दिखाता है, वह एक बार भी व्यर्थ में नहीं हिलता। उसके सभी औजार और लेथ उसके पहुंच में होते हैं। बिना घूमे ही उसके हाथ आवश्यक चीज पर पड़ते रहते हैं और उसका काम बहुत ही उत्पादकीय होता है।

देहातों में, खेतीबारी में आप सुबह से शाम तक घोड़े की तरह काम कीजिए, और फिर भी आपको लगता है कि कुछ ज्यादा काम नहीं हुआ। मैं सही कह रहा हूं या नहीं? लगता है कि आप काम ही काम करते रहे, लेकिन तो भी तमाम काम पड़ा रहता है। यह उचित संगठन की कमी के कारण होता है। इसलिए हमें अपने काम में संगठन लाना है। मैं तो कहूंगा कि हमें अपने दैनिक जीवन में भी संगठन लाना है।

और कोम्सोमोल के काम में संगठन का क्या मतलब है? इसका मतलब है कि मीटिंगों में व्यर्थ, खोखली बातें न हों। जब किसी सवाल पर बहस हो, तो आम तौर पर नहीं, बल्कि ठोस हो और उसे व्यावसायिक तरीक़े से हल किया जाय। वह पूरी तरह निपटाया जाय। यह याद रखिए कि एक आदमी सुनियन्त्रित है या नहीं, यह

बात उसके हर काम से—आंदोलन-संबंधी काम, मीटिंग या चाय की मेज़ पर के व्यवहार से—प्रकट हो जाती है।

मैं समझता हूं कि सबसे अधिक सुसंस्कृत होने के नाते मास्को कोम्सोमोल संगठन इस काम को निभा सकता है। यदि वह इसे हल नहीं करता, तो फिर कौन करेगा? आपका काम सुनियोजित होना चाहिए, क्योंकि खेतीबारी में आपको विभिन्न तरीके की फसलों से निपटना पड़ता है। ऐसी फसलें—जिनमें बहुत श्रम लगता है—बगीचे की फसलें, तरकारियां जिनमें बहुत काम की ज़रूरत होती है। सचमुच यदि आप संगठित नहीं हैं, तो हो सकता है कि आपको कोई फल न मिले।

कोम्सोमोल के सामने मैंने पहले भी यह मसला उठाया है। लेकिन आपकी सभाओं और भाषणों से यह लगता है कि आपने इसपर गंभीरता से सोचा नहीं है। तो भी, कोम्सोमोल लोगों के चरित्र का निर्माता है। मैं कह सकता हूं कि कोम्सोमोल सारे जीवन के लिए बुनियाद डालता है। अतः आप, कोम्सोमोल के सक्रिय कार्यकर्ता अपने ऊपर बहुत बड़ा उत्तरदायित्व ले रहे हैं। आपके कुछ संगठन क्रियाशील, सोवियत देशभक्तों का, अच्छे लोगों का निर्माण कर रहे हैं, परंतु उनमें संगठन की अभी पूर्ण क्षमता नहीं है।

मुझे आशा है कि मास्को कोम्सोमोल संगठन अपने काम के इस पहलू पर अवश्य ध्यान देगा। मैं अपने दिल से आपकी सफलता की कामना करता हूं। (ज़ोरदार तालियां। सब उठ खड़े होते हैं। "मिखाइल इवानोविच कालिनिन—ज़िंदाबाद!" और "हुर्रा!" की आवाज़ें)

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा"

१४ जुलाई १९४५

गौरवशाली सोवियत ललनाएं

अखिल-संघीय लेनिनवादी नौजवान कम्युनिस्ट लीग की केन्द्रीय कमेटी में लाल फ़ौज और नाविक बेड़े से लौटी हुई तरुणियों की सभा में दिया गया भाषण

२६ जुलाई १९४५

साथियो, सबसे पहले मैं आप सबको महान जन-युद्ध के विजयी अंत पर बधाई देता हूं। शत्रु हार चुका है। हमारे उद्देश्य की विजय हुई है। इस असाधारण युद्ध में औरतों ने मोर्चे के पीछे रह कर अथक परिश्रम करके फ़ौज की सहायता तो की ही, साथ ही वे हाथों में हथियार लेकर लड़ी भी थीं।

इस युद्ध में जिन तरुणियों ने भाग लिया, वे अपनी शिक्षा, सांस्कृतिक सतह, स्वास्थ्य, शारीरिक दृढ़ता और फ़ौजी काम से दिलचस्पी के आधार पर लाखों की तादाद में फ़ौज के लिए चुनी गयी थीं। मैं समझता हूं कि हमारी अच्छी से अच्छी तरुणियां मोर्चे पर गयी थीं। यह स्वाभाविक ही था कि उनके काम बहुत संतोषजनक होते।

युद्ध का अंत हो गया और अब आप फौजी सेवा से निवृत्त हो रही हैं। युद्ध में भाग लेना आसान काम नहीं था। लेकिन आपके लिए फ़ौज से अलग होना भी आसान नहीं है। मिसाल के लिए, सामूहिक खेती करनेवाला किसान, जिसका उद्देश्य निश्चित है, जिसको रहने का घर है, परिवार है, पत्नी है, बच्चे हैं, उसका फौज से अलग हो जाना एक बात है। लेकिन एक २०-२३ साल की तरुणी के लिए जो मोर्चे से लौटी है, जिसे जीवन की कठोरताओं का पहली बार आभास वहा हुआ, यह बिलकुल दूसरी बात है। और इससे भी ज्यादा, वह तमाम मुश्किलो और खतरो के बावजूद इस जिंदगी की आदी फौज में ही हुई। अधिकाश तरुणिया, जो फौजों में रही हैं, युद्ध से पहले आत्म-निर्भर नही थी। वे अध्ययन करती थी। एकाध को छोडकर वे सभी अपनी माओ, दादियो और पिताओ के सरक्षण से आई थी और मोर्चे पर ही आकर स्वतन्त्र हुई। यह स्वतन्त्र जीवन ३-४ साल बाद खतम हो रहा है। और इसलिए यह स्वाभाविक है कि आपमें ६० फ़ीसदी नए जीवन और भविष्य के बारे में चिंतित हो। लेकिन याद रखिए कि नए जीवन में आपको फायदा ही रहेगा।

यह फायदा क्या है? वह यह है कि अब आप पूरी तौर से सामर्थ्यवान होकर नये जीवन में प्रवेश करेंगी। यह बडा फायदा है, क्योकि शारीरिक तौर से सक्षम लोग ही जीवन से अधिक लाभ उठाते हैं। यह प्रत्यक्ष लाभ आपको लाल फौज में नौकरी के कारण प्राप्त हुआ है।

आपमें से अधिकाश की नसें सुस्थिर हैं। युद्ध के भयानक अनुभवो ने आपको तोडा नही, वरन् आप और अधिक लौह हो गई हैं। फौज में जाने से यह एक और फायदा हुआ है। आपके भावी जीवन के लिए यह भी बडे महत्व की बात है।

तो अब आपसे क्या आशा की जाती है? क्या फौज का आपका अनुभव आपके किसी फायदे का होगा? निस्सदेह उससे फायदा होगा।

आपने महान राष्ट्र-व्यापी प्रयत्न में भाग लिया है—यही विचार आपको आतरिक शक्ति और सतोष प्रदान करेगा। सबमे बडे खतरे के सामने आपने अपने देश की रक्षा की और यह सचमुच एक वहुत महान साधना है। आपके भावी जीवन के लिए यह गहरी नैतिक वुनियाद वहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी।

किमी ने यहा कहा कि जो किया गया है, उममें कोई वडी वहादुरी की वात नही। शौर्य, ऐमा शौर्य जो विजली की चमक की तरह किसी को प्रकाश में ला दे—किन्ही व्यक्तियो के भाग्य में होता है। ठीक है, इम प्रकार का शौर्य बहुत हद तक परिस्थितियो पर निर्भर होता है। शौर्य के विशिष्ट उदाहरण—जो शौर्य-प्रदर्शन की परिस्थितियो से मेल खा जाए—अक्सर घटना-चक्र पर आधारित होते है। जिन्हो ने शौर्य के ये करिश्मे दिखाए, वे परिस्थितियो और घटना-चक्र का फायदा इसलिए उठा सके कि वे शारीरिक, मानसिक, नैतिक और राजनैतिक तौर से इस शौर्य-प्रदर्शन के लिए तैयार थे। मुझे विश्वास है कि यदि ऐसी परिस्थितिया आ जाए तो हमारी अनेक तरुणिया ऐसे जौहर कर दिखायेंगी। तो भी, अपनी जगह पर यह वात सही है कि हम वैयक्तिक शौर्य की वात कर रहे है।

एक वार एक अग्रेजी जहाज के कप्तान से सवाल किया गया शौर्य किस वात में है? उसने जवाव दिया हर परिस्थिति में अपने कर्तव्य का पूर्णतया पालन करना ही शौर्य है। हर परिस्थिति में अपने कर्तव्य का पालन करना भी शौर्य है। और इसी शौर्य के लिए, लाखो द्वारा प्रदर्शित इसी सामान्य वीरता के लिए सरकार ने कोम्सोमोल को देश की सवसे वडी उपाधि—"लेनिन पदक"—से विभूषित किया है। मै समझता हूं कि आप सभी को इसका गर्व होगा, क्योकि कोम्सोमोल का विभूषित होना आप सवका ही विभूषित होना है।

मुझे पूरा विश्वास है कि आप में ९९ फीसदी जल्दी ही अपनी नयी

परिस्थिति की आदी हो जायेंगी और जो लोग लवे अरसे से नागरिक जीवन व्यतीत करते है, उन से आप किसी प्रकार कम न रहेंगी।

मुझे यकीन है कि आप सब जल्दी ही पुन नागरिक जीवन में लग जायेंगी। सोवियत संघ में काम की कमी नही। आपको फैक्टरियो, मिलो, सामूहिक खेती के क्षेत्रो, दफ्तरो और अनेक तरह की सस्थाओ से काम के लिए बुलाया जायेगा—जहा भी आप जायेंगी खुले हाथो आपका स्वागत होगा। इस के अलावा, आप शीघ्र ही सार्वजनिक, राजनैतिक और सगठनात्मक क्षेत्रो मे तरक्की हासिल करेंगी। यह बिलकुल स्वाभाविक ही है। एक तरुणी, जिसने ३ वर्ष अनुशासन के वातावरण में काम किया हो, देश के लिए उसका बडा मूल्य है।

इसीलिए मै समझता हू कि आप शीघ्र ही उचित स्थान पर पहुच जायेंगी। कोम्सोमोल की केन्द्रीय कमेटी को अलबत्ता उन सब की सहायता करनी चाहिए जो इस या उस कारण से किसी मुश्किल में हो। लेकिन ऐसी तो अधिक नही, एकाध ही होगी और उन्हे हर सभव सहायता देनी चाहिए।

मुझे विश्वास है कि केन्द्रीय और प्रादेशिक कोम्सोमोल सगठन आपको काम दिलाने की हर तरह से कोशिश करेंगे, क्योकि आपने बहुत जबर्दस्त और महत्वपूर्ण काम किया है।

आपने एक बात और की है। हमारे देश में औरतो को बराबरी का दर्जा अक्तूबर-क्रान्ति के पहले दिन से ही हासिल है। लेकिन आपने एक दूसरे क्षेत्र में, हाथ में हथियार लेकर स्वदेश की सुरक्षा में भी बराबरी प्राप्त कर ली है।

एक बूढे अनुभवी की भी बात सुन लीजिए। भविष्य में कही अपने अन्दर बडबोलापन न आने दीजियेगा। अपनी सेवाओ का अपने आप गुणगान न कीजिएगा। उसे दूसरो पर ही छोड दीजिए। यह ज्यादा अच्छा होगा।

मैं आपके भविष्य के विषय में वहुत आशावान हूं। मुझे निश्चय है कि आप नागरिक जीवन में भी महत्वपूर्ण भाग लेंगी। शायद फ़ौज की तरह वह उतना उल्लेखनीय न होगा, लेकिन शांति-काल के निर्माण-कार्य में आप अपना हिस्सा अवश्य देंगी।

युद्ध-काल की स्थिति चाहे जितनी ही उल्लेखनीय क्यों न हो, वह जनता को चाहे कितना ही एक क्यों न कर दे, इन्सान की अच्छी भावनाओं को—जैसे देशभक्ति को, वह चाहे कितनी ही ऊंचाइयों पर क्यों न पहुंचा दे, लेकिन एक राष्ट्र के इतिहास में यह एक घटना-मात्र ही रहती है, जब कि शांतिपूर्ण स्थिति एक देश की साधारण स्थिति है—जिस स्थिति में हम सबको काम करना होता है।

मैं दिल से कामना करता हूं कि आपने जो रचनात्मक शक्ति एकत्र की है, वह अब शान्तिपूर्ण निर्माण में लगे। (देर तक ज़ोरदार तालियां। सब उठ खड़े होते हैं और म० इ० कालिनिन का दिल से स्वागत करते हैं)

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा"
३१ जुलाई १९४५

उच्चतर स्कूलों में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बुनियादी सिद्धातों की शिक्षा के बारे मे

कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के उच्चतर पार्टी-स्कूलो की सभा मे दिया गया भाषण

३१ अगस्त १९४५

चूकि मैं उन लोगो के बीच भाषण दे रहा हू जिनका पेशा, जिनका काम जनता में कम्युनिस्ट विचार भरना है, इसलिए मै यह सवाल उठाना चाहता हू कि मजदूरो, किसानो बुद्धिजीवियो और विशेषत युवको में कम्युनिस्ट प्रचार की सफलता के लिए कौन से रूप और कौन से तरीक़े अपनाए जायें।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद और उससे सबधित विज्ञानो की शिक्षा देना मुश्किल काम है, लेकिन साथ ही बहुत महत्वपूर्ण काम है। लेनिन ने एक बार कहा था कि मार्क्सवाद की विचारधारा एक तो लोगो को इसलिए आकर्षित करती है कि वह वैज्ञानिक है और दूसरे इसलिए कि वह क्रान्तिकारी है। आप मार्क्सवाद-लेनिनवाद को दो तरीके से पढा सकते है—रचनात्मक तरीक़े से, और मैं कहू यदि हवाई तरीके से।

रचनात्मक तरीके, जो विशेषत कठिन है, और हवाई तरीके में क्या भेद है? पढ़ाने के हवाई तरीके का मतलब है कि एक किताब को लेकर "यहा से वहा तक" निशान लगा देना, शिक्षार्थियो से कहना कि पढ लो, और फिर जो उन्होंने पढा है उसमें से सवाल पूछ लेना। इस तरीके से सबसे कम फल निकलता है। प्रचारक या आदो-लनकारी जितना ही हवाई बात करेगा, उतना ही वह ठोस बातो से दूर रहेगा और उतना ही कम उसकी बात का प्रभाव श्रोताओ पर पडेगा।

लोग मार्क्सवादी विचारधारा का पुस्तकीय पाडित्य प्राप्त कर सकते है। वे उसका चैतन्य ज्ञान प्राप्त कर सकते है, यानी वे उसे अपनी समझ का अग बना सकते है। हम मार्क्सवादियो को कोशिश करनी चाहिए कि जितने हो सके, उतने लोग मार्क्सवादी विचारधारा को पूरी तरह से ग्रहण करे, उसे समझें, और उसका पूरा पाडित्य प्राप्त करे।

मैं यहा इस विज्ञान की शिक्षा पर ही क्यो बोल रहा हूँ? क्योकि हमारी उच्च शिक्षा-सस्थाओ में मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन बहुत ही मुश्किल समझा जाता है।

एक बार, एक ऐसे साथी से जिन्हे इस विषय पर अधिकार था, मैंने यह प्रश्न पूछा "यदि हम इस विषय को बाध्य न करके लोगो की स्वतत्रता पर छोड दें तो कैसा होगा? क्योकि दरअसल एक सुसस्कृत व्यक्ति के लिए मार्क्सवाद-लेनिनवाद सबसे अधिक दिलचस्प और आवश्यक विषय है। उसके आधार पर दिलचस्प से दिलचस्प भाषण दिए जा सकते है। जब इस विषय पर भाषण दिए जाए तो विद्यार्थियो के हाल खचाखच भरे होने चाहिए।" उस साथी ने थोडी देर सोचा और फिर जवाब दिया "आपकी बात सही हो सकती है। ज्यादा अच्छा हो कि हम थोडा और देख ले। जब तक ऐसे लेक्चरर

न हो जो सचमुच इस विपय पर विद्यार्थियो को आकर्पित कर सके (हसी), तब तक हम शायद ही इसे निभा सके, क्योकि हम लोग इस मामले में कमजोर है।"

इस बातचीत से आप समझ सकते है कि इस वक्त मार्क्सवाद-लेनिनवाद के शिक्षको के सामने पढाई के तरीको को सुधारने, इतने दिलचस्प विषय को पढाने के रचनात्मक तरीक़े पर सोचने का उत्तरदायित्व है।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद समाज और उसके विकास के नियमो का सच्चा विज्ञान है। बाहरी तौर पर हम इसे जल्दी जान सकते है। लेकिन सवाल है कि कैसे?

मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन एक हद तक अकगणित के अध्ययन की तरह है। अकगणित यदि सबसे ज्यादा हवाई नही, तो हवाई विपय तो है ही। लेकिन वह कैसे पढाई जाती है? पहले आप उसके नियमो का अध्ययन करते है। फिर आपको अनेक ठोस, बिलकुल व्यावहारिक समस्यायें हल करने के लिए दी जाती है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन भी ठोस तथ्यो की सहायता से, जीवन से ली गई मिसालो से होना चाहिए।

साथियो, आप कुछ प्रोफेसरो को जानते है जो इतिहास पढाते समय सिर्फ एक ही प्रकार के तथ्यो और तारीखो को बार-बार दोहराते हैं। लेकिन दूसरे भी है, जो अपने हर लेक्चर में नए तथ्य, नयी सामग्री देते है। वे आज की समस्याओ मे पिछले युग की समस्याओ का मुकाबला करते है और कल और आज की असलियत में भेद बताते है। इतिहास का अध्ययन जब इस प्रकार किया जायेगा तभी लोग विपय से प्रभावित होगे और उसका गहन अध्ययन करेगे।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद विशेपत बुनियादी सिद्धातो के ठोस तथ्यो,

ठोस कामो से लगातार परीक्षा की माग करता है, क्योंकि सिर्फ इतना ही काफी नही है कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद का एक विषय के रूप में अध्ययन किया जाय। साथ ही साथ आवश्यकता इस बात की है कि सामाजिक स्थितियो को समझने के लिए उसे व्यवहार में लागू करना सीखा जाय। मेरी राय में यह मुख्य चीज है। एक आदमी विचारधारा का पडित हो सकता है। लेकिन हो सकता है कि सामाजिक परिस्थितियो पर उसे लागू कर सकने के वह अयोग्य हो। यह एक बहुत अधिक पेचीदा मामला है। एक मार्क्सवादी का मूल्य उसी हद तक है जिस हद तक वह विशिष्ट समस्याओ को हल करने के लिए मार्क्सवादी तरीके को लागू कर सकने के योग्य है।

मान लीजिए दो विद्यार्थी परीक्षा देने आए। उनमें से एक का उत्तर पाठ्य-पुस्तक के ही शब्दो में है, जबकि दूसरे का उत्तर यद्यपि पुस्तक की सामग्री पर आधारित है और बुनियादी तौर पर सही है, लेकिन उसकी स्थापनाओ से विभिन्न है। मै इन विद्यार्थियो के काम का मूल्याकन किस तरह करूगा? मै दूसरे विद्यार्थी के ज्ञान पर अधिक विश्वास करूगा और किसी भी हालत में उस विद्यार्थी से कम नबर न दूगा जिसने रट कर किताब को दोहरा दिया है। (हॉल में सनसनी) मै ऐसा क्यो करूगा?

हमारा उद्देश्य होना चाहिए कि हमारे विद्यार्थी अपने विचारो को खुद प्रकट कर सके, वे अपने ज्ञान का स्वतत्र प्रयोग करने के योग्य बनें, न कि महज किताबो से उद्धरण देनेवाले बने। प्लेखानोव के शब्दो में वे कही "उलट दिए गए पुस्तकालय" न बन जाए।

मेरा अनुभव बताता है कि साधारणत बुद्धू विद्यार्थियो द्वारा दिए गए उत्तर समझदार विद्यार्थियो के उत्तर के मुकाबले अधिक किताबी होते है। यह बिलकुल स्वाभाविक है, क्योकि दूसरी तरह के

विद्यार्थी विषय समझने की और पचाने की कोशिश करते है। मार्क्सवादी विचारो को अपनी भाषा में व्यक्त कर सकना—बडी बात है। उन्हे इस दिशा में प्रोत्साहित करना चाहिए। (तालियाँ)

हमें ऐसे लोगो की आवश्यकता नही जो किताबी मार्क्सवादी हो, जो परीक्षा की तैयारी के लिए शब्दश फारमूलो को रट लेते है, बल्कि हमें उनकी आवश्यकता है जिन्होने मार्क्सवादी तरीके पर पाडित्य हासिल किया है और जो उसे व्यवहारिक जीवन में लागू करने में समर्थ है।

आप जानते है कि मार्क्सवाद सामाजिक स्थितियो को समझने का वैज्ञानिक तरीका है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद का ज्ञान राजकीय, आर्थिक और सास्कृतिक कार्यो के लिए आवश्यक है। अपने पेशे का अच्छा ज्ञान रखते हुए क्या वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धात से अवगत होना एक इजीनियर के लिए महत्व की बात नही है? तब वह हर स्थिति को जागरूक तौर पर, सही तौर पर समझ सकने के योग्य होगा। मार्क्सवाद का विज्ञान पूरे सामाजिक ढाचे को समझने में भी सहायक होता है।

अपनी विचारधारा के आधार पर मार्क्स ने पूजीवादी समाज का बहुत अच्छा विश्लेषण किया। मार्क्स ने अपनी विचारधारा की तात्विक विशेषताओ को बताने के बाद यदि पूजीवादी समाज का विश्लेषण न किया होता, तो क्या आप समझते है कि समाज विज्ञान-शास्त्र में उसकी विचारधारा को इतना प्रमुख स्थान मिलता, जितना आज मिला हुआ है? फिर, यदि मार्क्स ने अपनी विचारधारा बताने तक ही अपने को सीमित नही रखा, बल्कि उसे पूरे सामाजिक ढाचे को समझने का आधार बनाया, तो हर प्रोफेसर को भी चाहिए कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के मूल तत्वो को समझाने के साथ ही वह हर समाजी स्थिति का विश्लेषण करे। अगर वह ऐसा करेगा तो उसके लेक्चरो

में लोगो के लिए कशिश पैदा होगी। यदि प्रोफेसर सामाजिक स्थिति का विश्लेषण करे, तो उनकी शिक्षा का ढग रचनात्मक होगा।

मै भी एक अध्यापक था—अडरग्रउड स्टडी-सर्किल में (भूमिगत अध्ययन गोष्ठी) में मार्क्सवाद का अध्यापक। कभी-कभी ऐसा होता था कि किसी बात को समझाते समय मै महसूस करता कि जो मै कह रहा हूं, उसे मेरे विद्यार्थी पूरी तरह समझ नही पा रहे है। तब मै इस तरह पढाने लगता पहले हम लोग पन्द्रह मिनट सिद्धात पढते थे, फिर जीवन की अनेक स्थितियो का विश्लेषण करते हुए दिल खोल कर बाते करते थे। बस आप मान लीजिए कि लोग आसानी से बात समझ लेते थे। लेकिन यदि मै पूरे घटे भर सिद्धात बघारता रहता तो उसका कोई नतीजा न निकलता। अत आप समझ सकते है कि प्रचारको के लिए अपने विषय को सजीव बनाने के लिए अनेक तरीके प्रयुक्त करना कितना आवश्यक है—और जो सामग्री इन्होने पढी है उसको अधिक अच्छी तरह समझाना कितना जरूरी है। हमारे विश्वविद्यालयो के अध्यापको को यह तो अवश्य ही करना चाहिए।

रचनात्मक तरीके से शिक्षा देने का यही तात्पर्य है।

अलबत्ता, इस तरीके से पढाना बहुत ही कठिन है, क्योकि आपको हर लेक्चर तैयार करना पडेगा, उचित सामग्री ढूढनी पडेगी और उस पर विचार करना होगा। शिक्षा के इस तरीके से मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बुनियादी सिद्धातो के बारे में आपके विद्यार्थियो का ज्ञान गहरा होगा, क्योकि इस तरह ठोस घटनाओ और ठोस तथ्यो की सहायता से दिल में बात ठीक बैठ जाती है। लेकिन जब शिक्षा हवाई तरीके से दी जाती है तो फल अधिक अच्छा नही होता। पढाई थकाने वाली हो जाती है। और लोग उसके इस विषय के अध्ययन की इच्छा ही छोड देते है।

हमें विद्यार्थियो से सिर्फ यही माग नही करनी चाहिए कि वे मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धातो को जानें। हमें उनसे यह भी माग करनी चाहिए कि वे विभिन्न तथ्यो को मार्क्सवाद-लेनिनवाद की दृष्टि से देखें और उनका मूल्याकन करे। यदि यह लेक्चरो के दौरान में नही हो सकता तो कम से कम कक्षा के वाद-विवाद के दौरान में तो हो ही सकता है।

इसलिए साथियो, (मै अपने को भी यदि लेक्चरर या अध्यापक नही समझता, तो कम्युनिस्ट विचारधारा के प्रचारको में एक तो समझता ही हू) (तालिया) मार्क्सवाद-लेनिनवाद पर होनेवाले लेक्चर, जहा तक उसके क्रान्तिकारी और वैज्ञानिक पक्ष का सबध है, सिद्धातो पर आधारित हो (इन दो आवश्यक बातो को याद रखिए कि वे क्रान्तिकारी और वैज्ञानिक हो)। और वे तमाम उन सुन्दर रगो से प्रकाशमान हो जो इन्सान के लिए सम्भव हो। यह न भूलिए कि तरुण आकर्षक चीजें चाहते है। और यदि आप मामले पर विचार करे, तो मार्क्सवाद-लेनिनवाद से अधिक आकर्षक और क्या हो सकता है, क्योकि ये विचार असीमित रचनात्मक प्रयत्नो के विचार है। इस क्षेत्र में आपके सामने विशद से विशद द्वार खुल जाते है। अत आपका यह कर्तव्य हो जाता है कि आप गभीर रचनात्मक प्रयत्न करे।

मेरा विश्वास है कि अपनी तमाम कोशिशो को केन्द्रित करके आप जनता की उस मानसिक स्थिति का प्रयोग कर सकते है जिसका जिक्र मैने अपने कथन के शुरु में किया था। आप मजदूर-वर्ग, किसानो और बुद्धिजीवियो में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विचार बहुत बडे पैमाने पर भर सकते है।

साथियो, शिक्षा के रचनात्मक तरीक़े में आपकी पूर्ण सफलता की मै कामना करता हूँ और मै यह विश्वास दिलाता हू कि यदि आप इन तरीक़े को अपनायेंगे, तो उच्चतर माध्यमिक स्कूलो में आप मार्क्सवाद-

लेनिनवाद के बुनियादी सिद्धातो को सबसे ज्यादा दिलचस्प, और सबसे अधिक आकर्षक विषय बना सकेगे।

हमारे देश के मजदूर-किसान सोवियत सत्ता पर अपना सब कुछ निछावर करने को तैयार है। (तालिया) तो फिर आइए, हम और आप सब अपने देश की मेहनतकश जनता को मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विचारो से और अधिक पूर्ण करे, उनके मार्ग को और अधिक प्रकाशमान करे।

"प्रोपेगेंडिस्ट" मैगज़ीन

अक १७ १९८५

अखिल-संघीय लेनिनवादी नौजवान कम्युनिस्ट लीग की केन्द्रीय कमेटी के चौदहवें अधिवेशन के समारोहिक बैठक मे दिया गया भाषण

२८ नवबर १९४५

लेनिनवादी कोम्सोमोल की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य साथियो! प्रादेशिक कोम्सोमोल सगठनो के प्रतिनिधियो और मास्को सगठन के सक्रिय कार्यकर्ताओ!

आज लेनिनवादी कोम्सोमोल को सर्वोच्च उपाधि — "लेनिन पदक" से विभूषित किया गया है। अब कोम्सोमोल का फरहरा जनता के सुख के लिए सघर्ष करनेवाले महान योद्धा व्लादीमिर इल्यीच लेनिन के चित्र से विभूषित हो गया है।

साथियो, अपनी अनुपम सेवाओ के लिए सोवियत सरकार ने नौजवान कम्युनिस्त लीग को तीसरी वार सम्मानित किया है।

पहली वार कोम्सोमोल को गृह-युद्ध के दौरान में, उसकी सेवाओ के लिए पारितोषिक मिला था।

उन दिनो कोलचक, देनिकिन, यूदेनिच, पोलिश व्हाइट-गार्डों और व्रंगल का जव हमारी जनता सोवियत सत्ता की रक्षा के सघर्ष

में लगी थी, मुकावला करने के लिए कोम्सोमोल ने हजारो क्रांतिकारी तरुणो को प्रेरित एव सगठित किया था। वोल्शेविक पार्टी के झडे के नीचे अपने जौहर दिखा कर तरुणो ने सोवियत सत्ता के प्रति अपनी भक्ति का परिचय दिया था। सोवियत सत्ता को सुदृढ करने के लिए, हमारी जीत के लिए वे कोम्सोमोल के नेतृत्व में लडे थे।

कोम्सोमोल को दूसरी वार फिर उसके महान काम के लिए, उसके द्वारा प्रदर्शित उत्साह के लिए, सोशलिस्ट होड विकसित करने के लिए, पचवर्षीय योजना की सफलता के लिए, पार्टी के नेतृत्व में चलाए गए आत्मवलिदान पूर्ण सघर्ष के लिए और उसकी ऐसी कार्य-वाही के लिए जो अपने साथ दूसरो को भी लेकर चलती है और उनसे उत्साहपूर्ण काम करवाती है, हमारी सरकार ने १९३१ में पहली पचवर्षीय योजना के पूर्ण होने पर विभूषित किया था। उस समय कोम्सोमोल को "श्रम के लाल झडे का पदक" प्रदान किया गया था।

अव मैंने आपको तीसरा पदक प्रदान किया है। यह पदक, "लेनिन पदक" हिटलरी जर्मनी के खिलाफ लडे गये सोवियत सघ के देशभक्तिपूर्ण युद्ध मे कोम्सोमोल द्वारा की गई उल्लेखनीय सेवाओ के लिए दिया गया है। कोम्सोमोल ने स्वदेश के प्रति सर्वोच्च सेवा की भावना में जिस तरह सोवियत तरुणो को शिक्षित किया है, यह पदक उसी के लिए प्रदान किया गया है। कोम्सोमोल को यह उच्चतम पारितोषिक देकर सरकार ने उसके द्वारा देशभक्तिपूर्ण युद्ध में स्वदेश की रक्षा के लिए मोर्चे पर और पिछवाडे में, फैक्टरियो और मिलो में, तथा सामूहिक खेती के क्षेत्रो में किए गए महान सघर्ष पर जोर दिया है।

एक शब्द में, कोम्सोमोल को स्वदेश के प्रति सेवाओ के लिए विभूषित किए जाने का मतलव है कि कोई भी ऐसा क्षेत्र नही, जिसमें पार्टी के वफादार सहायक कोम्सोमोल ने भाग न लिया हो।

साथियो, जब हमारी सरकार किसी संगठन या व्यक्ति को विभूषित करती है, तो वह उसकी पिछली सेवाओं को ही ध्यान में नहीं रखती, वरन् उसके भविष्य के काम पर भी ध्यान रखती है। कोम्सोमोल के सामने अब नया काम है? अब किस क्षेत्र में आपको विशेष उत्साह से काम करना है, जिससे कोम्सोमोल के झंडे को और भी सफलताएं प्राप्त हों?

मैं आपसे कोई नई बात नहीं कहने जा रहा हूं। मैं तो आपको वही बात बताऊंगा जो आप जानते हैं, पर, जिसे फिर से याद करना चाहिये। साथियो, आपका पहला और मुख्य काम है कि सरकारी संस्थाओं द्वारा बनाई गई नई पंचवर्षीय योजना की, युद्धोपरांत निर्माण योजनाओं की सफलता के लिए आप संघर्ष करें। जिसने भी अपने देश में फासिस्टों द्वारा किए गए विनाश को देखा है, जिसने भी अपने देश को सुदृढ़ करने के महत्व को ग्रहण किया है, उन सबको यह बात स्पष्ट होगी।

मैं आपका ध्यान एक और व्यावहारिक काम के प्रति खींचना चाहता हूं। आप जानते हैं कि इस समय अन्तर्राष्ट्रीय संबंध तेजी से विकसित हो रहे हैं। मैं चाहता हूं कि हमारे तरुण विदेशों की जनता के जीवन, उनकी संस्कृति और चरित्र के विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त करें। विशेषत, अधिक से अधिक कोम्सोमोल सदस्यों को विदेशी भाषाएं जानना चाहिए।

साथियो, जैसा मैंने पहले बताया कि कोम्सोमोल को ये उच्च पारितोषिक मोर्चे पर और पिछवाड़े में उन लाखों-लाख कोम्सोमोल सदस्यों और तरुणों के वीरतापूर्ण कामों के कारण मिले हैं, जो हमारे न्यायपूर्ण उद्देश्य के लिए आत्मबलिदान की भावना से लड़े हैं। इन सेवाओं का एक अंग कोम्सोमोल के उन गौरवशाली बेटों के हिस्से में आता है जिन्होंने सोवियत देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए।

इन लोगो ने संघर्ष में राजनैतिक परिपक्वता, सगठनात्मक अनुभव और कुशलता का परिचय दिया। उन्होने सोवियत जनता के प्रति सर्वोच्च लगन और उच्च देशभक्ति निभाई। उन्होने सोवियत जनता के उच्च मनोवल का प्रदर्शन सारी दुनिया के सामने किया।

साथियो, मुझे विश्वास है कि कोम्सोमोल के सदस्य देशभक्तिपूर्ण युद्ध की गौरवशाली परपराओ को सुरक्षित रखेंगे और उन से आगे के लिए प्रेरणा लेगे। हमारी भावी सन्तान भी इन्ही परपराओ में पाली-पोसी जायेगी।

कोम्सोमोल को मिलनेवाले पारितोषिको का सबध सदा ही हमारे देश के जीवन के विकास की महत्वपूर्ण मजिलो से रहा है। अभी-अभी जो पारितोषिक दिया गया है, वह देशभक्तिपूर्ण युद्ध की गाथाओ से सबधित है, हमारी जीत से सबधित है। हमारे इतिहास की हर मजिल में कोम्सोमोल ने अपने कामो को सम्मान के साथ पूरा किया है। साथियो, जिस तरह आपने पीछे राष्ट्र की महान सेवाए की है, उसी तरह से भविष्य में भी आप को राष्ट्र-सेवा का गौरव प्राप्त हो, यही मेरी मगल-कामना है। (सब खडे हो जाते है। देर तक ज़ोरदार तालिया)

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा"

२ दिसबर १९४५

М И КАЛИНИН

О КОММУНИСТИЧЕСКОМ ВОСПИТАНИИ